अंक - 101
दिसम्बर/2022

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

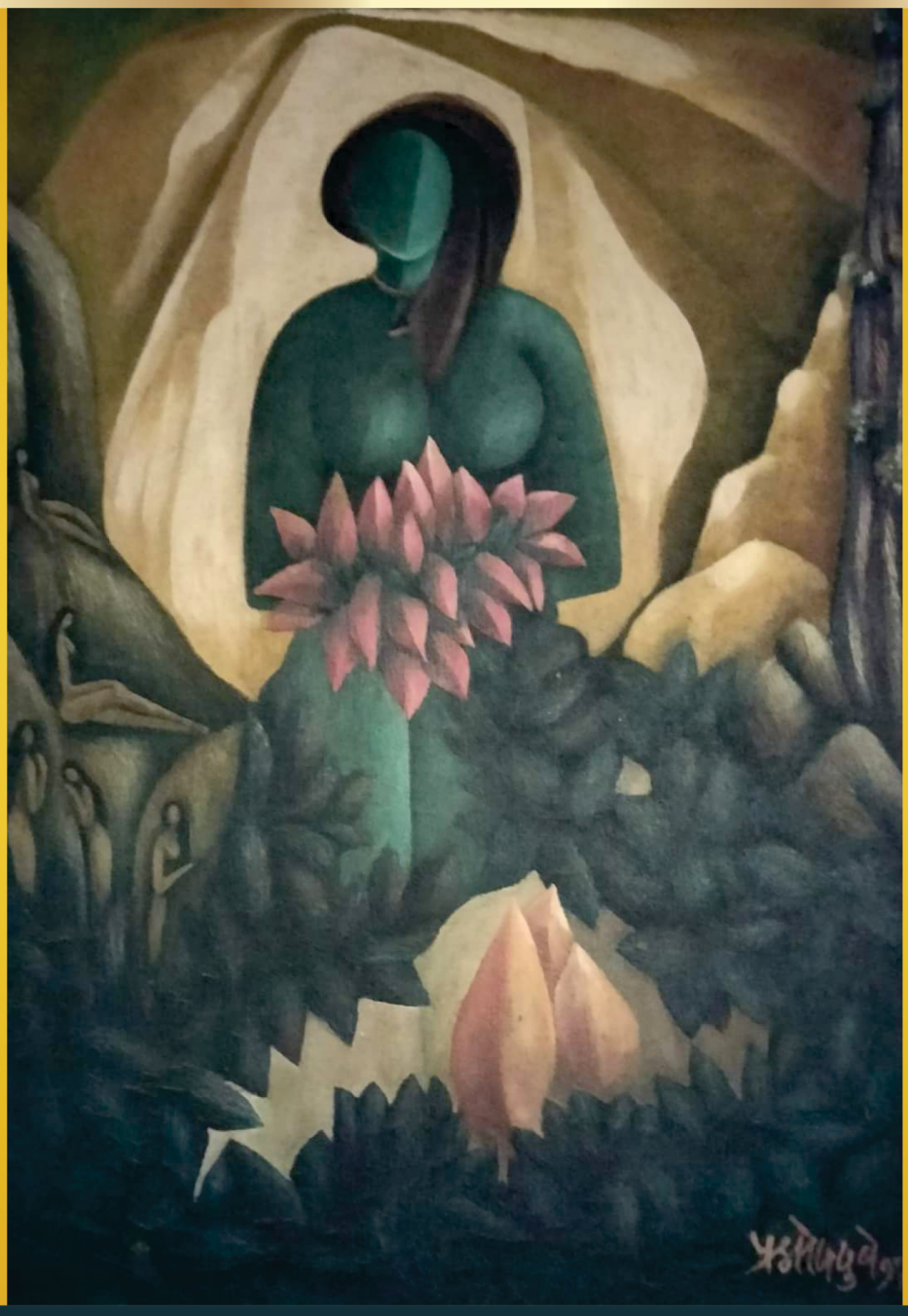

भिखारी–स्मरण–संपादकीय विशेष, सामयिकी/सौरभ पाण्डेय, आचार्य नन्दकिशोर तिवारी, केदारनाथ सिंह, राहुल सांकृत्यायन, अविनाशचंद्र विद्यार्थी, शारदा पाण्डेय के निबन्ध/नीरज सिंह, चन्द्रेश्वर, दयाशंकर तिवारी, अक्षय पांडेय, दिनेश पाण्डेय, शशि प्रेमदेव आदि के कविता/ अरुणमोहन भारवि आदि के कहानी का साथ डा0 सुनील कुमार पाठक के रचनालोचना आ डा0 प्रेमशीला शुक्ल के हस्तक्षेप–निबन्ध।

''पाती -आजीवन सदस्य/संरक्षक''

सतीश त्रिपाठी (अध्यक्ष, 'सेतु' न्यास, मुम्बई) डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात),राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), देवेन्द्र यादव (सुखपुरा, बलिया) विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया, जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया, डा० (श्रीमती) प्रेमशीला शुक्ल (देवरिया), डा० जयकान्त सिंह 'जय' (मुजफ्फरपुर) एवं डा० कमलेश राय (मऊ), कृष्ण कुमार (आरा), डा० अयोध्या प्रसाद उपाध्याय (कुंवर सिंह वि० वि० आरा), अजय कुमार (पी०एन०बी०, आरा), रामयश अविकल (आरा), डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' (भोजपुर), विजयशंकर पाण्डेय (नारायणी विहार, वाराणसी), डा० अमरनाथ शर्मा (बलिया), कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा (एसबीआई, बलिया), डा० दिवाकर पाण्डेय (पकड़ी, आरा), गुरूविन्दर सिंह (नई दिल्ली), डा० प्रकाश उदय (वाराणसी), डा० नीरज सिंह (आरा), विक्रम कुमार सिंह (पूर्वी चम्पारन), नागेन्द्र कुमार सिंह (कुतुब बिहार, नई दिल्ली), जलज कुमार मिश्र (बेतिया पं० चम्पारण), श्रीमती इन्दु अजय सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० संजय सिंह (करमनटोला, आरा), आनन्द सन्धिदूत (वासलीगंज, मिर्जापुर), नगेन्द्र सिंह एवं राकेश कुमार सिंह, (राजनगर, पालम, नई दिल्ली), डा० हरेश्वर राय (जवाहरनगर, सतना, म० प्र०), केशव मोहन पाण्डेय (कुशीनगर), गुलरेज शहजाद (मोतीहारी), शशि सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), जितेन्द्र कुमार (पकडी, आरा), योगेन्द्र प्रसाद सिंह (बोकारो, झारखंड), डा० प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात, विद्यापीठ), महेन्द्र प्रसाद सिंह (रंगश्री, नई दिल्ली), अजीत सिंह (इलाहाबाद), संतोष वर्मा (साधु नगर, नई दिल्ली), संजय कुमार सिंह (राजनगर, नई दिल्ली), श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर, बिहार), सत्येन्द्र नारायण सिंह, (नारायणा, नई दिल्ली), श्री रविन्द्र सिंह, (मेहरम नगर, नई दिल्ली), ई० रामचन्द्र सिंह, (श्रीरामनगर कालोनी, वाराणसी), हीरालाल 'हीरा' (रामपुर उदयभान, नई बस्ती, बलिया), दिनेश पाण्डेय (शास्त्रीनगर, पटना), शिवजी सिंह (द्वारका, नई दिल्ली), डा० जनार्दन राय (भृगुआश्रम, बलिया), विनय कुमार (भाटपारा, छतीसगढ़), अजीत कुमार (बैंक आफ बड़ौदा, पालघर), विपिन बिहारी चौधरी (बूटी मोड़, राँची, झारखंड), अशोक कुमार श्रीवास्तव (गाजियाबाद), शिवपूजन लाल विधार्थी (वाराणसी), डा० पारसनाथ सिंह (चन्द्रशेखर नगर, बलिया), डा० आशारानी लाल (काका नगर, नई दिल्ली), आलोक पाण्डेय अनवद्य (दिल्ली), कुबेरनाथ पाण्डेय (परसा, गाजीपुर, हीरालाल 'हीरा' (बुलापुर, बलिया) विनोद द्विवेदी, (वाराणसी), अरविन्द कुमार सिंह, (आइ.ए.एस, लखनऊ), डा० प्रेमप्रकाश पाण्डेय (वैशाली, गाजियाबाद), डा० दिवाकर प्रसाद तिवारी (देवरिया), शशि प्रेमदेव सिंह (कुं० सिंह इंटर कॉलेज, बलिया), सौरभ पाण्डेय (नैनी, प्रयागराज), घनश्याम सिंह (महावीर घाट, बलिया), डा० (श्रीमती) शारदा पाण्डेय (भारद्वाजपुरम्, प्रयाग-6)

भोजपुरी-साहित्य के नया पठनीय सृजन/प्रकाशन

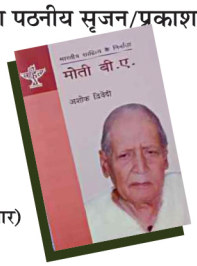

मोती बी०ए०

(जीवन-संघर्ष आ कविता-संसार)
अशोक द्विवेदी

₹ पेपर बैक-50/-

कुछ आग, कुछ राग

(कविता-संकलन)
अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-350/- पेपर बैक-200/-

भोजपुरी के नया पठनीय उपन्यास

बनचरी

अशोक द्विवेदी

₹ सजिल्द-300/- पेपर बैक-220/-

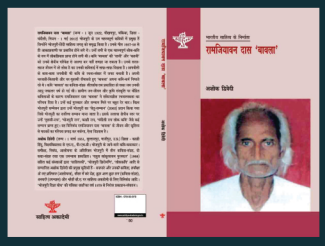

रामजियावन दास 'बावला'

अशोक द्विवेदी

भोजपुरी रचना आ आलोचना

(पृष्ठ संख्या-404)

डॉ0 अशोक द्विवेदी

मूल्य-500/-

विजया बुक्स

नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

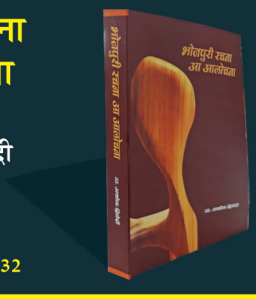

किताब मिलल....

'पाती' कार्यालय- डा0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277 001 या
एफ-1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-110019
Mobile: +91-8004375093, 8707407392, 8373955162, 9919426249,
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंकः 101 (संयुक्तांक) **सितं0-दिसम्बर 2022**

(तिमाही पत्रिका)

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी
राजीव पाराशर

ग्राफिक्स
जितेन्द्र सिंह सिसौदिया

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

कंपोजिंग
अरूण निखंजन, सत्यप्रकाश

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

आवरण–चित्र
प्रमोद दुबे

'पाती'- परिवार (प्रतिनिधि)

हीरालाल 'हीरा', शशि प्रेमदेव, अशोक कुमार तिवारी (बलिया) डा० अरूणमोहन 'भारवि', श्रीभगवान पाण्डेय (बक्सर), कृष्ण कुमार (आरा), विजय शंकर पाण्डेय (वाराणसी), दयाशंकर तिवारी (मऊ), जगदीशनारायण उपाध्याय (देवरिया), गुलरेज शहजाद (मोतिहारी पूर्वी चम्पारण), डा० जयकान्त सिंह, डा० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी, दिनेश पांडेय (शास्त्रीनगर, पटना), आकांक्षा (मुम्बई), अनिल ओझा 'नीरद' (कोलकाता), गंगाप्रसाद 'अरुण', (जमशेदपुर), डा० सुशीलकुमार तिवारी, गुरूविन्द्र सिंह (नई दिल्ली)

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com,

संपादन-कार्यालयः-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001 एवं
एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19
मो0– 08004375093, 08707407392, 91–8373955162

सहयोगः
एह अंक के–100/-
सालाना सहयोग-300/- (डाक व्यय सहित)
तीन वर्ष के सहयोग-1000/-
आजीवन सदस्य सहयोगः
न्यूनतम-2500/-

[अशोक कुमार द्विवेदी के नाम से चेक/डी०डी० अथवा
SBI A/C No. 31573462087, IFSC Code-SBIN0002517
में नकद/ऑनलाइन सहयोग जमा करके हमें सूचित करें]

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के आपन निजी हऽ दायित्व लेखक के बा, ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में...

हमार पन्ना –
- बोली–भाषा के कविता आ ओकरा सुघराई के गाँहक / 3

स्मरण –
- भिखारी ठाकुर जयन्ती पर विशेष आलेख / 4–9

सामयिकी –
- रक्तबीजन के फेरा में / सौरभ पाण्डेय / 10–13

शब्द–सम्पदा–
- संदर्भ–बरखा / जनार्दन प्रसाद शर्मा / 19–20

कविता –
- कादम्बिनी सिंह / 13
- चंद्रेश्वर / 16–18
- अक्षय पाण्डेय / 24–26
- हीरालाल 'हीरा' / 28
- शैलेन्द्र पाण्डेय 'शैल' / 29
- सौरभ पाण्डेय / 31–32
- विजय मिश्र / 71
- शिवमूर्ति सिंह / 73
- दिनेश पाण्डेय / 74
- विवेक त्रिपाठी / 76
- नीरज सिंह / 14–15
- दयाशंकर तिवारी / 21–23
- शशि प्रेमदेव / 27
- अशोक कुमार तिवारी / 28
- सुभाष पाण्डेय / 30
- राकेश कुमार पाण्डेय / 54–55
- पं0 हरिराम द्विवेदी / 72
- इन्द्र कुमार दीक्षित / 73–74
- गुरुविन्द्र सिंह / 75

हस्तक्षेप –
- भाषा के बारे में कुछ बात / डा0 प्रेमशीला शुक्ल / 109–112

निबन्ध / संस्मरण–
- पाती / डा0 नन्द किशोर तिवारी / 33–38
- बानभट औ हरखराज क भेंट / राहुल सांकृत्यायन् / 39–41
- बेटा के नइहर / अविनाश चंद्र विद्यार्थी / 42–45
- हमार गाँव / केदारनाथ सिंह / 48–50
- अब ना अइबो ए गंगा / डा0 शारदा पाण्डेय / 51–53
- जहाँ हावड़ा के पुल तहाँ बने इस्कूल / केशव मोहन पाण्डेय / 63–65

ललित–व्यंग –
- पत्थर ले लो / शशि प्रेमदेव / 46–47

कहानी –
- झूठे जग पतियाय / अरुण मोहन 'भारवि' / 68–69
- साइत गाँव हमरा भीतर हावी बा / राणा अवधूत / 79–82
- अन्हारे के जामल / मीनाधर पाठक / 83–92

लघुकथा –
- मरम / अशोक तिवारी / 50
- बुआ के बकरी / दिनेश पांडेय / 56
- पचइयाँ क पोखरा / राजगुप्त / 77

रचनालोचना –
- कवि तू धरती–राग लिखऽ (कुछ आग कुछ राग 2014) / 93–98

समीक्षा –
- 'अरज निहोरा' के कविता / डा. सुनील कुमार पाठक / 99–108

सांस्कृतिक गतिविधि – पृ0 57 / 64

बोली - भाषा के कविता:
आ ओकरा सुघराई के गाँहक

एघरी कविता जवना लूर - ढंग , शैली आ कलात्मक अन्दाज से, मौलिक शब्द - सँवार वाली भाषाई - बिनावट में लउक रहलि बिया ओके देखि - पढि आ सुनि के मन अगरा जाता! भाव-संबेदन आ कथ के नया अर्थवान उरेह का कारन, कविता प्रेमी पढ़वइया -सुनवइया लोग के रुझान आ सवादो बढ़त बा ! बाकिर एगो सवाल इहो बा कि कविता से अउँजाइल - पाकल लोगन के ध्यान अइसनका सुघर - सवदगर कबिताई का ओर कब फिरी ? कब ओ लोगन के नजर एकरा ओर जाई?

बोली - भाषा का क्षेत्रीय विशेषता से कवनो इनकार नइखे।हर माटी के आपन खूबी-खुसबू होले, फेर खित्तावार खूबी वाली भोजपुरी के त पुछही के नइखे! गुरहर्सन (ग्रियर्सन) से लगाइत आजु ले केतना लोग ए भाषा के खूबी लिखल । इहाँ बात ए भाषा का कविता के हो रहल बा। अब कबिता बा, त चीझ -बतुस लेखा ओके नापे जोखे, तउले के बाट बटखरा, तरजूई आ नपना होखही के चाहीं। एइजा नाप जोख के खास लोगवो बा। बाकि एमे तनी पेंच आ झंझट बा। बा त, बा। केहू मात्रा देखत बा, केहू गुन-गुनधर्म (क्वालिटी)। केहू मात्रा - स्टाक (क्वान्टिटी) देखेता, केहू रूप सुघराई आ सवाद से अन्दाज लगावत बा । हमनी का ओर पहिले जवन नपना आ बटखरा रहे, छटाक, पउआ, सेर-पंसेरी वाला, आजकल ग्राम, लीटर, किलो किन्टल में बदल गइल बाकिर जोखे वालन में एगो 'केंड़ी मार' रहे, ऊ नइखे बदलल, आ बदले के उमेदो नइखे, ऊ जोखी तऽ केंड़ी मरबे करी।बात कुबात, कुतरक आ पेंच के कमी नइखे ओकरा पास।

पहिले 'सुबरन' के चाहे, जोहे वाला कबि, ब्यभिचारी आ चोर के जिकिर होत रहे। अब कबि, व्यभिचारी आ चोर के नया नजरिया, नया नपना, नया तरक से देखल जाता। जइसे ऊ हिन्दू हवे कि मुसलमान? हिन्दुए हऽ त कवन जात के हऽ, बाम्हन हवे कि पिछड़ा? आकि दलित? सेकुलर हवे कि ना ! हमनी का प्रदेश के हऽ कि दोसरा प्रदेश के !! प्रोगरेसिभ हवे कि पोंगापंथी! गोयाकि एघरी पेंच आ पेंचकस बढ़ल बा साहित्त जोखे में।

'सु बरन' के कविता आ ओकर कवि लोग के एघरी एह दिसाई चुनौतियो बढ़ल बा ! अब ओह लोग के ईहो सोचे के परी कि ऊ अपना आ परिवेश-प्रकृति वाला जीवन-संसार के केन्द्र में राख के लिखो-गावो कि एह केंड़ीमारन के सोच आ नजरिया वाला, दोसरा 'लोक' के बाट बटखरा, नपना आ तरजूई आ नजरिया के खारिज कइ के, केनियो कचरा में फेंक देव!!

डॉ0 अशोक द्विवेदी

भिखारी ठाकुर के जयन्ती का अवसर पर

भोजपुरी लोक-रंग के प्रतीकः भिखारी

✍ डॉ0 अशोक द्विवेदी

अपना समय सन्दर्भ में भिखारी ठाकुर, अपना कला–निष्ठा आ कबित–विवेक वाला रंग–कर्म से अपना समय के सर्वाधिक लोकप्रिय कलाकार रहलन। ऊ लोकनाट्य–परम्परा का संगति (यूनिटी) से सँवारल, कतने नाट्यरूप–रूपकन के रचना कइलन, जेके ऊ बोलचाल के भाषा में 'तमासा' कहस। ई 'तमासा' उनकर 'नटरंग' रहे, जवन ओघरी सर्वजन–मन–रंजन के साधन बनल। 'साटा' पर जाए वाला, उनका मंडली के नाच आ तमासा (नाट्य–रूपक) बेटिकट बे पइसा के सरबजन–सुलभ रहे। हम अपना लड़िकाई में देखले रहलीं कि 'भिखारी के नाच' के खबर फइलते 'नाच' का दिने आसपास के गाँव आ अरियात–करियात के बूढ़, जवान, लड़िका सबकर भीड़ उमड़ परल रहे। हजारन लोग भिखारी का नाँव पर सूर बन्हले, साँझि होखे का पहिलहीं, नाच वाला गाँव का ओर जाए वाला राह–छवरि पकड़ लेव। दरअसल उमिर से बुढ़ात भिखारी के नाच से बेसी, भिखारी रचित–निर्देशित नाट्य–रूपक आ नाटके रहे। भिखारी कबिताई, नाच आ अभिनय सबमें प्रवीन रहलन आ उनका हर प्रस्तुति में दर्शकन का, अपना भाषा के गंध आ सवाद मिलत रहे। भोजपुरी 'टोन' आ बात–ब्योहार में काम आवे वाली भाषा में रचल–बनावल नाट्य–रूपक अपने जन–जमीन आ खित्ता (क्षेत्र) में काहे ना लोकप्रिय होइत? भिखारी अपना सुभाविक, (मौलिक) प्रस्तुति आ अभिनय कला से सगरी भाषा–समाज के व्यापकता से प्रभावित कइलन त एकरा पाछा इहाँ के जन प्रचलित भाषा के बड़ जोगदान रहे।

सुरूआत में भिखारी भलहीं गाँव–घर के 'अनेरिया' कहाय वाला लड़िका रहलन, बाकिर उनका भीतर भावी कलावन्त के बीजतत्व त रहबे कइल। खानदानी पेशा–हजामत बनावे आ लोगन का सेवा–टहल में उनकर रुचि ना रहे–कीर्तन आ गावे–बजावे वाला गोल बेसी रुचे। अच्छर ज्ञान का बाद कवनो खास लिखन्त–पढ़न्त ना भइल। कम्मे उमिर में बियाहो हो गइल। छूरा,

कइँची, नोहरनी वाला खनदानी रोजिगार खाए–निबाहे के साधन। कुछ दिन अइसहीं चलल, बाकि गीत–गवनई, भजन–रमायन आ स्वाँग–प्रहसन वाला नाच का दिसाईं रुझान का कारन, भीतर उदबेग बनल रहे। गाँव से कम, ननियउरा से ढेर लगाव का पाछा उनके उहाँ मिले वाला बिसेष सुतन्त्रता आ छूट, जवना में ऊ अपना रुचि वाला दोहा–कबित आ चौपाई लिखस–गावस आ एगो सपना कि उनकर आपन एगो मण्डली बने, जवना में उनका अनुसार स्वाँग–नाटक भा तमासा होखे। एतना आमदनी होखे कि उनकर आ उनका मण्डली के खरच–बरच सुबिधान चले। तुक बइठाव वाला साधारन कबितई उनका आवते रहे। बहुत कुछ जानल–सुनल का आधार पर लिखइबो–कइल। सपना पूर करे के चाह–चिन्ता कलकत्ता–बंगाल खींच ले गइल।

ओघरी भोजपुरी क्षेत्र अभाव आ गरीबी के शिकार रहे, मेहनत–मजूरी भा पइसा वाला नोकरी के सोत कलकत्ता–बंगाल रहे। अशिक्षा आ सोझबकई वाला बहुसंख्यक समाज के चन्हाँक, बनिया, सूदखोर धनपति आ जर–जमीन वाला वर्ग त शोषन करबे करे, चोर आ ठगो अलगा से लूटें स ऽ। भिखारी के बियाह लड़िकइये में भइल रहे, मन–मनाव में दुसरो बियाह हो गइल। रुपया–पइसा कमाए का लालच में ऊहो बंगाल के राह ध' लिहले। ओ समय खडगपुर–मेदिनीपुर, धनबाद, बरदवान के इलाका भोजपुरियन के जमावड़ा रहे। भिखारी गइलन त सँधतियन–सँग जगरनाथोपुरी घूमि अइलन। अइसन बात खोजी–विद्वान लोग बतावेला। महेन्दरो मिसिर कलकत्ता गइल रहलन। भिखारी के आदर्श आ गुरुतुल्य कहासु– उनका लोकधुन आ पारम्परिक लय धुन वाला गीतन से भिखारी बहुत प्रभावित रहले। बाकिर भिखारी का भीतर जवन लोकरंग आ रंगकर्म का प्रति गहिर लगाव आ जनून रहे, ओकरा कारन उनकर धेयान साज–बाज वाला मण्डली बान्हि के नाच–नाटक खेले के रहे। बंगाल–जात्रा से उनके बहुत बल मिलल–नाच–तमासा खातिर अनुभव आ मसाला मिलल। परोसे के लूर–सहूर आ कला में निखार अलगा से आइल।

कहल जाला कि भिखारी ठाकुर अपना गाँवें कम, ननियउरा ज्यादा रहसु–ननियउरा चन्ननपुर में, उनका लाएक साधन–सुबिधा आ स्वतन्त्रता तीनू रहे। बंगाल से वापसी का बाद, उनका तिसरकी बियाह के भी चरचा मिलेला। तुक–बइठाव वाला गीत–कबित लिखे आ गावे–सुनावे के भटक खुल चुकल रहे। कुछ साजो–बाज वालन से मेल–मुहब्बत हो गइल रहे। नतीजा में छोट–मोट मण्डली त बनिये गइल रहे। आतमकथ शैली में ऊ खुदे लिखले बाड़न–

तीस बरिस के उमिर भइल। बेधलस खूब कलिकाल के मइल।
घर पर आके लगलीं रहे। गीत–कबित कतहूँ केहु कहे।
अरथ पूछ–पूछ के सीखीं। दोहा छन्द निज हाथे लिखीं।।
निज पुर में करके रमलीला। नाच के तब बन्हनी सिलसिला।।

अपना साधन–संपर्क आ कुछ धनी लोगन का मदद से भिखारी आपन नाच–मण्डली बना लिहलन। साज–बाज आ गावे–बजावे वालन का साथ, नचनियो मिल गइले स ऽ। कुछ दिन अभ्यास आ रियाज का बाद उनके सार्वजनिक मंच पर नाच आ तमासा के 'साटा' मिले लागल। ई उनका मन जोग काम रहे। धीरे–धीरे लोकरंजन का एह काम में उनकर लोकप्रियता बढ़े लागल। आगा जाके ईहे 'नाच' उनका जीवन–निबाह आ कला–प्रसिद्धि के माध्यम बनल।

भिखारी के बिनयशीलता आ वाक्पटुता अइसन सुभाविक गुन रहे, जवना का बदउलत ऊ अपना जीवन काल में बहुत कुछ हासिल कइलन। अपना समकालीन कवि कलाकारन नेह–छोह, सीख–सहूर त पइबे कइलन, सहजोग आ साथो मिललं । साइत ई उनकर संस्कारगत विशेषता रहे। ऊ धरम–करम, नेत–बरक्कत, ईमान के बचावे के हमेसा कोसिस कइलन। अपना समय का समाज के अशिक्षा, ढोंग–ढकोसला, स्वारथजनित–छल–छहन्तर, नैतिक स्खलन सब कुछ जनला–बुझला का बावजूद, समाजिक मरजादा के विरुद्ध कुछ अइसन ना कइलन, जवन अनुचित कहाय। अपना नाच–गाना के लेके उनकर निजी प्रतिबद्धता जरूर रहे, जवना का चलते–

"छूरा छूटल, कइँची छूटल
बाबू लोग के हजामत छूटल
नाच के करनियाँ।

उनके इहे बुझाइल होई कि हजामत से दू–चार पइसा आ छोट–मोट मान–गुमान में भुलाइल रहला से नीक ई बा कि कुछ अलग ढंग से, जवन मन के भावे, ओही में कमाइल जाव। लोकरंजन का एह काम में यानी 'नाच–गाना' में, ना त उनकर विनयशीलता छूटल, ना भक्ति ना 'भाव' ना सरधा–विश्वास में कवनो कमी आइल। रामचरित मानस का चउपाई आ भजन–कीर्तन से जवन नीखि भेंटाइल ऊ उनका नाच–तमासा के मंगलाचरन आ गीत–गवनई में अन्त ले बनल रहल। ऊ कबि–हृदय रहलन, एसे अपनहूँ गीत–कबित बनाइवे लेस। एह कुल उतजोग में उनके जवन, जहाँ से भेंटाइल ओके दिन खोल के अपना लिहलन। समकालीन कवियन में 1900 में आसपास अम्बिकादास, विश्वानाथ (बलिया वाला) शिवमूरत जी के चेला बीसू जी ('बिरहा बहार' के रचयिता), काशीनाथ, लालमणि, रसिक कवि आदि बहुत लोग रहे। 'सुनु ए सजनी' के लय–धुन रसिक कवि के एह दू पांतियन में देखल जा सकेला–

"अवध नगरिया से अइले बरियतिया ए सुनु सजनी
जनक, नगरिया भइले सोर ए सुनु सजनी।"

ओह काल खंड में कवियन के कुछ प्रचलित 'टेक' रहे– 'ए देवरवा मोरा' 'ए ननदी मोरी', 'धरि लेहु ना!', 'जगाई गइले ना', 'सुरतिया ए हरी!' भिखारी घूमत–फिरत, गवइयन से सुनले–सिखले रहले, निरगुनिहा–शिवदास, देवीदास कवि पन्नू के नाँवों ओह काल–खण्ड का कवियन में चर्चा में आवेला। बाबू रघुबीर नारायण के 'बटोहिया' गीत त अति प्रसिद्ध भुइल रहे। महेन्दर मिसिर जी के रमायन आ विरल लय–धुन वाला प्रसि'पूरबी' के भिखारी ठाकुर पर गहिर असर रहे। 'विदेसिया' के गीत में ई असर स्पष्ट झलकत बा–

'गवना कराइ सैंयाँ घर बइठवले से अपने लोभइले परदेस रे विदेसिया!'

'पिया गइलन कलकतवा ए सजनी!'

एही तरे भिखारी ठाकुर के राम–कृष्ण सम्बन्धी भक्ति–गीत आ भजन, निरगुन पर समकालीन रचनात्मक शैली के असर देखे के मिल जाई। साँच पूछीं त ओह काल खण्ड में महेन्दर मिसिर अपना गीत–गवनई आ मरम–छूवे वाला प्रेम, भक्ति गीत आ निरगुनिया–धुनो के 'मास्टर पीस' रहले। भिखारी ओही जवार के रहले आ ऊ मिसिर जी के बहुत आदर देसु, उनसे भेंट करे जासु, सीख–सलाहो लेस। भिखारी का कवि–व्यक्तित्व का निर्मान में महेन्दर मिसिर का उल्लेखनीय जोगदान के नकारल ना जा सके। एह सम्बन्ध में शोधकर्त्ता विद्व ान आ मर्मी लोग– (यथा महेश्वराचार्य, डा0 तैयब हुसैन, सुरेश कुमार मिश्र, डा0 जवाहर सिंह आ भगवती प्रसाद द्विवेदी) के विचार महत्वपूर्ण बा। महेश्वराचार्य जी का मोताबिक 'महेन्द्र मिसिर जी, भिखारी ठाकुर के 'रचना गुरु' आ 'शैली गुरु रहले।

'कलिजुग बहार', 'राधेश्याम–बहार', 'बिरहा बहार' आदि का साथ, सुमिरन–कीर्त्तन सम्बन्धी रचना का पाछे भिखारी के मूल कवि–सुभाव आ बिवेक के परिचय मिल जाई। चउपाई आ दोहा सोझ–सपाट वर्णनात्मक बा, गोस्वामी तुलसीदास जी लेखा काव्य–सुघराई आ सौष्ठव एहसे नइखे काहें कि भिखारी ढेर पढ़ल–लिखल ना रहले। कल्पनाशीलता जरूर रहे, बाकि ओहमें भाव आ कथ्य प्रबल रहे। तुक मिलाव से छन्द के ताल–मतरा बइठा लिहल, एहसे महत्वपूर्ण बनल कि लोक से उनकर सीधा भाव–संप्रेषन हो जाव–

'बिरहा बहार' प्रथम मैं गावा। तब 'कलिजुग बहार सुधि आवा।।
राधेश्याम बहार हो गइलन। बेटी–बियोग के चरचा भइलन।।

ई सहज–सुबोध कथ्य बा उनकर। अपना रचना क्रम का बारे में। अपना अनुभव, बोध आ संवेदन–ज्ञान से सजल–सँवारल गीतन के लयात्मक उदभावना आ उरेह ऊ अपना नाट्य–रूपक आ नाटकन में बढ़िया आ प्रभावी ढंग से कइले बाड़न। अशिक्षा, अज्ञान आ कुरीतियन में फँसल समाज आ ओह में नारी के दुरगति आ पीड़ा के अपना नाटय–रूप आ गीतन का जरिए दरसावे के उतजोग त ठाकुर कइबे कइलन, बाकि अपना ढंग, अपना अंदाज से। अपना नाच तमासा के मंडली का जरिए, ऊ चर्चित आ लोकप्रिय भइलन, 'साटा' पर नाच–तामाशा देखाइ के रूपयो कमइलन, बाकि एह सबमें, सबसे महत्वपूर्ण उनकर कलानिष्ठा आ विनयशील सुभाव रहे, जवन कवि–कलाकार भा रंगकर्मी के मशहूर बनावेला। ऊ आपन बखान सुनला के अपेक्षा ना रखले रहलन, तबे नू बिनय से कहलन

"एह पापी का कवन पुन्न से
भइल चहूँदिसि नाम।
भजन–भाव के हाल न जनलीं
सबसे ठगलीं दाम।।

भिखारी ठाकुर अपना सोचल–गुनल तमासा आ नाटकन के खुदे सूत्रधार रहलन। निर्देशक, समाजी, अभिनेता आ नचनिया कूल्हि खुदे परोसे में समरथ रहलन। ऊ कला का एह क्षेत्र में, दर्शक आ श्रोता समाज से अपना के आ अपना नाट्य शैली से जोर लेत रहलन। इहे कारन रहे कि ऊ अपना रंगकर्म आ लोक शैली का भाव सम्प्रेषण से पचीसन बरिस ले जन–रुझान कै अपना मण्डली से जोरले रहलन। जन मन रंजन आ रंग–कला के लोकज प्रस्तुति का कारन, भोजपुरी भाषा–समाज में दू–ढाई दशक तक लोकप्रियता में बनल रहल, समय–संदर्भ का लेहाज से महत्वपूर्ण रहे। राहुल सांकृत्यायन जी एही कारन "भोजपुरी के अनगढ़ हीरा" कहले होइहें उनके।

नाट्य–रुपक आ नाटक के विषयवस्तु

कवनो तरह के अतिश्योक्ति आ अतिरेक से बच के, कुछ सुधी जन आ शोधकर्त्ता समालोचक लोग भिखारी का नाट्य–रूपक आ नाटक के विषयवस्तु (कन्टेन्ट) पर लगभग समान विचार रखले बा– जइसे भिखारी ठाकुर अपना क्षेत्र में स्त्री के असहाय–अबला स्थिति आ शोसन के देखावे के प्रयास कइलन। नारी के बेबस–करुन अवस्था उनके आन्दोलित कइलस। ऊ एकरा साथ इहो दरसावे के कोसिस कइलन कि नारी के गँवई–रूप–रसिकन के दिल बहलाव के चीझु रहे आ कामपिपासु मरदन खातिर लूट के खाय वाली मिठाई। एकरा पाछा के कारन–बहरवाँसू लोग के घरे अकेल रहे वाली नवही औरत रहे। ऊ अपना परिवेश का विसंगतियन से जूझत पति के इन्तजारी में वियोगिनी का दसा में कलपल करे। "घिचोर बहार" (गबर घिचोर) में ऊ पड़ोसिहा का नाजायज बेटा के महतारियो बन जातिया। 'गंगा असनान' में, मेहरारुवे का चक्कर में मलेछू अपना बुढ़िया माई के नदी में धसोर देत बा। 'बेटी–बियोग' में बेटी बेच दिहल जातिया। 'कलियुग बहार' में नशेड़ी आ पियक्कड़ अपना मेहरारू के मारत–पीटत, वेश्या से नाता जोरले बा। 'बिधवा विलाप' में बेमेल बियाह से औरत बिधवा हो जात बिया। फेर ओके घर के लोग मुआवे के उपाइ करत बा आदि।

कुछ अउरी गौर करीं त मानव चितवृत्ति लोभ, मोह मत्सर आ काम विषय–वस्तु में मूल कारक के रूप में उभरत लउकत बा। बाकिर एह लोभ, मोह, ईर्षा आ काम से खाली अपढ़े ना, कुपढ़ आ शिक्षितो लोग पीड़ित बा। ई तीनू चित्तवृत्ति असन्तुलित करे वाली आ विकृति पैदा करे में आगा बिया। भिखारी ठाकुर पारिवारिक–समाजिक सम्बन्धन का बीच इरिषा, लोभ से उपजल विकृतियन के अपना नाट्य–रूपक/नाटकन में दरसावे के कोसिस करत लउकत बाड़े। अपवादे सही, बाकि ई विकृति बा। "भाई–बिरोध" में भाइए भाई के हत्या कर देत बा, नाँवों ओकर उपदर बा। 'पुत्र बध' में खेती, पइसा, आभूषण के लोभवे कारक बा। ओही का चलते पुत्र के बध होत बा। 'बेटी बेचवा' (बेटी वियोग) में ई लोभवे मूल कारक बा। पुत्र–बध नाँव के एगो नाटक में, धन के लोभे बेटउवे के मार दिहल जाता।

भिखारी के विषय–वस्तु का रूप में 'बहरा–बहार' भा 'बिदेसिया' के कथानक में, कमाए खातिर कलकत्ता–बंगाल जाए वाला नवहा पति आ ओकर नवही मेहरारू 'प्यारी सुन्दरी' के चरित उभारे के साथ, भोजपुरी–क्षेत्र के तत्कालीन परिस्थिति आ समाजिक स्थिति के मनोविज्ञान बतावें के उतजोग बा। एह तथ पर आलोचको विचारक लोग लमहर समाजशास्त्री–विवेचना कइले बा। हमके इहो आलोचकी–अतिरंजना नियर लागेला। भिखारी के रचना अवदान पर विचार कइल जाव त पता चली कि उनका कुछ रूपक आ नाटकन के सुरूआती नाँव बदल दिहल गइल बा। जइसे 'बेटी बेचवा' के नाँव से मसहूर कृति 'बेटी बियोग' का नाव से बतावल गइल बा। श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह जी का "भोजपुरी के कवि और काव्य" में भिखारी के प्रकाशित रचना के बरनन कइल गइल बा– (1) बिदेसिया (2) भिखारी चउजुगी (3) नाई–पुकार (4) कलिजुग बहार (5) बिरहा–बहार (6) जशोदा–सखी संवाद (7) बेटी बियोग (8) बिधवा बिलाप (9) हरि कीर्त्तन (10) भिखारी भजनमाला (11) कलजुग बहार नाटक (12) बहरा–बहार (13) राधेश्याम बहार (14) घिंचोर–बहार (15) पुत्र बध नाटक (16) श्री गंगा असनान (17) भाई बिरोध (18) ननद–भौजाई (19) चौवर्ण पदवी (20) बुढ़शाला एह में कुछ अउर रचना शामिल कइल बाड़ी सन। "घिंचोर बहार" के नया नाँव "गबरघिचोर" पर गइल बा। भिखारी ठाकुर के सामान्य विषय चयन बा– अपवाद में घटल कवनो घटना का आधार पर सामान्य, कल्पनाशीलता से कथानक बना लिहल आ अपना लोकशैली में नाटकीय रूप दिहल अपना समय–समाज के देखे–सुने वालन खातिर सवदगर बना लिहल कलाकारिये नू कहाई! जन–मन–रंजन खातिर भोजपुरिया–अंचल में इहे लोकप्रिय भइल। काहेंकि ओह जमाना में सामान्य लोकरंजन, के दूसर साधने ना रहे।

नाट्य कला

नाट्य रूप भा काव्यकला 'लोक' आ शास्त्र से एहसे जुड़ल मानल जाले, काहेंकि 'लोक' आ 'पूर्ववर्ती

काव्य साहित्य' कवनो कवि–कलाकार के रचनाशीलता खातिर 'आधार' बनेला। कवि–कलाकार 'लोक' आ पूर्ववर्ती कवि–साहित्कार के कल्पना–सामग्री आ काव्यनुभूतियन के अपना समय–संदर्भ का मोताबिक अभिनव ढंग से इस्तेमाल करेला। एह दिसाईं, रचना–क्षमता के विकास आ वैशिष्ट्य महत्वपूर्ण होला। 'कवि–प्रतिभा' का साथ 'कवि–समय' के जिकिर एही में आवेला। प्रतिभा–संपन्न कवि भा कलावन्त परम्परा आ 'लोक' तत्त्व का सफल सनतुलन–विनियोजन वाली रचना से अपना समय–समाज में प्रसिद्धि पावेला।

भिखारी ठाकुर भलहीं पढल–लिखल ना रहलन बाकि उनकर संवेदन–ज्ञान आ अनुभव ज्ञान लोक–परम्परा आ समकालीन कवियन, नाटक कारन, तमासा–मण्डलियन से मिलके पुष्ट भइल रहे। लोक नाच (धोबिया, गोंड़ऊ नट कला) आ औरतन में प्रचलित डमकच–जलुआ आदि के ऊ नीक से जानत रहलन। समकालीन प्रसिद्धि वाला कवियन के कवित–गीत सुनत रहलन। महेन्दर मिसिर जइसन ख्यात कवित गायक से उनकर आम–दरफत आ सलाह मिले के संयोग रहे– विशेष रूप से गीति–रचना आ लोक लय–धुन में रचना करे के प्रेरना त मिलले रहे। अइसन गीतन के भिखारी आपना नाट्य रूपक भा नाटक में सुघर संगति बइठवलन। 'विदेसिया' परम्परा के जानकारी उनका बंगाल–जात्रा में मिलले रहे। उनका समय में, पहिलहीं से सुन्दरी बाई के नाच आ नाट्य रूपक लोकरंजन खातिर जानल–बखानल जात रहे। भिखारी का रचनात्मक व्यक्तित्व में एह सबकर समावेश रहे। कुछ शोधकर्त्ता विद्वान लोगन का मुताबिक सुन्दरीबाई नाच का साथ–साथ कई तरह के नाटक करसु। भिखारी ठाकुर पर एकर प्रभाव– "राधेश्याम बहार" बहरा–बहार, सुन्दरी–बिलाप जइसन कृतियन में झलकेला। सुन्दरीबाई के मण्डली– राधेश्याम बहार, बहरा बहार आ ननद–भौजाई–संबाद आदि नाटक खातिर मशहूर रहे। डा0 तैयब हुसैन जी भिखारी ठाकुर पर सुन्दरी बाई के नाट्य शैली का प्रभाव के चर्चा कइले बाड़न। 'बहरा–बहार' दुसरा रूप में 'बिदेसिया' रहे।

लोक–परम्परा के गीत–संगीत के लोकप्रिय चासनी में पागल, "बिदेसिया" के ख्याति आ लोकप्रियता का पाछा भिखारी ठाकुर के परिवर्द्धित–शोधित नाट्यकला रहे। गीत–संगीत के लोकरुचि का अनुसार परोसला का साथ, पात्रन का अभिनय में स्वाभाविक संगति बइठावल रहे। संस्कृत में 'गुरू वन्दना' आ भजन–शैली के गीत का बाद 'सूत्रधार' मंचित होखे वाला नाटक के भूमिका बान्हे। समाजी के सार संक्षेप पीढ़ा धरे क काम करे। भिखारी एही नाट्य–क्रम में सद्गुरु, आत्मा–परमात्मा आदि के अध्यात्मिक सम्बन्धों का बारे में बतावस।

'बिदेसिया' में जवन कथावस्तु बा– बस अतने कि मुख्य पात्र विदेसी अपना बियहुती प्यारी सुन्दरी के गौना कराके ले आवत बा आ अपना मेहरारू से कलकत्ता जाए के जिकिर करत बा। प्यारी सुन्दरी का लाख चिरउरी–मिनती का बादो ऊ बहाना मार के परदेस भाग जाता। ई सब पहिलका भाग (दृश्य) में चटक रंग का साथ मंच पर प्रस्तुत होता। फेरु क्षेपक रूप में गीत होता– "पिया गइले कलकतवा ए सजनी" दुसरा दृश्य में विदेसी कलकत्ता में एगो दुसरी औरत का फेरा में फँस जाता। ओकरे मोहपाश आ काम सुख में ऊ अपना बियहुती प्यारी सुन्दरी के बिसार देता। तिसरका दृश्य प्यारी सुन्दरी के बिरहाकुल पीर आ बेदना के बा। ऊ रोवत–कलपत बिया। एही मधे, एगो कलकत्ता जाए वाला बटोही से ओकर भेंट आ बतकही होता। गीतात्मक ढंग से ऊ आपन बिरह बिथा सुनावत, कलकत्ता चल गइल अपना पति का बारे में बतावत बिया आ ओकर नाक–नक्स, चाल आदि के चिन्हासी बतावत, निहोरा करत बिया कि ऊ ओकरा प्रियतम के ढूँढ के ओकर हाल जरूर बतावे।, चउथा दृश्य में कलकत्ता के ऊ जगह बा, जहाँ बटोही घूमत–घामत ओही नाक–नक्श हुलिया वाला बिदेसी के पहिचान लेता। उहाँ ऊ अपना दुसरकी मेहरि आ ओसे पैदा भइल लड़िका का संग मउज से पान चाभत लउकत बा। बटोही ओकरा के, गाँव में विरह–बियोग में रोवत कलपत बियहुती 'प्यारी सुन्दरी' के हाल–बेहाल सुनावत, गाँवे जाए के नसीहत देत बा। बिदेसी के सुतल आत्मा जागु जात बिया आ ऊ गाँवें लौटे के विचार बनावत बा। पाँचवाँ दृश्य में अकेल–असुरक्षित जवान 'प्यारी सुन्दरी' पर पड़ोसी के डोरा डलला के बरनन बा। चोर–चाई के डरे ऊ किल्ली ठोंक के घर का भितरी आशंका में कुलबुलात रहत बिया। बिदेसी अपना रखेलिन के धोखा देके भाग चलत बा, बाकि ऊहो, ओकरा पाछा लड़िका लेके, पिठियवले चल देत बिया। राह में चोर चाई ओकर सर–समान लूट लेत बाड़े स ऽ। बिदेसी रात खा, जब प्यारी सुन्दरी बिदेसी के केंवाड़ी बजवलो पर नइखे खोलत त ऊ

आपन परिचय देत बा। पहिचनला का बाद केंवाड़ी खुलत बा। बिदेसी अभी प्यारी से आपन हाल–बेहाल बतियावते बा, तले पाछा से दुसरकी मेहरारू– अपना लड़िका सँग पहुँच जात बिया। बिदेसी ओकरा बारे में, बतावत समझावत बा कि ओकरे सँगे कलकत्ता में रहत रहे आ लड़िका ओकरे जामल हवे। फेरु प्यारी सुन्दरी, अपना सवत के सँग रहे खातिर राजी हो जात बिया।

समाज में जरि सोरि फेंकले स्थापित मान–मूल्य–मरजादा का स्खलन भा गिरावट में 'काम' के बहुत प्रभाव बा। भिखारी ठाकुर एह प्रवृत्ति के चित्रित करत बतवले बाड़े कि परदेस में जाके दुसरा औरत का चक्कर में फँस जाए वाला अधिकांश लोग कइसे पतित हो जाला। एकरा ठीक उलट "घिचोर बहार" में अकेल पर जाए वाली औरतो, पति से लमहर दूरी का बाद, कइसे पतित हो जाले। ऊहो 'घिचोर' के पैदा करे में ना हिचके। नाजायज वाला सम्बन्ध के सुभाविक आ सामान्य बतावे में भिखारी तनिको हिचकत नइखन। धरम–करम के गहिराई का चक्कर में ना जाके, भिखारी एगो सुभाविक–चलताऊ रस्ता निकलले बाड़े– ई समाज में निम्न मध्य वर्गी तबका में प्रचलितो रहे। एक तरह से ऊ एह तरह के सम्बन्ध–स्वतन्त्रता के मान्यता देबे क काम कइले बाड़न।

भिखारी का नाटक के लोकप्रिय आ सरस बनावे में, कथा के तार जोरे आ आगा बढ़ावे में लोक प्रचलित लय–धुन वाला वर्णनात्मक गीतन के बड़हन भूमिका रहे। भिखारी का मण्डली के 'समाजी' साज बाज का साथ समवेत सुर में कथा–सूत समझावत फरियावत चलें सऽ। नाटक में विदूषक, भा जोकर के भूमिका में भिखारी 'लबार' के उतरले ऊ चेहरा–मोहरा, पोशाक आ क्रिया–ब्यापार में अइसन रहे कि ओकरा मंच पर आवते हँसी बर जाव। नाटक का कथा–गति के बढ़ावे–फरियावे में ऊ अपना हाजिर जबाबी से दखल करे वाला पात्र का रूप में बदल जात रहे। संस्कृत नाट्य कला का अनुसार भिखारी सूत्रधार भा परदा का पाछे के निर्देशक रहले। ई सूत्रधार घुमा फिरा के धरम–अध्यात्म के अपना समझ का लेहाज से, मरमो समझावे। जइसे बिदेसी ब्रह्म आ प्यारी सुन्दरी जीव आ रखेलिन माया हवे। हालांकि ई उटपटाँग आ अतार्किक लेखा लागी कि बिदेसी जइसन कुपात्र 'ब्रह्म' आ प्यारी सुन्दरी जइसन नायिका 'जीव' का श्रेणी में कइसे रखा गइल। अइसहीं माया कहाए वाली रखेलिन सवत हो गइल। भिखारी का नाटकन के कलात्मक पैटर्न अलग, स्वतंत्र आ प्रयोगात्मक रहल। ओकर उद्देश्य साफ–साफ लोकरंजन रहे– ओही में कुछ समाज सुधारो के भाव रहे। आपुसी संबाद पद्यात्मक आ संगीत से सँवारल रहे। साँच ई कि भिखारी का नाटकन के अइसन कुसल प्रस्तुति, ओह जमाना में कइल जाव कि अभिनय, भाव, गीत–संगीत आ क्षेपक का मिक्सचर से तुरन्त साधारनीकरन हो जाव। रस–परिपाक का कारन संवाद आ गीतन के दर्शक–श्रोता भुला ना पावे। देसी आ ठेठ अन्दाज वाली नाट्य भाषा भोजपुरी–समाज के अपना से तत्काल जोड़ि लेत रहे। गीति–काव्य शैली के नाटकन में प्रसंगानुकूल भाव से, रस परिपाक करे में, भिखारी एहसे सफल भइलन कि श्रृंगार के दूनों पक्ष, करुण रस आ हास्य रस के सुभाविक रूप में उतारे के सफल उतजोग का साथे, उनका में ओकरा व्यंजकता के उभारे वाला गीत–संगीत के लोकप्रिय संगति बइठावे के लूर आ कला रहे।

अन्त में 'थोरे लिखना, अधिक समझना' वाला उक्ति का अनुसार अतने कि हम सार–संक्षेप में जेतना समझ पवनी, भिखारी ठाकुर का नाट्य–रूप आ रचनात्मकता के, ओही के इहाँ बतावे के कोसिस कइलीं। विद्वान, आलोचक आ समय–समाज के कला–पारखी लोग भिखारी ठाकुर पर पहिल विस्तृत चर्चा कइले बा आ आगा करबे करी। भिखारी भोजपुरी के जुग–पुरुष आ लोक–पुरुष त ऽ रहबे कइलन। ●●

रक्तबीजन के फेरा में

सौरभ पाण्डेय

कवनो सरकार आपन लउकत अछमता के बावजूद ओइसन असहाय ना होखे, जइसन कई बेर अटलजी के अगुआई में बनल केन्द्र सरकार में भइल करे। अटलजी के सरकार से आमजन, बिसेस क के हिन्दू जन के, बनल संभावना आ सरकार के कई तरहा के बन्धन, ई दूनो चीझु एकही लग्गी के अलगा–अलगा दू छोर लउकल करे। अटलजी के नेतृत्व में बनल सरकार एह मामिला में मोदीजी के अगुआई में बनल मौजूदा सरकार 'शठे शाठ्यम् समाचरेत' के सूत्र प काम करे वाली सरकार के सामने, सचकी कहल जाव, त दुधकट्टू अस बुझाय। n.p. मोदीजी के अगुआई में वर्तमान केन्द्र सरकार कबो तनिका नरम, कबो तनिका गरम ढंग से काम करें में भरोसा करत रहल बिया। बाकिर तबहूँ, मौजूदा केन्द्र सरकार से अर्बन–नक्सलियन के बिरुद्ध जइसन कड़ेर कोरसिस करे के चाहत रहे ओइसन उत्जोग, कई हाली बुझाला, जे होत नइखे। बाकिर एकरो पाछा सेकुलरन, लिबरलन आ कांगरेस, कौम्युनिस्ट जइसन राजनीतिक पटियन के गुर्गन के देस के बेवस्था में बन चुकल गतेंर–गते चहुँप, धमक आ प्रशासनिक बेवस्था में इन्हनीं के उड़िस नियर मौजूदगी मूल कारन बड्डुए। गोधरा रेलवे–इस्टेसन प ठाढ़ साबरमती एक्सप्रेस के स्लीपर–कोच एस–६ में लगावल गइल आगि, जवना में उनसठ–साठ साधारन जात्री के जियते जारि के मुआ दिहल गइल, के बिरोध में सउँसे गुजरात लहक उठल रहे। 2002 साल के ओह दंगा के ऐतिहासिक, बलुक सत्तापरक भर ले ना, बेक्तीपरक तक, घोषित करे–करवावे खातिर इन्ह लिबरलन, सेकुलरन आ नक्सल–अर्बन गुट का ओर से बरिसन घुरपेंच साजिस कइल गइल। बरिसन लोअरकोट से हाईकोट, आ फेर सुप्रीमकोट ले घिंचात ई मुकदमा के निकहे सर्हियाइ के लसरावल गइल। सुप्रीमकोट लगभग सोरह बरिस बाद गुजरात दंगा के मुताल्लिक हर तरहा के आरोप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बरी क दिहलस। निहतनियन का ओर से बलात कइल गइल एह घटना के लेके अब सुप्रीमकोट के जवन फैसला आइल बा, ऊ भारत के पचास फीसदी जनता के पहिलहीं से मालूम रहे। एह फैसला के आजु घोसित भइला से निकहा पहिले, २०१४ में, देस के जनता मोदीजी के अगुआई में भाजपा के केन्द्र–सत्ता सौंप दिहलस। आ दोसरका पारी, २०१६ में, ओहू से मजगर सीट से भाजपा के केन्द्र के सत्ता मिलल! एक तरह से ई साँच के जीत बरिसन बितला पर अटल जी के पार्टी के मिलल।

सेकुलरन आ लिबरलन के नाँव प काम करत एगो खुर्चेली उतपाती जमात के पाखण्ड अपना देस के एगो सोआर्थी वर्ग के कुत्सित इच्छा के पूर्ती खातिर एगो निकहा जरिया बन गइल बा। एकनी के बिरोध में उठावल गइल कवनो कदम इन्हनीं के ईको–सिस्टम आ धमक के बिरोध में उठावल गइल कदम हो जाला। एही से

मोदीजी आ उनका अगुआई में चलत केन्द्र सरकार के सभ कदम सर्हियाइ के राखे के होला। ना त, इन्हनीं के खिलाफ कइल जात कवनो उत्जोग देस के एगो सोआर्थी वर्ग के कुचक्र के कारन भड़कल भीड़ के भदेस हड़बोंग में बदलत देर ना लागी। माने, ई भारतीय बिचार के पच्छधर आ एकरा बिरोधियन के बीच एगो अझुरा वाला बैचारिक जुद्ध अस बा। ई जुद्ध आपन–आपन बिचार आ बात के रखला भर के मान में नइखे।

पाछिल तीन–सवा तीन महीना में देस के अलगा–अलगा राज्यन में कवन–कवन ना खेला भ गइल। अघाड़ी का नाँवे महाराष्ट्र में अढ़ाई बरिस से जवन ना टेढ़–बाँगुर सरकार चलत रहे, ओकरा पच्छ में कवन बिचारवान बेक्ती सकारात्मक सोच राखत रहे? कवनो ना। छल, बल, लंठई, गुंडई, हत्या, फिरौती, अधरम, कुकरम कौन अनैतिक, अतार्किक, अलबताह काम महाराष्ट्र में रोजीना भइल करे? बाकिर तबहूँ, फर्जी सेकुलरिजम आ लिबरलिजम के नाँव प देस पाखण्डियन के झाल आ गाल बजावत देखत रहल। सउँसे देस ओह युती–सरकार के हर तरी के गलथेथरई कइला के पराकाष्ठा देखत रहल। एह युती–सरकार के मुख्यमंत्री जवन पाटी, माने शिवसेना, से रहले ओह पाटी के पृष्ठभूमी आ पहिचान हिन्दू हित खातिर एगो अगुआ पाटी के रहल करे। बाकिर एह युती–सरकार में ओह पाटी के मुख्यमंत्री के अगुआई में आपन पहिचान के साफ उलट बेवहार करत लउकल। नेशनल कांगरेस पाटी के जवन मुखिया, शरद पवार, एक समै शिवसेना के तत्कालीन मुखिया, बाला साहेब, के आँखी के किरकिरी भइल करसु, बाला साहेब के पूता मुख्यमंत्री बने के फेरा में ओही शरद पवार का कोरा में बइठ गइल। ना अपना दिवंगत बाप के गरिमा, बेवहार के चिंता कइलस, ना आपन पाटी के भविष्य के फिकिर। तवना प एगो भोंभाड़ भइल मुँहें अपान–प्रान के साधक, शाब्दिक–विष्टा के उत्सर्जक, एगो छुतहर सहकर्मी के बेतुक बकबकी से जनता में मारि कुफुत भ गइल। तले अचके में ई कूल्हि के एकवटियावत महाराष्ट्र के सियासत में जवन ना खेला भइल, जे मुख्यमंत्री के गोड़ तरे जमीनवे ले ना, सूबा के राजगद्दी, आ सियासत से पाटी ले घिंचा गइल। शिवसेना के दू फार हो गइल। सूबा के सरकार गिर गइल। एह सभके पाछा कांगरेस के जवन हिनाई भइल बा, ई सभके बुझा रहल बा। बाकिर थेथर आ चलाँक बिलार के कबो लाज ना लागे। ऊ आपन आँखि बस मूँदत अपना फेर में परल रहेले।

दरअसल बात ई बा जे कांगरेस सेकुलरिजम का ओट में मुसलमान–तुष्टीकरन के निर्लज्ज खेला खेलेले। बाकिर, का एको तथाकथित सेकुलरन के, लिबलरन के, उन्हनीं 'माउथपीस' पत्रिका आ ओह गोल के अखबारन के पत्रकारन का ओर से एह कूल्हि के खिलाफ कुछऊ बोलात, इचिको लिखात कबो लउकलल? नाः ! त ईहे 'परसेप्शन' साधल कहाला। ईहे कहाला खुल्लमखुल्ला आपन एजेंडा चलावल। टूलकिट के एग्जेक्यूट कइल। दोसर हाल देखीं। केरल में, जहँवाँ के मुख्यमंत्रिये सोना के तस्करी में नामित बाड़े। ई देस के कवनो राज्य के पहिल सरकार होखी, जेकरा मुख्यमंत्री प, उनकर दूगो मंत्री प, मुख्यंत्री के खासमखास सखी प इस्मगलिंग के केस चलत होखे। बाकिर का कवनो सेकुलर, लिबरल, शहरी–नक्सली, कौमुनिस्ट बिचार के अखबार आ चैनल के पत्रकारन का ओर से कवनो सवालो पुछाइल? बवाल काटल त दूर के बात बा। बवाल काटे के राफेल के मामिला बा। जवना में कौनो बेजायँ ट्रांजेक्शन नइखे भइल। ई बात सुप्रिमवे कोट कहि चुकल बा। बवाल खातिर किसानन के हित में बनल कानून बा। हिजाब के बवाल बा, जवना के तथ्य में कवनो दम नइखे। ई ओह लोगन खातिर हद नइखे, जे अपना बिचार से कथित सेकुलर बाड़े, सोच से लिबरल बाड़े। त केरल राज्य के एहू केस में ओह पाला के पत्रकारन के बकार नइखे फूटत। केरल ऊ सूबा में से बा जहँवाँ कट्टर मुसलमानी धमक के बजार निकहा गरम बा। मुसलमानी धमक आ एह जमात के ई हाल बा जे बिरोध में मुँह खोलते जान के खतरा बा। बाकिर, मजाल जे वामी, कामी, सेकुलर, लिबरल, गुट आ पत्रकारन के बकारओ फूटित। सबले उप्पर, बंगाल के नाँव काँहें छाँड़ल जाव? एह राज्य के रहनि आ कारबार त अउरी गजब के बा। दू–तिहाई सीट से जीतल एगो पाटी आ ओकर मुख्यमंत्री, जवन महिला बाड़ी, जवन ना खुल्लमखुल्ला हिंसा के खेला कइली, कि मानवता त्राहि–त्राहि क उठल। ई कूल्हि केकरा बिरोध में, त ओकनी के बिरोध में जे पाटी आ मुख्यमंत्री के मंतव्य से सहमत ना रहले। ई लोकतंत्र के कवन रूप ह? बाकिर मजाल जे कथित सेकुलर, लिबरल के कीरा कटले मनइयन से भरल कोट कचहरी मीडिया पत्रकार के खँखारो निकलित। ई लोकतंत्र ना, राछछन के समाज के क्रूर बेवहार ह।

भारत के सनातन समाज एक सुरुए से हर तरी के मत–परम्परा के अपनावे आ अपना में समाहित

कइ लेबे वाला बिचारन के प्रश्रय देत रहल बा। अइसना सनातनी सोच के, हिन्दू बिचार के, कमतर बतावत खिल्ली उड़ावल कवनो खतरनाक खड्जंत्र से इचिको कमतर नइखे। ई खड्जंत्र राछछी सोच आ बेवहार के ओड़े वाला, आ पच्छधर बा। सन सैंतालिस से, मने, स्वतंत्रता मिल गइला के बादे से, भारत के बहुसंख्यक जमात, सोझ हिन्दू कहल जाव, के सोच में, मर्म में, कमतरी के अहसास पगावे के अइसन खड्जंत्र सुरू भइल, जे सही कहाउ त, बहुसंख्यक समाज खातिर छाती प सील धइला लेखा हो गइल रहे। पाछिल आठ–नौ बरिस से देस के बहुसंख्यक जनता अपना छाती प धइल सील के हटाइ के जागरुकता के अंगड़ाई लेवे लागल बिया। एक समै अजोध्याजी में रामलला के मंदिर रहस्यमय सवाल अस लागल करे। आजु ओजुगा विशाल मन्दिर के निर्मान हो रहल बा। काशी के बिसनाथबाबा के आँगन आजु निकहा फइलाव लेले कवनो चमत्कार लेखा सज–सँवर के जनता खातिर खुल चुकल बा। के नइखे जानत जे एह मन्दिर के कइसे ध्वस्त कइल गइल रहे? आ उहँवाँ कइसे ग्यानवापी महजिद बनावल गइल रहे? बाकिर समाज के एगो वर्ग जबरी ग्यानवापी महजिद के आपरूपी साबित करे में लागल बा। कचहरी के हुकुम से ओह महजिद के हालिया दौरा से जवन कुछ सोझा आइल बा, ऊ पीढ़ी दर पीढ़ी जन–मानस के बीच होत चर्चवे के साँच साबित क रहल बा।

देस के बहुसंख्यक जन पीढ़ी दर पीढ़ी मन्दिर प मुँहामुँही चलल आवत बातन के जनला के बादहूँ बलाते ग्यानवापी प आपन हक नइखे बतावत। बलुक न्यायालय के घोसना के इंतजारी क रहल बा। ई काँहें? एह से, जे हिन्दू जनमानस के जर में तर्क आ नीति के महत्व दिहला के आचरन बा। ईहे जवन सनातन परम्परा के मूल ह। बाकिर आन्हर जमात आ पंथ के लोगन के आचरन कइसन बा? त, बेर–बेर हिन्दू समाज के लहान बतावल। एकर परम्परा, संस्कार, सभ पूजा पद्धती के मजाक उड़ावल। हिन्दू प्रतीक–चिन्हन प कुतर्क कइल। जबकि आजु ई साबित हो चुकल बा, आ एक तरहा से हर रोज साबित हो रहल बा, जे सनातनी भा हिन्दू पद्धती के बेवहार आ संस्कार में बैग्यानिकता के अस्तर निकहा ऊँच रहल बा। बाकिर सनातनी बिचार के खिलाफ खाद–पानी मिल रहल बा ओही सेकुलरन, लिबरलन, कौम्युनिस्टन आ शहरी नक्सलियन से, जे भारत के मूल बिचार, हिन्दू परम्परा आ समाजिक बेवहार से घिनाइले नइखन स, बलुक बेतुके खँउँझाइलो रहेलन स।

मनोदशा आ प्रवृती के हिसाब से तीन तरहा के गुन आ एकर मेल के मनई होले। ऊ तीन गुन ह, सत, रजस आ तमस। एही तीन गुनन के मेल–मिलावट से कवनो बेकती के मूल प्रवृती बनेला। कवनो समाज के अधिकांश मनई सात्विक बेवहार के आदती हो जाला, मन से नरम हो जाला। अइसनन के समाज तामसिक प्रवृती वाला लोगन से फरिका रहे लागेला। अलगा जीये, अलगा बरताव करे लागेला। कारन, जे अइसनन के सोच, बिचार, अध्ययन, बेवहार तामसिक प्रवृती के मनइयन आ जमात से ढेर–ढेर ऊँच हो जाला। मन से कतहीं ऊँच बेवहार करे में सच्छम अइसन मनई, आ अइसनन के जमात, सरीर से अबर, दूबर हो जाले। शास्त्र, तर्क आ बिचार से मजगर अइसन जमात अस्त्र–शस्त्र के प्रयोग करे में अकसरहाँ अच्छम हो जाले। तब सात्विक बिचार आ गमखोर, माने सहिष्णु, जमात के तामसिक गोल के मनइयन से बचावे खातिर, उन्हनीं से रच्छा करे आ सहज बढ़ंती खातिर राजसिक, बलवान, कड़ेर बिचार के लोगन के जरूरत होला। जे शठ संगे शठ, त उदार संगे उदार के बेवहार में सच्छम होले। बल, रोआब, सोआरथ, परिश्रम आ आपन लच्छ के लेके महासुरियाह मनइयने से तामसिक लँहेंड़न से रच्छा हो सकेला। तन से मनई, मन से जानवर राछछ लोगन से बेवहार 'काँट के काँट निकलेला' वाला होला। ई बेवहार राजसिक प्रवृतिये के लोगन से संभव बा। अइसना लोगन के लेके श्रीमद्भाग्वद्गीता में भगवान कहलहूँ बाड़े,

यत्तुकामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः।
क्रियते बहुलायासम् तद्राजसमुउदाहृतम्।। (आ० १८, श्लो०२४)

आजु हिन्दू समाज के अइसने श्लोक आ अइसने पाठ के बारंबार फेरू मन पारे के परी। आपन धर्म, आपन नीति आ सनातनी परम्परा से विरत होत जात, भा हो चुकल, समाज के आपन वांगमय का ओर बढ़े के परी। अपना मूल परम्परा के वैग्यानिकता, आ एकर बल–दम जाने–बूझे के परी। तामसिक लोग तन आ मन से राकस होले। नकारात्मक बिचार से भरल होले। राकस प्रवृती वाला मनई लोगन के राछछी उत्पात के खिलाफ कृष्ण–कन्हैया अस राजसिक

दम–खम आ बिचार वाला लोगन के जरूरत होला। 'ढेर तकबऽ, त आँखि काढ़ि लेब' के चढ़ल ताव से बरोबरी के भाव राखेवाला के जरूरत होला। भारत में आजु हर बसिष्ठ, हर बिश्वामित्र के राम–लखन के जोड़ी चाहीं। साँच बात ई बा, जे राछछ लोग मन से मूरुख ना, बलुक नकारात्मक होले। बिचार से अहंकारी होले। जे किसिम–किसिम के रूप धरे में माहिर होले। ई रक्तबीज हवें स। ना खतम होखे वाला रक्तबीज।

रक्तबीज बेर–बेर किसिम–किसिम के आपन रूप, रंग–ढंग बदलत रहेलन स। रक्तबीजन के संहार हरमेस चलत रहे वाला क्रिया होला। अबहीं के दौर में हर कौम, हर समाज, हर जाती में अपना–अपना हिसाब से रक्तबीज तत्पर बाड़न स। सत्ता कवनो तरहा के होखो, देस के राजनीत में कतना ना पाटी रक्तबीजे के रूपधारी, नामधारी लउक रहल बाड़ी स। इन्हनीं के बेवहार में ऊ पाखण्ड आ दोगलई सोझ लउकेले, जे कौ हाली ई सोच के मन अचम्भा में परि जाला जे का एह पटियन के नेता लोग फजिरे–फजिरे आपन मुँह आईना में देखतो होई? कांगरेस एहकु अलख के जगावनहार अस बीया। काँहें, जे कांगरेस के मत, एकर वाद, एक मंत्र–साधना खलसा 'सत्ता पवला' खातिर बा। येन–केन–प्रकारेन, केन्द्रीय पकड़ त सर्वोच्च इच्छा ह, सूबहूँ–सूबे, कइसहूँ काँहें नत होखो, सत्ता भेंटा जावो। एह खातिर पड़ोसी पाकिस्तान, भा चीन संगे मुँहचूमाचुमियो से कवनो परहेज नइखे। ई अप्राकृतिक–प्रेम कौ हाली उपटि के दिठार होत रहल बा। देस आ समाजिकता से कवनो सरोकार नइखे। अरबन नक्सल कवन काँइयाँ थेथरन के नाँव ह, ई अब का कहे के बा ? अपना सोच, अपना बेवहार आ कारगुजारी से इन्हनीं के संवेदनशील लोगन के भक्क क देले बाड़न स। शिक्षा के तंत्र होखो, प्रशासनिक बेवस्था होखो, हर जगहा इन्हनीं के सोर भेंटा जाई। सबले ऊपर न्यायालयन तक में अइसन व्यवस्था गते–गते रेंगत–रेंगत पहुँच बना चुकल बिया। जेकर थुथुन कतनो कुँचाव बेर–बेर मुँह उठा के तत्पर हो जातिया। एहसे रक्तबजी तत्वन से सचेत रहल जरूरी बा। ●●

एम–2/ए–17, पी0डी0ए0 कॉलोनी, नैनी, प्रयागराज–211008, उ0प्र0 मो0 सं0–9919889911

गजल।

कादम्बिनी सिंह

देखऽ तानी कि कबले बिहान होई
ऊ अन्हरिया में कतना हरान होई।

आँखि आपन उ, होई टिकवले उहाँ
सोना-रूपा क जहवाँ खदान होई ।

बाँटि देतऽ त तुहऊँ हलुक होखितऽ
तहार बोझवो इ,तोहरे समान होई ।

दम्भ जहिए लोटा जाई भुइयाँ तोहार
तबे जिनिगी के असली उठान होई ।

जब जइहऽ, सचेते उहाँ जइहऽ
जहाँ खेतवन में लउकत मचान होई।

का भुला पाई , भलहीं उ दूरे बिया --
ओकर गँउवें में अँटकल परान होई।।

– मोती नगर, परिखरा, बलिया (उत्तर प्रदेश 277001)

दू गो कविता

✍ नीरज सिंह

(एक) माफीनामा

बहुत दिन के बाद अइला प
कतना बुझल बूझल लागत बा
कहिए से बंद
हमार गांव वाला घर !

लागता जइसे
कवनो बच्चा होखे
अपना माई से रूसल
भा जइसे माइए होखस
देर से घरे आइल अपना बेटा से
खिसिआइल ।

घर के बाहर के दिवारन प
पसरल लतर बढ़ियाइल बाड़ी स
बेपरमान
अंगना में उगि आइल बाड़ी स
तरह तरह के घास
पौध सूखि गइला के चलते उदास बाटे
तुलसी चौरा
सुखा गइल बा चापाकल
पसरल बा एगो डेरवावन सन्नाटा ।

ओसारा के देवाल पर
धूरि गरदा से धुंधुआइल
बाटे माई के फोटो
पोछला प चमके लागल बा

माई के चेहरा -
‘‘ आइल बाड़ बबुआ !
नीमन बाड़ नू सपरिवार ?
बबुआ कइसन बाड़न स ?
अबहीं पढ़ते बाड़न स कि
नोकरी चाकरी धइलन स कतहीं ?
आ बड़की बुचिया कइसन बिया हो ?
बड़ी मयगर रहे
आवत रहे त हमरा के छोड़ के तहरा लोग संगे
जाए के नाम ना लेत रहे !
ओकर मन लाग जात रहे एहिजा ।
ओसही जइसे हमार मन गड़ा गइल रहे
एह अंगना के माटी में ।

कहाँ गइनी हम तहरा लोग संगे कबहीं
कतहूं !
रटते रह गइल लोग सभ भाई
बाकिर हम अपना ससुर के
बनवावल घर छोड़ के कहां जइतीं बचवा !
कइसे जइतीं हो
घर में संझवत के देखाइत बबुआ ? ‘‘

मन में आवता
पूछीं कि तहरा चल गइला के बाद
अब के देखावत बाटे संझवत के दिया
ए माई ?
जब ले जियलू
घर अगोरे के चलते
दूर रहलू हमनी से
ना अपने सुख से रहलू
ना हमनिए के अपराधबोध से मुक्त होके रहे देलू
कबहीं!

जइसे अबले करत रहलू क्षमा
तसहीं अब हमेशा
खातिर कर दीहऽ
माफ ए माई
काहे कि
दिया देखावे के नाम प

हम आइल बानी सउँपे घर के चाभी
हमेशा हमेशा खातिर
छोटका चाचा के

माफ करिहऽ ए माई !
माफ करिहऽ !

(दू) पकवा इनार

पकवा इनार प के खेत
हमरा परिवार के शान रहे ।

बाबा कहत रहन हमरा से
लड़िकाईं में
जानत बाड़ बबुआ
सिपाही के नोकरी से
रिटायर अइनी त
सब जमापूंजी
लगाके किनले रहीं इहे
डेढ़ बिगहवा खेत ।

किनले रहीं इ बरियार नाभ धरती
आ हल्ला भ गइल रहे
चारो ओरिया गांव - जवार में
'बड़ नू कमाई क के पिनसिन आइल बा
ईश्वरसिंघवा !
बड़का घरायन के लोग
देखते रह गइल आ
लिखवा लेलस पराहुत राय के
डेढ़ बिगहवा पकवा इनार।
एकरे के कहल जाला मरदाही रे भाई ।'

बाबा मुअलन आ
तीसरे साले नू रेहन धरा गइल डेढ़ बिगहवा !

धराइल रहे दिन दिदिया के
बियाह के
आ ओने बलेसर काका

कोड़ मरलन भोरे भोरे दुआर -'
तनिको घबड़इह जन भतीजा !
जइसे हिम्मत करके ठीक कइले बाड़
राजा घरे बेटी के बियाह
तसहीं करेजा चीर के देखा देबे के बा
बबुआनी
अपना जवार के' !
फेर का !
खूब जमके देखावल गइल
बबुआनी आ
अगिला साले चले लगलन स
बलेसर काका के
एक जोड़ा हर
डेढ़ बिगहवा के छाती प ।

तब से बहुत कोशिश कइलन बाबूजी
बकिर काहे के !
डेढ़ बिगहवा जहां रहे, तहें रह गइल ।

सूचनार्थ निवेदन बा
कि बाबूजी अब नइखन एह दुनिया में
हमनी के कुल्ह भाई बड़ले बानी जा
एही दुनिया में
आ साँच कहीं त नाहियो बानी जा ।

भरपूर कोशिश हो रहल बा
लइकन के नीमन पढ़ाई करावे के
नाम प
पकवा इनार प के
डेढ़ बिगहवा से जान छोड़ावे के ।

❑ वीर कुंवर सिंह नगर, कतिरा,
आरा - ८०२३०१.

चंद्रेश्वर पाँच गो कविता

(एक) बैनीआहपीनाला

प्यार के रंग
कइसन होला
का खूब गाढ़ लाल
ओढ़हुल के फूल नियर

का खूब गाढ़ पीयर
सरसों के फूल नियर

का खूब गाढ़ नीला
अलसी के फूल नियर

का खूब गाढ़ हरियर
पानी के घास नियर

का खूब गाढ़ कत्थई
पाकल सेब नियर

का खूब भक-भक गोर
चाँन के अँजोरिया नियर

आखरि कइसन होला
रंग प्यार के

का रंग प्यार के
बैंगनी होला

आसमानी होला
नारंगी होला

का प्यार के रंग में
शामिल नइखन स
सब रंग
दुनिया के

एकरा में शामिल
रंग गाढ़ सांवर .....
राम आ किसुन वाला
भा करिया
सूफियन के लबादा वाला
शामिल एह में
बैनीआहपीनाला .....!

(दू) लापता सूरज

ई पानी बेपानी बा
एकरा से के पियास बुझाई

एह से के नहाई
मलि-मलि के देह
एकरा में त
मिलल बा आर्सेनिक

हवा में साँस लिहल
कठिन बा
गंगा ,सरजू आ राप्ती में मारल
डुबकी कठिन बा

घाट प काई बा
ठेहुना में बाई बा
ना एकर दवाई बा

साँईं के कतो नइखे
अता-पता
लापता बा हमार
सूरज दुपहरिये में !

(तीन) केवना डाढ़ि प कोइलर

आम-महुआ के उजरि गइल
सउँसे बगइचवे
केवना डाढ़ि प बइठि
बोलिहें कोइलर

के गाई फाग आ चइता
बीता भर के मास्क बान्हि के
मुँह प

के बजाई झाल
ढोलक आ डफ

बोल के कढ़ाई
फाग आ चइता के

तिवारी बाबा ना रहि गइलन
उन्हुकर बबुआ परइलन
बंबई परदेस

गाँव के घर
ढहि -ढिमिला गइल
शहर साँचो का त
आबाद भइल !

(चार) माई रहे से माइए रहे

माई रहे से माइए रहे
जस के तस
जइसे काल्हुए के जनमल
जनमतुआ होखसु
ओकर बबुआ

बबुआ बबुए रहलन
जनमतुआ से जवान भइल रहलन
सरहद प जाए जोग
बात -बात प रिसियासु
बमकसु छने -छने

एक दिन आइल अइसनो कि
उन्हुका ना अड़ाइल
आ चलि गइल कटार
किरोध में
माइए के गरदन प
बहि चलल धार रकत के
रँगा गइल माटी
आँगन के

बबुआ त बबुए रहलन
भागे लगलन लेके
माई के माटी भइल देह
आ जात-जात दुआरे के सोझा
पहिलकी गली में
फेंका गइलन मुँहकुरिए
घवाहिल भइलन
भल से चूए लागल
मुँह से खून त
माई के करेजवा बोलल--
“ आहि रे मोर बबुआ चोटा गइल .....! “

माई रहे से माइए रहे
जस के तस
जइसे आजुए जनमवले होखे बबुआ के
बबुआ बबुए रहलन
अपना के जनमतुआ से जवान जानसु !

(पाँच) झूठ के थूनी प टिकल दुनिया

एह दुनिया में काम बा
जबुनके के
नीमनका के ना
एही से नीमनका लोग
ना रह पावे
ढेर दिन ले
एह दुनिया में
ओह लोग के विदाई
हो जाला जल्दिए

ऊ लोग ना बना पावेला
केवनो बेढब तालमेल

अझुराइल गोला
बनल रह जाले जिनगी
काँच सूत के
सपूत बने के चक्कर में
ऊ हो जाला लोग
शिकार दनवादूत के

टूटि -टूटि के
बिखरि जाला लोग
धूल में

धूरखेल खेलल
ना होखे बात
सभका बस के।

रंगदारी ना चला पावे सभे
होशियारी ना दिखा पावे सभे
हबकि के बोलल भा काटल
ना सँपरेला ऊ लोग से

आगे के छनल थरिया
लूट लिहल गरीब के
छज्जा के
खपड़ो आ नरिया
ऊ लोग से ना होखे

हमरा अब ई बुझाला कि
सच्चाई प ना
झूठे के थूनी प
टिकल बिया
ई सोगहग दुनिया

नीमनका ना
जबुनके के रंगे से
रँगाइल बिया
साहु जी के दोकान के
हरियर-पियर आ
ललकी मये बुनिया!

❑ 631 / 58, ज्ञान बिहार कॉलोनी, कमता, लखनऊ- 226028

भोजपुरी के शब्द संपदा
(संदर्भ–बरखा)

☑ जनार्दन प्रसाद शर्मा

बरखा के रितु कबि लोगके सिरजना के काल कहलजाला । बिरहिन के मन उकुसावत शरद रितु के अगोरे के तइयारी में जइसे दैव मन के बियोगबाथा के बहलावे के खातिर पूर्व मे एह रितु के भेज देले होखसु । सिंगार रसइ स्तिरी–पुरुष के आपसी अनुराग के बरनन परत्यच्छ करे वाला रितु हऽ । एकान्त स्थान, नदी तट, प्रिय के याद में मगन एकर उद्दीपक भाव होला । रोमांच, कम्प, स्वेद, आशा अनुभाव जुक्त ई सीजन साधु पुरुष लोग खातिर भ्रमण से रोक के जथास्थान बिसराम देवे वाला चतुर्मासो काहाला ।

भोजपुरी भाषा में कुछ कहावत बाड़ी सन जइसे –

उन्चासों पवन चल रहल बा ।

छप्पनो कोटि बरखा हो रहल बा ।

हवा के प्रकार संख्या तऽ उनचास गो बतावल जाला । कवि लोग आपना कविकन में एकर जिक्र करेला । गोसाइयों जी कहले बानी कि रामजी के जनम के समय उन्चासो पवन चले लागल रहे । एकरा अलावा तिरबिध बयार भी (सीतल, मन्द सुगन्ध) भी कहल जाला ।

बरसात के भोजपूरी में एकर परकीर्ती के अनुसार बिभिन्न नामन से लोक में परचलित बा ।

झींसी परऽता/तड़कऽता

फिसिर फिसिर कइले बा

आन्हीं–बूनी परऽता

बदबदाता/बरखऽता

बिरिष्टी हो रहल बा

मेल्हो मेल्हो कइले बा

गँवजियवले बा/झँकझोरऽता

उषमजले बा

सियरबियहवा बरखा होत बा।

झींसी परऽता मने अइसन पानी गिरल जइसे फुहेरा पिरिथवी पर छींटल जात होखे जौना में आदिमी कहीं घर से बहरी जाये में नहाई तऽ ना , बाकिर धोती कुरता धीरे धीरे गील हो जाई । बालमीकि जी अइसने बरसात के आपना रामायन में किष्किन्धा कांड में कहऽतानी –

'' जइसे सुरुज के किरिन से तपल आ लोर से भींजल शोक गरसित सीता

के लेखा भाप के बिलोपन यानी गरमी के तेयाग कइके धीमागति से लोर गिरा रहल बा ।''

तड़कऽता माने कि भयंकर सब्दन से तड़तड़ाके आवाज निकालत बरखल । बाल्मीकि जी के सब्दन में कहल जाउ तऽ –

'' जइसे जुद्ध स्थान पर मतवाला हाँथी चिग्घाड़त् परबतन के चोटियन से ओइसने जोरशोर से गरजत बादर बरखा गरजत बा आ बिजुली एह मेघ रूपी हथियन पर झंडी फहरा रहल होखे । ''

फिसिर फिसिर करऽता माने कि लगातार छोटी छोटी बुन्दन से बहुत धीमा गति से होखे वाली मन्द बरखा, जौन रास्ता में खाली पाँकिये पाँकी पैदा कर देव रास्ता साफ ना होके फिसलन खूबे बन जाउ ।

बदबदाता यानी कि अचानके बिना तइयारी के बड़े बड़े बून्द वाला शरीर पर हल्का चोट मारत बरसात । संत तुलसी जी अइसने बरसात के बरनन करत कहले बानी –

बूंद आघात सहहिं गिरि कैसे ।
खल के बचन संत सह जैसे ।।

एही तरे 'मेल्हो मेल्हो माने बहुत धीरे धीरे होखे वाला बरखा जौन थोड़ा समय में मन अकुताइ देव। रास्ता मे ना पानिये लागे ना सुखरखे रहो । बिचबिचवा हालत पैदा कऽ देव।

उखमजल बरसात के मतलब कि हवा बिहीन तापजुक्त आ बरसात के इन्तजार करावत आकास घेरले बदरी जौन बरसे के आतुर होखे बाकिर देरी करत होखे । अइसन बरसात में देहि में खजुअहट ओगैरह लच्छन पैदा होला ।

एगो खटिया–खड़ा बरसात होला, जवन राती खान होला ई बरसात ना घर में सूते देला ना आंगना दुआर पर । दुआर पऽ सूतल आदिमी के अचके बरिसि के जगा दी , ऊ खटिया बिस्तरा उठा के घर में ले जइहें तबले बरखा बन्द हो जाई आ हवा रहित तपन बढ़ जाई । उषमजि के खटिया बहरी ले अइहें तब तक फेरु से बरसात शुरू हो जइहें । इहे क्रम राति भर चलत रही आ नींन में खलल परले रहि जाई ।

गँवजियवले बा मतलब कि बदरी खूबे गहन ठसाठस आकास में भरल बा । बुझाता कि अब बरसी तब बरसी, बाकिर जल्दी बरसात होत नइखे ।

अब आवेला छप्पन कोटि बरखा के बारी । ई बरखा अक्सर भादो मास में बरसेला । एकरे के हिन्दी में घनघोर, मूसलाधार बरखा कहल जाला । एह बरसात में माटी, फूस के घर पुरान भइला पर पानी सोखि के भसि जालन सऽ । एमे छप्पन करोड़ के संख्या से कौनो मतलब नइखे । अइसने बरसात के बरनन करत बाल्मीकि जी अलंकारिक भाषा में कहऽतानी –

'' भँवरा रूप वीणा के मधुर झंकार हो रहल बा, मेढ़क के आवाज कण्ठ ताल लेखा बुझा रहल बा । बदरी के गरजल मिरदंग लेखा सूनर बाजा बाज रहल बा । एक प्रकार से वन में संगीत के उत्सव शुरू हो गइल बा । ''

''मेघ के ओदर (उदर) से निकलल कपूर के डली के सुगंध से भरपूर बरसाती हवा के मानऽ कि अँजुरी में भरि के पीयल जा सके । ''

घनघोर बरखा रितु में रेल में यात्रा कइल चाहें कार में बैठि के सुनसान सड़क पर दूनो ओर भींजत हरियाली निरखत अलगे किसिन के आनन्ददायी महसूस होला । अइसना में बरखा दरसन सृजनात्मके नू कहाई। ●●

❑ ग्रा0 पो0–मधुबनी, बलिया–277208,
मो0– 8922071575

दयाशंकर तिवारी

(वरिष्ठ कवि दयाशंकर तिवारी के सहज–सुभाविक लोकभाव के गीत पढ़े–सुने वाला के अनासो अपना भाव–संसार आ समय–संदर्भ में खींच ले जाला। सुभाविक–सुपरिचित भाषाई बिनावट में प्रसंगानुकूल स्मृति–बिम्ब, उपमा आ प्रतीकन से सजल उनकर गीत मानवी–जीवन संवेदन, दर्शन आ लोक–अनुभूति के मार्मिक अर्थच्छवियन आ व्यंजना से भाव विभोर कर देलन सऽ। जीवन–दर्शन वाला उनका गीतन के उनका गीतन के उनका मुँहें, सुपरिचित अंदाज में सुनल, बहुत सुघ्घर आ मनहर लागेला। 'माटी के महक' – उनकर पहिला कविता–संकलन रहे।

दयाशंकर तिवारी जी का रचनाकर्म में लोकसम्मत दृष्टि आ सुसंगत विचारशीलता बा। नियति के मार आ मान–मूल्यन का अवमूल्यन–क्षरन के फिकिर बा। अन्याय, असंगति आ बिपरीत–परिस्थितियन के चिन्ता बा, मानवीय सोच–सरोकारन के अनसुलझल सवाल–जबाब बा, बेवस्था के विडम्बना आ बिद्रूपता बा। कठिन कर्मपथ में पसेना आ आँसुवन से भींजल जीवन बा। एह जीवन के अँजोर खातिर विनम्र भाव आ आस्था से लोक के देवी–देवतन के स्तुति करत कवि सतत् रचनाशील बा। स्वर आ शब्द–साधना में, अपना सँगे लोककल्यान खातिर परम सत्ता से निहोरा आ विनती कवि का सुभाव में बा।

तिवारी जी के (कविताई के) जल्दिये प्रकाशित होखे वाली भोजपुरी के दुसरकी किताब से, उनकर पाँच गो गीत "पाती" का सुधी–मर्मज्ञ पाठकन खातिर इहाँ अविकल रूप में दिहल जा रहल बा। एम्में लोक भाव–भंगिमा का साथ, तेजी से बदलत समय–समाज के संघर्ष, पीर आ तस्बीर के अरथवान आ मरम छूवे वाली, अभिव्यक्ति आश्वस्त करे वाला रचनालोक के परतीति कराई।) संपादक

पाँच गो कविता

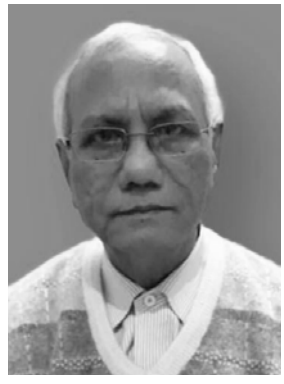

(एक) नाहीं लउके डहरिया के छोर गोइयाँ

नाहीं लउके डहरिया के छोर गोइयाँ
पीरा पसरे लगलि पोर पोर गोइयाँ।
देहिये भइल आपन अपने के भारी
निरदइया अबहीं ना छोड़े ब्यौहारी।
होइ रहल ओही में तोर मोर गोइयाँ।१।

आंखि कान ठेहुन जबाब दिहलें तन के
काल करे अनगिन सवाल चुन चुन के
होइ गइल बाटें विधनो कठोर गोइयाँ।२।

केतनों जतन केहू करे ना मेटाई
लिलरा कऽ लेख नाहीं पढ़ले पढ़ाई
जानी कबले लगब कवनी ओर गोइयाँ।३।

जिनिगी भर जाहिल गँवार हम रहलीं
मनवा के हर बतिया कहियो ना पवलीं।
अब तऽ बाँचलि जिनिगियां बा थोर गोइयाँ।४।

मटिया आ पनिया के देहियाँ बा छूंछे
अगिया अकसवा बतसवा से पूछे।
टूटति बाटे सनेहियों के डोर गोइयाँ।५।

ना कवनों थान बचल ना कवनो थाती,
रहि रहि के भभकेले तेलवा बिन बाती
इहे दियना कऽ अखिरी अँजोर गोइयाँ।६।

(दू) आगि लगलीं टँवसिया के पानी में

आगि लगलीं टँवसिया के पानी में
जहवाँ कविता फुटलि देवबानी में।

पनिया खउलला से गरम भइल रेती
गिरहस्थी घर में, बरे बहरे खेती।
लवरि लउके लगलि राजधानी में।१।

चिरई डेराइल ना उचरेली अँगना,
गइलें झँउसि सगरी, पिंजरा के सुगना।
जरलें अरमान आल्हर जवानी में।२।

सूघर सपन देखल, हो गइले गारत
जगह जगह लउके अदिमियत नदारत।
पाप के बात होखे पलानी में।३।

मसलि मसलि फूलन के खिले ओकर चेहरा,
जेकरे सिर बन्हल रहल शोहरत कऽ सेहरा।
रौनक छन भर में बदललि बिरानी में।४।

रतिया भर सुनि सुनि, काँपें लोगवा थरथर,
हर हर महादेव, अल्ला हो अकबर।
दहसाति फइललि ओसारी दलानी में।५।

लगलीं सेंकाये सियासत क रोटी,
झाँसे में आ गइलीं तहबन आ धोती।
जोखू जुम्मन झोंकइलें कहानी में।६।

आवऽ सभे मिलि के अगिया बुताईं
उज्जर कबूतर अकासे उड़ाई।
केहू पँखिया ना नोंचे नदानी में।७।

पनपे न पावे दरिंदन कऽ दुनिया,
सेवई आ गुझिया कऽ होखे मिलनिया।
फेरो फर लागे करघा किसानी में।८।

(तीन) छिटाई गइल चिरई कुरूई के दाना

भुइयाँ से कइसे बटोरी खजाना
छिटाइ गइल चिरई कुरूई के दाना।

उचरेलू सभही के अँगना दुआरे,
जनलू ना के, केतना तुहके दुलारे।
छीपल बा ना तुहसे आपन बेगाना।१।

बचवन के खातिर खन भुइयां अकासे
दिनवा भर रहि जालू भूखे पिआसे।
बूझे दरदियो ना जालिम जमाना।२।

घेरे बदरिया ना लउके डहरिया
घमवाँ में पँखिया जरावे दुपहरिया।
अइलें ना जिनिगी के मौसम सुहाना।३।

चरवा पर बा तुहरे सभकर नजरिया
गरवा परलि बा बिपतिया अनेरिया।
घर में ना बहरे बा कवनों ठेकाना।४।

कमवाँ न अइहें कवनों सिकवा खोटा,
जनिहऽ जनि केहू के अपने से छोटा।
जोगवत रहिहऽ आपन रिश्ता पुराना।५।
छिटाइ गइल चिरई कुरूई के दाना!

(चार) घन बँसवरिया में बोले रोज सुगना

घन बँसवरिया में बोले रोज सुगना
नई नई बोलिया सुनावेला हिरमना।।

बरखा में चुवेले पुरनकी मकनियाँ,
खुल जाले अँखिया जगाइ देले बुनियाँ।
राति भर जागि के जराई रोज दियना।१।

लगेले डरावनी हो राति भदवरिया,
चारू ओर कीच काँच अँगना दुअरिया।
कइसे दलनिया में बिछिहें बिछवना।२।

कइसे कऽ जड़वा में परिहें पहलिया,
पुअरो जरावे लोग कहि के परलिया।
जबर जेठनिया मारेले रोज मेहना।३।

तनकि तनकि बोले ढीठ देवरनिया,
सासु जी कऽ पहिरे सोने क करधनिया।
धइले बा लोगवा कहेले ढेर गहना।४।

कइसे क जीहें घरे लरिका परनियाँ,
कइसे क रोकि पाई केहू क जबनियाँ।
राति दिन सुने के परत बा ओरहना।५।

(पांच) एगो साँप मूस के बिल में पइठल

एगो साँप मूस के बिल में पइठल,
कुण्डली मारि के बइठल,
बीखि के बल पर अँइठल,
आपन बता रहल बा।

गाँव क सगरी लोग,
एक जगहा जुटि के,
"सरहंग चोर,
सेन्हि में बिरहा गावे"
वाली कहाउत कहि के,
चिहा रहल बा।

हाथ में लाठी लेइ के
केहू पटकत बा,
बिजुरी नियर,
केहू कड़कत बा,
आ घरवे में लुकाइल,
केहू रोबिआ रहल बा।

बिल के खाली कराई,
मूसन क रिहाई
आ ओकरे हक क लड़ाई,
लड़े खातिर,
एगो मंच बनावे खातिर,

ओपर बहस चलावे खातिर,
कुछ लोग जोर जोर से,
गला फाड़ि के
चिचिआ रहल बा।

साँप के लगे के जाई,
के ओकरा के समझाई,
शांति आ अहिंसा क पाठ पढ़ा के,
के समस्या के सुलझाई,
अबहीं आपस में,
इहे ना फरिआ रहल बा।

कुछ लोगन क विचार बा,
सरकारी खरचा से मूस के,
कवनो दोसर बिल बनवा के,
दे दिहल जाव
आ भविष्य में साँप के
चेतावनी देके,
छोड़ि दीहल जाव।

दूसरे खेमा क विचार बा
साँप के नेउर से,
लड़ा दिहल जाव।
नहला पर दहला,
भिड़ा दीहल जाव।
तऽ मसला सलटि जाई
युग कऽ इहे मांग हऽ
ना त बाजी पलटि जाई।

देशवो के एही तरे,
कुछ लोग चला रहल बा,
लोगवन के आपस में,
लड़ा रहल बा,
झगरा लगा के,
अझुरा रहल बा,
आ आपन कुर्सी
कइसों, कइसों
बचा रहल बा।

❑ मकान न0. 297, भीटी–मऊ (उ0प्र0–275101)
मो0– 9415680942

अक्षय पाण्डेय

(अक्षय पाण्डेय कवि-प्रतिभा आ कवि-कौशल से संपन्न अइसन प्रतिभासंपन्न कवि हउवन, जिनका कवि-कर्म में भोजपुरी-लोक अपना भाव-सुभाव, सोच-सरोकार आ भंगिमा से सजल बा। नव भाषा-शिल्प आ नया लयदारी के गीति-रचना के हुनर उनका कौशल के वैशिष्टय बा। भोजपुरी जीवन-जगत का राग-रंग, चाह-चिन्ता, आस-भरोस आ संघर्ष के सघल सार्थक अभिव्यक्ति कवि का गीतन में परतच्छ देखल-समझल जा सकत बा।) इहाँ उनकर निकले वाला गीत-संकलन से पाँच गीत अविकल रूप मे दिहल जाता। संपादक

पाँच -गीत

(एक) सुनऽ धरीछन !

सुनऽ धरीछन !
जिनिगी में बहुते जवाल बा
छन भर हँसी-प्यार संग जी ले ।
पानी के जी भर उछाल के
मुट्ठी में रेती सम्हाल के
गुनऽ धरीछन !

मन में ते बहुते मलाल बा
छन भर नदी-धार संग जी ले ।
काँकर-पाथर भइल आदमी
केतना बंजर भइल आदमी
चुनऽ धरीछन !

रहता बहुते ऊँच-खाल बा
छन भर बुधि-बिचार संग जी ले ।
आसमान में उड़े पखेरू
डार-पात से जुड़े पखेरू
तुनऽ धरीछन !

मौसम बहुते ढील-ढाल बा
छन भर सज-सँवार संग जी लऽ ।
रचे सगुन आनन्द नया कुछ
मन सिरजे अब छन्द नया कुछ
बुनऽ धरीछन !
एह सुगन्ध में तुक न ताल बा
छन भर हरसिंगार संग जी लऽ ।

(दू) आग लागल

आग लागल
बच सके जे कुछ
बचावल जाव घर में ।

मेज पर चश्मा
कलम टोपी घड़ी बा
आज कोना में पड़ल
सोचत छड़ी बा
थेघ देहलीं थाह हम अपना समय के
हो गइल बेकार बानीं एह उमर में ।

दियरखा कऽ बगल में
ऐना टंगल बा
भइल अब आन्हर
इ आपन भागफल बा
दाग चेहरा पर लहू के उभर आइल
तन गइल तलवार अपना अंश-हर में ।

जर रहल गीता
जरत कुरआन बाटे
जर रहल सँइचल
सकल सामान बाटे
बन्द बा पिंजरा तनी खोलऽ झपट के
मर रहल बा नेह कऽ सुगना लवर में ।

मर्सिया फिर लोग
काहें गा रहल बा
ई चिराइन धुआँ
काहें छा रहल बा
डार पर बइटल कबूतर सोच में बा
फूल ना लागत असो एह गुलमोहर में ।

(तीन) निर्मला

घर आँगन देहरी दालान
कुल उदास भइल
धीर धरऽ
एतना मत रोवऽ तूँ निर्मला
धूप-छाँह मिल-जुल के ढोवऽ तूँ निर्मला ।

टूटे ना मन के ऐना
सम्हार लऽ तूँ
रूप अब अनूप लगे
अस सँवार लऽ तूँ

बिखर गइल बान्हल ई जूड़ा
त का भइल
आन्ही फिर डालि गइल कूड़ा
त का भइल
भीतर के घन अन्हार
हाथ से बहार के
आँखिन में सपना फिर बोऽ तूँ निर्मला ।

खोलऽ खिड़की
घर में सुघर हवा आवे
समय क मुड़ेरी पर
सुर-पंछी गावे
अँजुरी-भर ले गुलाल
हवा में उड़ा दऽ
घर के कोना-कोना
फूल से सजा दऽ

नींद में रही कब ले
नदी के गोहार के
थाकल चेहरा रुआँस धोवऽ तूँ निर्मला ।

चिरइन से चहक
पंख-तितली से रंग लऽ
सागर के लहरन से
जिये के उमंग लऽ
चाँद के हँसी
अपना ओठ पर उतार लऽ
तुलसी के चउरा पर
सँझवाती बार लऽ
अँचरा में गमकत
मन हरसिंगार धार के
हँसि-हँसि के जिन्दगी सँजोवऽ तूँ निर्मला ।

(चार) इहे कहानी बा

हर कोना बइठल हलकानी बा
अपना घर क इहे कहानी बा।

मुँह क भरे कठौती ओन्हल
चाकी चुप, चूल्हा उदास बा
बटलोही से लड़े भगौना
गगरी क लागल पियास बा
चिरुआ भर बस बाँचल पानी बा
अपना घर क इहे कहानी बा ।

आँख उरेहे सपना पल छिन
कागा अब ना सगुन उचारे
उतरी चंदा कब आँगन में
रोज अमावस काजर पारे
करिखा करिखा कुल जिनगानी बा
अपना घर क इहे कहानी बा ।

बा दबाव छत का देवाल पर
कइसे खुली नया दरवाजा
खूँटी-खूँटी भूख टंगल बा
आन्हर रानी आन्हर राजा
लोकतन्त्र क लाश चुहानी बा
अपना घर क इहे कहानी बा।

(पांच) बाबा के गँउवाँ

कारी लउर लंगोटा लोटा
अरवन याद पड़े
बाबा के गँउवाँ सिवान घर
आँगन याद पड़े ।

फेंड़ रूख चिरई-चुरुंग
सबके सनेह बाँटे
सबका सुख में पुलके सब
दुख में पुरहर आँटे

हरियर सपना हँसे नयन में
नाचे निरछल चान गगन में
मन में उठे उछाह त जइसे
बचपन याद पड़े ।

कल कल लहरे धार हिया में
साँस-साँस बिचरे
नदिया हरख असीसे सबके
दूधेपूत भरे

बदरी हँसि-हँसि काजर पारे
बिजुरी आँख तरेर निहारे
छहर-छहर बरिसत रस बुनिया
सावन याद पड़े ।

आज शहर में सबही
आपन-आपन घाव जिये
हर चेहरा अजनबियत ढोवे
अजब दुराव जिये

भीतर कइसन जंगल जागल
नेत नियत में देंवका लागल
अइसन असगुन में सनेह के
मधुबन याद पड़े ।

❑ प्रवक्ता (हिंदी) इन्टर कॉलेज,
करण्डा, गाजीपुर, उ.प्र.

पाठक पतिक्रिया

'पाती': सउँवा अंक एगो साहित्यिक यात्रा कर्मनिष्ठा के

डॉ0 शारदा पाण्डेय

काँटन के बीच में खिलल–बिहँसत, प्रेम अनुराग से दमकत दृढ़ संकल्प आ कर्मठता के प्रतीक 'पाती' अपना तिरालिस साल के अनवरत प्रयास से :सौवाँ विशेषांक' के हिमालयी यात्रा पूर्ण कइलस। श्री द्विवेदी जी के अद्भुत अथक साधना के कथा–पुंज हऽ ई पाती। बदलत समय, परिवेश, समस्या, समाधान के छद्मवेसी रूप के बेलाग अनावरित करे के साहसिक अभियान हऽ ई पाती। घर–परिवार, समाज, ग्राम–नगर, श्रम–शोषण, धर्म, नेताई पाखण्ड आदि के परत–दर–परत उघारे, टूटन, ध्वंस के बीच मानवता के दीया जरावत रहे के आस्था के कतहूँ अँजोर–देबे के सहालग हऽ पाती। गीत–माँगर, कविता, लोकगीत–जीवन, खेत–खलिहान, लोककथा, बोधकथा, सत्यकथा के खाद पानी देके, जिआवे के ऊर्जा शक्ति हऽ ई पाती। ई प्रमाणित कऽ देले बा कि जदि व्यक्ति में दृढ़ता आ कर्मठता के प्रति ललक बा त ऊ असम्भव कहल जाए वाला लक्ष्य के भी प्राप्त कऽ सकेला।

कतना भोजपुरी के पत्रिका धनाभाव, समयाभाव, स्थानाभाव, संकल्पाभाव के कारण कुछ समय में बइठ गइली बाकिर ई 'पाती' एगो अकादमिक मानदण्ड के रूप में भोजपुरी पत्रिका के जीवनी शक्ति के अथक साधना के प्रतीक बन के ठाढ़ रहल। अंत में श्री अशोक द्विवेदी जी के बधाई अउर ऊहाँ के साधना तप के प्रणाम।

142, बाघम्बरी गृहयोजना, भरद्वाजपुरम, प्रयाग–211006

गजल

✍ शशि प्रेमदेव

(एक)

खूब गतरे-गतर फरी केहू
ठूँठ-जस देखि के जरी केहू

रो रहल बा सिवान में कुक्कुर
फेरु टूटी कहर... मरी केहू

का बिरिध का सयान का लरिका
फारि दी लाद ए‘ घरी केहू

दिन-दहाड़े अनेति समरथ के
देखियो ली त‘ का करी केहू

आँखि कमतर कहो त‘ केकरा के
हूर बाटे केहू परी केहू

गून गावत फिरी हिडिम्बा के
पढ़ि के देखे त‘ ‘बनचरी‘ केहू

घूस देके ‘‘शशी‘‘, बिजूका के
हीक भर हरियरी चरी केहू

(दू)

धीरे-धीरे आगा डेग बढ़ावे सीख रहल बानीं
अब हमहूँ जिनगी के थाह लगावे सीख रहल बानीं

हाथ बढ़ाके तरई छूवे के सपना कइसे देखीं
अबहीं तऽ माटी में फूल उगावे सीख रहल बानीं

जहिया से तूँ कहि गइलऽ कि खुश रहिहऽ, तहिये से हम
अपने हाथे अपना के गुदुरावे सीख रहल बानीं

केतनो तीत रहल होखे भा केतनो मीठ रहल होखे
हर बीतल घटना के हम बिसरावे सीख रहल बानीं

अबले जेकरा के डाहल-तड़पावल नीक लगल हमके
अब ओकरे के पुचकारे-बहलावे सीख रहल बानीं

जबसे भान भइल कि दुइए दिन के खेला बा जिनगी
हँसिके हम सबसे बोले-बतियावे सीख रहल बानीं

हम का बीनब रउवा के फाँसे खातिर जंजाल, ‘शशी‘
हम तऽ अपने अझुराहट सझुरावे सीख रहल बानीं

◻ – प्रवक्ता (अंग्रेजी) कुँवर सिंह इन्टर कॉलेज, बलिया

गजल

☑ **हीरालाल 'हीरा'**

सुर साधीं तऽ लय बिगड़े,बे-ताल के बनल तराना बा।
जिनिगी गावल बहुत कठिन बा, उलझल ताना-बाना बा।।

केतना अब परमान जुटाईं,अपना त्याग, समरपन के,
अरथहीन अब लागत बा सब,चूकत कूल्हि निसाना बा।।

तिल के ताड़ बनावल-गावल, राजनीति के फितरत बाऽ
राह देखावे अन्हरा अब तऽ, बिगड़ल नया जमाना बा ।।

कठिन भइल अदिमी पहिचानल, अइसन दौर चलल बाटेऽ
सज्जन दुर्जन चिन्हलो में अब,नजर के धोखा खाना बा।।

पइया -पातर उचिलावे में सूप बिचारा लागल बा
चलनी छेद- बहत्तर वाली,बइठल मारति ताना बा ।।

जेतने अधिका मिलल बा जेके, ओतने ऊ मुँह बवले बा
पीड़ित बनि के झुठहीं सब पर आपन धाक जमाना बा।।

अब तऽ इहाँ बजार-हाट बा, सपना बेचे वालन के
भरमे वालन के अब आपन, पूँजी सजी गँवाना बा।।

कतनो उड़ी उड़ान चिरइया, औकाते भर उड़ि पाई
परल जो आफत-बिपत त ओके मुश्किल मिलल ठिकाना बा।।

लोभी -मुरुख न चेती, चाहे कतनों ज्ञान पिया दीहीं
अदबदाइ के उहवें जाई, जहाँ जाल तर दाना बा ।।

☑ **अशोक कुमार तिवारी**

(एक) बैर बेलि जे उपजल भाई-भाई में,
जइहैं दूनो जने जरुरे खाई में ।

नीक-जबून कहे से पहिले सोच लिहीं,
जनि बोलीं कुछऊ कबहूँ अकुताई में।

जतने हिलब-हिलाइब ओतने खतरा बा,
रहीं साधिके समय नदी के नाई में।

परसउती तऽ गोड़ पटकबे कइल करी,
बाकिर धीरज हवे जरूरी दाई में।

एगो सेवेला एगो छटकावेला,
बहुत फरक बा रखवरिहा आ चाई में।

(दू) अगरचे सोच के बोलब केहू से बैर ना होई।
केहू से दुश्मनी रखले केहू के खैर ना होई।।

समय संसार के नदिया में डइनासोर ले डूबल,
बिचारीं ऊँट ले बड़हन गदह के पैर ना होई।

सुते जे नींन गफलत के दिना के दूपहर तकले,
इ तय बाटे कि ओकरा से सुबह के सैर ना होई।

हरिक सुख-दुख में बाटे जे सवाचत हाल रउवा से,
केहू अपने होई ऊ बूझ लीहीं गैर ना होई।

गजल

शैलेन्द्र पाण्डेय शैल

(एक)

संउसे उमिर जियान भइल का गजल कहीं
जियले बिपति के खान भइल का गजल कहीं।

चाहत पियार इश्क के चक्कर बुरा चलल
चोटहिल बड़ा परान भइल का गजल कहीं।

जनलीं न हम कि लोग नजर अइसे फेरि ली
आपन रहे उ आन भइल का गजल कहीं।

पइसा न गाँठ में न निंदरिये बा आंख में
बबुनी घरे सेयान भइल का गजल कहीं।

मजमा लगा के भीड़ में जमकल अन्हार बा
मुदई सुरुज आ चान भइल का गजल कहीं।

सँझहीं रहे सुनात कि नियरे फजीर बा
अबहीं ले ना बिहान भइल का गजल कहीं।

(दू)

साँस जवने घरी ठहरि जाई
बोझ सब माथ से उतरि जाई

चारि दिन तक ले रोई गाई लोग
का करी, फेरु सब बिसरि जाई

वक्त हर दर्द के दवाई हऽ
घाव कुछ दिन का बाद भरि जाई

जिन्दगी कुछ घरी के मेला बा
सांझि होई त सब छितरि जाई

सब संगेरले बा गांठि रूई के
एगो लुतुकी में सारा जरि जाई

रंग, खुश्बू केहू भी ना पूछी
फूल टहनी से जहिया झरि जाई

फेरु त चर्चा ओही के रहि जाला
काम जइसन जे शैल करि जाई।

(तीन)

नाँव के बस निजाम बा साहेब
झूठ सब ताम-झाम बा साहेब

सिर्फ मुंहवे के बादशाही बा
मन से सभई गुलाम बा साहेब

लोग रखले बगल में बा छूरी
मुंह में भर राम राम बा साहेब

झूठ गीता कुरान के किरिया
सांच एहिजा हराम बा साहेब

रोग बहरी बा दवा का जद से
अब त बहुते अराम बा साहेब

शैल मां -बाप के खियाल रखीं
सब इहें चारु धाम बा साहेब।

रेशमा सदन ,चित्रगुप्त नगर, गमहरियां, जमशेदपुर
जिला ..सरायकेला (झारखंड), पिनः ८३२१०८

दू गो गीत

✍ सुभाष पाण्डेय

(एक) डेढ़ कोस दउरे के ताकत,
सइ जोजन के राह,
मनवाँ, बड़ा कठिन निरबाह।

दुख दरियाव पीर पगडंडी सड़क कुटिलई काँट
कहीं प्रीति के प्याऊ लउके उहवों बंदरबाँट
के नल नील सेतु सिरिजा दे?
बान्हे सिंधु अथाह ,
मनवाँ, बड़ा कठिन निरबाह।

छावल छप्पर कब उजारि दे तोहमत के तूफान?
कब आँखिन में धूरि झोंकि दे अपने बनि नादान?
काँपत तन में आँकत मनवाँ
के होई ददिखाह?
मनवाँ, बड़ा कठिन निरबाह।

काँचे उमिरी चढ़ल माथ पर किंटल भर के बोझ
झुकल कमर जिनिगी के तहिए अब का होई सोझ?
धीरज धोती पेवन साटल
बा गमछा गुमसाह,
मनवाँ, बड़ा कठिन निरबाह।

बगलगीर अचके अझुरा के तानि दिही तलवार
गदहा हुआँ हुआँ करि जुटिहें नियम पढ़इहें स्यार
हंसा नीर क्षीर करते में
हो जइहें गुमराह,
मनवाँ, बड़ा कठिन निरबाह।

(दू) आजु बरसल ह।
सूरुज के ढाँकि के,
खेत-खेत माँकि के,
गरजि-गरजि डाँकि के, हरसल ह।
आजु बरसल ह।

बादर की डोली से
टारि के ओहार
केहु झाँकत रहल।
लोग कहल बिजुरी हऽ
बनि-ठनि तेयार
रूप आँकत रहल।
गलियन से गाँव ले,
माथा से पाँव ले,
मन के गहिराँव ले,
परसल ह।
आजु बरसल ह।

करिया धमधूसड़ तन
पाँव रोपि ठाढ़
ना हिलल ना डुलल।
पुरुआ के झोंका सँग
कजरी मल्हार
गाइ झुलुआ झुलल।
घर दुअरा लीपि के,
सोझे, ना छीपि के,
अइसन ई टीपि के,
सरसल ह।
आजु बरसल ह।

जेठ के झँवाइल तन
पवते जलधार
सिंधु फाने लगल।
सिरिजन के सुमहुत के
सतरंग बिचार
जग बखाने लगल।
पकड़ल कुदारी ना,
कोड़ल मुआरी ना,
खोलल किंवारी ना,
तरसल ह।
आजु बरसल ह।

❑ प्रधान सम्पादक- ''सिरिजन'' भोजपुरी ई पत्रिका।

तीन गो नवगीत

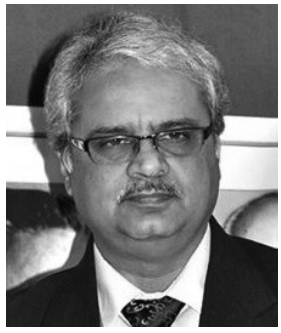

✍ सौरभ पाण्डेय

(एक) अजबे अँटकल, गजबे चटकल..

गजब सोच के मानुस बड़ुये
ढलमल लोटा बेपेंनीं के
बिना कड़ी के फानुस लटकल..
अजबे अँटकल, गजबे चटकल !

बिना बन्हाइल सोर, फेड़ ई
फइलल डाढ़ी छेंक रहल बा
एक सुरू से देस-काल पऽ
मनमानी गप फेंक रहल बा
बाकिर रउआ तर्क रखीं तऽ
लउकी एकर गाथा भटकल
अजबे अँटकल, गजबे चटकल !

फेंड़ जवन बा हरियर फरहर
जड़े पियावत लउकल माठा
बिन पुअरा के लगा पलानी
रेह करत बा बीघा-काठा
ऊँट गोल में पगलाइल बा
चढ़ल पहाड़े जबरी छटकल..
अजबे अँटकल, गजबे चटकल !

कही धधाई गाल बजावत
कवन काम के बरहम बाबा
कहि-कहि दूसे बाउर मंदिर
बोल न फूटे बोलत काबा
रिगा रहल जे सेनुर-टिकुली
देख नमाजी तालू सटकल..
अजबे अँटकल, गजबे चटकल !

(दू) देखऽ-देखऽ बिलरी के रूप !

बिलरी के भाग अब
कसहूँ त जाग अब
दूध-दऽही कइसे ?
छिंकवा घिंचा गइल..
देखऽ-देखऽ बिलरो के रूप !

गद्दी चढ़ल राजा
खात बाडन खाझा,
लगऽले लगावे
गली-गली लाझा
मीडिया के मजमा
थथेरई अउला
झुठओ के सच कइल..
देखऽ-देखऽ बिलरो के रूऽप !

बरऽदा बड़रुआ
घोंऽसु तेल कड़ुआ
कोल्हू त मोटाइल
बुद्धी तोर अड़ुआ
सोचु खुलल आँखी
कोठि आली कोइन
पिठिया पऽ छपि गइल..
देखऽ-देखऽ बिलरो के रूऽप !

गाँवे-गाँव मसला
हाँथे-हाँथ असला
खदकेला मन-मन
पंथ-वाद तसला
बिलरी लुका गइल
चुल्हिया बे आगी
लभऽराइल मइल..
देखऽ-देखऽ बिलरो के रूप !

(तीन) जे महाभारत मचल बा

जे महाभारत मचल बा
बऽड़-बड़का खेत भइले..
आमजन के बात का, जजबात का ?

नस-धमनियन में
बहत माहुर
सभन के माथ से चुइ
बन पसीना
पोर-पोरे खात बा..

चल रहल बा
जुद्ध के हड़कंप जानीं रात-दिन, ऊऽ..
बेकहल हड़बोङ अस
उफनात बा।

पढ़ि-गुनत हम
मन-महाभारत
कहीं तऽ जान गइनीं
धैर्य-गरिमा
छूटि के भहरात बा !

जीउ बख्ससु रामजी
बलु एक मन पत्थर भइल, दोसर..
करेजा भाव से चट्टान बा..
धूर्त बेचत बा सपन खुल्लम अन्हरिये..
रोशनी का फेर में
साँसत फतिंगा-जान बा
चित्त में
नीसा भरल बा आदमी के
बम-धमाका खून-खेला.. घात का ?
प्रतिघात का ?

घाव का हो..
भरि गइल बा ?
फाटि-फूटत बहि गइल बा..
के इहाँ बा
कान्ह धइ जे पूछ ली ?
कील ठोंकेला
चढ़ल रउदा कपारा..
जेठ के बिंडो कहीं
घुमिड़ात कतना बूझ ली !
ई हवा
मन-प्रान, तन, हुरपेट चिकरे-
रे कसाई ! .. भोगु धरती, जीतु सगरे,
मात का ?

❑ एम-२/ए-१७, पी०डी०ए० कालोनी, नैनी, प्रयाग-८

पाती

डॉ0 नन्दकिशोर तिवारी

पाती अइला पर गाँव होखे चाहे सहर; सभका मन में उत्सुकता जागेला– 'तात कहाँ ते पाती आई'? आज भले पाती के जमाना बीत गइल, लेकिन एगो समया रहे कि ऊहे समाचार, सनेस आउर आपन बात दोसरा भीरी पहुँचावे के बस एगुड़े साधन रहे। पहिले गाँव–जवार में पढ़निहार, लिखनिहार एकाध गो होत रहन। डाकिया कुल्ही गाँव भर के चीठी बाबू जी के पासे दे–देत रहन। बाबूजी नोकर से सभका के दुआरे पर बोलाके बाँट देस, बाँच देस। पोस्टकार्ड पर जवाबी ऊतर भी दे देस। डाकिया जवाबो ले–ले जास। केहू किहाँ चीठी–पतरी जतन से धरात रहे। ताखा पर नाहीं त ओरियानी में खोंस दिहल जाय। बाबूजी बकसा में चिठियन के राखस उनुकर दूगो गेयान के बात रहे– 'रदी कबो ना करी बदी' आउर दोसरका रहे– सकल बस्तु संगरह करे, आवे कोइ दिन काम। कवनो चीझ के उपजोगिता समय बतावेला, ना त अदिमी ना त चीझ।

लइकाईं में, डाकिया के देखते सभकर कान खड़ा हो जाय। केकर चीठी, आइल बा। जइसे चिड़ियन के घोसला देखिके कवनों बानर चाहें बाझ (बाज) आ गइल होखे। केकर चीठी ह कहवाँ से आइल बा। चीठी दोसरा के पढ़े के मनाही रहे। चिठियों पोसकाडे पर आवे। सभकरा खातिन पढ़े वाला खुलमखुला। कोई पूछ बइठे–ए बाबू केकर चीठी आइल बा–समाचार नीक बा न! अन्तरदेसीय त बाद में आइल। पोसकाड आना, पइसा के दाम में मिलि जात रहे। आज नीअन अनेत ना रहे। केहू के पतरी केहू ना पढ़त रहे ना चोरावत रहे। पोसकाड के नंग–धड़ंग रूप के केहू फुटलो आँखी ना झाँकत रहे। हँ मनीआडर पर लोगन के धेआन रहे। केकरा किहाँ कतना पइसा आइल। एकरा से ओकर ईजत–अवकात जनात रहे। बहरी से बड़ी पइसा आवत बा। अब फलनवाँ के का कहे के बा। चीठी त हफता भर के टोला चाहे गाँव के चरचा के विषय हो जात रहे।

एह चीठी में मरद अपना मेहरारू भीरी चीठी लिखसु। अइसन चीठी में साफ बात से जादा संकेत से बात होखे। लइकन के सिच्छा चीठी–चपाती भर जरूरे दिआत रहे। ऊ लोग आपन बात अपनहीं लिखस। कुछ लोग दोसरा लगहा से लिखवावे। सोस्ती सिरी सरब उपमा जोग लिखित फलाना जगह से फलनवाँ फलनियाँ के असिरबाद परनाम चाहें जथाजोग। एह में पूरा बतरस मेहरारू के ओर से होखे चाहे मरद के ओर से, पढ़त खूनी हलफा लेबे लागे। कतहीं–कतहीं संकेत में लिखाय। जइसे तोहरा बिना एहिजा मन नइखे लागत। एक भासा रहे 'चतो चहचरा चवि चना नए चहि चजा चम चन चन चइ चखे चला चग चत'। अब बूझत रहीं एह भासा के। मोबाइल से नीमन सनेस चीठी में लिखात रहे। ओह में लँगटपन न देखात रहे न सुनात रहे। बोले से लीखे में कलम से लँगटपन कम लिखाला।

परेम भी रहे त मेहरारू मरद के, जानल सुनल के, समुझल, देखल के, पाप–पून के भागी बनलकन के। मोबाइल में परेम ना रहे लिखो फेंको कलम नीयन।

पाती में कवनो पुरान ना लिखात रहे। बस थोरिका में परान के बात, हृदया के जुड़ा देवे वाला बात, बारंबार सोचे वाला बात, आपन गलती के इयाद दिआ देबे वाला आउर आपन भीतर के उफान के भासा के चिनौटी में बन कइके भेज देबे वाला। संछेपण आ 'प्रेसी' लिखे के अभेयास बाद में छात्रन के करावल गइल। पहिले एकर जरिया चिठिए रहे। चीठी लिखे के चीझ से जादा समुझे के चीझ रहे। आँख के भासा भरलो भवन में समझे वाला, कह देबे वाला होला। 'भरे भवन में करत हैं नैननि ही सो बात' लेकिन चीठी में लिखात रहे– कम लिखल जादा समुझिह। ईहे हृदय के भासा के विसेसता ह।

साँच पूछीं त समुझवार खातिर भाव के संकेत से कुल्ही काम हो जाला। जहाँ से जवन चीझ निकलेला ओकरा ओह में पइसे में कवनो मसक्कत ना करेके परे। एने जिया से निकलल आग ओने हिया में समा गइल। 'पाती' के कुल्ही बात 'सबद' में नाही 'बरन' में बरनाला बलुक ओकर हिसाब नैन, बैन आउर सैने के पास रहेला। बस बात आ काम पटरी पर आ जाए के चाहीं। खुश मन में उछाह के सोता बटुरात रहेला। उछाह के मन बस अपने जानल चाहेला। कहवाँ से के आइल बा, का समाचार बा। माई, भाई, बबुआ, गाँव घर के मन में ई भावना आवे कि ई पाती कहवाँ से आइल बा। बस नाँव सुनते पाती के आधा बाती, दिआ के बाती नीअन टहकार हो जाला। आ बात बुझाए लागेला।

पाती खातिर कई गो सबद बा, लेकिन अइसन सहज सुगंधि दोसरे भासा में नइखे। जइसे पत्र के पर्याय में, पत्रे पाती बन गइल। ओकरा से पंडित लोग बहुत काम लीहल। पत्रिका बना के जनमपत्री, लगन पत्री, लिखाए लागल। 'पत्री सप्तरिसिन्ह सोइ दीन्हीं'। सभकर जनम–मरण, रोग–बेआधि, विकास–हरास सभ बतावे लागल। इ कुल्ही मंगल के चीझ कहाइल। एगो जनम से बन्हाइल आ दोसरका बिआह से, नाया जीवन से। एहू में विवरने परधान रहे– कब तिलक, कब मँड़वा, कब बिआह। मानुस जनम में दोसरका अधेयाय सुरू हो गइल। अब दूगो मिलि के तिसरका अधेयाय के सुरुआत करिहें। एह से पाती खाली कुसल समाचार, मरद मेहरारू के बतकहिए ना रहे, एकरा में सभ्य मानुस जीवन के पूरा अखेयान भरल रहे। जीवन एगो बिरिछ ह। बढ़त रहेला। डाढ़–पात ऊगत रहेला। परिवार बना के छाँह करत रहेला। हावा के झुरझुर बतास में साँस लेत रहेला। एह से पाती एकरा के कहल गइल। 'पाती' आइल बा माने कतहूँ एगो पतई के जनम भइल बा ओकर किसलई रूप समने बा।

पाती आछा नाबँ बा लेकिन 'चीठी' भी एकरा के कहल गइल। चीठी माने एगो 'चीट' छोट कागद के एगो टुकड़ा। एकरा संगे पुरुजा भी लगा के बोलल जाला। चीठी के भले रउआ धीरे से थमा दीहीं लेकिन पाती देबे के त एगो पूरा अनुशासन बा। बड़ अदिमी से चीठी देबे में एगो हाथ ना दूनो हाथ से झुकि के चीठी दिआत रहे। समुझदार अदिमी के भेजल जात रहे। जे राजदरबार के अनुशासन, शान–सौकत, तहजीब जानत रहे। ऊहे राजा के चीठी थमावत रहे संसकिरित के नाटकन में एकर बहुते सारगरभित बरनन आइल बा।

बादसाह अपना राजकाज के बात जनता–जनारदन में चीठी–पत्री के जरिए भेजवावत रहन। सान्ती–असान्ति के जानकारी चिठिए देत रहे। कहवाँ कब चढ़ाई करेके बा आ कहवाँ मजगुजारी कवना इलाका से आवे के रहि गइल बा।

एकर कुल्ही पोल चिठिए–पतरी खोलत रहे। पाती में कुल्ही विवरण पोशीदा बात रहत रहे। एही से कोई ओकरा के खोल के ना देख सकत रहे। आजो डाकघर में लिफाफा सीलबन्द होला। पाती जिअनी–मरनी, जग–उपनेत जनेव–बिआह, सराध–भोजन सभकर एगुड़े सहारा रहे। पतुरिया लोग अपना परेमी के एही से बोलावस, संवाद भेजस। उनुकर नाँव पाती भेज के बतिआवे से पतुरिया पड़ि गइल। एकरा में अहथान, समय, रहता सभकर सनेस रहत रहे। दूनो के मिले के रहे। दूनो मिले खातिर खखुआइल रहत रहन। पतिऐ दूनों के परान रहे, जवना परेम में बरहमन–चमारिन के एगुड़े थारी परोसाला। दूनो एक हो के खालन।

पाती, कवि साहित्यकार आपुस में खूब लिखत रहन। सुख–दुख के साथे जानकारी कविता के आपन सवाद लिखि के भेजस। ऊ लोग में अतना भाई–चारा रहे, कि गोतिया देआद फेल रहन। बड़ रचनाकार के पाती सनूक में जोगा के गहना, सीका, नीयन रखात रहे। ऊ प्रेरना के परान रहे। आजो खातिर

ऊ साहित्यिक दस्तावेज नीअन जोगावे वाला चीझ बा। बिदेस में त ओह पतिअनके नीलामी होला। लोग चीठी से ज्यादा उनुका दसखत के जोखा के राखेला। महापुरुखन के 'पाती' थाती ह सम्हार के रखे के चाहीं। पाती के उर्दू में खत कहल जाला। खत के साथे–खतूत ओइसही आछा लागेला जइसे चीठी के साथे पतरी (चीठीपतरी)। भोजपूरी में एकरा के चिठिआँव कहल जाला। चीठी, लेखक के मानसिक अवस्था के थर्मामीटर के बोखार अइसन बता देत रहे। ओह घरी के देस काल, परिस्थिति, परिवार आउर देस दुनिया के विषय में उनुकर कुल्ही भाव आ जात रहे। 'चंद हसीनों के खतूत' पढ़ीं आ देखी पाती के रौनक। हसीनन के नजाकत त पतिए में लिखा सकेला। अइसन–अइसन शेरो–शायरी कि पढ़ते कलेजा में कँपकँपी लेस देला। कबो–कबो ई पाती बड़ा दुखदायी हो जाला। रउआ पतनी भीरी भी पाती लिखत बानी आउर पिताजी के पासे भी। दफतर जाए में देरी हो रहल बा। दूनो चीठी भेजल जरूरी बा। पतनी वाला पाती पिताजी के पता में रखा गइल आ पिताजी वाला पतनी या प्रेमिका वाला लिफाफा में। रउआ कवनो पाता नइखे। जब प्रेमिका बाप– के पढ़ली आ बाप रउआ प्रेमिका से पाती द्वारा मिललन तब एगो अलगे आनन्द तीनों के भइल। अब रउआ जिनिगी भर लजात रहीं, अपना करनी से। एगो हमार मित्र अपना परफेसर किहाँ रहत रहन। पाती लिखे के रोज मन करे। ओने से आवे वाला पाती के बारंबार दू चार हाली पढ़े खातिर ऊ ले जाके ओकरा के छप्पर में खोंस देस। गनेसजी के वाहन ओकरा के देख लिहलन आ ले जाके उनका प्रिया के पतरी पिता–माता के बिछावन पर गिरा देलन। घर छोड़े के पड़ल उनका। मतलब ई कि पाती एक बेरी के पढ़े वाला चीझ ना ह। ओकरा के बारंबार पढ़े के मन करेला। मन पाती पढ़ला से उबिठिए ना सके। अतना रस ओह में होला। ऊ परेम के परतीक ह, परेम के मूरत ह, परेमी के छछात सूरत आ सीरत दूनो ह, हिरदया के परतच्छ सरूप ह। कुल्ही गेआन के सीमा ह। एही से बहुत अदिमी ओकरा के मरे तक ले साथे राखेला, आ रोज पढ़–पाढ़ि के जीअत, मूअत रहेला।

एह चीठी से फिलिम के भाई लोग बहुते काम लेलस। उनुका प्लॉट में बड़का–बड़का उलटफेर, ई पाती करा लेदस। जइसे पाती महबूबा के ना मिलिके गार्जियन के मिल गइल चाहें कवनो सहेली लेके कुल्ही रहस्य जान गइल। 'संगम' नाँव के फिलिम में चिठिए के रूप 'विलेन' के पहचान हो गइल। साठ–सत्तर के दसक में 'बोलराधा बोल संगम होगा कि नहीं'। सभका मुँह पर रहे आ अदिमी भितरे गुनगुनास। 'चीठी आई है, आई है, चीठी आई है', के गीत लइकन के मुँह से निकले आ माई–बाप, परेमी जे जइसन रहे, मन में ओइसन परेम भर दे। ओह चीठी में अपना वतन के इयाद समाइल रहे। ऊ चीठी ना रहे वतन के मीठ माटी के इयाद से भरल अमिरित के गिलास रहे। 'पाकीजा' में मीनाकुमारी के राजकुमार गोड़ तर चीठी रखि के, कहत बाड़न तोहार कोमल पैर जमीन पड़े लायक नइखे। 'कठिन भूमि कोमल पदगामी' के नीमन अनुसरन करे वाला तोहफा देत बाड़न। मुकद्दर के सिकंदर में एगो लइका लिखे पढ़े जानत बा, आ एगो नइखे जानत, आपन बात दोसरा से लिखवावत बा। एह चीठी के इतिहास केकरा से ना परेम करववलस आ केकरा से दुसुमनी ना मोल लिहलस। सिनेमा होखे चाहे कथा कहानी के इतिहास, सगरो चीठी के करामातो के इतिहास ओह में भरल बा। चीठी में अदिमी के करम आ भाग दूनो लिखल रहेला। भले कोई के मत बाँचे आवे। गालिब जइसन सायर साहित्य में कबो–कबो जनमेलन। ऊ चीठी के महत्त्व के जइसन समझलन ओइसन अबहीं ले कमे कवि लोग समझले होइहन। कहताड़न– 'कासिद के आते–आते एक और खत लिखूँ मैं। जानता हूँ वे क्या लिखेंगे जवाब में' कासिद, डाकिया के कहल जाला ओकरा आवे के पहिले एगो खत लिखा जाए। ई खत लिखे के जनून रहे। चीठी का होत रहे, तसतरी में जइसे कोई करेजा के निकाल के रख देले होखे। गालिब के पतिअन के सँगरह पढ़े लाएक बा। साहित्यिक लोग खातिर त ऊ महल बा बार–बार देखे आ पढ़े वाला। पढ़त रहीं गुनत रही ओकरा शैली–पर मुगुध होत रहीं।

हिन्दी के कवि बिहारी जी अपना दोहा खातिर अबहिनो आपन दोसर जोड़ी ना लागे देलन। उनुकर हिसाब ई बा कि बिरह के विकलता चिठिए में लिखा सकेला, भले चीठी में एगो अछर मत लिखाव। बिना अछरो के जदि चीठी भेजल जाव त परेमी ओइसहीं विकलता में पढ़ी। अकेला में चल जाई। अब ओकरा हाथ में चीठी रहे के चाही। देखीं– 'बिरह विकल

बिनहीं लिखी पाती गई पठाइ। आँक विहीनीयौ सुचित सूने बाँचत जाय'। ओकर धेयान बिना जोग कइले लागल बा। एकान्त में जाके सवधानी से बाँचे में लागल बा। चीठी जदि परेमी के, तिरिया के मिलत बा त ऊ अपना भाग के सराहत बाड़ी। चीठी का ह भगवान के परसादी ह। हाथ में लेते ओकरा के चूमत बाड़ी, कपार पर चढ़ावत बाड़ी, फेर हृदय से लगावत बाड़ी आउर दूनो अपना भुजा में लेके ओकरा के साट लेत बाड़ी। बारंबार बाँचत बाड़ी, मन कहवाँ भरत बा, त फिर ओकरा के समेट के रख देत बाड़ी। दोहा ह– 'कर लै चूमि, चढ़ाय सिर, उर लगाय भुजभेंटि। लहि पाती पिय की तिया, बाँचत धरति समेटि'। एह दोहा में परेमी के हाव, भाव, चाव (छाव) कुल्ही एके साथे हाथ, आँख, सिर, हिया, भुजा सभके परस के हिरदय के भाव के साथे एबो चलत–फिरत, मूरत में बदल देत बा। बिरह में जवन जाने के ईछा हर घरी लहरत रहेला ओकरा के सकार करत ई दोहा चीठी के मानवीकरन कर देत बा। कविता में चीठी के मसाला केहू कतनो कोसिस करे एस0 एम0एस0 लेखा आइए ना सके। ई जिगर से निकले वाला चीझ ह। एकरा में बुधी–विचार के जगहे नइखे। पहिले त अँगुरी से लोग खून निकाल के आ औठ में बोर के तब चीठी लिखत रहन। बाद में जिगर के खून से लिखाए चाहे नाहीं लिखाय, ओकरा के कहे के चलन हो गइल–खूने जिगर से लिखल खत के बाढ़ मजमून में आ गइल। एही से लोग पोस्टमैन के रोजे इन्तजार करस। चार पहर में दू पहर आरजू में आ दू पहर इन्तजारी में पूरा जीवन अइसहीं बीत जात रहे। चीठी के बात सुनत लागत बा कि ऊ परेम, ऊ परेमी, ऊ प्रेमिका लोग कवना देस में चलि गइल। अब 'मोहब्बत की नहीं जाती, मोहब्बत हो ही जाती है। जवानों की जवानी में सिकायत हो ही जाती है', अब कहाँ होता कुल्ही शिकायत पेटी एक एकट्ठा होके रेल, डाकघर में चल गइल। जब उपलब्ध बा त सिकायत काहें के। पाती खाली परेम आ शिकवा शिकायत के ईश्तहार ना रहे। ओकर दस्तावेज रहे। 'लिख दिया कि समय पर काम आवे'। समये लइका जवानी आउर बुढ़ापा (जरा) के भेद बतावेला। एह से जवानी के इयाद बुढ़ापा में बहुत काम के चीझ होला। लोकतंत्र के सासन में त हजारों चीठी रोज लिखाला। अब चीठी लिखे के बहुत औजार आ गइल, टाइप करके भेजीं। ना होखे त कम्प्यूटर पर लिखीं लिखवाईं। साफ अच्छर में भेजीं। जवन लिखत बानीं ओकरा के दोसरों के जनाईं। ओह में त खाली सिकायते लिखा सकेला। अफसर चोर बाड़न, विधायक मुखिया, चोर बाड़न। माहटर पढ़ावत नइखन, तनखाह भर लेत बाड़न आदि, इत्यादि। ओह में उतसुकता कहाँ बा? ई सभदेखार बा। पोसीदा बात एह में कुछ रहित तब न चीठी। एही से बिआह के दिन के फोटे बूढ़ो–बूढ़ी सेहत के माँजत धोवत रहेला। लोग असहीं ओकरा के ना दलान में टाँगे। हमार ओह घरी के ईहे फोटो ह।

पहिले के सूगो, कबूतर पाती ले जात रहन। कतहीं–कतहीं हावा भी उड़ा के ले जात रहे। ओह में पाती फड़फड़ात आपन जीवन कथा कहत रहे। रूक्मिणी के चीठी बाम्हन देवता ले जाके अपना हाँथे किसुन भगवान के देलन। इतिहास भरल बा एह पाती के करतूत से। लेकिन पाती के रसगर बनावे के जवन काम गोसाईं जी कइलन ओइसन कवनो कवि ना हमरा भेंटाइल। ओह में कुल्ही रस एके साथे मिलल बा। बटुरा के, एके जगहा आ गइल बा। ई प्रसंग बालकांड (मानस) में आइल बा। ओकर मथेला अतने हो सकेला कि 'तात कहाँ के पाती आईं।' एकरा में पाती कइसे दिआला/पाती परेम में कइसे लोर बनि जाला? परेम आ अनन्द दूनों पाती में समाइल रहेला, चीठी पढ़ते कइसे सरीर गनगना गइल चकरबरती राजा दसरथ के। गोसाईं जी लिखत बाड़न कि हृदय में राम आउर लछुमन बाड़न, हाथ में नीमन चीठी बा, राजा हाँथ में लिहले के लिहले बाड़न। का बा ओह में खाटा–मीठी कहिए नइखन पावत। उनका धीरज धरे के परल तब साभा के बता सकलन। भरथ जी खेलत–खूनत बाड़न। खेलवाड़िअन के न खाए के सूध रहेला ना घर दुआर के, लेकिन चीठी के बात सुनते–भाइयन के सुधि आ जात बा। हमार दूनों भाई कवना देस में बाड़न ई तऽ चिठिए बता सकेले। ऊ लोग कुसल से बा नऽ। फेरू एही बहाने रसरथ जी चीठी पढ़त बाड़न। अब इहवाँ गोसाई जी कहत बाड़न 'सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता। अधिक सनेह समात न गाता'। पाती के सुनि के दूनों भाई पुलकित हो गइलन। अतना सनेह बा कि सरीर में समाते नइखे। फेरू चीठी ले आवे वाला के राजा अपना भीरी बोला के बइठा लेत बाड़न आउर अपना बचवन के कुसल फेरू बतावे के कहत बाड़न। अपना आँख से देखलऽहनऽ। ओतना दिन के बाद जबले मुनि अपना

साथे ले गइलन तब ले आजे साँच–साँच खबर मिलल ह। अदिमी झूठ बोल सकेला लेकिन पाती, झूठ ना बोल सके। पाती देबे वाला भी जनक के दूत अइसन होखे के चाहीं। कुल्ही काथा कहला के बाद दूत कहता– हे देव रउआ दूनो लइका के देखला के बाद अब आँख तर दोसर कोई देखाते नइखे। ई दूत के कहे के तरीका आ सारांस ह।

अतनो पर राजा मानत नइखन ओह पाती के अपने से जाके गुरु वसिष्ठ जी के कुल्ही बात बतावत बाड़न। ऊहो सुखी हो जात बाड़न। धन्य बा ई पाती कि जेकरा भीरी जाता, ऊहे सुखी हो जात बा। धन्य–धन्य हो जात बा। अब राजा दूत के सनमान कइके रनिवास में जा ताड़न। पूरा रनिवास के बोलाके फेरू पत्रिका बाँच के सुनावत बाड़न। ओकरा बाद दूत के कहल बात। माने पहिले पाती के बात तब मुँह के बात। ई पाती के बात के सचाई ह। अब रनिवास के लोग ओह पाती के हाथ में लेता आउर छाती से लगावत बा। ओह पाती में भी राम लखन के कीरत बा जवना के बारंबार राजा, रानी के समने सुनावत बाड़न। साँचों, लइका माई–बाप दूनो के होला। सहजे में राजा रानी दूनो सुनिके मगन बाड़न। अपना लइकन के बड़ाई कवना पुण्यात्मा के ना आछा लागी। ई ओह पाती के कमाल बा जवन राजा जनक जी भेजलें बाड़न। ऊ दूतो महान् बा आउर पाती भी।

कबो–कबो पाती के बदला में कवनो निसानी देके अपना बिरह के बात पठा दिहल जाला। मानस में 'दीन्ह राम तोहि कह सहिदानी' आ बात दूत अपने कहेला। सीता आ राम के बीच के वियोग के दूनों ओर के समान वियोग हनुमान जी कहत बानीं। ओइसन कहे वाला होखे तब ओकरा समने पतिओ फेल कर जाई। ओकर उपसंहार अतने होला– 'सीता के अति बिपति विसाला। बिनहु कहे भल दीनदयाला'। एह में बानी के जरूरत नइखे बस मानी लगा लेबे के बा। दोसर पातीं लछमन के बा। उहाँ के रावन किहाँ पाती भेजत बानीं। ई राम के ओरी से लिखाइल बा। रावन आपन दूत के भेजिके विभीसन जी के पाता लगावत बा। तब दूत कसहूँ जान बचाके रावन किहाँ जात बा आउर लछुमन जी के पाती से 'नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती'। रामजी के छोट भाई ई पत्रिका भेजले बाड़न। एकरा के बँचवा के छाती ठंढा करीं। एह पाती में पाती के दोसर पच्छ उभरत बा। रावन एह पाती के बावाँ हाथ में लेत बा। अपने नइखे बाँचत, मन्त्री के बोला के बँचवावत बा। लछुमन जी के बात सुनिके मन में भयभीत होता लेकिन ऊपर से मुसुका के कहत बा। ईहे पाती ह। जेकरा के सुनते रावन के होस ठेकाने लाग जात बा। न सेना बा, न हमलावर बाड़न खाली बात लिखल बा– दुइए गो बात बा– या त भाई विभीखन लेखा सरन में आ जा, राम जी से परेम करऽ ना त रामजी के बान के अगिनी में परिवार के साथ फतिंगा अस जरि के छार हो जा। माने दूनों में जवन आछा लागे करऽ।

पाती के मजमून ओतने होखे के चाहीं। ईहे कम लिखल आ जादा समुझल ह। ओइसहीं गोपी लोग पाती के भी आपन भगवान मानि के हियरा से लगा लेता। सूरदास जी कहत बाड़न कि ऊधो जी से पाती लेते राधा के हृदय बाँसन्ह उछले लागल आउर आँखिन में परेम के धार बहे लागल। ऊ पाती के अपना छाती से लगा लेहली। एकर बरनन सूर के मुँह से सुनीं–

निरखत अंक स्याम सुन्दर के, बार–बार तेहि लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलिकै ह्वै गई स्याम–स्याम के पाती।।

एहिजो कुल्ही मिटिक के खाली स्याम रंगे में रँगा गइल। स्यामे के रंग रहि गइल। भीतर बाहर एके रंगे में गोता के, पोता गइल। पहिले अछर के अंके कहल जात रहे। एह प्रसंग के रतनाकर जी अपना 'ऊधव सतक' में अइसे लिखले बानी। ऊधो के आवे के सनेसा जब ब्रज के गाँवन में आ गइल तब कुल्ही ग्वालिन नन्द के दुआरे झुंड के झुंड आवे लगली। सभका मन में बा कि हमरा के का लिखले बाड़न। पाती के देखि–देखि के सभे आपन छाती से ओह पाती के छुआए लागल। "पेखि–पेखि पाती छाती छोहनि सबै लगी।" पूरा कवित्त जादा कहत बाटे–

भेजे मन भावन को ऊधो के आवन को
सुधि ब्रज गावनि में आवनि जबै लगी।
कहै रतनाकर गोआलिन के झौरि–झौरि
नन्द पौरि–पौरि तब आवनि सबै लगी
उझकि उझकि पद कंजनि के पंजनि पे
पेखि–पेखि पाती छाती छोहनि सबै लगी।
हमको लिख्यौ है कहा, हमको लिख्यो है कहा,

हमको लिख्यो है कहा कहनि सबै लगी।

मतलब ई कि पाती के छाती से लगावे, पेखि बार–बार पढ़े के, जतने पढ़े ओतने छोह भरे, का लिखल बा, ओकर जिग्यासा, आ बार बार हिया से निकलत बा– हमरा के का लिखलन। लागत बा सभकर मजमून अलगा अलगा बा, लेकिन बात अइसन नइखे। पाती में त सभे बहुते कम लिखेला पढ़े वाला के जादा समुझे के परेला। ईहे कम लिखना, जादा समझना ह।

छाती से पाती के लगावल दूनों बात में समने बा। एगो में परेम बा दोसरा में व्यंग बा। जतना लिखल बा ओह में सउँसे परिवार तोहरे साथ जाई। रही न केहू रोवे वाला। हमनी के केहू के भी परेम से हिरदया से लगाई ला जा। पाती मानुस तक के प्रेमी मन से तनिको कम नइखे। मिलन आ परेम दूनो छाती से लगवले पर आपन अरथ पूरा करेला। रामजी के रावण के मार के लवटला पर गुह राजा दउरल आ के चरण पर गिरत बाड़न–तब प्रीति परम बिलोकि रघुराई। हरषि उठाइ लियो उर लाई। ह्रदया से भगवान् लगा लेत बानीं। पाती आ हिरदय के अहथान बरोबरे ह। छाती से छाती मिली चाहें पाती के छाती लगाईं।

पाती हाथ से लिखाला लेकिन ओह में हिया के भीतर के बात रहेला। ओह में कवनो घात रहिए ना सके। एह से पाती बेलकुल अहिंसक चीझह। ओकरा से बात हो सकेला, मार ना हो सके। लेकिन आजुकाल त ओह पाती के लिफाफा में बम भी रखिके भेजल जाता। कहाता 'लेटर बम'। हर देस काल में चीझ के सरूप बदले ला। एहसे कि जवना से हिंसा के बात सोचल ना जा सके ओकरे पर दुहुट (दुष्ट) इन्सान के धेआन जाला। ऊ केहू तरह से अपना दुसुमन के मारल चाहेला।

हमरा भीरी साठ साल के बटोरल पाती राखल बाड़ी सन। ओह में विदार्थी लोग भी बाड़न आ शिक्षक लोग भी। बड़ भी बाड़न, छोट भी। साहित्यकारन के पत्र बा। उनुका मोहक अच्छरन में। ओह चीयिठन के हम किताबो से जादा महत्व दीहीला। ओह पातिन के बल पर हम चालिस साल से कई गो मासिक, त्रैमासिक पत्र निकाल रहल बानीं। जब केहू हमरा संपादकीय के बखान लिखिके भेजेला, त हमार इस्थिति दसरथ जी महाराज के हो जाला। ओह चिठिअन के जे आवेला, चाहे ओहरा मन में कतनो इर्सा–द्वेस रहो, जानिओ के बिना सुनवले रहिए ना जा। पातिन के भँड़ार संगोरले बानी। कुछ के दीमक खा गइलन हमरा लापरवाही से। असकतिहा सरीर। काम अनेक। मन में गरब होला ओह चिठिअन में कतना प्रेरना, कतना उमंग आ साहस भरे के गुन रहे। लेख बटोरीं, समूचा पत्रिका लिख मारी, आ दउरके बनारस जाके प्रूफ देखीं, छपवाईं, टाँग के अपने ले आईं। पाता लिखीं आ पोस्टआफिस में जा के लगाईं। ई कुल्ही करामात एगो छोट कागद पर चारगो डाँड़ी में आपन लिख के भेजे के रहे। बस बिसवास बढ़े कि हम ठीक लिख रहल बानीं, एकरा छपे के चाही। लोगन के एकर जरूरत बा।

गाँधी बाबा के, नेहरू जी के बनारसीदास चतुरवेदी के चीठी के बहुत माने बा। ऊ सभी संग्रहालय में राखल बा। देस विदेसों में बा। स्वामी शिवानंद जी के दू–तीन गो पत्र हमरा भीरी बा। ऊ हमरा जीवन के परमनिधि ह। वासुदेवशरण अग्रवाल के पत्रन में प्रेरणा आउर ग्यान दूनो भरल बा। शिवानंद जी के पत्रावली छपल बा। अइसने बहुत महापुरुखन के। पाती के कवनो जाति ना होखे। जेही पढ़ी ओकरा फैदे फैदा बा। इंदिराजी के कुल्ही पढ़ाई पातिए से भइल रहे। भोजपुरी 'पाती' पत्रिका के सौ गो अंक निकालिके ओकर संपादक भोजपुरी भासा के एगो लमहर इतिहास रच देले। 'पाती' के महातम कतना सुनाईं– एगो किताबे बन जाई। ●●

– पूर्व प्राचार्य एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर
हिन्दी विभाग,
श्री कुंवर सिंह वि.वि. आरा

बानभट औ हरख राजा के भेंट

श्री राहुल सांकृत्यायन

बानभट संस्कीरत भाखा के बड़ा सरनामी कवि हवें। इहे ना, उनके एतना बड़ा गद में लिखे वाला कवि संस्कीरत में भा हमरा देश के दुसरा भाखन में दूसर कवनौ ना भइले। उ भोजपुरिया मतारी भाखा के बोलवइया रहलन और एतना दिग्गज पंडित भइला पर भी अपना मतारी–भाखा से नेह राखत रहें। एही खातिर उनकरा मंडली में भाखा कवि ईसानउ रहलन। बानभट के जनम धरती सोन के कछार रहल, गाँव के नाव पिरीतकूट रहे। गंगा के संगम से लेके डेहरी के नीचे देखला पर कवनौ अैसन नाँव वाला गाँव नइखै देखात। पिरीतकूट के नाँव जौ बराबर चलत आइल होत, त ऊ पिऔट, पिऔडा, पिखौधा जैसन सुने में आवत। हमरे भोजपुरी परदेस में गाँव न जानी केतीनी बेर उजड़त–बसत रहलें। गाँव उजरि गइल, डिह परि गइल। फेनु केहू दुसरे लोग आके डिह पर बसल, औ ओकर नाँउ दु कौना डिह परि गइल। डिह वाला गाँउ पुरनका जगह पर बसल बाड़ें, ई मने राखे के चाहीं। बानभट के गाँव हो सकेला, बीच के लड़ाई–भिड़ाई राज–बेराजी में उजरि–बसि के कौनों डिहे बनि के आजि कल होई।

बान के जस गाँव से इलाका में फेनु राज में औ देस में फइल गइल। 16–17 बरिस के उमिर से घर के दुलरुआ औ धनी लइका बाप के मुअला पर परम सुतन्त होके जे 44 कवि, पंडित, कलागार, गाना–नाच विद्दा में चतुर, साधु–सन्नासी, बइद, इतादि के बड़का मंडली बनाके देस–देस रजवाड़ा–रजवाड़ा में चक्कर लगौलें, ओसे उनकर नेकनामी से बेसी बदनामी भइल। उनके बिद्दा और कविता के परसंसा अपने समय के हमरे देश के सबसे बड़ा राजा हरख बरधन के कान तक चहुँपल। साथे निन्दा करे वाला दरबार में चहुँपले बिना ना रहलन्। हरख के छोट भाई किसुन बान के ना देखले रहलन, तउ और बान के उप्पर उनके बेसी छोह रहै। उ अदिमी भेजि के बान से कहलें, कि दरबार में जलदी आवा, महराज के कान में झूठ–फुर लोग लगौले बा, बाकिर ओसे कौनो हरज ना होई, ऊ गुनिन के कदर करे वाला हवें। बान के मन में पहिले बड़ संकोच भइल। कबों ऊ चाहे उनके कुल में केहू दरबारी ना रहल, कइसे परम भटारक के समने पोंछ हिलावल जाला, ई बिद्दा ऊ ना जानत रहलन। पानी में रहि के मगरमच्छ से बैर निम्मन ना हवे, इहौ ऊ जानत रहलन, ए से हरख के दरबार में जाये के निहिचय उनके करेके पड़ल। राजा हरख के रजधानी कनउज रहे, लेकिन ओही बखत गरमी के दिन में ऊ दौरा पर निकसल रहें और गंगा पार अजिरवती नाम के नदी के किनारे लाव–लसकर के साथ परल रहें।

बान के गाँव पिरीतकूट सोन के बावें किनारे रहे। भारा के भोजपुरी भाखी परदेस और मग्गह के बीच में सोनै सेवान हवे। सोन पार मग्गह में चेवन बन रहे,

जहाँ से पिरीतकूट वालन के संबंध रहे। 'हरख चरित' में अपने पुरुखा बतस रिखि और उनके चचेरा भाई दधीच के जे कुरसीनामा बान देहले बारन, ऊ रिग्बेद से कटि जाला। और बेद के समने लबेद के पुछार आलकल के जमाना में केहू ना कै सकेला। बेद से मालुम बा, कि चैवन और कन्व रिखी एक कुल के ना रहलन्। बसत कन्व के बेटा रहलन, जेके बान भिरगू के कुल के बना देले बाड़न्। लेकिन एमें बान के दोख नइखे, ऊ जैसन सुनले रहलन् वैसन लिखि देलन। नासिरीगंज के समने सोन पार मग्गह में देवकुर भै देवकुण्ड गाँव बा, ओके सिरी परमसेर पदसार सरमा चेवन कानन चाहें चेवन असरम बतावत बाड़न। उनकर चले त पिरीतकूटौ के सोन पार करा दें, बाकिर ई बाति होखे वाली नइखै, काहें से कि बान लिखले बाड़न्, कि ई गाँउ ओही जगह पर बसल, जहाँ सोन के पच्छिम–बायें किनारे सरसुती कुछ दिन आके रहलीं। हरख के दरबार में जाये बखत बान के सोन पार करे के ना पड़ल, एहू से बान के गाँउ सोन के पच्छिम आरे जिला में रहल, ई निहिचय बा।

बान अपने गाँव से चललें, त पहिले चड़िका बन पड़ल। उहाँ जंगल में चड़िका माई के मुरति कौनो बड़का मंदिर में पधरावल ना रहली। पहिले दिन के मजिल बेसी कइके बने में से रहल। साँझ के उनकर मंडली मलकूट (मल्लकूट) गाँव में पहुँपल, जहाँ ओनकर चचेरा भाई जगपत रहत रहैं। ओही जमाना बैल के जोड़ी नाई मरद–मेहरारू चाहे जेतना बजार से खरीदल आ सकत रहें। कमकरो बहुत मिलत रहे। जगपत पाही पर, जान पड़त आ खेती कराके रहत रहलन। ई चंडीवन और मलकूट कहाँ रहल? मलकूट से चल के अगला दिन गंगा पार होके बान सांझ के लाठी पकड़ (यष्टि ग्रहक) गाँव में चहुँपि के रात बितौलन। ऊ बन गाँव रहे, ई बान कहले बाड़न। तिसरका दिने नहाए–खाए के बेरा ले बान अजिरवती नदी के किनारे उप मणितार में चहुँपि गइलन, जहँवा हरख के डेरा पड़ल रहे। पिरीतकूट से उपमणितार के जतरा अढ़ाई दिन में भइल रहे। बान कौनो सवारी पर गइलें, कि पैदल, एकर बिरह–बिसेख ऊ नइखै देहले, बाकी जौना जलदी में ई जतरा भइल रहे, ओसे इहे मालुम होला, के ऊ कौनो सवारी पर गइल होइहें। हरख के चाहत रहे, कि एतना बड़ा कवि के खातिर आपन सवारी भेजतें लेकिन ऊ कहाँ होये वाला रहे। उनके ओही बखत का मालुम रहे, कि आगे चलिके बान के तेज के सामने हम भगजोगिनियों ना रह जाइब। चाहे जैसे गइल होय, जतरा जलदी–जलदी में भइल रहे, दिन में बारह कोस– 24 मइल से कम का चलल होइहैं। एहि तरह से पिरीतकूट से उपमणि ातार तीस कोस कै साठ मइल के आसपास रहल होई–मल्लकूट 24 मइल, लाठीपकड़ बनगाँउ 48 मइल और उपमणितार 60 मइल। गंगा के घाट दुसरा दिन कवन बेरा चहुँपलन, ई बात बान नइखन लिखले। 40 माइल के आसपास ऊ घाट रहल होई जहाँ से नाव पर पार उतरल होइहैं। अजिरवती नदी के अचिरवती समुझि के डगदर बासदेव सरन जी रापती के किनारे हरख के डेरा मनले बाड़न। सोन के किनार से रहता में बिना सरजू के लँघला रापती के किनारे आदिमी तब्बे चहुँपि सकेला, जे ऊ छपरा की ओर हो के जाय। फेर सोझ रहता मनले पर पटना जिला के मनेर भै बिहटा के सामने वाले सोन एहि पार पिरीतकूट के होखे के चाहीं। फेनु गंगा नगचीआ जइहें, और सवा चाहे डेढ़ दिन दूर ना रहिहैं। गंगा से 35, 40 माइल पर सोन के किनारा नासिरीगंज भै देववरनारक, चाहे देव मारकंडे के पास पड़ैला। पिरीतकूट एहि तीनों गाँवन चाहे बड़डीहा, बसडीहा, पिपरडीहा, बभनडीहा में से कवनों जगह रहे। एहि बात के निहिचय कइला पर हम परमेसर बाबू के लिखावट पढ़लीं। उहो चेवन आसरम के देवकुंड (दुवकुर) गया जिला में मनले बाड़न। पिरीतकूट से चेवन कानन आधा जोजन (एक गब्यूति) पर रहल। इहौ बात ठीक रहेले, जो सोन के एही गाँवन में से कवनों के बान के जनम गाँउ मानल जाइ।

चंडिका कानन त एगो बहुत बड़ा बन रहबै करे, गंगा एहु पार जंगले चलि आइल रहल, तबै त लाठीकपड़ (यष्ठि ग्रहक) एगो वनगाँव रहे। आजि काल जैसन ओहि समय ई आरा–बलिया के मुँह गाँवन और आदिमिन से भरल ना रहै। नोखा औ सुरुजपुरा के बीचोबीच किछु पच्छ हटि के चाँडी भै चंडी गाँव हवै। का जाने ए में चंडिका कानन के नाँव बचल होखै। जगपत बछगोतिया के गाँव मल्लकूट मलांव भै मलौड़ा हो सकेला। बगसर से दक्खिन इटाही से दक्खिन मलखौधा गाँव बा। ओके जे मल्लकूट मानल जाय, त बान गंगा पार करै अहथान बगसर घाट होखे के चाहीं। फेनु बलिया जिला के लाठीपकड़ गाँव में रइन बिता के जवना नदी के किनारे हरख के डेरा पर बान चहुँपले, ऊ में ई में छोटी सरजू में से एक

रहल होई। त का एही दूनों नदियन में से कवनों के नाँव अजिरवती रहे? अजिरवती से रापती ना लीहल जा सकेले, उहाँ चहुँपे खातिर सरजू पार करे के पड़ी। छपरा वाला रहता बहुत फेर होखित, आ तड़ातड़ी के रहत ना हो सकत रहे। सरजू के नाँव अजिरवती रहै, ई मनला में बहुत मोसकिल बाटे, का जाने सरजू के जगह अजिरवती पोथी में केहू लिखि देले होय, चाहे सरजू के एगो नाँउ अजिरवती रहल होय, अजिरवती (रापती) से फरका राखै खातिर एके अजिरवती कहल जाय। हमनीं किहाँ त सरजू के देवहा कहल जाला। घाघरा उप्पर कवनौ जगह कहल जात होखी, जवन नाँउ अंगरेजी राज में सरजू के दीहल गइल। सरजू के अजिरवती बनावल मोसकिल बा,नाहीं त उपमणितार बाँसडीह, (बलिया) से उत्तर सरजू के कछार में बसल मनियर हो सकेला। मणितार 'मनियर' बनल ठीके बा। कवनो एगो अबरिउ मणितार रहल होखी, जे से एकर नाँव उपमणि ातार हो गइल। गंगा पार पटना जिला के मनेर एक समै बहुत बड़ा अहथान रहै, साइद उ मणितार रहै औ बलिया जिला वाला उपमणितार। लेकिन मनियर के उपमणितार मनले पर बान बगसर के समने ना, बलिया के समने गंगा पार भइल होइहैं। बगसर में पार होखला पर मंगई के किनारें ढोंढ़ा–डिह के पास हरख के डेरा के अहथान हो सकेला एतना त निहचय बाटै; के बान के गाँउ सोन के किनारे आजिकाल के आरा जिला में रहै। ओनकर जतरा आरा जिले में से होके बलिया जिले के कवनो जगह भइल रहे।

बान के समै अबहिन पाँड़े, दूबे, चउवे, तिवारी लोग ना पैदा भइल रहे। ओहि समय के मजगुत लिखावटन में 'स्वामी', 'भट्ट' जइसन पदवी बम्हनन के नाँउ के साथ मिलैंले। बान के नाता–गोता गंगा के दखिनै मैं ना रहे राजा के डेरा वाले इलाका (बलिया जिला) में हूँ बंधु–बांधव लोग रहै, जेकरा इहाँ राजा के मिलिक और उनकै बिख जैसन वचन सुनि के केतना महिन्ना रहलैं। हरख ओनके पहिलै मुलाकात में महालंपट (महान भुजंग) कहलैं। ई अच्छर सुनि के बान के पहिले अपने कान पर बिस्वास ना भइल। तनिक सहक के ऊ खूब जवाब देलै। फिनु चइत–बैसाख के गइल समूचै बरखा उहैं आस–पास में बितौलें। एही बीच हरख के मत फिरल। ऊ पूरी तौर से बान के सतकार–सनमान कइलें, धन–दौलत से माला माल कइ दिहलें, औ कातिक अगहन (शरद्) के महिन्ना में बान घरे लउटलैं; तीनों भाई–बन्द के देखहीं खातिर भर नाहीं तो दरबार से डोरी मजबूतै बन्हाइ गइल रहै। बलिया जिला में नाता–गोता होखै के इहै मतलब बा, के एक्कै जात वाला बाह्मन लोग एहिपार से ओहिपार मग्गह के सिवाना तक बसत रहै। आजिकल ऐसन बाह्मन सरुवरिया लोगै बा। सकलदीपी लोगन में बान के गिनल मोसकिल बा। उनकर कुल सुरुज पूजक ना, वैदिक रहल। सरजूपारी लोग के समदार के दूबे लोग के गोत बतस (वत्स) बाटै। मालुम ना आरा जिला में सरजूपरिहा बछगोती केहू बा कि ना। सोन के एहिपार बतस गोत के लोगन के होखे के चाहीं। सोन के ओहि पार (मग्गह) में त नासिरगंज के सामने बछगोती बाभन लोगन के ठट्ट बाटै। एही लोगन कै सोन भदरिया बाभन कहल जाला। मग्गह के बाभन लोगन के सादी सम्बन्ध भुँइहार लोगन से बा। देखा–देखी इहौ लोग बाभन कहाइब छाड़ि के 'भूमिहार ब्राह्मण' अपना के कहै लागल। सोन पार के सोनभदरिया बछगोती लोग बानभट के बंस के हवे, एमें तनिको सन्देह नइखै। वैदिक बराम्हन से ई लोग भुँइहार कैसे बनि गइल ई संका उठावे के काम नइखे। पहिले त ओहिपार के लोग हाल–साल से अपना के 'भुँइहार बराम्हन' कहे लागल, खान्दानी नाँव त ओहि लोग के 'बाभन' रहल। समूचा भोजपुरी परदेस में लोग संस्कीरत के ब्रह्मण सबद के जगहा 'बाभन' कहैला। मग्गह के जब से हेठाई कहल गइल, तबै से मग्गह के बाभन लोगन के– जेमें बान भट के वंस के बछगोतिओ लोग सामिल बाटै–हेठाई भइल। जानै वाली बात ई बा कि सोन के पच्छिम में बछगोतिया बाभन (भुँइहार) में बराम्हन बा कि ना? भोजपुरी के पढ़वइया सोन के किनरहा भाई लोगन से हमार अरज इहै बा कि अपने इहाँ के ओहि गाँवन के नाँव भोजपुरी में छपवावें, जौना में बछगोतिया लोग बसेला। इहौ बतावे के चाहीं, ओमें केतना सरवरिया (कनउजिया) बा औ केतना गाँव भूँइहार लोगन के बा। सरबरिया में का आसपद बा औ ओहि लोगन के मूल गाँव कवन बा? बगसर, डोमराव के नगिचा मलाँव, मलौडा जैसन कौनो गाँव बा कि ना? बलिया जिला में भाई लोग ई बता सकेला, के यष्टि ग्रहक (लाठी पकड़) जैसन नाँउ वाला गाँव कवनो बा कि ना? ई त मनहीं के परी, के भोजपुरिया लोग आजै कल लठधर मसहूर नइखै, बानों के समय में ऊ लोग अपने गाँवन के नाँव लाठी पकड़ रखत रहे। ●●

बेटा के नइहर

श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी

निबंध के नाँवें सुनत पंच भड़किहें। केहू पूछी– "एँ! ई का सुनाइल?" केहू कही, "हई देखबऽ बउराइल!" तिसरका होसियार बोली– "छपहीं में गलती भइल होखी"। "टी" का जगहा "टा" हो गइल बा। अइसन होते रहेला। एकरे के नूँ कहल जाला "प्रिंटर्स डेभिल"। आरे ई का, एक से एक बलंडर हो जाला छपखाना में। ई त किताब में बा जे भीतर पइसनिहारे का भेंटाई। अचंभो त बड़का–बड़का अखबारन का ऊपरी पाना पर कबो–कबो लउकि जाला। लाम–चाकर अछरन का मथेला मधे "मुख्यमंत्री" खातिर "मुख्यसंत्री" कतेक बेरि छपाइल होखी।"

बाकी लाल बुझक्कड़ के लक्कड़ इहँवाँ ना लागी; अकिला फुआ के अकिल कवनो काम ना करी। सात अक्षर आ दस मात्रा का एह मथेला में छपटूट नइखे। फेरु से पढ़ीं– बे–टा–के–नइ–ह–र। कोंहनाईं–खिसिआईं जनि। धिरिजा धरीं। फरिआ के कहला से अझुरहटि ना रही। तनी दिल–दिमाग काबू में राखीं।

जुग–जबाना जनतंत्र के बा। एह घरी चारू ओर समता के सोर सुनाता। गरीबी–हटावे में घरी–पहर के देरिओ हो सकेला बाकी चिरुकी कटावे में का लागे के रहल हा? आजु–काल्हु, भेख–रेख, चाल–ढाल, पहिरन–ओढ़न, सबख–सिङार में तनी ओहटा से देखला पर मरद मेहरारू के चिन्हार हालाहाली नइखे होत। लइका–लइकी के भेद हटावे के कोसिस हर जगे हो रहल बा। बबुआ बबुनी के, आ बबुनी बबुआ के बरोबरी करे खातिर कुछुओ उठा नइखीं राखत। चलल–फिरल, पेन्हल–ओढ़ल, बोलल–बतिआवल त बात ह सभ्यता के जे बाहरी वतुस कहाले बाकी संस्कृति त भितरिया भाव नूँ ह? तनी एनियो ताकल जाउ।

बेटा का जनम लिहला पर थरिया बाजेला। बाप–महतारी के करेजा पोरसा भर ऊँच हो जाला। बेटी का जनमते खा त धरती बीता भर दबि जाली। बाकी ई ऊँच–खाल बरोबर होखे में अब अनेसा मत बूझीं। बाप–महतारी का कपार प के भार अनकर थाती कुँआर बेटी पनरह–सोरह के कहो आजु–काल्हु बीसो–बाइस बरिस ले घर में बइठल रहसु, कवनो हरज ना। बाकी बी0ए0 पास कइके बेटा अपने दुआर प हलुक हो जा तारे। बाबू–भइया से उनुकर बइठल बरदास नइखे होत। बरिसन ले बेटी का जोड़–जुगुत घर–बर जोहात रहो, पर बेटा के नोकरी मिले में महीनों भर के देरी लोगन का अखड़े लागता। भार बनल बेटी जइसे उतारि फेकल जा तारी ओइसहीं हलुक होखल, बेटो के बाप खातिर उदबेगल–उचिलावल जा तारे।

बेटी–बहिनि का जिनिगी के मिलान एक दिन अचके सूझल। धनहर खेत में बीआ कबरात रहे। पलुहल–फुसल, सूगापंखी रंग के रेसम का सूत अस सघन लमछर धान के बीआ बूनी–बेयारि का हिलकोरा में झूमत रहे। बड़हीं जतन से जोतल–बोअल, खाद–पानी पटावल बीअड़ के छोट–छोट टोपरन में बनिहार लागल रहन स। केहू ठेहुनिआइ के ताबड़–तोड़ दूनों हाथ चलावत रहे त केहू अँटिया बान्हत रहे। केहू माथ प भरल खँचिया–खँचोली उठवले दोसरा टोपरा का ओर हाली–हाली डेग बढ़ावत रहे

जहँवाँ काछा बन्हले बनिहारिनि छपर–छपर करत रही स। "बीअड़" आ "रोपहथ" के हाल देखि के मन बेहाल हो गइल। अनेयासे मुँह से "ओह" निकसि गइल। अपना समाज का ओरि नजरि परल त पवलीं जे "नइहर" रूपी "बीअड़" में पोसल–पालल धान के बीअड़ अस "धीआ" "ससुरा" रूपी "रोपहथ" में भेजल जा तारी। एक जगे से उजारि के दोसरा जगे बसावल जा तारी। हाय रे किसमति! गहुँम–बूँट अस बेटा एके खेत में, अपने परिवार में, रसल–बसल रहऽतारे आ खून के नाता तूरि के बेटी के आन ठहर हटावल जाता।

ओही घरी ना जनलीं जे बेटा भा भाई–भतीजा के ई हाल होखी कबो। कवनो ना कवनो तरे लइकी के बर त खोजि लिआता बाकी लइका के नोकरी ढूँढ़त–ढूढँत छरपट छूटि जाता। छीर–सागर के अनंत भगवान भलहीं घरिये में भेंटा जासु बाकी चाकरी के चनरमा खातिर बेकार नवहिन के सउँसे अकास–पताल छाने के परता। कवनो नया घर में कइसहूँ जोगाड़ लागे के होता त केहू ई नइखे देखत जे अतना दूरि–दराज, जंगल–झाड़–पहाड़ पार कइके एकलउत के जाये दिआउ कि ना। बड़हीं धरछना से पोसल पूत उड़ीसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र आ नेफा–आसाम का ओर पेयान करऽतारे– आपन भा अपना परिवार का पेट कारन।

बिआह–गवन कइ के बेटी के ससुरा भेजल जाला। रसम कहीं चाहे भाव–परेम, तीनि से तेरह दिन का भीतर कलेवा बउँरत लेले नइहर के पेठवनियाँ पहुँचेले। सासु–ननदि–गोतनी, गोतिया–देयाद, टोल–परोस सभे देखेला कि दुलहिनियाँ कीहाँ से का–का आइल हा। बउरहँत का जवरही नइहर से कनिआँ के भाई–भतीजा आवेले। महीना छव महीना का भीतरे बेटी बोल लिहल जाली। कबो–कबो त दूइ से चारि दिन का भीतर अहुर–बहुर जा जाला। बाकी बहरवाँसू बेटा के का होता? गाँव पर छोड़ला का बाद बेचारू बहरा पहुँचऽतारे। नोकरी–चाकरी के अलम भेंटा गइला पर पऽ पहिल खोज उनुके करे के होता, घर के आउर सवाङन का ना। ऊहे चीठी लिखतारे गाँव पऽ। ओह में आपन नीके तरे पहुँचला के दू अछर टाँके के जे आन समाचार लिखाता ओह में उनुका अपना से अधिका परिवारे का मतलब के बात रहता। गाँवे पाती पहुँचतिया। बाँचि के धऽ दिआता। दू दिन, चारि दिन, कबो पनरहिअनो का बाद नेह के रसम निबाहे भर जबाब जाता। सवा महीना का बाद बहरा से चीठी आ मनीआडर आगा–पाछा आवता। घर भर के जीवन में जीऽ परता। अब से हर महीना एके चीजु के जोह फिकिर रहता– बहरा से मनीआडर के। साल, दू साल, चारि साल प अगते कलकतिहा सिपाही लोग अपना गाँव के धूरि धङिहे। अपना जवरे मेहरारू लइका के ना राखि के ऊ लोग अकसरे परिवार कारन परदेस अगोरत रहल हा। कवनो काजे परोजने घरे पहुँची लोग। सहती का समे नोकरिहा एह घरी से अधिका फँफराह रहलन हा। अब ऊ बात नइखे। नोकरी धइला का बाद बरिस लागत–लागत नवही के अपना सहूलियत खातिर 'फेमिली' ले आवे के परता। सोझ अंगरेजी माने–मतलब का मोताबिक, मेहरारू आ एगो–दूगो बाल–बाचा। बस, एकरा बाद त गाँव से उनकर उहे नाता हो जाता जवन उनका बिआहल बहिनि, भतीजी भा फूफू के अपना नइहर से रहेला।

मेहरारू–लइका का गाँवे रहता भर में कवनी दूरि के नोकरिहा गाँवे आवत–जात रहेले, अधिका ना त कम से कम साल में एको दू बेरि। फगुआ, दसहरा भा छठि का परब में चाहे बिआहे–सादी भा जिअनी–मुअनी का मोका पर सर–सलाह जवराले। ओह घरी घर–दुआर भरल लागेला। बुझाला जे जिनिगी में कवनो सवाद बा। साइंस कहेला कि हरेक चलत (नाचत) चीज का साथे दूगो पर बल खिंचाव रहेला। एगो बहरा भागे के आ दोसर भीतर पइसे के। अङरेजी में एकरे के "सेंट्रीफिउगल फोर्स" आ "सेंट्रीपीटल फोर्स" कहल जाला। उधिआए के आ सङोराए के सवख का माँह सभे बा। दिन राति चलत साँसन का जवरे दिल का भीतर अइसने कुछ उखमंज उठत रहेला। घर में परल परल जवन मन कबो कहेला कि आङन के छर्दवाली छड़पि के बहरी निकसल जाउ ऊहे मन बहरा धावत धूपत कबो ईहो चाहेला कि लवटल जाउ अपना भुँइजबरा का भीतर। राग आ विराग, लगाव आ अलगाव एह दूनों का बहाव में कतो एक ठहर सभदीना ठहरल कठिन ह। "फेमिली" ले के जवन पूत "बहरा" गइले ऊ सचहूँ बहरा गइले, कम से कम अपना गाँव से अब उनुकर अड़ान परदेसे के ठहर–ठेकान में बा। गाँव के लोग उनुका के अपना में नइखे गनत। तबे त कबो काल छूटी–छपाटी में गाँवे अइला प संछेपे में साहेब सलामत का बाद नोक–रिहा से निठुरी मुँहें केहू ना केहू पूछिए देता– "कब ले जाये के होखी?" जे तनी तवर तरीका जानता ऊ कहता– "कब ले रहे के होखी?" सोचत रहीं जे बिआहल बेटी आ बहरवाँसू बेटा दूनो, बरोबर हो गइले गाँव नगर खातिर जहवाँ पर–पाहुन अस उनुका आवे के ठहरल। बाकी ना, दूनों बराबर नइखन। ई माने के परी जे एक तरे बेटा के बेसी दुरगति बा बेटी से। भला मजाल बा जे नइहर में ससुरइतिनि बेटी से केहू ई पूछि बइठे कि कबले जइबू? बात के मजाक बूझि के हँसि देउ केहू भलहीं पर जिनिका काने अइसन सवाल परल होखी ऊहे जनिहें। छनाक–दे लागल सबद

के कलंक कागज पर नइखे उतरि सकत।

दूर देस के त बाते दोसर बा, निअरो–पास के नोकरिहा भा रोजगरिहा खातिर गाँव के दरसन दूलम हो रहल बा। जिनि जाना आन ठहर अपना दुखड़ा धान्हा में लगले ऊ अब अपना गाँव खातिर बिराना हो गइले। दस–दस बारह–बारह बरिस ले अनते रहि के जिनिका गाँव आवे के बेंवत लागता तिनिका देखतारे? गाँव का रहे का हो गइल? जवना धूरि–माटी के ऊ अंग रहले उहे अब उनुका के चीन्हत नइखे, कटावन लागता। खोरी में चलला पर कूकुर भूँकतारन स। इनरा–पोखरा प नया–नोहर बेटी–पतोहि चिहा–चिहा के ताकतारी। आरी–खाँवा चलबीधर लइका टोकि दे तारे सन 'कहाँ घर ह?' भड़कल सिआर अस डेग ना आगा परता ना पाछा। हालाहाली चिन्हार खातिर कवनो पुरान परिचित चेहरा के जोह होता। ईहे ह बहरा के कमाई! घर छोड़ला के मतलब गाँव छूटल हो गइल। पहिल बाते–बेवहार जब ना रहल तब उनका एहिजा एको छन टिकल जबुन जनाता। जब रसे ना त लस का? बेचारू बहरवाँसू कवनो जरूरी कार निबुका के परदेस लवटि आवतारे। इहँवाँ अइला पर फिनु अपनो चरखा–सूत में अझुरा जा तारे। उनका परिवार का परला–हरला प गाँव–घर के लोग ना, एहिजे के रहवइया कामे आवतारे। कहल बा 'जे लग ह से सग ह'। सगा सहोदर से भेंटे नइखे होत। केहू ईर घाट त केहू मीर घाट धइले बा। बंबई, कलकत्ता, डिब्रूगढ़, दार्जिलिंग सभ जगे एके हूक बा– गाँव छूटि गइल! घरे जुगुत रहित त अँकवारी बान्हल जाइत!

पुरानो बेटी–बहिनि ससुरा जात खा नइहर का वियोग में पूका फारेली। डोली भा गाड़ी जस–जस आगा बढ़ल जाले उनुकर जनम के गाँव छूटल जाला। आ आँखिन के लोर सूखत जाला। ससुरा का अँयड़ा–गोयड़ा अइला प त रागल–कानल बरजिते ह। आपन गाँव छोड़त खा मरद–मानुस के मोह ना लागे? कठकरेजी के बात छोड़ीं, मयगर के आँखि भरि–भरि आवेली स। बाकी ऊ करो त का? बेटी–बहिनि के भलहीं 'बाबू हो बाबू', 'भइया हो भइया' के गोहराँव हीक भर लगावे के हक होखे पर ओकरा नइखे। जनम–भूँइ से जबरन अनते घिचात खा ऊ मुँह नइखे खोलि सकत, फेकरे के के कहो, सुसुकहूँ नइखे पावत। एहिजो बेटा के हक–पद बेटी का बरोबर ना रहल।

"नइहर" "माई घर" के कहल जाला। "गरज परला प गदहो के बाप कहे के परेला" ई उकुति सभे सुनले होखी बाकी "गदही के माई" कहे के कहाउति अब ले नइखे गढ़ाइलि। "बाप" आ "महतारी" का महिमा में बाढ़ि–घटि बतावल हमार उदेस नइखे। हमरा अतने कहे के बा जे "मातृ–गृह" छोड़ि के सजी लइकी त "श्वसुरालय" पवली स बाकी सभे नोकरिहा लइकन के अधिवास प आपन आवास ना बनल। ढेरि जने क्वाटर भा किराया का मकान में रहेले जहँवाँ कबीरदास के चेतावनी कबो भोर ना परे– "रहना नहीं देस विराना है।" सरकारी सुविधा भा अपना होती से किछु भाई सहर–सहरात में आपन मकान बनाइ रहल बाड़न त का उनुका मेहरारुन का "ससुरा" अस रागात्मक संबंध ओह में भेंटाता? उलुटे गाँव घर का नजरि में अइसन आदमी खातिर मोह ना द्रोह लउके लागता। "फलनवाँ के अब बाप–दादा के बेख से का मतलब?" कहत जेकरा राहे चले के लूरि ना ऊहो मेहना मारे लागल।

बेटी बुढ़ाली, बाकी करनी ना बुढ़ाली। परव–तेवहार पर नइहर से उनुका भिरी पाहुर–पुरिया थोर भा ढेरि जरूरे पहुँची। पर बहरा बसल अइसन कमासुत कमे होइहन जिनिका लगे गाँव से घीव, अँचार भा आउर कवनो धराऊँ जिनिस जात होखी। रेलि आ बस के भारा अतना ना बढ़ि गइल बा जे दूर–दराज से कवनो हलुक नोकरिहा भा टुटुपुँजिया रोजिगरिहा के साधे सवखे गाँव प मेहरारू–लइकन के ले के आवे के अब सवाले ना रहल। आम–जामुनि, काँकरि–फूँट, सुरुका चिउरा–मूकी चिउरी, गादा–कचरी रस–होरहा ओकरा भा ओकरा लइका–मेहरारू के नेवान नइखे होत। बहरा से रोपेआ आवो, चीजु–बतुस आवो बाकी बबुआ के बाल–बाचा आवो एकर खखन कमे बाप पितिया में लउकता।

माई के जिउवा गाई अस, ओह बेचारी के चलित त सइ सइ बिगहा के जोत अधिया–बँटइया लगा के लोग सइ सवासइ का नोकरी खातिर एने ओने छिछिआत ना फिरित।

नइहर का नाँव प बेटी जीएले–मूएले। ऊ दुख सहि सकेले बाकी नइहर के गीता–सिकाइति ना सुनि सके। ऊ नइहर के बहुत बड़ अलम बूझेले। बेटी नइहर में अपने ना आवे, बोलावल जाले। आपन सावङ देखि के बहरवाँसू बेटा घरे अइबो करेले त दू दिन चारि दिन खातिर। छूटी बढ़ावे के होला त बेमारी कछावे के परेला, डाक्टर का हाथ में नोटि धरावे के होला। बेटी के ससुरा से निआर आवेला, एके हाली में दिन ना धरा जा। बाप–महतारी का सावङ से सुदिन सोध ाला। बेटा के नोकरी प वे बोलहटे जाये के परेला। एह में खरवाँस ना लागे। आगा–पाछा भा दहिने बाँवें सुकवा–चनरमा ना निहारल जासु। उनुका अइलो–गइलो प अङना–दुअरा आँकवार भेट ना होखे। जिनिका रहला–गइला से हरख–विसमाद के कवनो हलचले ना

बुझाइल, ऊ पर–पाहुन अस हो गइल त का? ससुरइतनि बेटी खातिर गाँव अबहीं ले किछु रसम–रिवाज नखले बा बाकी बहरुवाँसू बेटा के सामाजिक पूछ नइखे।

जब ले जिअला के अलम खेती–गिरहती रहल हा, बेटा लोगन के गाँव ना छूटल हा। गाँवे में उठल–बइठल, जागल–सूतल, चलल–फिरल, बोलल–बतिआवल, नीक–जबून होखल हा। गाँव राई–रत्ती से चीन्हा–परिचे रहल हा। अब ऊ बात ना रहि गइल। पेचे भा सवखे, हँसि के भा रोइ के गाँव छोड़ि के सहर का ओर लोग धावल जा रहल बा। सभे के सफियाना काम चाहीं, धूरि ओढ़े के भरसक केकरो मन नइखे। एह हालत में गाँव के जनम–भूँई धनहर का "बीअड़" खेते अस रही जहँवाँ से लइकन के पाम्ही आवत–आवत पढ़गिति भा नोकरी पेसा खातिर परदेसे पहुँचावे के उतजोग होत रही। "रोपहथ" खेत अस नोकरी भा रोजिगार का जगह के कवनो कियाम ना होखे। सरकारी नोकरी में त तीनि–तीनि बरिस पर बदली होत रहेले। पुरान ठहर छोड़ि के अनचीन्ह जगह जाये के मन नाहिए करे पर सेवक का सुख कहँवाँ? तीस–पैंतीस साल का बहरवार नोकरी के बाद जिनगी में ऊ लजति नइखे रहति जे गाँव–घर का ओर पिनसिनिहा लोग डेग बढ़ाओ। गाँव से उनुकर देहज नाता टूटि गइल रहता। परिवार का, गोतिहारी का, भा टोल–परोस का कलह–काँट में अझुराए के बउसाव अब ना रहल। तबो एगो बात सोचनउग बा। घर दुआर भाई–बंधु, जर जजाति में आपन–अनकर के विचार भलहीं होखे बाकी गाँव त सभ के होला। गाँव के नदी नारा, रूख–बिरिछ, चिरईं–चुरुङ, देवी–देवता, सतीदाई, वरहम बाबा सभ के साझ होले। एह सामाजिक–सांस्कृतिक संपत्ति में बाँट–बखरा के सवाल दायर करे खातिर कवनो कचहरी अब ले नइखे खुलले। अपना कुल–खंदान, गोतिया–देयाद से मन तीत भइलो पर गाँव के हवा–पानी आ माटी के इयादि बेटी के नइहर अस बहरवाँसू बेटा खातिर सभदीना मीठे लागेले। आदिमी अपना आचरन से कतनो माहुर घोरो, "करुआइनि निमियाँ", "सीतल बतास" बहइबे करी। जुड़छाँह खातिर आईं, देखीं।

बेटा का बिआह में बर परिछे का बेरा ना जाने कब से गवात ई गीति आजुओ गवाले–

निमियाँ रे करुआइन, सीतल बतास बहे हो
ताहि तर ठाड़ कवन दुलहा, नयना से नीर झरे हो
किया तोर आजन बाजन थोर भइले,
साजन धूमिल भइले हो,
नाहि मोर आजन–बाजन थोर भइले
साजन धूमिल भइले हो
लाढ़िल भइया हो.. भइया, सेहो ना जवरे अइले हो।

बेचारी लइका के महतारी भा बहिनि एह गीति के मरम बूझि के आँचर का खूँट से आपन आँखि पोंछतारी। बहरवाँसू "फलाना भइया" के अपना छोट भाई का बरिआत में सामिल होखे के सवख केकरो से कम थोरे रहल हा? बाकी करसु त का? छुटिए ना मिललि।

अब ले बिअहल बेटिए परबस रहली हा जिनिका खातिर अपना बूढ़–पुरनियाँ बाप–महतारी का आखिरी बेरा भेंट मुलुकात मोसकिल रहल हा। आजु–काल्हु अनते कलम, बनूक भा मसीन चलावत बेटो का माई–बाप का चलती बेरि सिरहाना–गोड़तारी ठाढ़ होखे के बेंवत नइखे। गाँव पर से तार आवता। गाँवे आइ के पीपर का डाढ़ी बान्हल घंट में कतनो पानी देस बाकी बाबू–माई का मुँह में आगि ना डलला के हक मेटत नइखे। सराध–करम सँपरवला का बाद फिनु सहर धराता। गाँव का मोह–माया के जेवरि त माई–बाबू का चिररारिये पर जरि गइल। ना ओकर जोह–फिकिर केहू करता आ ना ऊहे अब गाँव का ओर कवनो खिंचाव पावता। हँ गाहे–बेगाहे एगो–दूगो तसवीरि ओकरा आगा सपना अस टढ़ हो जा तारी सन। फगुआ के दिन ओकर मन उड़ल रहता। पिंजड़ा के पंछी पाँखि पीटी के आपन बेचैनी बतावेला बाकी ऊ त ईहो नइखे कइ सकत। एगो लमहर साँस भर खींचि के आन कान में लागि जाता। रहि–रहि के अपना दुआर प फगुआ के गोल का बीचे अपना हाथे अबीर–मसाला चलावला के सुरुता आवता। ओकरा आँख तर अन्हार छा जाता। अइसहीं चइत में घाँटो सुने खातिर, सावन–भादों में फफाइल नदी का पाट प झिझरी खेले खातिर छठि के घाट अगोरे खातिर, सँकराति के तिलवा तूरे खातिर, होरहा निकिआवे खातिर, कल्हुआड़े रस पीए खातिर, कराह के खँखोरी खाए खातिर परदेसी पूत के हिया हहरि जाता। राउरकेला, भिलाई में ठाढ़ हो के तकला प "भोजपुर" लउकते नइखे। अपना देसे में आदमी परदेसी बनि गइल!

ई त ठीक ना भइल। अमेरिका–रूस कतनो लोभावन लागो बाकी साटी अपना माटी में भारते के भूँइ। एह से एहिजा उझंख होत बगइचा के सोहावन बनावे के परी। जरूरत बा त बस अतने जे सहरइतिनि जिनगी का जबरे गाँउझ नाता लगावल जाउ, दूनों में छतिस के ना तिरिसठ के मेल बइठावल जाउ, ठीक ओइसहीं जइसे ससुरइतिनि बेटी का दूनों बाँहि का भीतर नइहर–सासुर के नेह समेटल रहेला। ●●

पत्थर ले लो!!

शशि प्रेमदेव

'कोरोना–काल' के बाद हमार रूटीन बनि गइल बा। फजीरहीं जागि के हम स्टेडियम का ओर टहरे निकल जाली...

ओह दिन भोर का धुँधलका में, एने से जात खा तऽ हम धियान ना दिहलीं, बाकिर जब टहरि के लवटत रहनीं तऽ अचके हमार नजर परल, देखऽतानीं कि बरिसन से जहवाँ "फूलों की दुकान" के पुरान साइन–बोर्ड टाँगल रहे, उहवाँ अब "पत्थरों की दुकान" के एगो नाया चमचमात बोर्ड काबिज हो चुकल बा!

हमरा के कठया मार दिहलस। एगो जोर कऽ झटका लागल। एक बेर तऽ हमके अपना आँखिन पर शुबहा भइल। लिहाजा, हम अपना दूनो जवान आँखिन के हाल–हाली रगरि के शक दूर करे के कोशिश कइलीं।

ऊ नवका साइन बोर्ड अब्बो हमरा के मूँह बिरावत, पहिलहीं लेखा मुस्की काटत रहे.... हाँलाकि ओह् घरी ऊमस भरल गर्मी का चलते हमार हालत खराब होत रहे आ हम जल्दी से जल्दी घरे पहुँचे के मूड में रहलीं, बाकिर अपना शहर के ओह चर्चित दोकान के "धर्म–परिवर्तन" के तह में जाके छान–बीन करे क भावना एह् तरे जोर मारे लागल कि हमरा के उहवाँ रुकहीं के परल। बेगर छान–बीन कइले हम आगा बढ़तीं कइसे? आखिर ऊ दोकान शब्बो मालिन के रहल्! ऊहे शब्बो मालिन जेकरा अल्हड़ जवानी पर लट्टू होके पुरनकी पीढ़ी के कइ गो प्रगतिवादी–नास्तिको लोग बगल का शिवाला में जा–जाके फूल–पत्र चढ़ावे लागल। एतने ना। अइसनों भद्र लोग जे साल में मुश्किल से एक–दू बेर देवी–देवता के दरस–परस खातिर समय निकाल पावे, अचानके हर दोसरा दिने सज–धज के शब्बो का दोकान पर फूल–माला खरीदत लउके लागल! कुछ सीनियर लोग बतावेला कि ई सिलसिला इहवें ना रूकल। ओहू प्रजाति के कइगो अध–बुढ़ आ जवान पुरुष, जे कवनो देवालय का ओर तकलो के "काफिराना हरकत" समझत रहे, "मार्निंग वॉक" का बहाने, मन्दिर वाला ओह रस्ता से आवे–जाये लगल!

चूँकि हम ओह् पीढ़ी के बाद वाली पीढ़ी कऽ नुमांइदा बानीं, हमरा बखरा में ओह् घुँघराला केश वाली छरहरी शब्बो का जगहा एगो पाकल बार वाली बुढ़ाइल, थुल–थुल "शब्बो चाची" परली।

बहरहाल, हम अतीत आ वर्तमान के द्वंद्व से उबर के, ओह् दोकान में ढूकि गइलीं। देखलीं तऽ अइसन जनाइल् जइसे कि पुरनकी दोकान आपन सर्वांग "प्लास्टिक–सर्जरी" करवा के, हुलिया बदल ले ले होखे! उहवाँ ना एक्को खिलल–मुस्कियात ताजा फूल लउकल, ना गूँथल माला के झोंप! करोना से पारदर्शी–परिधान में लपेटल बूके (पुष्प–गुच्छ) भा, सुगंधित पंखुड़ियन के ढेरो कतहीं ना नजर आइल...

पूरा हुलिया बदल गइल रहे दोकान के। अब पुरनकी बेवस्था का जगहा एगो आकर्षक काउण्टर रहे आ, दोकान का भीतरी सिरमिट के बोरियन में पत्थल भर–भर के धइल रहे– नोकीला, टिकाऊ, मजबूत पत्थल के छोट–छोट टुकड़ा। ई कूल्हि देखि के हमार जिज्ञासा एह् कदर बढ़ि गइल कि बरदास के बाहर हो गइल। हम तुरन्ते काउण्टर

का पाछा बइठल शब्बो चाची के छोटका लरिका "पप्पू" का ओर लपकलीं। ऊ अपना नाया–नवेला लैपटॉप कऽ जबड़ा चिआर के कुछ जोड़े–घटावे में बाझल रहलन। हमार आहट पाके तुरन्ते अपना घुमउवा कुरूसी से उठि के खाड़ हो गइलन आ सम्भावित गाँहक समुझि के हमार स्वागत कइलन। हम फिजूल के औपचारिकता में समय ना बर्बाद कइके, पूछ बइठलीं–

– "पप्पू भाई! राते–राति एगो जीयत–जागत, हँसत–खेलत फूलन कऽ गमकत दोकान... धूसर–बेजान पत्थलन के दोकान में कइसे बइल गइल?"

– "सर जी, ठीक ओइसहीं जइसे कवनो जनसेवी ईमानदार नेता कुसी पावते मनी–मेकिंग–मशीन में बदल जाला।"

– "अपना पुश्तैनी धंधा में अइसन वीभत्स बदलाव करत खा तो हम लोग के करेजा ना फाटल? तकलीफ तऽ बहुते भइल होई?"

– बहुत तकलीफ भइल, सरजी! मम्मी तऽ सुनते फिरंट हो गइल रहे.... बकिर कवनो दोसर रस्तो तऽ ना सूझे.... इमोशन से भविष्य ना नूँ सुधियाई! जवन बनिया–बैपारी समय आ सिचुएशन का मोताबिक धंधा में बदलाव ना करी ओकर हाल सिरीलंका जइसन हो जाई! रउवा मालूमे बा कि फूल–पतई के धन्धा बड़ा "रिस्की" होला। लोहा–लक्कड़ तऽ हऽ ना.... तुरन्ते सूखे–सरे लागेला.... रीसेल भैलू बाटै ना। हँ, पत्थल के बात दोसर बा.. .. संकट–काल कऽ सबसे भरोसेमंद साथी.... ना कवनो चोन्हा, ना कवनो प्रकार कऽ नखरा! सादा जीवन उच्च विचार के सॉलिड प्रतीक। ना सरी, ना गली... कतहूँ फेंक दीं, बरिसन ले जस–क–तस परल रही।

– "अच्छा! हम तऽ जानते ना रहीं कि पत्थल के मनहूस टुकड़न में एतना गुन भरल बा!"

– "हमनिये कऽ कहवाँ पता रहे, महराज कि एकइसवीं सदी में पत्थल के टुकड़ा कमाल के चीज साबित हो सकेला! ऊ तऽ जब कश्मीर वाला हमार फेसबुकिया–फ्रैण्ड नजीबुलवा हमके ई आइडिया दिहलस, तब हमार अक्किल खुलल।"

– बहरहाल, पप्पू ई बतावऽ कि बिक्री–बंटा के का हाल बा?

– (गदगद होके) ऊपर वाला के छोह से, पूछीं मत, सर जी! खूब बढ़ियाँ चल रहल बा। एने कुछ दिन से एकर डिमाण्ड बहुते बढ़ि गइल बा.... माल आँटत नइखे.... आउर पूरा कइला में नकदम हो जाता, सर जी!

– इन्टरेस्टिंग! रूकऽ जनि.... तनी आउर बिस्तार से बतावऽ, पप्पू!

– देखिं सर जी! जबले हमनी का देश में लोग मानवता, कोमलता, सरलता, सौहार्द के पक्ष में रहल, फूल–पतई–माला–बूके जइसन चीजन के अहमियत आ डिमाण्ड कायम रहे। बाकिर ई जुग तऽ सिन्थेटिक के पूजे–सराहे वाला जुग हऽ। यानी एह दौर में नैथ्तकता से अधिका कर्मकाण्ड, आध्यात्मिकता से अधिक धर्मांधता सरलता से अधिका पाखण्ड आ असली ले बेसी नकली के बोल–बाला बाटे... (छन् भर ठहर के) रउवाँ जानत बानीं? एह् शहर के सगरी फ्लोरिस्ट अब पत्थल के बिजनेस करे के मन बना लेले बाड़न... (मुस्किया के) अब तऽ जे पक्का 'ब्लडीफूल' होई, बस ऊहे फूल से मोह–छोह राखी। रउवे बताईं एह् घरी ठाँवे–ठाँवे जइसन हंगामा आ बवाल हो रहल बा, ओह में फूल का करी? पत्थलवे नूँ कामे आई! (चहँकि के)

सरजी! दुनिया के बाकी लोग खातिर भलहीं ई राकेट आ मिसाइल प्रक्षेपण के जुग होखे, भड़काऊ, भाई जान आ उत्पाती नेतवन का चलते बहुत लोग पत्थल फेंके वाला मानसिकता में जी रहल बाड़न....

– "यू आर राइट" पप्पू बशर्ते एकरा में एतना आउर जोड़ दऽ कि बजरंगी भाईजान के झुण्डों में कुछ ओइसने लुहेड़ा बाड़न सऽ जवन मोका पर पत्थल के टुकड़ा पावते, अदिमी से गुरदेल में बदल जालन् सऽ....

– "ठीक कहत बानीं, सर जी! ईहे कूल्हि भाँपि के तऽ हमके नजीबुलवा के सलाह पर धन्धा बदले के परल.. .. (गंभीर होके) समय के तकाजा बा कि लोग अब फूल ना, पत्थल के गाँज लगावो... ना तऽ..."

– ना तऽ हमनी के अपना पंथ–मजहब–जाति के पक्षधारता करे में, आ अपना अवतार–पैगम्बर–महापुरुषन के मान–सम्मान बचावे में पिछुआ जाई! हमनी के नामो–निशान मिट जाई... दोसरा कौम के लोग हमनी के अब्बर बूझ के नेस्तनाबूद कर दी...।

एकरा पहिले कि पोस्ट–ग्रैजुएट पप्पू के पथरीला–जहरीला आ जाहिलान्त तर्क से घाही होके ओहिजे धराशाई हो जाये के नौबत आवो, हमके शब्बो चाची का ओह् दोकान से चुपचाप बहरी निकलले में समझदारी बुझाइल। बहरी आके हम मेन रोड पर अबे दसो डेग आगा ना बढ़ल होखब कि, बरिसन से फेरी लगाके तरकारी बेचे वाला एगो परिचित दोकानदार, ठेला पर ओइसने तीन–चार गो बोरी लदले चिचिआत लउकल– "ले लो! ले लो! पत्थर ले लो! अल्लाह की औलादों! भगवान की सन्तानों! धरम के रखवालों ! मजहब के ठेकेदारों! पत्थर ले लो! पत्थर ले लो...। त्यौहार पर भारी छूट का लाभ उठाओ और ... एक बोरी पर, दूसरी फ्री ले जाओ! ले लो! पत्थर ले लो..."●●

हमार गाँव

केदारनाथ सिंह

पर किस तरह मिलूँ
कि बस मैं ही मिलूँ,
और दिल्ली न आए बीच में
क्या है कोई उपाय!

–'गाँव आने पर'

जहाँ गंगा आ सरजू ई दूनो नदी क संगम बा, ओसे हमरे गाँव के दूरी लगभग आठ किलोमीटर होई। दूनो नदी क बीच में पड़ला के वजह से एह इलाका के 'दोआब' कहल जाला। एक तरह से ई इलाका उत्तर प्रदेश आ बिहार के सीमा–रेखा पर बा, बाकिर सांस्कृतिक दृष्टि से ए इलाका के संबंध बिहार से अधिका बा, खाली नाता–रिश्ता ना, बल्कि खान–पान आ बोलियो–बानी बिहारे से अधिक मिलेले। एह क्षेत्र के भोजपुरी गाजीपुर आ बनारस के भोजपुरी के अधिका निकट पड़ेले जवन अपने बनावट में आरा जिला के भोजपुरी के अधिका निकट ह। हमरा गाँव से चार किलोमीटर दक्खिन गंगा बाड़ी आ करीब–करीब ओतने उत्तर सरजू। कहल जा सकेला कि ई दूनों नदी के माटी–पानी से ई इलाका बनल बा। पहिले जब बाँध ना बनल रहे त जुलाई–अगस्त के महीना में ई दूनो नदी मिल के एक हो जात रहल। हमरा इयाद में ऊ छोटकी नदी बहुत गहराई में कहीं आजो मौजूद बा जवन हमरा चबूतरा के सामने बहेले आ एक ओर जहाँ ओकर एक छोर गंगा से मिलेले त दूसर सरजू से। शायद एही वजह से नदी के साथ हमार मन के बहुत गहरा जुड़ाव बा।

जवना गाँव में हम पैदा भइल रहनी ओकर नाम ह चकिया। एकर ठीक–ठीक इतिहास त हमरा पता ना बा, बकिर एक सम्बन्ध में कई तरह के कहानी सुनल जाले जवने के सार इहे ह कि एह गाँव के मूल निवासी कहीं बाहर से आइल रहें आ नदी के किनारा देख के इहें बस गइलें। पहिले जब आवागमन के साधनकम रहे त एह नदी क उपयोग व्यापारिक काम खातिर होत रहे। धीरे–धीरे एकर उपयोग कम होत गइल आ हालत ई बा कि नदी अब नाममात्र के नदी रह गइल बा। कभी केहू के एह विषय पर खोज करे के चाहीं कि देश के दूरवर्ती भाग में बहे वाली अइसन असंख्य नदियन के आज का हालत बा। सभ्यता के विकास के साथ–साथ नदी काहें सूखत जात बाड़ी स? ई हमनी के समय के एगो बड़ा सवाल बा, जवना के उत्तर हमनी के खोजे के चाहीं।

लगभग पचास साल पहिले चकिया छोड़ले रहलीं, हालाँकि चकिया से सम्बन्ध अभिनो छूटल नइखे, बीच–बीच में जात रहीलें, बाकिर अब गइला पर बुझाला जइसे कवनो परदेसी लेखा भा जादे से जादे कवनो मेहमान लेखा। ई

स्थिति बहुत तकलीफदेह होले आ एकरा दंश से बचल मुश्किल होता। सब गाँवन के तरह हमारो गाँव ऊ नइखे रह गइल जवन हम छोड़ले रहलीं। हवा–पानी से लेके विचार–व्यवहार तक बहुत बड़ बदलाव देखल जा सकेला। एगो बहुत प्रत्यक्ष बदलाव त ईहे बा कि गाँव क आबादी बढ़ कइल बा, साक्षरता बढ़ गइल बा, लेकिन सबसे बड़ विडम्बना ई बा कि गाँव के जवन तथाकथित शिक्षित वर्ग बा शायद उहे सबसे अशिक्षितो बा। असल में जवना तरह से ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के विकास हो रहल बा, ई बुनियादी दोष ओकरे में निहित बा, बाकिर इहाँ ओ प्रसंग के विस्तार में गढ़ले के जरूरत नइखे।

पहिले हमरा परिवार में खेती–बारी होत रहे, अब ऊ बन्द हो गइल बा। खेती जादे ना रहे, बकिर खाए–पीए लायक हो जाए– ओमें से कुछ खेती आजो बाँचल बा। ओकरा के हम बचा के रखले बानी। एह पवित्र मोह खातिर कि कभी–कभी एही बहाने गाँवे जात रहीं।

अब गाँव गइले पर सबसे बड़ समस्या ई होला कि बतियाईं केकरा से। हमरा अपना उमिर के जतना संगी–साथी बाड़े ऊ अपना–अपना काम में व्यस्त रहेलें, आ ओमें से कई लोग बाहर चल गइलें। बहुत लोग त ए दुनिए में अब नइखे। एह समस्या के समाधान हम एह तरह से खोजले बानी कि गाँव में जेतना दिन हम रहेलीं–हिंदी भुला जानी। कभी केहू पढ़ल–लिखल हिन्दी बोलबो करेला त हम धन्यभाग से भोजपुरिए बोले के कोशिश करेलीं। एकर दू गो फायदा बा– जहाँ भोजपुरी के अभ्यास ताजा हो जाला उहें एक बार हिन्दी के एक तरफ रख देला के बाद गाँव के छोट–से–छोट आदमी से बतियइले में कवनो बाधा–व्यवधान ना रह जाला। भोजपुरी के सहज आत्मीयता हमरा एक अहसासो के तार–तार क देले कि हम परदेसी हो गइल बानीं। तबो गाँव के चीज आ अपना सम्बन्ध के बीच जवन एगो अन्तराल आ गइल बा ऊ कई बार साफ दिखाई पड़ेला। ए सम्बन्ध में एगो छोट घटना क जिक्र करब। एगो हमार बचपन के साथी, जेकर एही साल निधन हो गइल ह, हमरा रास्ता में मिल गइल त ए अनचीन्हारपन के अउर तीखा बोध भइल। ओकर नाम जगरनाथ रहे आ आज के भाषा में ओके दलित कहल जाई। त काफी लमहर अन्तराल के बाद मिलला पर हम जगरनाथ से कहनी कि साँझ के तोहसे भेंट होखे के चाहीं। साँझ के जगरनाथ अइले, आवते सवाल कइले– "बताईं कौन काम बा?" हम जगरनाथ के कौनो काम खातिर ना बोलवलें रहीं, असहीं मिले खातिर बोलइलें रहीं। बाकिर उनका सवाल के बाद हमरा पहिला दफे ई महसूस भइल कि एतना दिन गाँव से बाहर रहला के बाद खुद गाँव के लोगन से हमार संबंध चुपचाप बदल गइल बा। ई ए गो आघात नियन रहल लेकिन एकरा बावजूद हम लगातार ई कोशिश करत रहलीं आ आजुओ करीलें कि गाँव जाईं त ओकरा चौहद्दी में ओसहीं प्रवेश करीं जइसे आज से पचास साल पहिले करत रहीं। लेकिन ई पचास बरस के टाइम के नकारल ना जा सकेला, अब त कई बार गइला पर ईहो सोचे के पड़ेला–जइसन अपना एगो हिन्दी कविता में हम लिखले बानीं– /आ तो गया हूँ/पर क्या करूँ मैं?/–गाँव आने पर.../

ए अनुभव से बचल ना जा सकेला, काहे से कि गाँव के जिन्दगी के एगो जवन आपन लय बा ओकरा साथ शहराती जिन्दगी के लय क संगत बइठावे में कई बार दिक्कत होले। एसे कई दफे ओ अनचीन्हारपन के बोध अवरू तीखा हो जाला जवना के हम पहिले जिक्र कइले रहनीं।

लेकिन गाँव के एगो अउरी लय बा जवना के ग्रामीण प्रकृति के लय कहल जा सकेला–ऊहाँ के नदी, नाला, खेत, खरिहान, टोला, कछार, पेड़–पौधा इहाँ तक कि कीड़ो–मकोड़ा में, ईहो लय अब गाँव में ओही लेखा नाहीं रह गइल जवना के हम पहिला दफे गाँव में छोड़ के आइल रहीं। सबसे जादे तकलीफ आज ओ गाँव के नदी के देख के होला जवन हमरा घर के ठीक सामने बहेले। बहेले– ई खाली एगो मुहावरा के रूप में कहल जाला असल में अब ओकर बहाव खतम हो गइल बा। अपना देश के बहुते नदियन लेखा हमरो गाँव के नदी भरा रहल बिया। ऊ अब नदी से एगो जबदल पानी वाला पोखरा बन गइल बिया जवना में थोड़के भर गति खाली बरसात में आवेले। लेकिन सबसे दुखद बात त ई बा कि आज गाँव के लोगन के स्मृतियो से धीरे–धीरे ऊ नदी हट रहल बिया। अगर हमरा से पूछल जाई कि पिछला पचास साल में हमरा गाँव के सबसे बड़ दुखद घटना भा त्रासदी का रहल बा, त हम कहब – हमरा नदी क मृत्यु!

जइसे माई के गोदी में बच्चा पलेला, हम आ हमार बहुते समउरी लोग ओ नदी के गोदी में ओहीं लेखे पलेला। सँउसे वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद ई केतना तकलीफदेह बा कि गाँव के नदी मर रहल बाड़ी स आ ओकुल के बचावे खातिर कवनो उपाय केहू के पास ना बा।

लेकिन गाँव में सबकुछ एही लेखिन नाही बा। बहुत कुछ टूट बिखर गइल बा, बहुते गीत जवना के हम लरिकाईं में सुनले रहलीं उहाँ केहू के याद ना बा, शायद बहुत–सा कीड़ों–मकोड़ा अब बहुत कम दिखाई पड़ेलन स, लेकिन ए सबकुछ के साथ–साथ गाँव के जिन्दगी के बाँधे वाली एगो चीज हम अबहियों पावेलीं। ओकरा के ठीक–ठीक नाम देहल हमरा खातिर मुश्किल बा। बाकिर ई बात अबहियो बाँचल बा कि एक आदमी दूसरा आदमी के इहाँ बिना कामो के जा सकेला, कुछ देर हँस–बोल सकेला आ सारी पंचाइती राजनीति के बावजूद एगो अपना गाँव खातिर चिन्तित भा परेशान होइ सकेला। ई बात हमरा के एगो खास ढंग से प्रभावित करेले आ शायद हम बार–बार गाँव जाईलें त ओही के खोजे खातिर जाईलें। कई बार ई डर जरूर लागेला कि ऊहो कहीं नदी लेखा धीरे–धीरे खतम न हो जाये। ऊ कइसे बचल रही, ई हम ना जानेनी। कबो–कबो ईहो डर लागेला कि अगर नदी ना रही त गाँव के अस्मितो के ना बचावल जा सकेला। एकाध बेर गाँव के कुछ उत्साही युवक लोग नदी के बचावे खातिर उत्सुक दिखाई पड़ेला त भीतर थोड़ा ढाँढ़स होला कि शायद गाँव के अस्मिता चाहे जतना जर्जर हो गइल होखे, बचावल जा सकेला। फिर ईहो बुझाला कि खाली एगो गाँव के बचावे के सवाल ना ह। एह देश के सगरो गाँव धीरे–धीरे आपन अस्मिता खो रहल बाने स आ एकरा ओर प्रायः सोच–विचार क प्रक्रिया बन्द हो गइल बा। ई सब परिस्थिति परेशान करेला, लेकिन गाँव अबहियो बार–बार खींचेला त उहाँ कुछ त होई जवन ओ परिवेश में न मिले, जवना में अब रहे खातिर हम आ हमरा जइसन लोग अभिशप्त बा। ●●

लघुकथा

मरम

अशोक कुमार तिवारी

अशोक आ मनोज दूनो मित्र फल दुकान से फल खरीदत रहे लोग कि मइल – कुचइल कपड़न में सोरह–सतरह साल के एगो लइका ओह लोग के पास पहुंच के चिरउरी करे लागल–

''हमार बाबूजी बेमार बाड़े.... दवाई खरीदेके बा.... कुछ पइसा के मदत करीं सभे।'' लइका के आवाज में बेबसी भरल रहे।

''केतना रुपया चाहीं.. दवाई खातिर?'' अशोक पुछले ।

''रोज साठ रुपया के दवाई लागेला।'' लइकवा कहलस।

''ठीक बा... हई सइ गो रुपया लऽ.... कुछ उनुका खाहूं खातिर लेले जइहऽ ।''अशोक सइ रुपया के एगो नोट ओह लइका के देत कहले।

'' भगवान जी रउवा के एकरा सइगुना देसु।'' ऊ लइका आगे बढ़ गइल। अब आज शायद ओकरा दोसरा केहू के मदत के दरकार ना रहे।

'' जानतानी भाईजी, ऊ लइका रउवा के ठगि ले गइल। ओकर रोज के ईहे काम बा.... रउवा त सइगो नू दे देनीहा.... लोग दस–पाँच देला आ दस–बीस लोगन के दवाई के नांव पर चूना लगाके आपन स्वार्थ साधेला। जानऽतानी ई बगले के गाँव के हऽ आ जवना बाप के दवाई खातिर पइसा मांगता ओकरा मुअला तीन साल हो गइल.... माई त पहिलहीं से नइखे.... एकर एगो बड़ बहीन आ दूगो छोट भाई बाड़ेसन... ई अइसहीं लोगन के बोका बना के आपन परिवार पोसेला। हम ओहघरी एहसे ना बोलनीहा कि का जाने रउवा बाउर लागी। ''मनोज एकसुरुकिए कहत चलि गइले ।

'' मनोज भाई.... रउवा ना बोल के अच्छा कइनीहा.. आ ई सब बात हमरा पहिलहीं से पता बा जवन रउवा बतइनी.... ईहे ना हमरा ईहो पता बा कि ओह लइकवा के डांड़ में एगो झोरा खोंसल होई जवना में ऊ रोज खरची–बरची कीन–बेसहि के ले जाला.... कइ बेर ओकरा के हम अइसन करत देखले बानी ।'' अशोक हलुके–हलुक मुसकात कहले ।

'' तबो रउवा पइसा दे देनीहा? ''मनोज के चेहरा प अचरज रहे।

'' हंऽ तबो दे देनींहा। ''अशोक अभियो मुसकात रहले।

'' कांहे? ''मनोज कारन जानल चहले।

'' एह से कि ओह लइका खातिर जहिये ई रास्ता बन्द हो जाई ओही दिने ऊ दोसर राह पकड़ लिही, जवन हमरा खातिर, रउवा खातिर, एह समाज खातिर भा केहू खातिर नीक ना होई। बुझाइल?'' जबाब देत अशोक अब गम्भीर रहले।

'' हँ अशोक भाई.... रउवा ठीक कहत बानी। '' मरम बूझ के मनोजो अब गम्भीर हो गइल रहले।

– सूर्यभानपुर, बलिया

अब ना अइबो ए गंगा

डॉ0 शारदा पाण्डेय

महाकुम्भ लागहीं के रहल। मन भइल कि पर्व के पहिलहीं जाइ के गंगा जी के दर्शन कऽ लीं। साँझि के पदचार लउके लागल रहे। भगवान आदित्य नारायण के ललछौंही किरण गंगा के लहर से खेलत रहे। बुला विदाई लेत रहे। गंगा के गति बड़ा धीमा रहे जइसे उदास होखसु। उनुकर उज्ज्वल रंग धूलि–धूसरित, सँवरा गइल रहे। ना उल्लास, ना कल्लोल, ना मोती झरत हँसी। हम सोचे लगनी कि जवन गंगा अपना उछाह से कुल्ही वातावरण के उज्ज्वल आ पवित्र कऽइ देत रहली, जेकरा खातिर कहल गइल कि–

"हरिपद पाद्यतरंगिणि गंगे हिमविधुमुक्ताधवल तरंगे।
दूरी कुरु मम दुष्कृति भारं कृपया भवसागर पारम्।।"

का हमार पाप दूर करे वाली, हमके प्रसन्नता देबे वाली, निरोग करे वाली ईहे गंगा हई? कइसन हो गइल बाड़ी ई गंगा जेकर जल अइसन हो गइल बा कि आचमन करे के, के कहो सिर पर डालहूँ के साहस नइखे होत। 'शंकरमौलिविहारिणि विमले' गंगा के स्वरूप कहाँ गइल? हमार पाप धोवत–धोवत हिमालय के भी खण्डित कऽइ के कल्लोल करत निकल के आवे वाली गंगा के गति कहाँ अलोप हो गइल? एह ऋषि कन्या के ई नियति के दायित्व केकरा पर बा?

"पतितोद्धारिणि जाह्नवी गंगे खण्डित गिरिवरमण्डित भंगे।
भीष्मजननि हे मुनिवर कन्ये पतित निवारिणि त्रिभुवन धन्ये।।"

आकाश से पाताल तक धावे वाली त्रिपथगा आजु एह मृत्यु लोक में बुला साँस तक लेबे में हाँफ जा तारी। जतना अवशिष्ट, उच्छिष्ट बा कुल्ही इनके में बहा दीहल हम अपना पुण्य के संचय बुझनी जवन कि पतित पावनी खातिर अपघात हो गइल बा।

मन के एह उदास वैचारिक क्षण में अनासे एगो गूँज उठे लागल कि–

"अब ना अइबो ए गंगा अब ना अइबो हो,
मोरा गोड़वा बथेला गंगा अब ना अइबो हो।"

कतना श्रम से, कतना भक्ति–भावना, विश्वास से भरल भारत के जन–मानस एह मातृ दर्शन खातिर लालायित होके आवेला, खाली "गंगा तव दर्शनात् मुक्तिः" इहे सोच के ना, बलुक ई गंगा हमरा जीवन के, अभिलाषा पूर्ति के आधार बाड़ी, एह अटूट आस्था से तिरिया के गोड़ बऽथे लागल दुर्लभ गंगा के दर्शन–स्नान खातिर पदयात्रा से। माँ गंगा ओकर व्यथा समुझली, आशीर्वाद आश्वासन उत्साह से भरि दीहली–

"फेरू अइबू ए तिरिया फेरू अइबू हो।
ए तिरिया गोदिया बलकवा लेइ के फेरु अइबू हो।।"

जन–धन–वृद्धि के ई आशीष कवना नारी के कृतार्थ ना कऽइ दी? कुल्ही व्यथा थकान एह मातृ आशीष से मिल गइल। एगो दोसर नारी गंगा के लहर में डूबि के प्राण लेबे के प्रार्थना करऽतिया–

"गंगा जी ऊँच अररवा तिरिया एक रोवेले हो।
ए गंगा मइया अपनी लहरि हमें दीहितू तऽ हम बूड़ि मरितीं नू हो।"

कवन महतारी अपना सन्तान के अपने से मृत्यु दी? गंगा के करुणाभरित तरल हृदय तार–तार हो गइल। महतारी के आगा अपना दुःख के कारण तऽ बतावऽ–

"किया तोहे तिरिया हो सासु दुख नइहर दूरि बसे हो
ए तिरिया किया तोहरे कंत विदेस कवन दुःख रोवेलू हो?"

एगो भारतीय नारी के जीवन में दुःख–दाह के ईहे ज्वलंत कारण हो सकेला। भारत के प्राण में बसल गंगा ले ढेर ई के बूझी? ई समस्या आजुओ बा। बाकिर एगो बात छूटि गइल। मातृत्व, जवन नारी जीवन के पूर्णता आ सृष्टि के परमानन्द हऽ, ऊहे नइखे–

"नाहिं मोरे गंगा मइया सासु दुख नइहर दूरि बसे हो।
ए गंगा मइया नाहीं मोरे कंत विदेस कोखिअ दुख रोवेनी।।"

माई के लहर में बेग आइल आशीष फूटि परल, आँखि लोरिआ गइल, कहली– "जाहु मोरी तिरिआ हो घरे जाहू जनि रोई मरहू हो।
ए तिरिया आजु के दसवें महीनवे होरिलवा तहरो होइखें नू हो।।"

तिरया के तन–मन तऽ प्रेम–आस्था से लबालब भरि गइल, काहें कि ऊ बेटा होखे के आशीष दीहली। ई इच्छा आजुओ भारतीय समाज में पइठल बा– बेटी केहू ना माँगे। बाकिर गंगा के आँखि से मोती झरे लागल बुझाइल जे उनकर अमृत धार कहीं नुनछाँह मत होइ जाउ। आपन लोर अपने पोंछि लिहली, सिसकी दबा लिहली। बुला उनुका मन परि गइल कि वसुअन के जन्म देके अपने हाथे ऊहे अपना धार में बहवली। शांतनु अपना बचन के रक्षा खातिर बेबस देखते रहि जासु। अंत में ना रहि गइल त रोकि लिहलन। कहलन, "तू कवना कुल के हऊ? कइसन महतारी हऊ कि अपना संतान के अपने मृत्यु दे तारु। बाकिर अब ना, अब हम एह संतान के ना मारे देब। तूँ रह, चाहे मत रहऽ?" गंगा ओह क्षण के कइसे भुला दीहें? भलहीं देवव्रत के अद्वितीय व्यक्तित्व दे के शांतनु के समर्पित कइली, बाकिर पुत्र हंता त कहयिबे कइली। तबे नू देवकी कहली, "बसुदेव! तुम शांतनु हो सकते हो। मैं गंगा नहीं बन सकती।"

ई गंगा हमरा जीवन के प्रारम्भ से अंत तक के यात्रा के सहयोगी–साक्षी आ पवित्रता के आधार हई। 2525 किलोमीटर लगातार बहे वाली धरती के वसुन्धरा बनावे वाली ई गंगा गतिमय तीर्थ हईं। तबे नू हमरा पवित्र तीर्थन के प्रतिष्ठा इनका तट पर भइल। चाहे तीर्थराज प्रयाग होखे चाहे शिव के त्रिशूल पर बसल काशी होखे। काशी में आइ के लागेला कि गंगा अपना नइहर के ओर बड़ा सतृष्ण भाव से ताकऽतारी, जबकि प्रयाग में ऊ चमुना के अपना में समाइ के अवरू नदियन के संगे लेइ के अपना पति सागर में जाइ के एकरूप हो जाली। ई समभाव सद्भाव अवरू केकरा में बा। "पारावारविहारिणी गंगे विमुखयुवतिकृततरलापांगे।" अपना चटुल हाव–भाव से सागर के गम्भीरता के मंदहास से भरि देली। एही से एजू आइके सभके अपना तीर्थयात्र के पूर्णता के आभास होला। कहाला कि, "सारे तीरथ बार–बार/ गंगासागर एक बार।" परमात्मा से एकरूपता पा लिहले तऽ जीव के लक्ष्य–धर्म आ सार्थकता हऽ।

एह गंगा माई के कतना रूप आ कइसन मानवीकरण, कतना संवेदनात्मक भाव चित्र हमरा जीवन में हमेसा चमकेला ओकरा बारे में का का कहीं? गंगा आ शिव के सम्बन्ध तऽ तोतने आत्मीय हो गइल बा जतना पार्वती के। भोजपुरी के गायक एकदम सामान्य सामाजिक जीवनो के ऊ रूप देले बा जवन विचारणीय बा–

"पुरइन पात पर सूतेली गउरा देई सपना देखेली अजगूत रे।
मोरंग देसे वजन एक बाजेला केकर होखेला बिआह रे।।"

अपना पड़ोसिन से सपना बताइ के पुछली तऽ उत्तर मिलल कि "हे पार्वती! तूँ तऽ अयानी ज्ञानी बुझातारू। ई बिआह शंकर जी के होता। अब जा

अपना सवति के परिछ लऽ।" घनघोर तपस्या से पावल शंकर जी के ई दोसर बिआह त गउरा के भीतर तक बेधि दिहलस। शंकर जी से पुछली कि हमरा में कवन दोष पवनी कि रउआ दोसर बिआह कऽइ लिहनी। शंकर जी कहलन कि "तहरा में कवनो दोष नइखे बाकिर 'भावी' दोसर बिआह करे के बाध्य कइलस।" एहू ले दुःखद भइल कि जब पालकी के ओहार उठाइ के परिछे चलती तऽ ऊ उनुकर बहिन गंगे रहली–

"किया ए महादेव चोरनी से चटनी किया हम कोखि के बिहून जी।
किया ए महादेव सेवा से चुकनी, काहें कइनी दोसर बिआह जी।"

महादेव जी 'भावी' पर भार देके मुक्त भइलन बाकिर देवनदी गंगा शापित भइली–

"डँड़िया उघारि जब देखेली गउरा देई ई तऽ हर्ठ बहिना हमार जी।
किया तोही बहिना हो बर नाहीं मिलले मोरा पीठि दरेलू अंगार जी।"

आ गंगा जी जब अपना बहिन पार्वती से क्षमा मांगि के आशीष मँगली–

"अइसन असीम तूहूँ दीहऽ मोरी बहिना, भुभुतीं अजोधिया के राज जी"।

गउरा पत्नी के पीड़ा से रोषित कहली कि–

"सार पइसि बहिना गोबर कढ़िहऽ करिहऽ रसोइया बेवहार जी।
हमरो लइकवा खेलइहऽ ए बहिना, सिव जी के सेजे जनि जाहु जी।।"

एह मानवीय भाव के आशीष कहल जाउ कि अभिशाप? बाकिर ऊ तऽ व्रत लेके चलल बाड़ी "सब कर हित होई" के। एसे ऊ राम–भक्ति में डूबि गइली, "राम भगति अहँ सुरसरि धारा" तीर्थराज प्रयाग के धन्य कऽ दिहली। अपना अभिशाप दायिनी बहिनियो के पवित्रता के साक्ष बन के कृतज्ञ बना दिहली। शिव के मर्मघाती शंका समाधान खातिर गंगा सोझा आ गइली– शिव गंगा के सपत्नीत्व के अस्त्र बनावे के चहलन बाकिर गंगा के ईर्ष्या–द्वेष शून्य मन पार्वती के साक्ष्य बनि गइल। शिव कहले– "गउरा बज्र केवाड़ी कइसे खुलल गंगा के शपथ लऽ।" "जब रे गउरा देई गंगा हाथे लिहली रे गंगा जमुनवा बीचे रेत रे।"

पार्वती भावाभिभूत हो गइली आ गंगा भइली "स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा।" ओह घरी गंगा के लाज भरल वधू रूप देखे लायक बा–

"सकुचति ऐंचति अंग गंग सुख संग लजानी।
जटा जूट हिमकूट सघन बन सिमिट समानी।।"

आशुतोषो अपना एह पारिवारिक सौहार्द्र के देखि के–

"दियो सीस पर ठाम बाम करि कै मनमानी।"

गंगा के औषधि पूरित, शक्तिदायिनी, वात्सल्य भरल रूप के इयाद कऽई के आजु के गंगा के अतना प्रदूषित विषादमय रूप देखि के एगो लमहर निःश्वास बुझाइल पूरा वातावरण के दुखित कइ दिहलस आ मन में आइल कि– "अब ना अइबो ए गंगा अब ना अइबो हो" गंगा विवश देखत रहि गइली, कवनो भगीरथ के प्रतीक्षा में ई कहे खातिर कि "फेरू अइबू ए तिरिया फेरु अइबू हो।" ●●

– बाघम्बरी गृहयोजना, देवरिया

☑ राकेश कुमार पाण्डेय

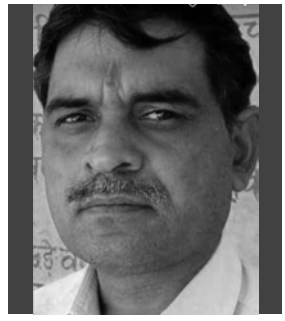

एक

कातिक महीनवां पकल धान खेतवा में,
लटकल बलिया लचकि पियराइल बा।
होत बिहनइयें परेले ओस रात भर,
देखा इहे चानी जइसे तरई छिंटाइल बा।
कँवल-कुमुद लाल फूलें उज्जर गढ़ई में
पलिहर में बकुला क पर उजराइल बा।
खेतिया किसनियाँ क भीर इहे कतिकी क
मह-मह महकेले मटिया जोताइल बा।

बजरा के गोफवा में दनवाँ क आस देखि
झुण्डे-झुण्ड चिरइन क जिव ललचाइल बा।
सगरो सिवनियां भरल लागे खेत मेढ़
पटुआ आ सनई रहरिया फुलाइल बा।
खड़ीरिच क मन डोले दिनभर महोखा बोले
पोरे-पोर उखिया क रसवा रसाइल बा।
खेतिहर के काम लउके छोटहर दिन इहे
भुक से अन्हार होखे जिव अँउजाइल बा।

कुछु अदनार ढेर पकल कटात खेत
धनवाँ के खेतवा में गोरिया देखाइल बा।
लामी-लामी केशिया भरल मांग सेनुरा से।
घुंघुट में लाली जइसे सँझिया ललाइल बा।
धनवां में कमल के फूल जानी लाल-लाल
भंवरा आ तितिली लुझल भरमाइल बा।
बलिया के संघे बाजे चुड़िया खनकि-खन
सगरो सिवनियां मधुर मधुआइल बा।

घुंघुटा हटावें गोरी पसिजल मुंह देखि
संझवे चनरमा उगल-उगि आइल बा।
दिनवां में काटें गोरी सिटकेलीं धनवाँ के।
देहियां भरल लोच अधिके थकाइल बा।
खेतिया किसनियाँ में जिनगी त धूर-माटी
संझवा बिहान कहाँ दुपहरि बुझाइल बा।
सरसों केरइया आ चनवां क बोअनी में
बेंग खाद मिले कहां सुबिधा देखाइल बा।

टट्टर जोते खेतवा न बरधा क खेती अब
महंग जोताई तेल डीजल मंहगाइल बा।
सबही किसान के झरोखा झांके झुट्टे-मुट्टे
छोटहर किसान देखा सगरो बिलाइल बा।
बेंग क दोकान ठगे नकली मिलेला बीज
कहां सरकारी मिले सबही ठगाइल बा।
इहे दुख खेतिया किसनियां सुनावत बाड़ीं
सुनी नाहीं केहू ई त बहुते गवाइल बा।

जड़वा गुलाबी परे लुप से अन्हार होय
डूबेला सुरुज साँझ जइसे लजाइल बा।
चंहकत चिरइया उड़त जालीं अपने खोतवा में
बचवन के लेइ जहां संझवे लुकाइल बा।
रतिया चनरमा उगेलें चटकार जोत
झर-झर किरनियां से धरती जुड़ाइल बा।
आवा हो बिहान देखा गांव भिनुसार होत
रतिया सयानी गोद लालिमा ललाइल बा।

दू

पूष क जाड़ा थर-थर काँपें, सूरुज चान जुड़ाइल-
चटक अंजोरिया रात सिथाइल, झर-झर ओस नहाइल-
बिना राग क चेंचा गावें, तलही ताल देखाइल-
झुंड-झुंड क बकुला सगरो, खेतवा बा उजराइल।।

सरसों फूल बा पीयर झक-झक, तीसी बा सँवराइल-
फुलल सफेदी लाल केरइया, असमानी उतिराइल-
खेत क शोभा भरल कोल्हाड़ी, महिया, ऊख छिलाइल-
आलू भूजत चूल्हा झोंकत, कचरस मीठ पेराइल।।

छोटहर दिन कोहरा से ढाँपल, सूरुज बा नरमाइल-
लुका-झिपी क खेल बिहाने, भुक से साँझ बुझाइल-
कउड़ा बारि के आड़े बइठीं, फूटत हाड़ जनाइल-
खोंटुआ साग बनावें घरनी, सीजन इहे भेंटाइल।।

लगन सुदेवस अगहन बीतल, पाख अन्हरिया आइल-
खिचड़ी तक खरवाँस बा फुरसत, चिउरा धान कुटाइल-
गांती बन्हले फाँड़ में चिउरा, लरिका खात देखाइल-
गरम गूर आ कचरस बढ़ुआं, मंठा डालि पिआइल-।

निठुरी बो भउजी क ढूंढा, बड़हर देखि पराइल-
भर परात-पलरा सरियवले,रसगर गूर बन्हाइल-
पानी आइल मुंह में देखते, लावा बा लपटाइल-
देसी कवन सुवाद बताईं-चिखलीं तबे लिखाइल।।

पूष महीना मुँह-तोप्पा दिन, सिकुरल सभे देखाइल-
गाय लखेद के राजा सभई, छूटल दूध दुहाइल-
गाँव में खोजले मिली न गइया-ऊहो दिन अब आइल-
पशुपालन से भागल सबही, दुअरा छेरि बन्हाइल।।

गांव-हुरमुजपुर, पोस्ट-हुरमुजपुर, वाया-सादात,
जनपद-गाजीपुर,उत्तर प्रदेश, पिनकोड-२७५२०४
मोबाइल नंबर-9621279965

बुआ के बकरी

दिनेश पाण्डेय

बेवा होके नइहर में बस गइल जीवतन बुआ के खुद के जिनिगी के एगो अलगे दास्तान रहे, बाकी अबे त उनुकर बकरी के किस्सा सुनावल खास मकसद बा।

लोकसमाज में 'चीकधन' के घटिया धन कहल गइल बा बाकी जहाँ सगरे उमेद के बाती बुत गइल होखे ओजा सुविधा आ सुलभता के आगा सभ नियम–बरजन अकारथ हो जालें। असहूँ ई अरजन कम, जियादह करुना से जुरल मुद्दा रहे। गरनी के बगल से दक्खिन का ओरि जाए वाली अहरी के ढलान प बकरी के एह नवजात शिशु के मरनासन्न हालत में मिलन औचक रहे। बुआ दूर तक देखले रहली। चिरईं के पूत तक ना लउकलें। हाँक लगवली, कवनो जवाब ना। ऊ करस त का? बिपदा में कवनों प्रानी के रच्छा पुन्नकाज ह।

ऊहे लावारिस नवोज आजु बुआ के देखभाल से पोठ पाठी बन गइल रहलि आ बुआ के दिन काटे के नीमन साधन रहलि। नेहावे–धोआवे, चारा–पानी, गिला–शिकवा, मान–मनुहार ओगैरह में दिन कइसे बीतल ई कहाँ पता चले? जमुनापारी नस्ल के एह पाठी के छबीलापन मन के मोहे। गुदगर देह प बिछल सफेद मोलाएम रोंआ, आ तेपर बैंजनी रंग के चितलाभा, गरदन तक झूलत कान, सुहराईं त मखमली अहसास। आँख में जहान भर के मासूमियत सिमट आइल रहे। बुआ ओकरा के सिनेह से जमुनी कहस।

ओह दिन पाठी चरे गइली त देर तक लौटलि ना। दिन चढ़ते बइसक्खा घाम तीखर होखे एकरा अगते बकरिन के झुंड घरे आ जात रहलीसँ। अगल–बगल के बकरी सभ लवटियो अइली बाकी जमुनी ना अइली। बुआ के चिंता लागल। कहईं कुछ अनहोनी त ना घटल। बुआ रने–बने, काँटे–कुसे कहाँ ना जोहले होइहें। अचके उनुका कहईं से मिमियाए के कमजोर बाकी भयभीत अस आवाज सुनाइल। ऊ आवाज का ओरि बढ़ गइली। डैना पसरले बाज का शक्ल में पसरल खलेटी के पछियारी पगडंडी से ढलान प उतरते उनकर नजर पास–पास बइठल दूगो बनरन प परल जवन चुहार अस घेंचि अलगवले बइठल रहन।

''ए बचवा, एहर हमार जमुनी के देखलऽ ह जा? मेमियाए के आवाज एनहीं से आइल रहे। साइत ऊहे होखे।''

''एक बनरा अपन दूनो कान के दूनो चौवा से ढँपलस फिर दहिनवारी हाथ के धिरौनी अँगुरी ऊपर उठा के आड़ी हिलावे लागल। एह संकेत के कुछो मतलब हो सकत रहे। बुआ के बुझाइल जे ई मरकिआहा या त बहिर ह, भा कुछ ना सुने के इशारा करत बा। ऊ दुसरका दने सवाली मुद्रा में तकली।

दोसरका के चेहरा भावहीन रहे कि कठेया मरला अस, एहू में भरम बनल रहल। कुछ देर के इंतजार का बादो तेकर बकार ना फुटल आ मुँह ओसहीं लोल जइसन खुलल रहल। बुआ के आँख में उभरत सवाल के फिर–फिर हिलकोर के टकराव से ओकरा में हरकत अस भइल, हाथ ऊपर उठल आ ठोढ़ी से नाक तक हथेली से ढँका गइल। बुआ के समुझत देर ना लागल कि ई निस्तानी बेजुबान हवें बुला।

ईहे ऊ बखत रहे जब तेसर बानर उबड़खाबड़ खलेटी के कवनो ओट से निकल के आवत, नजर के जद में आ गइल। सुस्त बाकिर इतमीनानी चाल, जइसन कि कसाई–करम का बाद कवनो कसाई के होला। ऊ कुछ देर ले बुआ का ओरि तकलसि फेरु उन्ह बनरन का ओरि।

''ए बचवा, हमार जमुनी के देखलऽ हा?'' बुआ के सवाल में उहे दोहराव रहे। तेसरा सुनलसि। सुनलसि आ तनी देर ले सोचलसि। ऊ एक–दु कदम दहिने–बाँवे भइला का बाद एक जगह टिक गइल। एह दरम्यान ऊ आपन तरहत्थी के आपस में घँसलसि, अदबद के ओसने जइसन कि एगो खबरनवीस खबर बाँचे बखत अक्सर घँसत रहेलें। अब एकरा पाछू अवचेतन में छिपल कवनो शातिर मनोभाव ओजह रहे कि हथेली में उठल चुन्चुनी कि अउ कुछ, ई कहल थोरे मोस्किल बा। ऊ तरहत्थी घँसलसि आ फिर–फिर घँसलसि, तब ले जब ले तरहत्थी गरम ना भ गइल। ऊ आँख के पपोटा मूनलसि आ गर्म तरहत्थी से तोप दिहलसि।

बुआ के ओकर आँखि के पुतरी के थिरता से अगतहीं संदेह होत रहे, अब संदेह ना रहल कि अवसो के ई भक्चोन्हर ह आ अजान–सजान जे होखे, अब असहीं रही। एकरा से कवनो मदद के उम्मीद कइल बेअरथ।

खलेटी के तलहटी देने से घुँटल अस गुर्गुराहट के कइगो आवाज उभरलि। लागल कि हुँड़ार आपस में झगरत होखस। पलभर खातिर बुआ के ध्यान ओने गइल। फिर पलट के तकली, मरघटी सन्नाटा रहे। अयँ ई बनरा कहाँ अलोपित भ गइलनसँ

बुआ में आगे बढ़े के साहस ना रहे। भरली आँखे लौटत उनुका लागल कि धरती के बिपरीत उड़त बाज के शक्ल वाली खलेटी के जगह कवनों बकरी के टटका उतारल खलड़ी फैलल बा। उनुका पसुधन छय के ओतिना गम ना रहे, मन में एके टीस उपजे, ऊ ई कि जमुनी ओही दिन मरि गइल रहिती त जादे बढ़िमा रहे। ●●

वाराणसी में वरिष्ठ साहित्यकार शिवपूजनलाल विद्यार्थी के "पाती अक्षर सम्मान" देत संपादक (पाती) का सार्थे पं0 हरिराम द्विवेदी आ विजय शंकर पाण्डेय / नीचे फोटो मे प्रो0 राम सुन्दर राय के "पाती कला सम्मान" बलिया में संपा0 पाती के साथ सर्वश्री अरुणेश नीरन, सांसद वीरेन्द्र सिंह 'मस्त' आ अजीत दुबे।

पाती 100वा अंक के विमोचन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन।

नई दिल्ली में ''पाती'' सउवाँ अंक के विमोचन

एयरपोर्ट अथॉरिटी आफीसर्स इंस्टीच्यूट नई दिल्ली में मुख्य अतिथि श्री अरुणेश नीरन एवं
विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अजीत दुबे

पंजाब केसरी

युवा भारत युवा अख़बार

7 मई, 2022 ▸ शनिवार

भोजपुरी भाषा के साथ न्याय करे सरकार : दुबे

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): हिंदी की सबसे बड़ी सहभाषा होने के बावजूद भोजपुरी भाषा सरकारी उपेक्षा और अन्याय की शिकार है। विश्व भोजपुरी सम्मेलन संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष और भोजपुरी समाज दिल्ली के अध्यक्ष अजीत दुबे ने शुक्रवार को एयरपोर्ट ऑथिरिटी अधिकारी संस्थान के सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में यह बातें कहीं। 'पाती" भोजपुरी पत्रिका के संस्थापक,सम्पादक डॉ अशोक द्विवेदी का पत्रिका के 100वें अंक के प्रकाशन की उपलब्धि और भोजपुरी की सेवा के लिये अभिनन्दन किया गया। इस मौके पर विश्व भोजपुरी संम्मेलन के अंतराष्ट्रीय महामंत्री अरुणेश नीरन ने कहा कि "पाती" का शतांक भोजपुरी जगत के लिए प्रेरणादायी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि 'पाती" भोजपुरी पत्रिका के दो दर्जन से अधिक विशेषांक एक दस्तावेज के रूप में संग्रहणीय है। पत्रिका के संस्थापक, सम्पादक डॉ अशोक द्विवेदी ने कहा कि पत्रिका के माध्यम से भोजपुरी समाज, संस्कृति, साहित्य को भरसक जन जन तक पहुंचाने के अभियान को चलाने का प्रयास किया है एवं आगे भी यह अभियान जारी रखने का संकल्प दुहराया। कार्यक्रम में भोजपुरी गायक गजाधर ठाकुर ने बटोहिया गीत गाकर सबका मन मोह लिया।

राष्ट्रीय सहारा

भोजपुरी भाषा के साथ न्याय करे सरकार : अजीत दुबे

सहारा न्यूज ब्यूरो

नई दिल्ली।

'पाती' भोजपुरी पत्रिका के संस्थापक/सम्पादक डॉ अशोक द्विवेदी का पत्रिका के सौवें अंक के प्रकाशन पर अभिनन्दन समारोह

दैनिक जागरण

भोजपुरी भाषा के ... करे सरकार : अ...

NBT नवभारत टाइम्स

। नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली । सोमवार, 9 मई 2022

भोजपुरी पत्रिका के सौवें अंक का विमोचन

भोजपुरी की त्रैमासिक बहुचर्चित पत्रिका 'पाती' के सौवें अंक का विमोचन एयरपोर्ट अथॉरिटी सभागार में शुक्रवार को किया गया। इस दौरान पत्रिका के संस्थापक, संपादक डॉ अशोक द्विवेदी का पत्रिका के सौवें अंक के प्रकाशन की उपलब्धि के लिए अभिनंदन किया गया।

इस दौरान विश्व भोजपुरी सम्मेलन संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष और भोजपुरी समाज दिल्ली के अध्यक्ष अजीत दुबे ने कहा कि हिंदी की सबसे बड़ी सहभाषा होने के बावजूद भोजपुरी भाषा सरकारी उपेक्षा और अन्याय की शिकार है। विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अंतराष्ट्रीय महामंत्री अरुणेश नीरन ने कहा कि 'पाती'का शतांक भोजपुरी जगत के लिए प्रेरणादायी उपलब्धि है और पत्रिका के दो दर्जन से अधिक विशेषांक एक दस्तावेज के रूप में संग्रहणीय है।

पत्रिका के संपादक डॉ अशोक द्विवेदी ने कहा कि पत्रिका के माध्यम से भोजपुरी समाज, संस्कृति, साहित्य को भरसक जन-जन तक पहुंचाने के अभियान को चलाने का प्रयास किया है एवं आगे भी यह अभियान जारी रहेगा।

शनिवार । 7 मई 2022 ।

नया इंडिया

भोजपुरी भाषा के साथ न्याय करे सरकार: अजीत दुबे

नई दिल्ली। हिंदी की सबसे बड़ी सहभाषा होने के बावजूद भोजपुरी भाषा सरकारी उपेक्षा और अन्याय की शिकार है।भोजपुरी त्रैमासिक पत्रिका 'पाती' का सौवां अंक इस भाषा की रचनाधर्मिता, साहित्यिक समृद्धि, सांस्कृतिक विरासत का दर्पण है, हमें नए रचनाकारों को रचनात्मक लेखन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उक्त बातें विश्व भोजपुरी सम्मेलन संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष और भोजपुरी समाज दिल्ली के अध्यक्ष अजीत दुबे ने आज एयरपोर्ट ऑथिरिटी अधिकारी संस्थान के सभागार में आयोजित सम्मान समारोह में कहीं। 'पाती' भोजपुरी पत्रिका के संस्थापक/सम्पादक डॉ अशोक द्विवेदी जी का पत्रिका के सौवें अंक के प्रकाशन की उपलब्धि और भोजपुरी की सेवा के लिये अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अंतराष्ट्रीय महामंत्री वरिष्ठ विद्वान अरुणेश नीरन ने कहा कि 'पाती' का शतांक भोजपुरी जगत के लिए प्रेरणादायी उपलब्धि है उन्होंने कहा कि 'पाती' भोजपुरी पत्रिका के दो दर्जन से अधिक विशेषांक एक दस्तावेज के रूप में संग्रहणीय है। इस अवसर पर पत्रिका के संस्थापक/सम्पादक डॉ अशोक द्विवेदी ने कहा कि पत्रिका के माध्यम से भोजपुरी समाज,संस्कृति,साहित्य को भरसक जन जन तक पहुंचाने के अभियान को चलाने का प्रयास किया है एवं आगे भी यह अभियान जारी रखने का संकल्प दुहराया। युवा लेखक डॉ. सुनील त्रिवेदी जी ने सरकार द्वारा भोजपुरी के प्रति संरक्षण संवर्द्धन करने की मांग की।कार्यक्रम में भोजपुरी गायक गजाधर ठाकुर ने बटोहिया गीत गाकर सबका मन मोह लिया.कार्यक्रम का संचालन कवि के. डी. पाठक ने किया और सचिव देवकांत पाण्डे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, भोजपुरी विभाग में ''पाती'' के 100वाँ अंक के लोकार्पण-विमर्श

सौजन्यः श्री कृष्ण कुमार प्रो0 अयोध्या प्रसाद उपाध्याय, डा0 अवधबिहारी सिंह, प्रो0 नीरज सिंह, रामयश अविकल, प्रो0 दिवाकर पाण्डेय, प्रो0 बलिराज ठाकुर, सुमन कुमार सिंह, जितेन्द्र कुमार, रवि प्रकाश सूरज, संजय कुमार आदि

भोजपुरी के बढ़ते दायरे की साक्षी है पाती पत्रिका

आरा(चौथी वाणी) 43 साल से अनवरत प्रकाशित हो रही भोजपुरी की चर्चित पत्रिका पाती के सौवें अंक का लोकार्पण भोजपुरी विभाग के दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह नाथ सभागार में सम्पन्न हुआ। मौके पर भोजपुरी के साहित्यकार और साहित्य प्रेमियों का जुटान हुआ जिनमें समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ अवध बिहारी सिंह, साहित्यकार रामयश अविकल, सुमन कुमार सिंह, कथाकार कृष्ण कुमार के अलावे भोजपुरी विभाग के शोधार्थी राजेश कुमार, संजय कुमार, रवि प्रकाश सूरज, सोहित सिन्हा, … आदि शामिल थे। सम… में पाती पत्रिका के … भोजपुरी विभागाध्यक्ष … ने कहा कि किसी भो… सौंवां अंक प्रकाशि… भाषा के मजबूत … परिचायक है। कथाकार क?ष्ण कुमार ने कहा कि पाती पत्रिका ने अनगिनत साहित्यकारों के निर्माण में योगदान दिया है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। रसायनशास्त्र के शिक्षक संजय कुमार सिंह ने कहा कि साहित्य की रचना वैसी होनी चाहिए जैसा समाज हम बनाना चाहते हैं। रामयश अविकल ने पाती परिवार को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। सुमन कुमार सिंह ने पाती पत्रिका को भोजपुरी की सबसे समृद्ध और सुसज्जित पत्रिका करार दिया। वरिष्ठ साहित्यकार आलोचक जितेंद्र कुमार ने … है। अध्यक्ष मंडल के सम्बोधन की शुरूआत करते हुए भोजपुरी के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो रविन्द्र नाथ राय … कि भोजपुरी पत्रकारिता में पाती … शीर्ष पर है। कथाकार औ… विभागाध्यक्ष डॉ नीरज सिंह ने क… पाती पत्रिका भोजपुरी पत्रकारि… मजबूत स्तम्भ है और सम्पादक … द्विवेदी के साथ साथ पाती से जु… सदस्य इसके लिए धन्यवाद का प… कार्यक्रम के अंत में अपने सम्बो… पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो अयोध्या … उपाध्याय ने कहा कि वैश्विक … भोजपुरी के …

दैनिक भास्कर आरा 24-05-2022

भोजपुरी पत्रिका पाती के सौवें अंक का लोकार्पण

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

आरा। 43 साल से प्रकाशित हो रही भोजपुरी की चर्चित पत्रिका पाती के सौवें अंक का लोकार्पण आज भोजपुरी विभाग के दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह नाथ सभागार में सम्पन्न हुआ। मौके पर भोजपुरी के साहित्यकार और साहित्य प्रेमियों का जुटान हुआ।

जिनमें समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ अवध बिहारी सिंह, साहित्यकार रामयश अविकल, सुमन कुमार सिंह, कथाकार कृष्ण कुमार के अलावे भोजपुरी विभाग के शोधार्थी राजेश कुमार, संजय कुमार, रवि प्रकाश सूरज, सोहित सिन्हा, धनन्जय कटकैरा आदि शामिल थे। समारोह की शुरूआत में पाती पत्रिका के लोकार्पण के बाद भोजपुरी विभागाध्यक्ष प्रो दिवाकर पांडेय ने कहा कि किसी भोजपुरी पत्रिका का सौंवां अंक प्रकाशित होना भोजपुरी भाषा के मजबूत होते जाने का परिचायक है। कथाकार क?ष्ण कुमार ने कहा कि पाती पत्रिका ने अनगिनत साहित्यकारों के निर्माण में योगदान दिया है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

रसायनशास्त्र के शिक्षक संजय कुमार सिंह ने कहा कि साहित्य की रचना वैसी होनी चाहिए जैसा समाज हम बनाना चाहते हैं। रामयश अविकल ने पाती परिवार को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। सुमन कुमार सिंह ने पाती पत्रिका को भोजपुरी की सबसे समृद्ध और सुसज्जित पत्रिका करार दिया।

वरिष्ठ साहित्यकार आलोचक जितेंद्र कुमार ने कहा कि पत्रिका की सफलता के पीछे सम्पादक अशोक द्विवेदी जी का संघर्ष है और इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पूर्व विभागाध्यक्ष और प्रो बलिराज ठाकुर ने पाती पत्रिका के इतिहास को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का अवसर स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। भोजपुरी के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो रविन्द्र नाथ राय ने कहा कि भोजपुरी पत्रकारिता में पाती का नाम शीर्ष पर है।

कार्यक्रम के अंत में अपने सम्बोधन में पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो अयोध्या प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि वैश्विक रूप से भोजपुरी के बढ़ते दायरे का साक्षी है पाती पत्रिका के सौंवे अंक का प्रकाशन होना और भोजपुरी साहित्य को समृद्ध करने में इस पत्रिका का योगदान अविस्मरणीय है। समारोह का संचालन शोधार्थी रवि प्रकाश सूरज तथा धन्यवाद ज्ञापन संजय कुमार ने किया।

भोजपुरी के बढ़ते दायरे की साक्षी है पाती पत्रिका

आरा (एसएनबी)। 43 साल से अनवरत प्रकाशित हो रही भोजपुरी की चर्चित पत्रिका पाती के सौवें अंक का लोकार्पण आज भोजपुरी विभाग के दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह नाथ सभागार में सम्पन्न हुआ। समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ अवध बिहारी सिंह, साहित्यकार रामयश अविकल, सुमन कुमार सिंह, कथाकार कृष्ण कुमार के अलावे भोजपुरी विभाग के शोधार्थी राजेश कुमार, संजय कुमार, रवि प्रकाश सूरज, सोहित सिन्हा, धनन्जय कटकैरा आदि शामिल थे।

पत्रिका के सौवें अंक का लोकार्पण

पुस्तक का लोकार्पण करते लोग।

समारोह की शुरुआत में पाती पत्रिका के लोकार्पण के बाद भोजपुरी विभागाध्यक्ष प्रो दिवाकर पांडेय ने कहा कि किसी भोजपुरी पत्रिका का सौवां अंक प्रकाशित होना भोजपुरी भाषा के मजबूत होते जाने का परिचायक है। कथाकार कुमार ने कहा कि पाती पत्रिका ने अनगिनत साहित्यकारों के निर्माण में योगदान दिया है जिसे भुलाया नही जा सकता। रसायनशास्त्र के शिक्षक संजय कुमार सिंह ने कहा कि साहित्य की रचना वैसी होनी चाहिए जैसा समाज हम बनाना चाहते है। रामयश अविकल ने पाती परिवार को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। सुमन कुमार सिंह ने पाती पत्रिका को भोजपुरी की सबसे समृद्ध और सुसज्जित पत्रिका करार दिया। आलोचक जितेंद्र कुमार ने कहा कि पत्रिका की सफलता के पीछे सम्पादक अशोक द्विवेदी जी का संघर्ष है और इसके लिए वे बधाई के पात्र है। पूर्व विभागाध्यक्ष और प्रो बलिराज ठाकुर ने पत्रिका के इतिहास को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का अवसर स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो रविन्द्र नाथ राय ने कहा कि भोजपुरी पत्रकारिता में पाती का नाम शीर्ष पर है। डॉ नीरज सिंह ने कहा कि पाती पत्रिका भोजपुरी पत्रकारिता का मजबूत स्तम्भ है। सम्पादक प्रो अयोध्या प्रसाद उपाध्याय ने भी संबोधित किया। संचालन शोधार्थी रवि प्रकाश सूरज तथा धन्यवाद ज्ञापन संजय कुमार ने किया।

वीकेएसयू में भोजपुरी की पत्रिका पाती …

एजुकेशन रिपोर्टर | आरा

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के भोजपुरी विभाग में भोजपुरी की पत्रिका पाती के 100वें अंक का लोकार्पण सोमवार को हुआ। समारोह का संचालन शोधार्थी रवि प्रकाश सूरज तथा धन्यवाद ज्ञापन संजय कुमार ने किया। भोजपुरी विभागाध्यक्ष प्रो दिवाकर पांडेय ने कहा कि किसी भोजपुरी पत्रिका का 100वां अंक प्रकाशित होना भोजपुरी भाषा के मजबूत होते जाने का परिचायक है। कथाकार कृष्ण कुमार ने कहा कि पाती पत्रिका ने अनगिनत साहित्यकारों के निर्माण में योगदान दिया है। जिसे भुलाया

पुस्तक लोकार्पण में शामिल शिक्षक।

नहीं जा सकता। रसायनशास्त्र के शिक्षक संजय कुमार सिंह ने कहा कि साहित्य की रचना वैसी होनी चाहिए जैसा समाज हम बनाना चाहते हैं। रामयश अविकल ने पाती प्रेषित … पत्रिका … सुसज्जित … आलोचक जितेंद्र कुमार ने कहा कि पत्रिका की सफलता के पीछे सम्पादक अशोक द्विवेदी जी का संघर्ष है। पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो बलिराज ठाकुर ने पाती पत्रिका के इतिहास को रेखांकित करते हुए कहा कि आज का अवसर स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। अध्यक्ष मंडल के सम्बोधन की शुरुआत करते हुए भोजपुरी के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो रविन्द्र नाथ राय ने कहा कि भोजपुरी पत्रकारिता में पाती का नाम शीर्ष … साथ पाती से जुड़ा हर सदस्य इसके लिए धन्यवाद का पात्र है। पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो अयोध्या प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि वैश्विक रूप से भोजपुरी के बढ़ते दायरे का साक्षी है। पाती पत्रिका के सौंवे अंक का प्रकाशन होना और भोजपुरी साहित्य को समृद्ध करने में इस पत्रिका का योगदान अविस्मरणीय है। मौके पर शोधार्थी राजेश कुमार, रोहित सिन्हा और धनन्जय सहित कई शामिल थे।

कथाकार श्री विजय शंकर पाण्डेय के पुस्तक 'सुपर ह्यूमन' आ 'चाणक्य' के राजकीय पुस्तकालय वाराणसी में विमोचन

टाउनहाल बलिया में विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया इकाई के कार्यक्रम

अजीत दुबे के किताब, देवेन्द्र नाथ तिवारी द्वारा संपादित 'भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता : विमर्श समाधान' के विमोचन

विमोचन कार्यक्रम में डा0 शत्रुघ्न पाण्डेय, डा0 अशोक द्विवेदी के साथ मुख्य अतिथि सांसद वीरेन्द्र सिंह मस्त, सभा-अध्यक्ष डा0 अरूणेश नीरन, श्री अजीत दुबे, पूर्व राज्य मंत्री राजधारी सिंह एवं विजय मिश्र।

पुस्तक का विमोचन कर दी जानकारी

बलिया। विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया और हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा बापू भवन टाउन हाल में आयोजित समारोह में पुस्तक का विमोचन किया गया। विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजीत दुबे के विभिन्न आलेखों पर आधारित भोजपुरी की संवैधानिक मान्यता सवाल, विमर्श, समाधान पुस्तक का विमोचन मुख्य अतिथि सांसद वीरेंद्र सिंह मस्त और साहित्यकार डॉ. अरूणेश नीरन द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि ने कहा कि भोजपुरी आंदोलन की यह उपयोगी और महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसके बाद प्रो. रामसुंदर राय को पाती कला सम्मान, अंगवस्त्रम और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। देवेंद्र नाथ तिवारी द्वारा संपादित पुस्तक पर बोलते हुए डॉ. अरूणेश नीरन ने कहा कि अजीत दुबे ने तथ्यों और ऐतिहासिक सबूतों के साथ भोजपुरी भाषा की संवैधानिक मान्यता के लिये वर्षों से निरंतर प्रयास किया। उनके आलेख समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते है। डॉ. अशोक द्विवेदी ने कहा कि जनसंख्या के हिसाब से बोली जाने वाली भाषाओं में भोजपुरी का स्थान हिंदी के बाद दूसरा है। क्योंकि यह 15 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। मौके पर विजय, राजि प्रेमदेव, हीरालाल, शत्रुघ्न, सिकजी, बृजमोहन, अशोक, नवचंद्र, कादम्बिनी आदि ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की। अध्यक्षता डॉ. अरूणेश नीरन और संचालन केके सिन्हा ने किया।

जनपद न्यायालय, बलिया में हिन्दी संगोष्ठी

कवि गण के मध्य में जनपद न्यायाधीश एवं कार्यक्रम संचालक श्री अशोक ओझा

श्री नरेन्द्र मोदी के किताब के भोजपुरी अनुवाद (विनीता ए0 कुमार) अँखिया ई धन्य बा'' के विमोचन

जहाँ हावड़ा के पुल तहाँ बने इस्कूल

केशव मोहन पाण्डेय

लइकाईं में हावड़ा के पुल के नाँव जब सुनले रहनीं, तब इहे बतावल गइल रहे कि ओकरा बीच में कवनो पाया नइखे। ऊ झूलत रहेला। आ जब पनिया जहाज ओकरा बीचे से पार होला त बीचवे से खुल के ठाढ़ हो जाला।

समय के आन्हीं में उधिआ के चाहे जरूरत के आगि में जरत मनई कतहूँ चलि जाव त का, लइकाईं के बात आ लइकाईं के भात कबो ना भोर परेला। शीत–पाला में भोर–भिनुसारे कउड़ा तर किकुराइल लइका के माई तब बसिया भात देली त गोंएड़ा के खेत से नोकियावल आलू के कउड़वे में डाल के पका देली आ ओही भतवा वाला बरतनवा में मिस के नून–तेल मिला देली। लइका खातिर कउड़वे माइक्रोवेब हो जाला आ बसिया भात ब्रेड–कटलेट वाला नास्ता। ई बाति हम एह से कहत बानी कि आजु दिल्ली में भटकत मन बेर–बेर लइकाईं में जाला। लइकाईं में गइला के कई कारन बा। आजु भरल भीड़ में अकेलपन के अनुभव बा त जिम्मेदारी के दूधारी तलवार के तेज सान बा, दूर–देश में अपना सुदेश से बिछुड़ला के हिरोह बा, माटी आ माई खातिर अनासो मन में उपजल मोह बा।

आजुए के बाति हऽ। इस्कूल में क्लास में रहुवीं कि मोबाइल पर एक्के नम्मर से दू–तीन बेर कॉल अउवे। साइलेंट मोड के सथवे वाइब्रेशन से दहिना जाँघ पर गुदगुदी बरे लगुवे त तनीं चिहुकुवीं बाकिर उठउवीं नाऽ। क्लास खतम भइला पर बहरी आ के देखुवीं त एक्के अननोन नम्मर से कॉल आइल रहुवे। कॉल के हाल जाने बदे एने से मिलउवीं त पता चलुवे कि घर के गेट बंद रहल हऽ आ ई कुकिंग गैस के सिलेण्डर ले आइल रहले हवें। टाइम देखि के बतउवीं कि घरे केहू ना होई, मलिकाइन बेटी के इस्कूल से लेआवे गइल होइहें। आधा घंटा लागी।

बाति खतम हो गइल आ फोन कटि गइल। बाकिर साँच कहीं त हमरा मन में बाति शुरु हो गइल। हम लइकाई में चलि गइनीं। अपना बहेलिया टोला में। जहाँ गैस के कवनो चर्चा ना होखे। चइत–बैसाख के पाँच–सात गो सीसो झरा जाव आ चाहें सूखे वाला कवनो पेड़ कटा जाव, चाहे सूखल कोइन के साज से काटि दिहल जाव, अधिकांश घर के ऊहे ईंधन रहे। कई बेर अकाजी में, चाहे चूल्हि जरावे बदे सूखल बेहाया आ जाव। बेहाया से धुआँ खूब होखे लेकिन फफा के धऽ ले आ बाद में ओही पर चइली जोर दिहल जाव।

बेहाया त हमरा टोला के शान रहे शायद। आम के बगिचा आ बँसवाड़ के बाद सबसे ढेर बेहए रहे। हमनी के दुआर के आगे गड़हा रहे। बड़का गड़हा। जनवरी–फरवरी में ओकर पानी तनी सूख पावे। सूखे का, लोग मछरी मारे के चक्कर में उदहि दे, ना तऽ बारहो महिना कीचें–काँच रहे। जब पनिया तनी कम होखे त हम लइकन के बाहर आ जाव। चमटोली के लइका–मेहरारू आके सूखल बेहया

बीने लोग। जरावन खातिर। ओही बेरा जब हमनी के साँप–गोंजर से डर तनी कम लागे त ऊपरा चढ़ि जाई जाँ। खूब खेली जाँ। ना कवनो चिंता–फिकिर आ ना कवनो डर। काहें से कि माई चाहें बाबुजी, केहू ना बोले। सभे देखे कि लइकवा सोंझवे बाड़े सों।

आजु दिल्ली के अन्न खात पनरे–सोरे साल हो गइल। अब ना केहू सोझे देखे वाला बा आ ना केहू चिंता करे वाला। चित्त जब फरिआए लागेला तऽ मन के हिरना घाटे–घाटे डभक्का मारे लागेला। बेमार पड़ला पर माई भले कुछू करें भा ना, कपरबत्थी पर रेंड़ के पतई तनी धिका के कपार पर बान्ह दें, ऊहे संजीवनी सरीखा हो जाव। दवाई खाए खातिर एक टुकी बिस्कुट मिले भा ना, बाकिर बाबुजी कबो मीठा भेली लेआ दें, ऊहे महाप्रसाद हो जाव। ...आजु–काल्ह हमार मन अब त अउरी अपना लइकाईं के ईयाद करे लागल बा। पगला, जब ना तब गाँवे चलि जाला। हमरा ओह गाँव में, जहवाँ लइकाईं के लहार लुटले बानी। ओह गाँव में, जहवाँ गंडक के कछार रहल, छुअनिया पर भूत डेरववले बा, खरबाना के बेल तर के बेयार सिहरवले बा, हजरिया में बुडुआ बोलवले बा, टाँड़ के परती जमीन हमरा टोला के सब लइका–जवान बदे क्रिकेट, ठाढ़ी–टीका आ कबड्डी के मैदान रहल बा। ओह गाँव में, जहवाँ के डोभ के कारण हमरा टोला के नाँव धराइल रहे, बहेलिया टोला। ओह गाँव में, जहवाँ हमरा दुआरी के पीपर के पेड़ बरम बाबा बनि के सगरो जवार में हमनी के पहिचान देवावें, हमनी के रक्षा करें। ओह गाँव में, जहवाँ केहू के घर–बथान सोंझ करे के होखे तऽ बँसवाड़ के बाँस तइयार मिलें। केहू के अँगना में माड़ो छावे के होखे तऽ बँसवड़िया जइसे सगुन गावे लागे। जहवाँ साँझ धधा के सबके दुआर पर भेंट–अँकवार करे। बिहान चहकत चिरइयन के साथे सबके माथे पर दिनमान के तेज दे जाव। ओही गाँव में हमनी बदे गड़हा पर के चउरिया–चउरिया के जामल–जमल बेहाया हावड़ा के पुल बनि जाव। खेलत–खेलत ओह हावड़ा के पुल पर आठ–दस लइका चढ़ि जाईं जा आ एक साथे हुमचत समवेत स्वर में गाईं जा –

जहाँ हावड़ा के पुल/तहाँ बने इस्कूल
मास्टर मार दिया एक रूल
लइका भाग गए बिल्कूल।

एक साथे एह खेल के खेलत आ गावत मन बड़ा उल्लास आ जोश से भरि जाव। लइकन में ओह उल्लास में कवनो अभाव के भाव ना रहे, आनन्द के उमंग रहे। ओह उमंग में सभे बहे लागे। देखहूँ वाला, खेलहूँ वाला आ सुनहूँ वाला। आनन्द के उमंग अइसन उमगे कि लागे जइसे जेठ के दुपहरिया में करिया–करिया बादल उमड़ल होखें आ पुरुवा बेयार ओहके कवनो रानी के उड़ावल नौलक्खा हार पहिनावत होखे। जइसे पूस के बिहाने कउड़ा पर बाबुजी के बइठकी जमल होखे आ फुलहा लोटा में भरल चाय सभे सुड़ुकत होखे आ पाला के पालो उतारत होखे। जइसे सावन के झपसी लागल होखे आ खेतन के लहरात देखत, सरेह में हरिहरि के हेरत किसान अपना मेहनत पर गुमान करत होखे।

इयाद के झरोखा से झँकला पर कई बेर लागेला कि हम अपना ओह टोलवे में रहि गइनी। बुद्धि के विकास भइबे ना कइल। आजु इलेक्ट्रिक सिगरेट के फ्लेवर के आनंद लेबे वाली दुनिया में हमके बेर–बेर बेहाया याद आवत बा। ओकर बनल हावड़ा के पुल ंयाद आवत बा।

एक बेर के बात हऽ। कउड़ा पर बइठल बेहाया के एगो पातर टुकड़ा के जरा के सिगरेट के आनंद लेबे खातिर ओहके दोसरा ओर से जइसहीं सुड़ुकनी कि बाबुजी के एक थप्पड़ गाल लाल क दिहलस। तबसे कान पकड़ लिहनी। ऊ थप्पड़ सिगरेट के नशा से दूर राखे खातिर रहे बाकिर तर्क दिआइल कि एकर धुआँ बड़ा नुकसान करेला। फेंफड़ा जरा देला। टीबी हो जाला। ई हवा ढेर फइलल रहे कि बेहाया के धुआँ से टीबी हो जाला। लोग धीरे–धीरे हुँसियार होखे लागल। बेहाया के ईंधन खतम हो गइल। हमार गँउओ खतम हो गइल आ खतम हो गइल लकड़ी के जरावन से खाना बनावल। रसोईघर के किचेन बनते घर के धुआँ से मुक्ति मिल गइल।

बेहाया से फइलत बेमारी से लोग त डेराइल बाकिर ओकरा गुनवो के खबर रहे लोग के। जब कबो केहू के बिरनी भा मधुमाछी काट लेव त दउड़ के बेहाया के पतई तुरि के ओकर रस चुआवल जाव। तनी देर बिसबिसइला के बाद पीड़ा छू मंतर हो जाव।

सचहूँ ई बेहयवा में बड़ा जाँगर हवे। एक्के जहवाँ मन करे तुरि के फेंक दी, ई बाउरो–से–बाउरो परिस्थिति में अपना लायक स्थिति क के आपन जान बचा लेला आ आपन उत्थान क लेला। बड़ भइला

पर जब हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के कुटज पढ़नी त बेहया के ढेर ईयाद आइल। ओही जस कुटज अइसनका साथी लागल जवन कठिनो दिन में साथे रहल। रामगिरी पर्वत पर यक्ष के बादल से अनुरोध करत बेरा जुमल कुटज बेहया जइसन लागल कि जहाँ दूब ले ना पनप पावे, ओहूजा ई जाम जाला। कुटजे लेखां बेहयो अपना अपराजेय शक्ति के घोषणा हर स्थिति–परिस्थिति में करेला। बेहयो बेर–बेर इहे चेतावेला कि विकटो परिस्थिति में मनई के हिम्मत ना हारे के चाहीं। धीरज धरे के चाहीं आ हर परिस्थिति में अपना परिश्रम के पुन्न आ शक्ति के समरथ से काम करे के चाहीं।

बिआह के बाद एक बेर हम अपना मलिकाइन के ले के मदनपुर माई के दर्शन करे जात रहनी। मोटरसाइकिल के जतरा में सड़क के दूनो किनारे के दूर–दूर ले के नजारा लउके। जइसे–जइसे उत्तर दिशा में जाए लगनी जाँ, बेहया के दर्शन होखे लागल। हम मलिकाइन से मजाक में पूछनी, ''हेके चिन्हत बाडू?''

तपाक् से कहली, ''हँ। बेशरम के पौधा हऽ।'' ई सुनते हम आपन हँसी ना रोक पवनीं। बाद में ऊ बतवली त पता चलल कि बेहया के बेशरमों कहल जाला। भाषा आ भाव से समझ में आइल कि ई त सही बात बा। हमहीं अज्ञानी बानी। अज्ञानता में हँसत रहनी आ अब अपना मूर्खता पर हँसी आवे लागल। बाद में पता चलल कि बेहया के बेशर्म आ थेंथरो कहल जाला। एकरा रूप–रंग, स्वाद–गंध से कवनो मतलब त ना रहल, बाकिर एह पर जब नजर उदड़वनी त ढेर रसगर आ सयगर लागल ई बेहया। एकरा के तालाब, पोखरा, गड़हा–गुड़ही, नदी–दरियाव चाहे अउरियो कवनो पनिहर ठाँव पर पावल जाला। ई कठिन से कठिन परिस्थितियो में जीए वाला पौधा हवे। एकर फूल गुलाबी रंग के होला जवना कारने ओहके कई जगह 'गुलाबसी' कहल जाला। भले कवनो नाँव से एह के लोग महत्वहीन करे त का, गाँवन में लोग एहसे बाड़ बना के छुट्टा मवेशी से अपना तरकारी–फरहरी के रखवारी करेला। ईंधन के रूप में एकर उपयोग त होइबे करेला, एकर उपयोग जैविक कीटनाशको के रूप में कइल जाला। कई जगह लोग बेहाया के पतई, नीम के पतई आ धतूरा के गौमूत्र में उबाल के फसल पर छिड़काव करेला लोग। वातरोग में बेहया के पतई गरम क के लपेटला से पीड़ा कम होला।

वातरोग के पीड़ा भले कम हो जाव बाकिर हमरा मन में गाँव से दूर भइला के पीड़ा बढ़ि जाला। मन में ई मलाल बनल रेहला कि कबो नारायणी के कारने त कबो रोटी के कारने, गाँव–घर, जिला–जवार, सेवरही–तमकुही छोड़े के पड़ल। एहिजा मान–सम्मान त बा, रोपया–पइसा त बा, बाकिर आपन माटी नइखे, आपन लोग नइखे, आपन बात–विचार नइखे। हम जवना मजबूरी में आपन घर छोड़नी, हमनिए के चुनल सरकार अगर चाहे त ओइसन अनेक समस्या के समाधान क सकेले। रोजी–रोजगार के पुरहर अवसर अगर गँउवे में हो जाव त कवनो नौजवान आपन घर–दुआर ना छोड़ीहें। ओहके मन बेर–बेर बेहाया के हाबड़ा के पुल पर हूमचे खातिर ना मचली। हियरा में कवनो मलाल ना रही। तब ऊ नौजवान चिंता के क्रेसर में ऊँख बनि के ना पेरात रही। हियरा हुलस–हुलस के नाची आ कर्म के गीता बाँची।

आजु बेर–बेर जिनगी लइकाईं में के हावड़ा के पुल जइसन हो गइल बा। बिना पाया के, हवा में लटकत। खाली हाँफत–हाँफत भागत रहे के बा आ जिम्मेदारी के झूला में झूलत रहे के बा। समय के पनिया जहाज कबो आफत–बिपत बनि के बीचे में आ जाले त बेसहारा पुल बीचवे से खूल के ठाढ़ हो जाला। ●●

Keshav Mohan Pandey, Mob.09971116613

झूठे जग पतियाय

अरून मोहन 'भारवि'

"डाइन! बाप रे बाप! नाम लेते देह के रोआँ–रोआँ ठाड़ हो गइल। ऊ एकदम हाँकल टोनहिन रहे। चलऽ अच्छा भइल कि गाँव–जवार के ओकरा से जान छूटल।" एगो ओझझ्ञ जी कउड़ पर आपन हाथ सेंकत कहलन।

"का कहली देवता! गाँव भर के लइका मेहरारू ओकरा से परेशान रही ह। कब कवना पर टोना क दी, कब केकरा के नजरिया दी, कहल मुसकित रहे।" – चउधरी हुंकारी भरत कहलन।

"रमेसरा के लइका के अइसन नजरिया देले रहे कि ऊ तीन दिन से उल्टी करत रहे। कतनो झाड़–फूँक भइल बाकिर नाहिये बाँचल। बेचारा, केतना सुध्ज्ञर लइका रहे।" – मिसिर जी कहलन।

"तुहन लोग देखलऽ ना? बुधुआ के मेहर के गवना में उतरते कइ देले रहे। ओकर माथा बाथा से फाटे लागल। देह जरे लागल। दिनभर पेट–मुँह दूनो चलल। एकदम अलस्त हो गइल। ई त कहऽ कि ओकर भाग ठीक रहे कि सोखा बाबा ओही दिन गाँवे आइल रहीं, एही से बुधुआ बो बाँचि गइल, ना त धोकर घर बसे के पहिलहीं उजड़ल रहे।" – ओझाजी कहलन।

"इहे नूं कहला धान के खेत में धमोई जामल। कमल के भाई सेवार। अतना बड़ बबुआन के परिवार में ई कहाँ के कुलछनी आ गइल? ओकर मरद बाबू गजाधर सिंह कतना सुधुआ, देखनउक आ चालीस बिगहा के सरसंते गिरहत रहन, बाकिर ई त उनुको के ना छोड़लस। आखिर अपना भतार के खाइये के दम लेलस।"– मिसिर जी कहलन।

"अरे, ई ठीक से रहित त ओकरा कवन चीज के कमी रहे हो? जीरात में चालीस बिगहा खेत बा। ना लोग ना लइका, चलु दुअरिका। खइले ओराइत ना। बाकिर ओकर त आदते बिगड़ल रहे। महेन्द्र बाबू के लइका सुरेन्द्र कहत रहे कि रात भर घर में लंगटे मंतर से जादू–टोना जगावे। भूत–भूतनी के संगे हँसी–ठिलोली करे। ऊ लोग त डरे केवाड़ी बन्न कइले राम–राम कहिके बिहान करेला।" – चउधरी कहलन।

"चउधरी तनी खइनी बनावऽ। ई जानत बाड़ऽ कि ना, परसाल त ऊ सुखाइल बबूर पर रात के बइठ के ओके हाँक ले गइल। फजिरे ओहिजा फेंड़े ना रहे।" ओझा जी नया जानकारी के खुलासा करत कहलन– "ई त कहऽ कि महेन्द्र बाबू के चरवाहा झिंगुरिया ओकरा के देख लेले रहे, ना त सभे अचरजे करित कि बबूरवा का हो गइल? ओही घरी झिंगुरिया चहेटा–परल रहे आ हफ्तन बेराम हो खटपरुआ भइल रहे।"

"हमन के गाँव के कई मेहरारुन के चोटी काट ले गइल बाकिर कबो केहू

के पता ना चलल, ना पकड़ाइल।" मंगरुआ कहलसि।

"ई ना देखीं देवता, कइसन रंग–रूप पवले बिया। एकदम मुरदाशंख अस गोराई आ अप्सरा अस सुघराई। आम के फारी अस आँखि, पल्लव अस गाल, सुग्गा के ठोर अस नाक, लाल–लाल औठ, सोराही अस गरदन, उतान छाती आ हथिनी अस चाल। एही प नूं रीझ के गजाधर सिंह लट्टू हो गइल रहन।" मिसिर जी कहलन– "माई के मरला के बाद महेन्द्र बाबू के त मन गर्द गुट्टी के एक मुट्ठी हो गइल बा। बाकिर ऊ आजो आपन भसुर के करतब निभावे खातिर तइयार रहन। ऊ कई बेरि कहासी भेजलन कि ऊ खेत उनुका के लिख दे आ घर में आराम से भजन करो। निसंतानी के खरचे कवन रहे? जवने रहे, ऊ दीहन। दान–पुण्य, तीरथ–बरत कै सब खरच–बरच ऊ उछड़हंग। बाकिर ऊ भूतन के संगत छोड़े के तइयार ना रहे आ ना महेद्र बाबू से सटे के।"

चउधरी खइनी ठोंकि के ओझाजी ओर बढ़वलन। मण्डली के संभे सदस्य खइनीं ओंठ तर दबवले डोल–डाल होखे चल दिहल।

बियाह के बाद गजाधर बाबू के जिनिगी बड़ा आराम आ सकून से कटे लागल रहे। जे देखे उहे ई दू हंसन के जोड़ी के सराहे। जइसन गजाधर बाबू सुघर–सुभेख, लमहर–छरहर, ओइसने उनकर मेहर रूपा। रूपा रूप के धनी आ सब गुन के आगर। गजाधर बाबू के अंगना में अमावसो के चान उगत रहे। घर में कवनो कमी रहे त एगो जनमतुआ के, जेकरा किलकारी से, चहक से घर–आँगन के फलवारी गमक उठे, बहक उठे, सगरो अँजोरिया खिलखिला उठे। खुशी के दिन पंख लगा के उड़त रहे। साँचे कहल बा... सुख के दिन जतने गरमी अस छोट होला, दुख के रात ओतने जाड़ा अस लमहर। देखते–देखत कइसे चार बरिस बीत गइल, ई ना गजाधर बाबू के बुझाइल ना रूपा के।

रूपा के सुभाव के गाँ–जवार में सभे सराहे। ऊ छोट–बड़ सबकर खियाल राखसु। गरीब–दुखिया अलचार आदमी–जन उनका दयालु सुझाव से गदगद रहसु। बाकिर रूपा के सुख के केहू के नजर लाग गइल। उनकर सुख विधाता से ना देखल गइल। गजाधर बाबू कालाजार के चपेट में आ गइलन। अचके रूपा के हाथ के चूड़ी के खनक चूर–चूर हो गइल। उनकर खोंता उजड़ गइल। समय करवट लेबे लागल। एह स्वारथी दुनिया में जे रूपा के जी–हजूरी में लागल रहे, ऊ धीरे–धीरे किनारा कसे लागल। त केहू किसिम–किसिम से डोरा डाले लागल। लोगन के लागल– बिलारी के भागे सिकहर टूटल बा.... सभे घूंचा लेके लरके लागल। जवन रूपा गाँव के लक्ष्मी रही, अब ऊ कुछ अउर हो गइली।

बिपत के मारत रूपा अपना अँगना में खटिया पर बइठल अपना हरवाह आ आदमी–जन के हिसाब करत रही। ओही घरी बाबू महेन्द्र सिंह ओहिजा पहुँचलन। अपना जेठ के अपना सोझा देखि के रूपा माथ पर आँचर ठीक करत हड़बड़ा के खाड़ हो गइली। महेन्द्र बाबू इशारा से सभ आदमी जन के ओहिजा से हटवला के बाद रूपा से कहलन– "तोहरा से कई दिन से कहत बानी कि ई सब काम छोड़ऽ। आपन खेत–बधार हमरा के लिख द, आ घर में आराम से बइठ के राज करऽ। बाकिर तूं नइखू मानत। आज हम साफ–साफ पूछे आइल बानीं कि तोहार का बिचार बा?"

रूपा के आँखिन में सावन–भादो उमड़ गइल। बहुत दिनन से दरद के लोर से लबालब बाँध भहरा गइल। रूपा भरल गला से कहलीं– "जेकर सोहाग उजड़ गइल, ऊ अब भला का राज करी जेठ जी? हमार भाग अइसने चाँड़ रहित त हमार करम काहें फूटित?" अतना कहत रूपा भोंकार पार के रोवे लगली। महेन्द्र बाबू कुछ देर रुकलन आ फेनु खिसी चलि गइलन।

रूपा के आँखिन के सोझा तीन साल पहिले के घटना नाचे लागल रहे। ऊ घर में अकेले रही। गजाधर बाबू अपना खेत के लगान–पटवन के रसीद कटावे खातिर ब्लाक पर गइल रहन। जात खा ऊ रूपा से कहलन– "उपरी बेरा तक आ जाइब।"

"अपने के लगान के रसीद कटावल आजे जरूरी बा?" रूपा आपन आँखिन के बान मारत गजाधार बाबू से पूछली।

"जरूरी बा तबे नूं जात बानी। कई साल के लगान बाकी रहि गइल बा। बाकिर चिन्ता मत करऽ, जल्दिए आ जाइब।" कहत–कहत गजाधर बाबू रूपा के रूप पर रीझत ओकरा के अपना अँकवारी में बान्ह लेलन।

"ई का करत बानी, केहू देखि ली।" कहत रूपा अपना के छोड़ावे के बेकार कोसिस कइली।

गजाधर सिंह के गइला बहुत देर हो गइल रहे। रूपा उनका लौटे के राह देखत अपना बार में ककही करत चोटी गूंथत रही। ऊ चाहत रही कि गजाधर बाबू के आवे के पहिले ऊ सजधज के उनका स्वागत में तइयार हो जासु। ऊ चोटी कइ के बिंदी करत रही कि घर के दरवाजा बाजल। लागता उहाँ के आ गइलीं– इहे सोचत रूपा के दिल धड़के लागल। अबे ऊ कुछ सोंचती तले महेन्द्र सिंह रूपा के पीछे से आके अँकवारी में दबोच लेलन। रूपा अपना के छोड़ावे खातिर छपटाए लगली। बाकिर जेठ रहन कि छोड़क के बदले आपन बाँहि के फंदा आउर कसत जात रहन। जेठ बरिआरी करे पर उतारू रहन। रूपा जोर से पीछे लात मारत हुमच के जोर लगावत अपना के आजाद कइ लेली आ भागि के चुहानी में घुसि के भड़ाम से ओकर केवारी बन्न कइ लेली। ओही घरी उनकर बनिहार खदेरना खरी कीने खातिर मलकिन से पइसा मांगे आँगन में आ गइल रहे। खदेरना के अइला के बाद रूपा कसहूं–कसहूं अपना के अहथिर कइली। दरद के बाथा से उनकर कपार बथे लागल रहे। सोंच ना पावत रहीं कि का करसु? गजाधर सिंह से कहसु कि ना? बाद में सोंचली कि दूनों भाइयन के बीच में दरार बढ़ावे से बचले ठीक रहीं.... बाकिर जेठ से सावधान रहल जरूरी बा।

साँझि के महेन्द्र बाबू के हवेली के सोझा दलान पर ओझा, सोखा, मिसिर, चउधरी आ चाटुकारन के चउकड़ी जमल आ देर रात तक खाना–पीन के संगहीं पतुरिया के नाच–गाना के महफिल जमल। फुदेना बाई खूब फुदुक–फुदुक के अपना जवानी के जलवा बिखेरली, जेकरा के देखि के जवनकन के के कहो, बुढ़वन के लार चुवे लागल। देर रात तक खूब घूमगजर मचल। सब दकि के आँखि सेंकल। गला तर कइल। आपन गदहा के जनम छोड़ावल।

सुबह जब मुरगा बोललस.... पुरुब में सुरज उगल.... त सुरुज के संगहीं रूपा के भाग पर करिया बदरी उमड़े–घुमड़े लागल। रूपा के बारे में किसिम–किसिम के अजबुत बात सुनाये लागल। धीरे–धीरे गाँव के लक्ष्मी रूपा के बारे में सुरुज उगला के संगहीं एगो नया कहानी उगे लागल।

मंगरुआ के लइका हफ्तन से बेराम रहे। ओकरा दस्त पर दस्त होत रहे। बेटा के झरवावे मंगरुआ सोखा किहाँ ले गइल रहे– बाकिर ऊ बाँचल ना। सोखा कहलस कि ओकरा के मसान के लंग्टवा डोम पकड़ले बा। कवनो गोर डाइन भेजले बिया। बिना जीव लेले ना जाई। मंगरुआ के लइका मर गइल। रूपा अपना खेत से लवटत रही। मंगरुआ आ ओकरा संगहीं गाँव के लइकन के झुण्ड "डाइन हियऽ! मारऽ!! मार एकरा के! डाइन हियऽ...।" कहि के ढेला–चेका लेके रूपा पर परि गइलन। रूपा भागत जात रही। लइकन के झुण्ड पीठिआवत ढेला–चेका मारत जात रहन। भागत–भागत रूपा खेत के डड़ार पर अझुरा के गिर गइली। लइका–सेयान दनादन ठेले–ठेले मारे लगले स। सुरेन्द्र रूपा के माथ पर एगो बड़ पत्थर उठा के अस जोर से मरलस कि ओकर खोपड़ी पिचुक गइल। डड़ार खून से लाले–लाल हो गइल। रूपा के प्राण–पखेरू उड़ गइल।

दिन चढ़ते धूर उड़ावत पुलिस के जीप गाँव में घुसल। डइनिया के मरइला के तहकीकात खातिर गाँव में पुलिस के अइला के बात ओसहीं फइल गइल जइसे बीछी मरला के लहर। गाँव के लोग एने–ओने खरके लागल। पुलिस–थाना के डर भला लोगन के काहें ना लागी? थाना त ऊ जगह ह जहवाँ कबो थानादार के मरजी के बिना घासियो ना जामे। बूटन के कड़बच–बड़बच से डर के दूब के पनपे के हिम्मत ना पड़े। बाकिर अब जमाना बदल गइल बा। अब थाना थानादार के मरजी से ना बलुक दलालन के अरजी से चलेला। पुलिस जीप महेद्र बाबू के हवेली के हाता में जा के खाड़ हो गइल। बाबू साहब धप–धप खादी में सजल–धजल थानादार के स्वागत में बतीसी निपोरत आ दसो नोह जोरत डेगरगरे आगे बढ़लन।

"रउरा बाप–बेटा दूनो जाना के कप्तान साहेब बोलवले बानी। आईं बबुआन, जीप पर बइठीं सभे।"

थानादार महेन्द्र बाबू आ सुरेन्द्र के जीप पर बइठा के धूर उड़ावत फुर्र हो गइलन। "डइनिया मर गइल" गाँव के इ चरचा में नया मोह आ गइल रहे। ●●

– 'कहानी कमाल के' लेखक :

दू गो गीत

विजय मिश्र

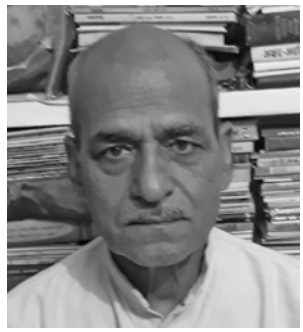

(एक) हुँसियारी

गुन के गँहकी कम हो गइले
अवगुन के बढ़ले बैपारी
जहवाँ, जइसे मिले, लहावऽ
आजु काल ईहे हुँसियारी।

सोझ चली ऊ बुरुबक बाटे
मन में जइसे बइठ गइल बा
अगवाहे पहुँचे का धुन में
तिरिछे सगरी डहरि भइल बा
बिधि-बेवहार न सूझे कुछऊ
अँखियन छपले बा अन्हियारी।
जहवाँ जइसे मिले लहावऽ
आजकाल ईहे हुँसियारी।

दू नम्बर के काम के जे भी
बूझत बाटे लाभ-भलाई
आगा-आगा राह बतावत
चोर चोर मौसेरा भाई
जहंवे देखऽ होड़ लगल बा
ढेर मिले ओके हिसदारी।
जहवाँ जइसे मिले, लहावऽ
आजकाल्ह ईहे हुँसियारी।

जेल में जाए वाला अब तऽ
तीनि-पाँच से कुरुसी पावे
शिक्षित आगा पोंछि हिलावे
अपढ़ लखेदे, धउँस जमावे
खून-पसेना एक कइल जे
काहें ढोवत बा अलचारी।
जहवाँ जइसे मिले लहावऽ
आज काल्ह ईहे हुँसियारी।

(दू) ई कवनो बात भइल का?

रउआ लखेदत रहीं आ
हम भागत रहीं
ई कवनो बात भइल का?

अरे, रउआ उसकवनी
हमरा प' बाँहि भँजनी
ऊँच नीच बोलत गइनी
हम जबाब दे दिहनी
तऽ बाउर हो गइल?
ई कवनो बात भइल का?

मुँह देखल, केहू का करी पंचाइत
जरि-पुलुई कुछ जानी ना
उपरे ऊपर लोकी
गलत के शह दी
साँच के टोकी
कुछऊ होखल करो
आ हम आँखि मून लीं।
इ कवनो बात भइल का?

ढेर सोझियो भइल
नीमन ना हऽ
रामजी के बनवास दिया गइल
पाण्डव लोगन के कवन दुर्गति ना भइल?
सीमा टूटत रहो, अनेति बढ़ियाइल जाव
आ लोग ताकत रहे टुकुर-टुकुर
साँसों ना लेव, मुँह सी लेव?
ई कवनो बात भइल का?

पं. हरिराम द्विवेदी के दू गीत

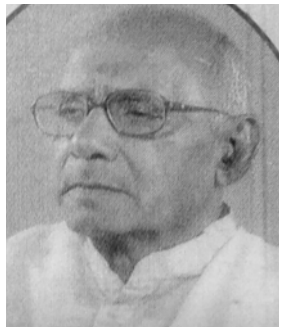

(एक) कइसे मिली ठेकाना

रतिया रोजै करैं चेरउरी दिनवाँ मारैं ताना
घर-घर झाँकै ओरहन पावै हेरत फिरै बहाना।

उज्जर-उज्जर कुर्ता धोती अस उजरउटी झारैं
कोकट बनियाइन नीचे पर सेखी बहुत बघारैं
गोड़े जूता उहो आन कै राजै बदलैं बाना
रतिया रोजै करैं चेरउरी दिनवाँ मारैं ताना।

एक ओर पसँघही तराजू छोट बटखरा तउलें
लेवै खातिर उलटा पसँघा बड़ा बटखरा पउलैं
साह कहावैं बेईमानी कै धन्धा हौ काना
रतिया रोजै करैं चेरउरी दिनवाँ मारैं ताना।

एनकर ओनकर हेठ निहारत सगरी उमिर ओराइल
आन बदे माहुर घोरलैं ओहि में जिनिगियै घोराइल
कल से ठाँव न लेवै दिहलैं कइसे मिली ठेकाना
रतिया रोजै करैं चेरउरी दिनवाँ मारैं ताना

जिनिगी अनभल ताकत बीतल आदत रहल पुरानी
बिना परोजन आन केहू के ठाढ़ करैं हलकानी
लच्छन एक न गुन, अवगुन से नाता रहल पुराना
रतिया रोजै करैं चेरउरी दिनवाँ मारैं ताना

एतनी हिम्मत देखा भुइयाँ रह के बादर नोंचै
मिलै न केहू मोके पर हावा में काँटा कोंचै
हाथी के कुक्कुर भोंकैला कइसन भयल जमाना
रतिया रोजै करैं चेरउरी दिनवाँ मारैं ताना

बनलो काम बेढ़ावै में ई तनिको कसर न राखैं
दूब जमै पथरे पर लेकिन साँच कबों ना भाखैं
नये किसिम कै ई अवतारी ला जाना पहिचाना
रतिया रोजै करैं चेरउरी दिनवाँ मारैं ताना।

(दू) पानी माँगै मछरी

पानी माँगै मछरी चिरइया माँगै दाना
बेरि-बेरि माँगै जिनगनियाँ ठेकाना

वइसे त भीड़ रोज सँझिया बिहनवाँ
मेलवा के दिन लागै नदिया नहनवाँ
नदिया ननदिया चली कइके बहाना
पानी माँगै मछरी चिरइया माँगै दाना।

सधिया सँजोवैले सपनवाँ कै गहना
ओही बदे हनि-हनि मारैले ओरहना
हमके बनावैले गुलेल कै निसाना
पानी माँगै मछरी चिरइया माँगै दाना।

हँसि के करै ले ठकठेन अनियासै
देखि-देखि अल्हरी उमिरिया पियासै
काहे के उदौस ई मरम अनजाना
पानी माँगै मछरी चिरइया माँगै दाना।

जेकरे दुआरे लागै गीत कै बजरिया
झूमर लचारी कबों फगुआ कजरिया
झूम-झूम गावैं पावैं सुख मनमाना
पानी माँगै मछरी चिरइया माँगै दाना।

ठोप-ठोप जल से भराय जाले गगरी
ओतनै में कइसे नहाय जाले नगरी
एही से जुड़ल जिनिगी कै तानाबाना
पानी माँगै मछरी चिरइया माँगै दाना।

पछुआ क आन्ही

☑ **शिवमूर्ति सिंह**

अइसन 'पछुआ' का आन्ही चलल गाँव में
आपन 'असली' न कतौं बचल गाँव में

नाहीं कत्तौं तनिक भाइचारा बचल
नाहीं अँगना बचल, ना मुँहारा बचल
मन के नदिया के बिचवाँ में रेता परल
नाहीं पतरो पिरितिया क धारा बचल
दिन दहाड़े उड़ा ले गयल 'मूल' सब
'भूत' बन चोर अइसन घुसल गाँव में।

सँग पिछौरी के साड़ी उड़ल देह से
जीन्स अउर टॉप आके सटल देह से
जब न घूँघट बचल नाहीं अँचरा बचल
लाज चुप्पै लजाके भगल देह से
'आम' अपनै पखेरुन के नेवतै लगल
अइसन उलटन न कबहूँ दिखल गाँव में।

फाग के रँग न भीजै परनवाँ कबों
बिरहा चैता न गूँजै सिवनवाँ कबौं
नीम रहि जाय तरसत झुलुअवा बदे
नाहीं कजरी के रस डूबै मनवाँ कबों
केहू दिल खोल के ना मिलत अब गले
डाल देहलस 'लछिमियाँ' खलल गाँव में।

पहिले कौड़ा बरै, मोढ़ा मचिया लगै
दम लगै सज्जी चिनता थकहरी भगै
सारा छल-छंद जरि जाय ओ आँच में
दूध जस साफ मनवाँ क दरपन लगै
सुक्खम-दुक्खम सुनावत उमिरिया कटै
ना गरीबो क गाड़ी फँसल गाँव में।

फाग मस्ती में गावत फगुनवाँ चलै
घन मजीरा बजावत सवनवाँ चलै
काट के जब फसिल आवै खरिहान में
अन्न देवता के पूजै किसनवाँ चलै
चइत कै चान अमरित चुआवै लगै
नाहीं ओइसन चननियाँ बिछल गाँव में।

घंटा घड़ियाल मन्दिर में एहर बजै
ओहर मस्जिद अजानन के सुर से सजै
ईद होली मनावै सबै संग-संग
ना त गोजी उठै ना बनूक गरजै
'ऊपरवाले' क बरसै दुवा हर घड़ी
ना सियासत क दलिया गलल गाँव में।

- पंजाबी कालोनी, अलोपीबाग, प्रयागराज, २११००६

भुंइडोल - 1

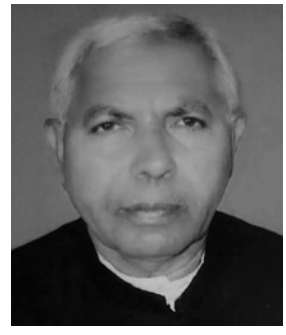

☑ **इंद्रकुमार दीक्षित**

अररर धम्म 'अररर धम्म
आइल भुंइडो ल गिरल छ्ज्जा घर के
चौकठि बाजूध कड़ी धरनिध काठ कोरई
मउअति नाचति बा कपारे पर
देवालि गिरे धम्म धम्म। अररर----धम्म

केहू दबाइल केहू चताइल
केहू मुअल केहू बिलाइल
केहू संभारत बा सूतल लइका
गोदी में ,तबलग
मचल हडकंप।।अररर----धम्म

चिरई चरूंग अफनाके उड़ेलें
बान्हल माल मवेसी खूँटा तूरेलें

पेड़ पहरुअन के नाचे पुलुई
सोरि पर गिलहरी
कूड़े छम्म छम्म।।अररर धम्म-----

नीचे धरती ऊपर अकास डगमगाला
सड़की पर दउरत मोटर गाड़ी
आपसे में टकराला
जइसे दू गो पहलवान
लड़त होखें मलखम्भ।।अररर धम्म----

भुंइडोल -2

सूतल जागत राति दुपहरी कब्बो सांझि सकारे
धरती दलकि रहलबा संउंसे भुंइडोलन के मारे।।

लोग कहतबा दुनिया भर में भ्रष्टाचार बढ़ल बा
कुफल वोहीके भोगेखातिर ई सन्ताप चढल बा
चौन से केहू सूतत नइखे अफवाहन के मारे
धरती दलकि रहलि बा----------

वैज्ञानिक निस्कर्स बतावें दुइ प्लेटन के टक्कर
आधा भारत केआबादी पर छपले घनचक्कर
मटिआमेट सहर कसबन के रजधानी रजवाड़े ।।
धरती दलकि रहलि बा----------

केतने लोग दबल मलबा में केतने घाही भइलें
केतने सरग सिधरलें गायब कतना नाहि गिनइलें
कीटपतंगन असअदिमी के जिनिगीपरल लचारे।।
धरती दलकि रहलि बा----------।

चेता रहलबा प्रकृति कि मनई छद्मनीति के त्यागऽ
मृगमरीचिका के पीछे जनि आँखिमूनि के भागऽ।
मत छेड़ऽ कुदरत के पत्ता पत्ता तोहें पुकारे।।
धरती दलकि रहलिबा संउंसे भुंइडोलन के मारे।।

५९४५ गीतांजलि , मुंसिफ कालोनी, रामनाथ देवरिया
निकट वन विभाग कार्यालय, देवरिया-२७४००१
मो-९४५५७२४५७३

रात में टरेन

दिनेश पाण्डेय

रैंगत सीटी मारत खुलल टरेन।
हरियर मन-धनखेती फुटल मरेन।
गाँव डीह घर-बारी छूटल जाय।
जिनगी एक बंजारन कहाँ थिराय?
बहरी गाढ़ अन्हारा बंद गवाछ।
गाछ बिरछ के छाँही भागत पाछ।
रहि-रहि तनिक इँजोरा कँउधे दूर।
कवनो कस्बा नीने चकनाचूर।
भीतर शोर कटाउझ तर-पर बात।
बाँह-चढउवल कुत्सा घात-बिघात।
अनकत्थल गलथेथी खिचखिच दंद।
कनछी-कनछी फूटत परत न मंद।

ऊपरवाला ऊपर परल निफिक्र।
नीचे बात सियासी सइ-सइ जिक्र।
कहईं सोच उभरलसि ''कहाँ बिकास?''
तुरत भइल बतकट्टी लगल हहास।
''आँख खाक ना चश्मा! का दरकार?
जन के जनि बहकाईं, ए सरकार!''
जेकर बीच अरच्छित से कनियाय।
ले-ले लाम उबासी मूते जाय।
बात-पोंछ-हनुमंता बढ़ते जास।
रावन अस लघुशंका ना ओरियास।

पासा लेप लिलारे गर रुदराछ।
जोतखी बाँचत सोझे अगरम-पाछ।
ऊपर बर्थ छोर से बहल पसीज।
ऐन मगज के बीचे सुसुमित चीज।
जनि पूछीं कि कतेके मचल कुहाच।
लागल रुद्र आज खुद रहलें नाच।
बारंबार बिनय करि दे परितोस।
नाथ अबोध गदेला के का दोस?

कुपित नयन अब मूनल चिंतन मग्न।
गरह कुचाल बिचारत सोधत लग्न।

छुकछुक के आवाजो रहलसि डूब।
सुत जा हे मन नइखे... इचिको हूब।

दू गो कविता

☑ गुरविन्द्र सिंह

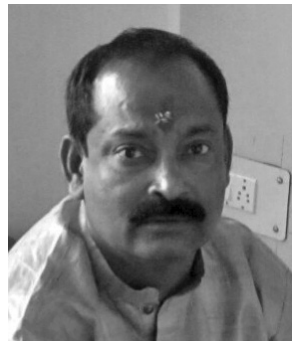

नया खिलाड़ी

नमरी एक काँइयाँ बाकिर
बूझल सभे अनाड़ी
रहे पिछाड़ी बाकिर एक दिन
दउरे लगल अगाड़ी!

सुरू सुरू में सोझिया लागे
ना जाने कब सूते जागे
लोकतंत्र का राजनीति में
उभरल नया खिलाड़ी।

चिक्कन मुँह से मधुए टपके
मोका मिले त सरबस गपके
नेता से मन्त्री --मुखमन्त्री
बँगला मोटर गाड़ी!!

रोवे गावे -तूरे तान
कहीं साँझ फिर कहीं बिहान
कहाँ बिगाड़ी केहू ओकर
ऊहे, कूल्हि बिगाड़ी !!
राजनीति का नया दौर में
उभरल नया खिलाड़ी !!

गँउवाँ क खेतिया

दिहलीं खबर कि कुआर बाद आइब --
गँउवाँ क खेतिया में हथवा बँटाइब !

आई सुदिन अब तीज तिहुआर के
हमरो बा इन्तजार बोनस-पगार के
इहँवें से सब कुछ कीन के ले आइब !

कातिक में खेतिया क भीरि परी भारी
बेंग -बीया खदिया क होई मारामारी
ए बेरिया नया बीज कीनि के बोआइब!

प्राइवेट नोकरिया में सइ गो झमेला
पइसा बा हाथे त कूल्हि होई खेला
लेइ के उधार कुछ , घर सझुराइब !
गँउवाँ क खेतिया सम्हारिए के आइब !!

❑ आर.के. पुरम, नई दिल्ली

दू गो कविता

✍ विवेक त्रिपाठी

(एक) गेहूँ पिपिहड़ी

गेहूँ पिपहड़ी क साथे कुछ अउर हऽ,
गाँवे संघितयन क बाते कुछ अउर हऽ,

कत्था में छोटुआ के बाटे चोन्हाइल,
रस्ता के बस्ता क लोडे भुलाइल ,
घरे पहुँचले प बाबूजी कहलन.. ,
भित्तर बा दूधे में रोटी सनाइल ,
अंटा में गोलिया क साथे कुछ और हऽ ,
गाँवे संघितयन क बाते कुछ अउर हऽ..!१!

झुलुआ में पीढ़ा पेन्हावे क झगड़ा,
उल्लड़ हो गइला प हो जाला लफड़ा ,
बोरा क बोरा बराइल ह रसरी,
सरकता पीछेसे धरऽ तू अगड़ा.. ,
पेंगी प पेंग मराते कुछ अउर हऽ,
गाँवे संघितयन क बाते कुछ अउर हऽ..!२!

अरुई के पत्ता प जामुन बिनाई,
पटुआ केसाथे चमनवों भी खाई,
माई क ओरहन कि ''खाते कुछ नइखे'',
उप्पर से बनल बा घर में मठाई,
भूजा मकइया क साथे कुछ अउर हऽ ,
गाँवे सँघितयन क बाते कुछ अउर हऽ..!३!

गुल्ली आ डंटा के खेले हऽ अइसन ,
कान्हा जी राधा से खेलेलें जइसन ,
पूरब से उठ जाले ललकी किरिनिया ,
नइया के माझी खेवेलें जइसन,
चौना गड़हिया क साथे कुछ अउर हऽ ,
गाँवे सँघितयन क बाते कुछ अउर हऽ..!४!

पूजा में बाबूजी मेला घुमइहें,
नूरी आ लैला में गुटका चबइहें,
छोटका के साथे जे बड़को ललाई ,
त दुनों के दुनो क गोल्लक किनइहें,
दही जीलेबी क साथे कुछ अउर हऽ ,
गाँवे संघितयन क बाते कुछ अउर हऽ..!५!

(दू) बंधुआ के डोर त खोलीं

बुद्धी के बड़ पैमाना में बिटिया के सोच न तोलीं,
मनमस्त बयार में लहराई बंधुआ के डोर त खोलीं

जेतने हिस्सा में बटल हवे गोलुआ के लाल मिठाई,
ओतने हिस्सा में करत रहीं कुल प्रीत प्रेम शहनाई,
जइसे नाउन के ठेहुना प गुड़िया क गोड़ रंगाई,?
फिन से दुआर दोहराई ना बिटिया के होई विदाई,
जे कब्बो याद सताई त मन कुहुक कुहुक के रो लीं?
मनमस्त बयार में लहराई बंधुआ के डोर त खोलीं..!!

अब करीं याद ओह वक्त के जब खेलत रहे अँगनवा,
जहाँ दिनो-रात तब देखे उ बस तुहरे आंखि सपनवा,
"बाबा जहाज का सैर करब हम भर उड़ान असमनवां",
सुनके अँखिया बरसे राउर जइसे झरे सवनवाँ,
ली बँहियाँ में अझुराईं उ चहकि चहकि के बोली,
मनमस्त बयार में लहराई बंधुआ केडोर त खोलीं..!!

ग्राम+पोस्ट खोरी, थाना- बरहज, देवरिया
पिन- 274603, मो०- 7887266208

पँचइयाँ के पोखरा

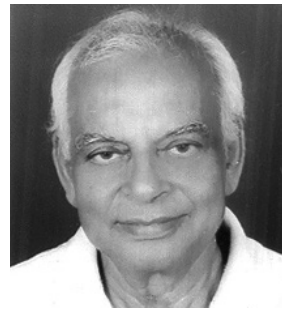

राजगुप्त

मनजीत नाँव के एगो आदमी नरहीं गाँव में रहत रहले। उनका ससुरारी विआह पड़ल। नेवता करे जाये के रहे। पिछड़ल गाँव। चले खातिर कच्ची छवरि रहे। पुरहर तेयारी क के चलि दिहले। चलत–चलत थाकि गइले। संजोग से राहि में एगो बगइचा पड़ल। एगो फेंड़ के छाँह में बइठि के सुस्ताये लगले। चइत बइसाखा के महीना। लूह घाम में जरल देंहि, गर्मी से मुँह सुखात रहे। झोरा में से पानी के बोतल निकलले। दू–चारि घोंट पानी पी के गर तर कइले। लमहर राहि चले के रहे। पानी पीये में कँजुसई कइले। बेयारि पतई पर जनात रहे बाकिर भुइयां इचिको बुझाते ना रहे। पगड़ी से गमछा खोलि मुँह माथ के पसेना पोंछि देहि पर गमछा हँउके लगले।

थीर होते उठि के चले लगले। बगइचा पार करे के पहिलहीं कवनो आदमी के कँहरला के आवाज कान में परल। भूतहा फेंड़ आ भूत परेत के नाँव बहुते सुनले रहले। बाकिर कँहरला के आवाज जइसे गोड़ में सिक्कड़ बान्ह देले होखे, थथमि के आवाज पर धेयान दिहले। हो न हो जरूर कवनो आदमी विपति में बा। 'नव पड़ी चाहे छव'। एतना सोचि के आवाज आवत की ओरि घूमि गइले। जरूर कवनो मजबूर आदमी संकट में बा। तब्बे एह तरे थाहि–थाहि के आवाज आवता। कुछ आगा बढ़ते लउकल। एगो आदमी फेंड़ के मोटहन सोरि पर बइठि पेड़ से पीठि सटा के हाथ गोड़ पसरले कँहरत रहे। आदमी के आहट पाके अधसूतल आदमी आँखि खोललसि। बड़ी जोर लगा के बोलल। ''भाई, जनाता हमके कस के लूह लागि गइल बा। जीभि लटपटाता इची पानी पीया द।'' मनजीत बड़ी सोच समझ के कहले। ए भाई, हमरा ससुरारी जाये में देरी होता। लोग का कही। जेकरा अगवड़े चोहँपे के चाही उहे अबेर से आवता, जग हँसी। दोसर नजदीक पास कवनो इनार–पोखरा नइखे कि पानी भेंटा जाख।

मनजीत के बाति सुनि बेरमिहाँ बोलल– "पीया द बबुआ, तोहरा नियरे जाये के बा हमरा ओहटा। सरधा से पूजा होला त भगवानो खुश रहेले। सरधा से फेंड़, पहाड़, पत्थर पूजाला। कवनो उत्तयोग करऽ बाबू?"

"पानी त पीया देती। बाकिर हमरी लगे जवन पानी बा, उ जूठ बा। जूठ पियवला में पाप लागी। भाई, माफ करिह।"

मरता क्या न करता? "उपास से पतोहि के जूठ भला। जूठ–काठ देखि के का करब कि पियासल प्राने निकल जाई। हम पियासल मरत बानी, तूँ कहत हउव, क्षमा करिह?" काहें?

"सच्चाई खोलि के बतावत बानी। हमरा सफेद दाग के रोग बा। लोग कोढ़िया के थूक से डेराला आ तूँ कहत हउव कि जूठे पानी पिया दीं। लोग तोहके

'चरकाह' कही। हमरा चलते तू दगिया जइब। केतना बड़ हमरा पर पाप लागी। अनासे पाप के भागी काहे बनी। "आन्ही मान्ही दोष भुढ़िया भरोस" कहाउति खाली कहे खातिर होला। अरे भाई! जूठ पानी पी के मुउला से त बाँचब। अपना बाल बच्चन खातिर त जियब? 'दगिहा' कवनो रोग थोड़े न हऽ। जिन्दगी बाँचल रही तऽ बहुत कुछ होई। हमरा तोहार कुल्हि बात स्वीकार बा। अब भाई, पानी पिआ दऽ। "एक मुट्ठी सूतरी हजार किरिया उतरी"। बे आग–पाछ सोचले, हमके पानी पिया दऽ। पानी पी के बेरमिहाँ इची टाँठ भइले। फइलल गोड़ हाथ सिकोड़ले।" दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम। एतना सोचि के बेरमिहा के पानी दिया दिहले।

ऐने मनजीत के धुकधुकी बढ़ि गइल। छवरि चले के होतना। गरमी में पानी खतम।

तबले बेरम्हिां बोललेे– "भाई पानी पिया के बड़ी पुन्न कइल।"

एगो बाति कहीं, "हमार कहना करबऽ?"

"रउरा कहीं त!"

"हमार किरिये जरूर करिहऽ। भगवान सभकर भला करेले। नइया–नाव संजोग के जाने केकरा नेति का हो जाला। पच्छिम के पगडंडी पकड़ि के चलि जा। कुछ दूर गइला के बाद एगो पोखरा पड़ी। पोखरा के भिंटा पर कईगो फेंड़ बाड़े स। बाकिर आम के एकही फेड़ बा। ओके सुगिहवा के फेड़ कहल जाला। ओमे सुग्गा के ठोर अइसन आम फरेला। बस ओही के एगो छिउँकी तूड़ि लीह। ओमे से सफेद दूध निकली। ओकर दूध ले के दागि पर लेभर के पोखरा में नहा लीह। ओकरा बाद जहवाँ जाये के होखे खुशी–खुशी चलि जइहऽ। नव पड़ी चाहे छव। हमार कहना करिह। किरिया धरवले बानी। बाति जनि बिसरिहऽ।"

बेरमिहाँ, एतना बाति कहि के दर पर से उठल चाहत रहले। कोसिस कइला के बादो उठि ना पवले त मनजीत करिहांई में हाथ लगा के अलम दिहले। बेरम्हिाँ में फूर्ति आ गइल। टाठ हो के एक ओरि चलि गइले। मनजीत आपन राहि धइले। कुछ आगा बढ़ि के पाछा तकले। बेरमिहाँ आँखि से छने में अलोत हो गइले।

बेरमिहाँ के बाति में एतना तेज रहे कि घाव गम्हीर कइलसि। मनजीत के सब स्वीकारे के पड़ल। खुशी मन से चलत–चलत पोखरा पर पहुँचले। आम के छिकुनी तुड़ले। डाँढ़ी आ पतई के सफेद दूध दाग पर मलिके पोखरा में हाथ–गोड़ धोई, अस्थिर होई पानी से बहरिअइले, मने मन सकरले। बड़ा नीक हलुक पानी बा। पोर–पोर तर हो गइल। फेरू गमछा से हाथ पोंछि, गोड़ के पानी पोछे लगले। त देहि में झुरझुरी दउड़ि गइल। गोड़ का तर से धरती धुसिकि गइल। हे भगवान इ का भइल? गोड़ के दाग पर जइसे करइल माटी बइठि गइल होखे। दाग गायब। मने मने बेरमिहाँ के जरूर कवनो देवता होइहें। धन्नऽ धन्नऽ हे भगवान। कवना भेस में के मिल जाई, कवनो ठेकान ना?

मनजीत के खुशी के ठेकान ना। मने मने बुझाइल जइसे उनका साथे साथे फेड़ रूख, चिरई, चुरूंग सज्जी खुशी से झूमत होखे स। एतना उछाह कि धरती पर उनकर गोड़े ना पड़त होखे। लागल उड़ि के ससुरारी चोहँपि गइल होखे।

ओह दिन मटिकोड़ रहे बैन्ड बाजा बाजत रहे। मेहरारू माटी कोड़े गँवे गँवे घर से बहरिआत रहली स। बनि ठंनि सगरि के महेरारू सोझा पड़ल। अजगुत देखि बेकति के खुशी के लो ढ़रकि पड़ल। उ पीछउड़ होके देवकुर पर मूंडी पटके खातिर दउड़ि परली।

माजरा जानि मनजीत के ससुर लगे आ गइले। कहले! "ए पाहुन वीर कुँवर सिंह ओही पोखरा में नहइले रहले। जब अँगरेजन से लड़त–लड़त नहइला के बाद उनकर गतरे गतर से बहत खून बन्द हो गइल। बुझइबे ना कइल कि देहिं में कहाँ का भइल रहे? पचइया के पोखरा में जेही नहा ले सज्जी चाम के रोग रफा–दफा। घर के मुर्गी दाल बराबर हमनी का आजु भुला गइलीं जा बाकिर इतिहास में ओह पचइयाँ के पोखरा के आजुवो ओतने तेज बा।" पुराने चाउर पंथ कहाना। पुरान बाति इतिहास बनि जाला। अइसहीं मंसूरी के कैम्प्टी फॉल जेहसे छिलाइल मिलाइल तुरुते चिक्कन आ ऋषिकेश के सहस्रधारा के पानी पेट खातिर रामबाण।●●

राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया, मोबा. : 9415659456

साइत गाँव हमरा भीतर हावी बा.....

राणा अवधूत कुमार

ना जाने केतना दिन हो गइल, बंबई के चकाचौंध वाली दुनिया से वापिस लवटला। आजुओ जब आंखिन में उहवॉ के दृश्य आवेला त लागेला कि वाकई, महानगरीय जिनगी कतना दुखकर बा? बंबई में ओह घरी गांव के एगो नवजवान अपना फाटल आंखिन से षहर के जगमगाहट के मुंह बवले देखत रहे। ई बात साल 1995–96 के ह। जब इंटर के परीक्षा देहला के बादे घर के आर्थिक स्थिति खराब होखे से घर छोड़ेके नौबत आ गइल। 18–19 साल के एगो लइका कमाए –धमाये खातिर बंबई गइल। बंबई में मामा के बोलवले आ नोकरी मिले के उमेद में आपन पढ़ाई –लिखाई के छोड़ि के, घर से अपना झोरा–झक्खड़ लेके ओह अनजान–अपरिचित षहर में अचके निकल गइल रहे। जीवन में कुछुओ कइके पइसा कमाए के धुन उनकरा भीतरे समा गइल रहे।

बंबई के फुटपाथ प चलत–चलत, आन्ही लेखा भागत मोटरगाड़ियन के देखके ओकरा आतंक –मिश्रित रोमांच के अनुभूति होत रहे। मामा के जवेलरी कंपनी में नोकरी रहे, त ओही में सेटिंग करवावे के भरोसा देके ओके गांव से बोलवले रहन। जबले नोकरी ना मिलल, बंबई के बाजार–सड़कन के चक्कर काटे में समय बीतत रहे। मामा के कंपनी में जाये के बाद, उहो घर से बहरी निकल के बंबई के सड़कन प निकल जात रहे। ना राह के थाह रहे, ना मंजिल के। कवनो टैक्सी–बस में बइठ, कतहूं उतर के घूमत, कबो चौपाटी में भेलपुरी खात, कबो जुहू बीच में सांझ बितावत। एगो निरूद्देष्य राही के तरे, जेकर कवनो मंजिल ना होखे, बाकिर एहू भटकाव के अपना एगो अलग मजा रहे। अगल–बगल साफ–सुथरा लोग। जींस–टीशर्ट पहिनले अंगरेजी में बोले वाली स्मार्ट आ खुबसूरत लइकियन के जमावड़ा। कबो गैर जिम्मेदार लोगन के भीड़, कहीं फिलिम के सूटिंग। ई सब दृष्य कबो ओह नया उमिर के लइका के डेरवावे, त कबो सम्मोहन में डाल के, ओकरा के मंत्रमुग्ध करे। बाकि एह सबके बीच ओकरा जिनगी के सपना पूरा होखे के उमेद रहे।

हमनी का ओर गांव–कस्बाई माहौल में ई सब कहवाँ संभव बा? मजेदार बात कि ओहिजा त कोई केहू प ध्यान ना देवेला। आ एगो हमनी के गॉव बा, जहवॉ से दस किलोमीटर दूर बसल कस्बाई षहर सासाराम, ओहिजा के कॉलेजन में अब जाके लइकी पढ़े–लिखे के मन बनाके षहर में आवत बाड़ी सन आ रहतो बाड़ी सन। बाकिर गांवन के हालत अभी इहे बा कि सबका हाथ में टचस्क्रीन मोबाइल बा, बाकिर संस्कार, पढ़े–लिखे के माहौल एकदमे खतम हो रहल बा। रउआ कुता के डर से बिलाई के आ बिलाइयन के डर से चूहन के भागत घर–दुआर में देखले होखब। ठीक वइसने चाल हमनी के गांव के लइकियन के रहेला। भले लइकी सासाराम में चहुंपी त तनी खुल जाई, बाकिर गांव से निकलत बेरा त एकदमे शरीफ बनके निकली। गांव में कुल मिला के पांच–छह गो दोकान होई। जवना में जादे

तेल–मसाला, पंसारी, बजाज, जिलेबी–समोसा, अंडा के दोकान। गांव के लोग–दुकानदार सभे अपना काम में बाझल। सांझ होते नहा–धोके सिनेमा देखे, जवने में एह घरी भोजपुरी सिनेमा खूब चले। गांव में छोटहन वीडियोहॉल रहे। इंटरनेट के जमाना अबे ना आइल रहे, जहवॉ यूट्यूब प सब नया–पुरान सिनेमा लोड बा। ओकरा के देखे– डाउनलोड करे खातिर कवनो विषेश मेहनत नइखे करेके। बाकिर ओह घरी सिनेमा–गाना, देखल –सुनल अतना सहज ना रहे। ओह समय–संदर्भ में मोबाइलो राखल बहुते बड़हन चीज रहे।

वीडियो हॉल के लगे दू–चार गो चाय–समोसा के दोकानो रहे। जहवॉ दस–बीस लोगन के जमावड़ा सांझी के पांच बजे ले राति के 10–11 बजे तक लागल रहे। ओह जमावड़ा में पटना से लेके दिल्ली के राजनीति, कबो बंबई के फिलम के मैटेरियल सुनल आ सुनावल लोगन के शगल रहे। एम्में हर तरह के लोग रहे। ओह घरी के स्थिति अइसन रहे कि लइकियन के, त पता ना चले कि कब पैदा भइली स, कब जवान भइली सन। कब बिआह के ढ़ोलक बाजल, आ कब कोरा में एगो लइका खेलावत उहे लइकी गॉवे में चार–पांच बरिस में कहीं ना कहीं दिख जाये। गांव के बगल से गुजरल नाव के एगो सड़क, जवना के हरेक साल विधायक भा कवनो अन्य फंड से मरम्मत होला, बाकिर ओकर हालत हरमेसा से खराबे रहेला। एकर एगो अलगे कहानी बा।

दू–चार गो बस दिन भर में चलत रहे। बाकिर कवनो के टाइम फिक्स ना रहे. सवारी भइल त जल्दी निकल जाई, ना त कबो घंटा भर तक ले खाड़ो करवा दी। निजी गाड़ी के संख्या ओह घरी कमे रहे। चारपहिया मोटरकार के संख्या अउर कम रहे, ओह हालत में कबो कवनो बढ़िया लकजरियस चारपहिया आ जाव त देखनिहारन के भीड़ लागे। गांव के बहरी तक लइका ओकर धुऑ के निहरहीं में लाग जायें। हम बड़ भाई के संगे सासाराम में रहिके पढ़त रहनी। आठवां से दसवां तक सासाराम में आ इंटर में यूपी कॉलेज, बनारस से पढ़ले बानी। गांव गइला प गांव के भाइयन के मनोदसा देख तरस आवे। अंगरेजी में बोलल अभियो गॉव में सम्मान के बात रहे। जे ना समझे, उहो जाने कि लइका तेज बा। षहर में जहवॉ रहनी जा, ओहिजा के हालत बढ़िया ना रहे, बाकिर गॉव के बनिस्पद निमने कहाय। समय से पानी, बिजली, नाष्ता, भोजन आ पढ़ाई के सिस्टम त रहे। जिनगी में अनुषासन के महत्व से तनी–मनी पहिले से परिचित हो गइल रहनीं।

षहर में हाईस्कूल के पढ़ाई–ट्यूशन में संगे–संगे पढ़े वाली लइकी से बातचीत करे, ओकनी से नोटबुक लेबे, सवाल–जवाब करे के मौका त मिलल रहे। त कबो–कबो कैंटीन में केहू साथे–साथे चाय–नाश्ता करे, केहू ओकरो से आगा निकल सिनेमा–होटल में समय बितावत रहे। एही क्रम में कुछ मित्र–भाई लोग इश्क फरमावे के नाकाम कोसिसो करस। एम्में कई जना के मामिला बनियो जाये। कुछेक लोग के हालत अइसनो भइल कि दिनभर तपत गरमी में लइकियन के फेरा में रहस। ओकरा बादो नतीजा षून्ने रहे। जब बंबई गइनी, अइसन मौका के तलाष में कबो ना रहलीं। बंबई में कुछ दिन रहले के बाद बुझाइल कि अबले जवन हम संस्कार आ अनुभव लेहले बानी, आपन गांव से, सासाराम–बनारस में रहे के दौरान, उ सब गांवे तक सीमित रहे वाला बा। अब तक जवन जानकारी लिहले बानीं, ओकर बंबई शहर में कवनो अहमियत नइखे, कवनो वैल्यू नइखे। कमे उमिर में, पढ़े–लिखे के एगो अनुषासनबद्ध जीये के शैली अपनवले रहीं। हाई स्कूल में गांव में टॉप कइले रहनीं। कवनो विषय पर बोले–बतियावे के थोड़–बहुत मादा राखत रहनीं। बाकिर बंबई जाके सब ज्ञान बिना मोल के हो गइल रहे। ओहिजा झूठ, प्रपंच आ देखावापन के जीवन–शैली बा। बंबई में सर्वाइव करे खातिर एक्सट्रा मोडर्न, तेज बोले वाला, चल्हॉक आ दबंग टाइप के होखे के परेला। जिनिगी में सर्वाइव करे आ हरेक स्तर प सफलता हासिल करे खातिर कुछुओ करे प तइयार होखे। एह राह पर महानगर में रहेवाला लगभग सब लोग चल रहल बा।

बंबई जादूनगरी ह, जहवां रहे वाला के पहिलहीं से तइयार हो के आवे के पड़ेला कि आपन पुरान जीवन के भुला के आगा बढ़े के होई। बंबई के चौड़ा–चौड़ा सड़क, ओह प दउड़त बेतहाशा गाड़ी, अतिव्यस्त यातायात, समय के कमी, जहवां सभे अपने काम में बिजी बा। केहू के लगे केहू खातिर टाइमे नइखे। एकहीं घरे में रहला के बादो हफ्ता में एकाध बेर भेंट होत रहे। एह हालत के देख के कबो–कबो दिल में उदासी आ हीनभावना घर कर जात रहें। ओह समय भावुकता में हमरा हमार गांव बहुत नीचे नजर आवे लागे। गांव के जिनगी हमरा बड़ा जर्जर आ दयनीय लागे। कारण रहल कि गांवे तू कतनो बढ़िया पहिन ल, निमन खा ल, बाकिर रहे के बा ई

गंउवे में। एगो सीमित दायरा में, सभे परिचित लोग भेंटाई। हमरा लागे कि गांववालन के हालत ओह बेंग जइसन बा, जवना के दुनिया कुँइयॉ में बा। ई गांव के लोग समय गॅवा आ पान –खैनी खा–खाके करिया भइल आपन दांत देखावे में अपन मय जीवन बिता देला। बंबई में लोग जीवन के सफल बनावे के जीतोड़ कोशिश आ संघर्श करत लउकी। केतना लोग त घर–परिवार छोड़ बरिसन से रहता। केतना लाख लोग एहिजा घर–चाल आ खोली कीन बस गइल बा। हमरा जाने में कम से कम रोहतास–शाहाबाद के दू सई से जादे ओहिजा आपन बसेरा बना लेले बा।

बंबई में केहू परिचित हाली ना भेंटाई, बाकिर तबो एकर आपन मजा बा। अपना में मस्त बा सभे। समय के अहमियत आ उपयोगिता के महत्व हमरा बंबइए में भइल रहे, जहवॉ बांद्रा के अपार्टमेंट के चौकीदारो हमार गांव के सेठ–महाजन से जादे सम्य आ तेजतर्रार बुझाइल। बाकिर समय बीतला के साथे अइसन लागल कि जवन उपर–उपर दिख रहल बा, उ हकीकत नइखे। अब तक हमहूं महानगरीय षैली में ढ़ले के ताबड़तोड़ कोषिष करत रहनीं। आठ दिना हो गइल रहे, दू–चार दिना में बोलावे के मनेजर कहले रहे। आईकार्ड बनी त, नोकरी फिक्स मानल जाला ओहिजा। अभी तक ले आईकार्ड ना बनल रहे, फोटो आ नाम–पता मामा पहिले दिन भेजवा देले रहलीं। ई आउर बात रहे कि अबले नोकरी के स्वीकृति त नाहिये मिलल रहे, बाकिर जल्दिये मिले के उमेद जरूर रहल। तब ले हमार जिनगी जिम्मेदारियन से दूर घूमे–फिरे में बीतल। बंबई में आठ–दस दिना घूमला के बाद कतहूं आवे–जाए में दिक्कत ना होत रहल। एकरा बादो हमरा लागे कि ओहिजा सब लोग आपन चेहरा के पीछे एगो मुखौटा लगाके चलत बा। सब चेहरा के पीछे एगो अउर चेहरा बा, जवन खुदगर्ज बा, गंदा बा, बनावटी बा। जवन शायद आपन वास्तविक चेहरा के छुपावे के कोशिश करतो बा। बाकिर आपन चाल–चरित्र से पहिचान में आ जाला।

बाहर से साफ–सुथरा दिखे वाला लोग अंदर से अतना गंदा होई, एह स्टेज पर हमार गांव इयाद आवे लागे। तब गांव बड़ा प्यारा लागे, केतना अपनापन, बाहरी–भीतरी सभे एकसमान, बाकिर महानगरन में दया, प्यार, अपनापन कहीं भुला गइल बा। लोग एकरा बारे में तनिक सोचतो नइखे। हम जादेतर महानगरी भीड़ में अपना के भुलवावे बदे ओही में भुलाइल रही, बाकिर जब अकेले होई त आपन गांव इयाद आवे। हमरा लागत रहे कि बंबई में सभे कवनो ना कवनो असुरक्षा के भावना के बीचे जीयता। कवनो डर से लोग सहमल बा। हमनी के गांव में लोग खुलके हंसी–मजाक त करता, एक–दूसरे से मिलत–बतियावत बा। गांव में त सास, पतोह, ननद, भउजाई, माई–बाबू सब खुलके संग रहता। गांव केतना निमन बा, पराया मेहरारून के बहिन, फुआ आ माई–चाची समझल जाला। ओहिजे बंबई में रिष्ता के गांठ कमजोर पड़ल जा रहल बा. षादी–तलाक आ संबंध के टूटे के खबर आम बा। ना कवनो आत्मीयता बा, ना एक–दोसरा के दुखो में षामिल होखे के कवनो रिवाज। गांव में आजो सामूहिक संवेदना व्यक्त कइल जाला। ओहिजा सुख–दुख सभे लोग एक–दुसरा से बांटेला। एक–दुसरा से नजीक से जुड़ल रहेला। इहां त कुल्हि संबंध भौतिकी पर टिकल बा। आत्मा कहीं दबा गइल बा। मानवीयता–इंसानियत जइसन षब्द अर्थहीन हो गइल बा। आज के जुग में कहीं भुला गइल बा।

हम बंबई में करीब छह महिना तक रहनीं। एके महीना होत–होत जवेलरी कंपनी में हमरा नोकरी मिल गइल। बाकिर घुमावे खातिर हमार मामा एको सप्ताह समय ना देले होइहन। काहेकि ओहिजा फुरसते नइखे। एक दिन हफ्ता में छुटियो बा त मिलेजुले के कार्यक्रम बन जाए त कबो खाये–पिये के त, कबो आराम फरमावे के। एहमें कुछेक लोग अइसन रहे कि अतवारो के पइसा खातिर ओवरटाइम करे। तबो हम महानगरीय जीवन के एह समुन्द में डूबत–उतरात रात के तनहाई में गांव के नकल करी, मन में एगो जद्दोजहद चलत रहे। एही सब नाटकीय जिनगी में एक शाम बस नंबर 231 एलटी में, जवन सांताकुज से जुहू स्टेशन तक जात रहल, ओही में बइठ के बंबई के रंगीन आ मनभावन दुनिया के देखत रहीं। आधुनिक कहाए वाला संभ्रांत लोग के पक्ष के पक्षधर हमहूँ थोड़–बहुत बनत गइल रहनीं। अंतर्मन से सोचत–विचारत पवनी कि एह भागदौड़ के जंग में भइल थकान, अकेलापन आ बस में घंटा खाड़ होखे के बोरियत दूर करे के एह से निमन उपाय ना हो सकेला। बाकिर अइसन रोमांस प्रकरण क्षणभंगुरे रह जाला। बस के अगिला स्टाप तक अइसन मामला खतमे मानल जाला। अपवाध में कवनो आगे बढ़लो होई।

ओह दिन सामने के सीट प एगो अधेड़ उमिर के आदमी बइठल रहन। तबे भीड़ में फॅसल एगो लइकी

प उदारता देखावत उ कहले कि 'आजा बेटी, आउर अपने बगल में जगह दे देहलें'। ओह लइकी के आपन सीट प एडजस्ट कइल त निमन लागन बाकिर बाद में जवन सीन देखेके मिलल, ओकरा देखकेबुझाइल कि लोग केतना हद तक गिर सकेला। बेटी कहके रिश्ता काआड़ में नाजायज फायदा उठावत रहन। पहिले त विष्वासे ना भइल, बाकिर जब धेयान से देखनी त अब उ आदमी के हाथ लइकी के कमर के पास फिसलत रहे। तबे कंडेकटर के तीखा आवाज से माहौल टूटल। काहेकि एगो बुजुर्ग अदमी से ओह घरी उ अझुराइल रहे। हम देखनी कि बंबई में धोती–कुर्ता वाला ई बुजुर्ग कहवॉ से आ गइलन? जवन भाशा आ चाल–ढ़ंग से ही बिहारी लागत रहन। उ बुढ़वा चिला के कहलस कि 'षंभूआ हमरा के तीन गो रोपया देले बा, कहलस कि अतने भाड़ा लागेला। हम तोहरा के चार गो काहे देब'। तब कंडेकटर ओकरा के ओही भाशा में जवाब देत कहल कि 'आवतानी हमहूं सब लोग से केराया लेके, तब तोहके बतावतानी, हमतोहनी लोगन सब के निमन से जानत बानी, जे भाड़ा के पइसा बचाके बीड़ी पियल सन'।

एह बीच उ सज्जन आदमी के ई सब बेकार लागत रहे, मने–मन सोचत रहे कि ई बुढ़वा से कहां टपक गइल? केतना मजा से बइठल रहीं, साला सब मजा किरकिरा देलस. कबाब में हड्डी जाने कहवां से आ गइल। उ जानबूझके सुते के नाटक करके लइकी में मषगूल हो गइल. तबे उ बुढ़ा आदमी ओह अदमी के झंझोड़ के पुछलस, जवन ओह घरी ले सुते के नाटक करत रहे। 'ए बाबू, दौलतनगर से जूहू टेषन के केतना भाड़ा हव, षंभूआ हमार नाती, तीने गो रोपया देबे के कहलस ह, आ ई हमसे चार गो मांगता। हम चार गो काहे देब?' उ आदमी बुढ़वा के षांत करावत कहलकि 'मैं बोल दूंगा, ई कहत उ खिड़की से बहरी देखे लागल।हमहूं मायानगरी के निहारे लगनीं। कहल गइल बा कि जइसे–जइसे सांझ होला, बंबई हसीन–रंगीन होखल जाला।

बंबई अब काफी गतिमान, सौंदर्य के जगमग षहर लागत रहे। तबे कंडेकटर आइल त उहे साहेब पइसा दे देले, त कंडेकटर बुढ़वा के टिकट देत कहलस कि 'ऐ दादा ई ल आपन टिकिस, आ तू जुहू टेषन तक के बस के मालिक बाड़।' ई सुनके बुढ़वा बड़ा अचके से कइलस, अबहीं त, तू हमके उतारत रहे, अब मन काहे बदल गइल। कंडेकटर समझवलस कि 'दादा तोहार बाकी के भाड़ा बड़का साहेब देले हवे, अब आराम से बइठ के घरे चल जा'। 'हमार भाड़ा देहले, हमरा पे तरस खाके, हम भिखार हई का?' कहते–कहत उ बुढ़ा ओह सज्जन प टूट पड़ल, जवन अब उ लइकी प कुछ जादे ही मेहरबान रहल। अब ओकर हाथ लइकी के उरेजन के हाथ से छूअत रहे। ओकर चेहरा दानवीर कर्ण लेखा सूरज के आभा लेले प्रतिबिंबित होत रहे। तबे बूढ़ा के करकस आवाज सुन के उ सज्जन हड़बड़ा गइलें। 'छुछुंदर तू के हवे हमार? तू काहे पइसा देबे, हम तोहरा से पइसा मंगनी ह का रे? हम गरीब जरूर बानी, बाकिर भिखमंगा ना हई रे'?

बूढ़ा ई कहत–कहत गारी देबे लागल। बस में बइठल सभे ओही ओर देखे लागल। बुढ़वा टिकट ओह आदमी के मुंह प फेंकत कहलस कि 'अरे ई ले आपन टिकिस, हम अब ई मोटर से ना जाइब, बस रोक, हम उतरब, हम तोहरा से भीख मँगनी ह, अपन मुंह देखले हवे छुछुंदर'। बस में सवार सभे लोग ओनिये देखे लागल। ओने उ सज्जन मुंह बनाके कहे लगलन कि देखीं, का जमाना आ गइल बा? आ लइकी के गाल के छुअत–छुअत कहतारे कि देखलू बेटी हम उ बूढ़ा के मदद कइनी, आ हमरा प खिसियाइल बिल्ली के जइसन उबलत बा। लइकी उनकरा बात के समर्थन में कहत बिया कि 'हॅ देखी ना, हमरा त पागल लागत रहे। उतरत समय बुढ़वा के कान में ई आवाज गइल, त लवट के लइकी प कूद पड़ल, 'पागल होइबी तू, आ तोर खानदान, हम कबे ले ताहेरा के आ एह आदमी के हरकत देख रहल बानी'। उतरत समय ओकर सीढ़ी से गोड़ त फिसलल, बाकिर बुढ़वा बस से उतर गइल। बस के सबलोग एक–दोसरा के देखत रहे।

कंडेकटर अधेड़ सज्जन से सहानुभूति में कहलस 'जाए दीहीं ए साहेब, बुढ़वा त सिरफिरा लागत रहे। आप आराम से बइठी'। साहेबो अब आरामे से बइठ गइलन। अउरी एक बेरी फेर से आपन हसीन काम में लाग गइलन। बाकिर अब हमार मन ओने ना टिक पावत रहे। ना अब बंबई के ओह रंगीनी दुनिया, चमक–धमक पर जात रहे। हम शांतचित आ एकांत होके सोचे लगलीं। अपना गांव आ अपना माई के इयाद आवे लागल। जूहू बस स्टेशन आ गइल, आ बोझिल मन से उतर गइनीं। बाकिर राह में चलत एगो निश्चय जरूर ले लेहनी कि अब एह मायानगरी में हम ना रहब। बाकिर एह अहसास से ऑख भींज गइल। ''साइत गॉव अभियो हमरा अंदर तक हावी बा, जेकरा से निकले में अभी आउर समय लाग सकेला'', हम सोचनी। ●●

अन्हारे के जामल

मीनाधर पाठक

"अच्छा मम्मी हम चलऽतानी। आजु हमरा पहिला केस के फैसला ह।" सुनि के खुसी के मारे उनके आँखि में लोर भर गइल। पाछे ठाढ़ पापाजी के सीना फूल गइल रहे। ऊहो आगे बढ़ि के अपना जज बेटी के गले से लगा के पीठ ठोकलें तबलें गाड़ी के हार्न बाजल।

"चलऽतानी पापा जी!"

"हँ बाबू जा। दही मछरी।" ऊ दूनू लोग के गोड़ लागि के चली गइली।

अरे ई का! आँसु काहें गिरे लागल।" ऊ चिहा के कहलन। "कुछ ना बस एहिंगा।"

"हम जानतानी ई खुशी के आँसू हऽ।" कहि के ऊ मेहरारू के गाल थपथपा के निकल गइलन। उनकी गइला के बाद ऊ अँचरा से आपण आँसु पोंछत उठली आ आपन आलमारी खोलि के एगो एलबम निकाल के बइलठ गइली। पन्ना पलटत पलटत उनके एगो फोटो देखा गइल। शायद ओही के जोहत रहली ऊ। ओ फोटो पर हाथ फेरे लगली तनिये देर में आँखि में भरल आँसु से फोटो धुंधला गइल बाकिर अतीत के ढेरो चित्र उनके सामने साफ साफ लउके लागल'

दुआरे पर लकीर खींचि के फुलवा आ बसंती में लंगडी खेले खातिर पहिले हम, पहिले हम करत रहे लोग। दूनू लोग में तय ना हो पावत रहे कि पहिले के खेली। तब्बे पीछे से एगो तीसर आवाज आइल, "ई का होता!" दूनू जनी बसंती घूमि के देखलद्य घुरिया डगमगात चलि आवत रहे।

"देखु न घुरिया, हम बनवनी हँ त पहिले हमही नु खेलब!" बसंती कहलसद्य

"हर बेर तूहीं पहिले खेलबू ?" खिसियाइल फुलवा।

"काहें? जब ओल्हापाती खेले के बेरिया हमहीं के हर बेर चोर बना देलू, तब त हम कुछ ना बोलेनी।" दूनू हाथ कमर पर ध के आँखि मटकावत बसंती बोललस।

"हँ, त तूहीं हर बेर चोर छँटा जालू त हम का करीं!" फुलवो अकड़ गयिल।

अबहिन ले ए लोग के झगरा देखत घुरिया बसंती की हाथ से चप्पू झटक लिहलसय "ले आव द, हम पहिले खेलब।" कहि के चप्पू पहिलके खाने फेंकलस आ एक गोड़ से लंगडी खेले लागल।

बाल ब्रह्मचारी कृष्णदेव बाबा से गाँव गिराँव के लोग गुरुमंत्र लिहले रहे। एहिसे उनके लइका बूढ़ सब लोग बाबा कहे। उनहीं के भतीज ह बसंती। उनके मझिलकू भाई कलकत्ता में नोकरी करेलें। उनके परिवार गँउवें में रहेला उनहीं के बेटी ह ऊ।'

फुलवा गाँव के एक संपन्न किसान घर के बेटी रहे आ घुरिया दूसरे टोला के। तीनों जनी एके समउरिया ह लोग। ए लोग में खूब पटबो करेला आ झगरा के त बतिये का!

ओल्हापाती खेले के होखे चाहें गोटी लंगडी पच्चीसी, का मजाल कि बिना लड़ाई के खेला हो जाउ! कब्बो कब्बो त झोंटा झोंटउवल के नौबति आ जाला बाकिर अगिले दिने फेरू से खेला के तइयारी हो जाला।

घुरिया दू भाई के बीच में एगो बहिन ह। साँवर रंग, बड़की बड़की आँखि, हरदम सँवरल लमहर बार, आ डगमगात चाल। कपड़ा एकदम साफ सुथरा आ गोड़ में हमेशा चप्पल पहिरले रहे। जबकि ओ टोला में शायदे कवनों लइका चप्पल पहिनत होखेसन।"

महतारी के मन रहे कि बसंती कक्षा पाँच के आगे कलकत्ता में पढ़े, एकरी खातिर ऊ बेर बेर अपने मालिक के चिट्ठी लिखत रहली। आखिर एक दिन ओने से जबाब में लीखि के आ गइल, "आपन तइयारी कऽल, हम आवतानी लेबे खातिर।" अब त जइसे उनके मन के मुराद मीलि गइल। ऊ कलकत्ता जाए के तइयारी में लाग गइली।

बगइचा में एक ओर ऊँखि पेरात रहे। बैलन के गर में बान्हल घंटी की टुनटुन से बगइचा संगीतमय भइल रहे। बाल्टी बाल्टी रस निकलत रहे आ ओहिजा तनी हटि के ईंटा से गोलाकार बड़हन चूल्हा बनल रहे। ओहीपर पर एगो छिछल भारी कड़ाहा चढ़ल रहे। चूल्हे के दूनू ओर एक एक लोग ठाड़ हो के कड़ाहे के ऊपर सफेद सूती धोती तनले रहे लोग आ ओही पर रस गिरावल जात रहे। चूल्हे में मोट मोट लकड़ी जोड़ल रहे ऊख क पतइयो भोंकाय, जेसे हहरा के आगि जरत रहे। कड़ाहे में रस से धीरे धीरे भाप उठत रहे।

ओनहिएं आमे के पेड़ तरे तीनू सखी लोग उदास बइिठल रहे। ए लोग के गाँव में सभे जानत रहे आ किसन बाबा के मारे बसंती सबके दुलरुआ रहे। ओने से निकलत किसन बाबा के संघतिया रामबचन तीनों जनी के देखि लिहलन।

"अरे ! ई तिकड़ी के मन आजु काहें गिरल बा भाई ?" अच्छा चला, तोहन लोगिन के हम रस पिआ।" लगवा आ के ऊ कहलन।

"नाहीं चाचा, आज मन नइखे।" बसंती दबले बोली बोलली।

"काहें बबुनिया? आज ई चनरमा जइसन सूरति पर गरहन काहें लागल बा?" रामबचन ओ लोग की लगे बइीठि के कहलन।

"बसंती अब कलकत्ता चलि जाई, एहीसे हमनीके नीक नइखे लागत।" फुलवा के कंठ फूटल।

"अच्छा! ई त बहुते खुशी के बाति बा। चला एही बाति पर हम सबके मुँह मीठ कराईं।"

रामबचन तीनों लोग के लिया के जहँवा ऊँखि पेरात रहे ओहिजा ले अइिलन बाकिर केतनो कहला पर केहू रस ना पीयल। त महुआ की पतई पर गरम–गरम महिया ले आ के दिहलन।

महिया जब कुछ ठण्डा भइल त अँगुरी से चाटि चाटि खाइल लोग तबले ओल्हापाती के पूरा टीम आ धमकल। उहो लोग जानि गइल रहे कि बसंती कलकत्ता जा रहल बिया। रामबचन सबके महिया खिअवलन आ कहलन कि "बसंती के जाए में अबहिन कई दिन बा न! त आज से काहें एतना उदासी? जा, जा के खेला लोगिन।" उनके बाति सुनि के टोली जामुन के पेड़ की ओर चल दीहल आ तनिये देर में ओल्हापाती के खेल शुरू हो गइल।

सबके साथ छूटि गइल। बसंती कलकत्ता चलि गइल। फुलवा पढ़े खातिर गोरखपुर अपनी फुआ किहाँ भेज दीहल गइल आ घुरिया गाँवें रहि गइल। बाकी लइका लइिकनी लोग भी अपनी–अपनी पढ़ाई में लागि गइल।

बसंती धीरे–धीरे शहर की हवा में घुले–मिले लागलि। ओकर पहिरल ओढ़ल, बातचीत के तरीका, उठल बयिठल सब बदलत चलि गयिल बाकिर ऊ जब अकेल होखेय ऊहे बगइचा, गरम भेली, महुआ, बादर के फरछाहीं पकड़े खातिर भागल आ ओल्हापाती खेलल, सब मन परे लागे तब ऊ फुलवा आ घुरिया के साथे आपन फोटो निकाल के देखे लागे।

एक बेर किसन बाबा केहू से कैमरा मांगि के घराभर के फोटो खिंचले रहलन। तब्बे ईहो फोटो खीचा गइल रहे। ऊहे फोटउवा ऊ अपनी साथे ले आइल रहे।

ओने बसंती आ फुलवा के जाए के बाद घुरिया अकेल पड़ गइल। ओकर घर से निकलल बंद हो गइिल। काहें से कि ऊ देहि से त बड़हन होत रहे बाकिर ओकर मन, बातचीत, गुन ढंग अब्बो लइिकाहे रहे। फुलवा आ बसंती के बाति अउरी रहे बाकिर अब ओकरा के टोला के लइकन के साथे खेले के ना मिले। ओकर महतारी छिन छिन ओकरी ऊपर आँखि लगवले रहत रहे।

समय के पहिया घूमल। कई गो बसंत

फुलाइिल। कई बेर मेघ छुआ–छुअउवल के खेला खेललें। कई बेर पेड़ आपन पतई झारि दिहलें। कई बेर कोंढ़ी फूटल आ कई बेर बरखा रानी धरती के सिंचली बाकिर एबेर जवन बसंत फुलाइल त बसंती आ फुलवा की तरे घुरियो फुला गइल। साँवर रंग, बड़की आँखि, लमहर बाल, दुबर पातर देहि आ ऊहे डगमग चाल।

अपनी छत पर ठाड़ बसंती मौसम के आनंद लेति रहे। आसमान पर करिया भूवर बादर एक के पाछे एक भागल जात रहे आ ऊहे धूप छाँह के खेल शुरू हो गयिल रहे। कब्बो घाम आगे त छाँह पाछे आ कब्बो छाँह आगे त घाम पाछे। प्रकृति के ई सुन्दर नजारा देखि के ओकरा आपन गाँव ईयाद आवत रहे। जब फुलवा आ घुरिया की साथे अयिसन मौसम में ऊ खेले निकल जाति रहे। कब्बो टिकोरा तूरि के ओकर भुजुरी बना के तीनो खा सन त कब्बो जामुन तूरि के आपन आपन फ्रॉक खराब क लेसन त कब्बो आन्हीं में एक्के आम पर सब गीरेंसन। सोचि के बसंती मुस्किया दिहलस। एकदम से बरखा के बूँद ओकरी मुँहे पर गीरल आ तब्बे महतारी के आवाजि सुनाई दीहल।

"बसूऊऊऊऊ!"

"आवतानी!" ऊ जल्दी से कपड़ा समेट के सीढ़ी की ओर बढ़ि गइल। महतारी दुलार से ओकरा के बसंती ना कहि के बसू कहत रहली।

"न जाने फुलवा आ घुरिया कइसन होयिहेंसन? का करत होयिहेंसन?" कपड़ा चौपतिआवत बसंती कहलस महतारी से।

"ऊहो लोग पढ़त लिखत होई। तूँ अपनी पढाई पर ध्यान द। ए बेर छुट्टी में गाँव जाये के कहतानी तोहार बाबूजी।"

"अच्छा!" बसंती चहक उठल। गाँव के नाँव से ओकर मन खुश हो गइल। कपड़ा उठा के आलमारी में ध के महतारी की गले लटक गइल बसंती।

"ढेर खुश होखला के गरज नइखे। नम्बर ठीक ना आई त ना जाए के मिली। बुझलू न!" सुनि के बसंती अपनी कमरा की ओर बढ़ि गइल।

ओने का जाने का भइल कि एकदम से घुरिया के माई के तबीयत बिगड़ल आ बिगड़ते चलि गइल। ओकरी दुसरे भाई के बिआह तय भइल रहे। घर में सभे भगवान जी से मनावत रहे कि कवनो अनहोनी न हो जाउ। बीमार महतारी बेर बेर ओकरा के बोला के अपनी लगे बइठा ले। कब्बो ओकर माथ त कब्बो गाल सोहरावत उनकर आँखि बरसल करे। उनके परान हरदम घुरिये में अटकल रहे।

देख–भाल के अभाव में घुरिया के मेलजोल अब अपनी टोला के लइकन के साथे हो गइल रहे। अब ऊ ओहीकुल के साथे खेलल करे। जब कवनो भाई देख ले त डाँट–डपट के घरे ले आवे तब ऊ महतारी से चिपट के खूब रोवे। महतारी ओकरा के खूब ऊँच–नीच समझावें बाकिर ओकरा कहाँ बुझा कुच्छु।

दुआर पर बैंडबाजा बाजत रहे। टोला भर के लइका कुल नचनिया के नाच देखत रहलेसन। ओहिकुल के साथे घुरियो नाच देखे में लागल रहे। सासु की कहला पर आजु ओकरा के भौजाई लोग तइयार क दिहले रहे। नया फराक सलवार आ तेल ककही क के ओही रंग की फीता से दू चोटी पूरि के काने के ऊपर फूल बनावल रहे। आँखिन में काजर लागा के कोन काढ़ल रहे। भाई के बियाह ना रहित त आजु घुरिया के ई रूप केहू देखिये ना पायित। जवन सुन्दर नाक नक्शा बनवलें भगवान जी बाकिर तनी कमी क दिहलें। ओकरा के देखि के टोला के मेहरारू लोग सोचत रहली कि "बिधिना सब दिहलें बाकिर बुद्धिए दिहले में हाथ कड़ेर क लिहलें।

घुरिया ए बाति से बेखबर नाच देखे में लागल रहे कि अशोक बाबू ओकरा के बड़ी गौर से निहारत रहलें। अशोक गाँव के दबंग राघवेन्द्र राय के बेटा हउवन। घुरिया के छोटका भाई उनके आगे–पीछे लगल रहेला एहिसे ओकरी निहोरा पर ऊ कुछ देर खातिर ओकरी दुआरे पर आ के ठाड़ हो गइल रहलें बाकिर ऊ घुरिया के चिहा के देखत रहलें। अइसन ना रहे कि ऊ घुरिया के पहिले ना देखले रहलें बाकिर ऊ सपनों ना सोचले रहलें कि घुरिया एतना सुन्दर हो सकेले!

परछावन के बाद बरात बिदा हो गइल। टोला के मेहरारू लोग अंगना में नाच गा के अपनी–अपनी घरे चल गइल लोग। तीसरे दिने घुरिया के छोटकी भौजाई उतरली बाकिर कुछ दिन बादे ओकर महतारी सरगे सिधार गइली।

महतारी की ना रहला पर घुरिया के दशा दिन पर दिन बिगड़े लागल। बड़की भउजाई सोचसुं कि छोटकी करे आ छोटकी सोचे कि बड़की करें। एही सोच बिचार में धीरे धीरे घुरिया पिसाये लागल।

कई–कई दिन बीत जाउ, न ओकरी बार में ककही पड़े ना कपड़ा बदलाउ। बिना सेवा बरदास के ओकर जवन सुन्दर लमहर बार अझुरा के लाटा बनि गइल। ओकर देहिं बर बिछौना आ कपड़ा लत्ता पसीना से बस्साए लागल। ओकर थरिया लोटा अलगे कढ़ा गइल। भौजाई लोग ओकर जूठ ना धोवे माजे अब त ओकरा के छुवतो ना रहे लोग। भाई लोग से बात बेबाति लकड़ी लगा दे लोग त कई बेर घुरिया पिटाइयो जाउ एहिंगा धीरे धीरे घुरिया बेकदर हो गइल रहे।

घुरिया की माई की गुजरले के बाद ओकरी बड़की भौजाई के कोखि जागल रहे। छोटकी अपनी जेठानि की सेवा में लागल रहे। अब घुरिया के समय पर खाए के भी ना मिले।

"ए भौजी, भूख लागल बा हो...!" ओदिन अँगना में जा के कहलस घुरिया।

"हे...! फरके रहा, हटा हटा, बहरा जा। ओहिजा मिल जाई तोहके खैका।" झाश्हिा के छोटकी ओसारा में भगा दिहलस। ओकरी माई के कमरा, जहाँ ऊ रहत रहे, सउरिहा हो गइल रहे। ओकर बसहरी उठा के ओसरा में डाल दीहल गइल रहे।

भौजाई की झइहवला से घुरिया चुपचाप आ के अपनी बसहरी में धँसि गइल। भूखि के मारे ओकर पेट दुखात रहे। बड़ी देर ले जब खाए के ना मिलल त ओकरा रहि ना गइल। उठि के सामने रमेश काका घरे जा के खाए के मंगलस।

"ए चाची, कुच्छु खाए के देबू। बड़ी भूखि लागल बा।" कहि के घुरिया चउखट लगे बइठ गइल।

"हरे! तोर भौजइया खनवो नइखी सन देत का रे!" आँखि निकाल के बोलली रमेस ब।

घुरिया के आँखि लोरिया गइल। ऊ जल्दी से रसोई में जा के दुगो रोटी पर तरकाती ध के ले आ के घुरिया की हाथे थमा दिहली।

"जा ए बछिया! का जाने कबसे तू भुखायिल रहलू ह!" रमेश ब घुरिया के हबर हबर खात देखि के बड़ा दुखित भइिली।

अब जब जब घुरिया के घर में खाए के ना मिले तब तब धीरे धीरे ऊ माँगि के खाए लागल।

"तनी बाबू के देखत रहिहा। जागि के गिरि न जाउ, हम अब्बे लंगोट आ कंथरी धो के आवतानी।" अपनी बड़की भौजी के बाति सुनि के घुरिया मूड़ी हिला के हँ कहि दिहलस। ऊ लइका सुता के चली गइली। छोटकी नइहर गइल रहे आ आदमी लोग खेते, एहिसे लइका के घुरिया के देखा के ऊ चापाकल पर कपड़ा धोवे चलि गइल। लइका सुत्तल रहे आ घुरिया बयिठल बयिठल आपन मूड़ी खजुआवत रहे। खजुआवत खजुआवत ओकरी बढ़ल नोह में ढील फँस जात रहलेसन आ ऊ ओकनी के निकाल के अपनी आगे धरती पर गिरा देत रहे। फेरू खजुआवे आ फेरू से ढील फँसे आ ऊ अपनी आगे गिरा दे। ई करत करत ऊ कई गो ढील निकाल लिहले रहे आ ओकनी के रेंगत देखि के ताली पीट के हँसत रहे।

"घूम लिहलसन रे! चला अब हो गइल! ढेर घूमि लिहलल सन।" कहि के ऊ अपनी अंगुठा की नोह से ओकनी के दबा दबा के पट्ट पट्ट मुआवे लागल। जब सबके मुआ भइल त फेरू से मूड़ी खजुवा के ढील निकाले लागल तब्बे टोला के कुछ लइका लोग आ गइल।

"घुरिया दीदी !"

"का रे !" ऊ नोह में फँसल ढील के गिरावत कहलस।

"चला गोली (कंचे) खेले।"

"गोली ! चला, बाकिर पहिले हमही खेलब।"

"हर बेर तूहीं खेलेलू।"

"तब जा लोग, हम ना खेलब।" कहि के ऊ ढील मुआवे लागल।

"अच्छा ठीक बा चला।" लइका लोग मानि गइल।

सुनि के घुरिया उठल आ लइका के भुला के डगमगात खेले खातिर चल दिहलस।

ऊ जा के अबहिन गोली टीपते रहे कि ओकरी मुँहे से चीख निकल गइल। तनिसा मूड़ी घुमा के देखलस त बड़की भौजी रहली। ऊ ओकर झोंटा पकड़ के खींचत घर की ओर बड़बड़ात चल जात रहली।

"कहनी हँ कि लइका देखिहा त तूँ खेले आ गइिलू! अब्बे लइकवा गिरि गइल होत त हम का करतीं! आवे दा अपने भाई के, ई रोज–रोज के बवाल खतम क देत हईं। अब तूँ रहबू कि हम! तनिको लाज नइखे। जवान भइली बाकिर टोला के लइकन के साथे गोली खेलल ना छूटल।"

"भौजी, हमार बार छोड़ दा, दुखाता ए भौजी, भौजी हो!" घुरिया रोवत बिलखत जात रहे।

साँझि के घुरिया के लथेर लथेर ओकर भाई मारत रहे आ टोला के लइका सहमल थोड़ी दूर पर ठाड़ हो के देखत रहलेसन। घुरिया माई माई ढेंकरत

रहे बाकिर भाई भौजाई के करेजा ना दुखात रहे। एहीतरे घुरिया बेकदर होत गइल। कहीं माँगल, कहीं खाइल आ कहीं ढिमिलाइल। दू तीन बेर खोज खाजि के भाई लोग ले आइल बाकिर धीरे धीरे ओकरा से बेपरवाह होत गइल लोग।

ग्यारहवीं के परीक्षा खत्म हो चुकल रहे। बसंती महतारी की साथे गाँव जाए की तैयारी में लागल रहे। सबसे ज्यादा खुशी ए बाति के रहे कि ऊ घुरिया आ फुलवा से मीली।

ओने फुलवो आ गइल रहे। ऊ त हर साल छुट्टी में बसंती के राह देखे कि का जाने ए साल बसंती गाँवे आ जाउय बाकिर बसंती गाँव छोड़ले के बाद गुलरी के फूल हो गइल रहे। एहू साल फुलवा के कवनो उम्मीद ना रहे कि बसंती गाँवे आई।

रेलगाड़ी स्टेशन पर दुइिए मिनट रुके के रहे। कुछु लोग पहिलवे से उतरे खातिर आपन सामान लिहले गाड़ी के दरवाजे के पास आ के ठाड़ हो गइल रहे। ओ लोग की देखा देखी बसंतियो आपन सामान ले के महतारी की साथे आ के ठाड़ हो गइल। ओकरी पाछे अउरी लोग लागि गइल। गाड़ी जइसे रूकल, भीड़ के रेला प्लेटफार्म पर उमड़ पड़ल। धक्का खात खात कयिसो ऊ दूनू लोग सामान सहित उतरल आ एक किनारे ठाड़ हो गइल। कुछ भीड़ छँटला पर ओ लोग के जोहत किसन बाबा देखा गइलें। उनहूँ के नजर ए लोग पर पड़ि गइल। लपक के ऊ अपनी बड़की भौजी के गोड़ लगलें।

"हरे ! एतना बड़ हो गइले!" आपन गोड़ छुवत बसंती के देखि के ओकरी मूड़ी पर हाथ ध के कहलें आ दूनू बेग उठा के चले लगलें। बसंती लजा के अपनी महतारी के हाथ पकड़ि के उनके पाछे चले लागल। ऊ लोग स्टेशन से बहरा आ के अपनी जीप में बइठ गइल लोग।

पक्की सड़क पाछे छूट गइल रहे। जीप कच्ची सड़क पर धूर उड़ावत दउड़ल जाति रहे।

सड़क के दूनू ओर खेत देखात रहे। कुछ खेतन में गेंहूँ पाकि गइल रहे आ कुछ खेत में कटिया हो के बोझा बन्हात रहे त कवनो कवनो खेत में कम्बायिन चलत रहे। ई सब देखि के बसंती सोचत रहे कि तब आ अब में केतना अंतर आ गइल बा! तब जोताई, बोआई, कटाई, ओसाई सब काम खेतिहर मजूर करत रहलें आ उनके मजूरी के रूप में अनाज दियात रहे, त ओलोग की घरे चूल्हा जरत रहे बाकिर अब त ई सब काम मशीन से होता! खेतिहर मजूर लोग के घर कइसे चलत होई ? बसंती अबहिन सोचते रहे कि ओकर निगाह एक खेत से उठत धुआँ पर पड़ल। ऊ उत्सुकता वश चाचा से पुछलस त पता चलल कि गोहूँ के बालि बाछि के बाकी के हिस्सा खेतवे में जरा दीहल जाला, ई ओही के धुआँ ह।

"त गाय–गोरू खातिर भूसा कहाँ से आवेला?" बसंती पुछलस।

"अब सबके घरे गाय–गोरू कहाँ बा ! आ जेकरी घरे बा, ऊ लोग अपने मतलब भर के राखि के बाकी एहीतरे जरा देला लोग।" किसन बाबा बतवलें।

जीप अब गाँव लगे पहुँचत रहे। बसंती के बगइचा लउके लगल रहे जहँवा ऊ फुलवा आ घुरिया की साथे खेलत रहे।

"भाई काहें ना अइलें भउजी ?"

"मिल में कवनो जरूरी काम आ गइल रहल बाबू, एहीसे रउरे भाई नाहीं आ पवनी।" कहि के घुरिया के महतारी आपन आँचरा मूड़ी पर ठीक करे लगली।

ऊ पीपर के नीचे बरम बाबा, नीबी के नीचे कालीमाई आ पोखरा के किनारे छठ माई के कतने थान देखि के सबके गोड़ लागत जात रहली। तब्बे जीप बगइचे में प्रवेश कर गइल बाकिर अब बगइचा पहिले जइसन ना रहि गइल रहे। सब पेड़ काट दिहल गइल रहे। जवना बगइचा में सूरज देवता पतइन के बीच से कयिसो झाँक के बगयिचा में घरती के झलक भर देख पावत रहलें, अब बेधड़क आपन साम्राज्य स्थापित कइले रहलें। बँसवारी त एकदम्मे खतम रहे। जीप खट दे बगयिचा पार क गइल। आगे कुछु मेहरारू लोग गोहरा पाथत रहली। जीप देखते ऊ लोग आपन काम रोकि के ठाड़ हो के देखे लगली आ बाबाजी के देखते गोबराहे हाथे से अँचरा ओढ़े लागल लोग तबले जीप आगे बढ़ि गइल। दुआर पर पहुँचते बड़की अम्मा दोगहा में चौखट भीतर किवाड़ पकड़ले ठाड़ देखा गइली। बसंती झट दे उतर के दौड़ पड़ल आ उनके गोड़ छू के गले से लाग गइल। ऊ ओकर मुँह चूमे लगली तबले पाछे से ओकर महतारियो आ के अपनी जेठानि के गोड़ लागे लगली।

धीरे–धीरे दिन चढ़त रहे। बसंती बेर बेर दुआर झाँकत रहे। अब पहले की तरे दुआर पर घंटों ना बइठ सकत रहे ऊ। गाँव में अब्बो बेटी पतोह

के दुआर पर बइठले के मनाही रहे। ऊ फुलवा आ घुरिया से मिले खातिर बेकल रहे। आखिर ना रहल गइल त चाउर अपनी फटकत बड़की अम्मा से पूछ लिहलस।

"बड़की अम्मा! ऊ फुलवा आ घुरिया कहवाँ बा लोग? गाँव में नइखे लोग का?"

"अरे फुलवा त एहू सालि आइल बा ! ऊ हर साल आ के तोहके पूछेले। आ घुरिया त घूमत होई कहीं। रूका, अबे केहू से फुलवा के घरे खबर भेजवावत हयीं।" कहि के बड़की अम्मा चाउर थरिया में ले के बीने लगली। साँझ होत रहे, बसंती के बेचौनी बढ़त जात रहे। ऊ फेरू से दुआर पर आइल आ कुछ देर रहि के जइसे भीतर जाए खातिर घूमल एकदम से चिहा गइल।

"बसंतीईईईई...!"

घूमि के आवाज की ओर देखलस आ ऊहो खुशी से चिल्ला पड़ल।

"फुलवाअऽअऽ !"

दउड़ के दूनू लोग अइसे लिपटि गइल जैसे कवनो लतर पेड़े से लपटा जाले। खुशी के मारे दूनू जनी के आँखिन लोर भर गइल। आज बरसों बाद नदी के दू धारा मिलल रहे बाकिर तीसरकी अब्बो कहीं अदृश्य रहे।

दिवस संध्या से मिल भेंटि के बिदा होत रहे। चिरई चुग्गा आपन आपन ठीहा पर लवटि आइल रहे। कीट पतंगा सब घास पतवार के ओट ले लिहले रहे। घर घर की चउकठ पर लालटेन आ तुलसी लगे दीया धरा गइल रहे। आँगना से उठ के आकाश की ओर बढ़त धुआँ ए बाति के प्रमाण रहे कि सभके घरे चूल्हा बरा गइल रहे। धीरे–धीरे संझा माई निशा से गले मिल के बिदा हो गइली। जैसे–जैसे रात गहराये लागल, लोग निद्रा के वश होखे लागल।

राति के अन्हारे में बगइचा में सूखल पतई खड़क उठल रहे। एगो फरछाहीं दूसरी के हाथ थमले बगइचा के भीतर जवना ओर बगइचा ढेर गझिन रहे चलि जात रहे। झींगुर सुर में सुर मिलवले रहलेसन। सियार रोवत रहलेसन आ ओकनी के रोवल सुनि के गाँव के स्वान मंडली भौंकत रहे।

"ई कहँवा ले अइला हमके, केतना अन्हार बा? डर लगता हमके।"

"काहें डेराताड़े! हम हाथ पकड़ले बानी न! अच्छा चल बइठ।" एगो पेड़ के नीचे दूनू फरछाहीं बइठ गइल।

"देखु न तोरे लिए का ले आइल बानी हम।"

"अच्छा! का ह?" कहते ही बुझाइल कि ओकरी ओठे कुछू लागल बा। ऊ अपन मुँह खोल दिहलस।

"अरे ! ई त बहुते निम्मन बा!" चिरई जइसन चहकल ऊ।

"ले, अब अपनी हाथे से खो। आ धीरे बोलु।" धीरे बाकिर आदेशात्मक आवाज रहे।

ऊ कम्पट खाए में लाग गइल। हाथ के मुँह ले जाये खातिर कवनो रोशनी के गरज ना होला।

अचके कवनों जनावर ओ लोग की लगे से भागत निकल गइल। जल्दी से एगो भारी हाथ ओकरी मुहें पर ढक्कन तरे लाग गइल नाहीं त ओकरी मुँहे से जवन चीख निकलल रहे ऊ बगीचा पार क जातय सन्नाटे के आवाज लामे ले जाला।

"सियार होई। तें खो।" हथेली ओकरी मुँहे से हटि गइल ऊ फेरू से खाए में लागि गइल आ ऊहे हाथ जवन ओकरी मुँहे पर लागल रहे ओकरी गँटई से होत भइल कान्हे आ कान्हे से पीठि पर रेंगे लागल। तनिये देर में ओकरा बुझाइल कि ऊ एगो फंदा में कसात जात बिया।

"छोड़ा हमके।" कसमसात कहलस ऊ। बाकिर ओकरी बाति के कवनो असर ना भइल। ओकरी काने लगे ओ परछाई के तेज होत साँस के आवाज आवत रहे। ऊ कसमसात रहे बाकिर हाथे के कम्पट छोड़े के तइयार ना रहे। तब्बे ओकरा के धक्का लागल आ ऊ सूखल पतई पर ढहि गइल।

"हे.....!" जइसे ऊ कुछु बोले के भइल कि "चुप रहु, एकदम चुप।" कहते फेरू से ओकरी मुँहे पर एगो गदेली लागि गइल। सूखल पतई फेरू से खड़कल। कुच्छु टूटल, कुच्छु मिसा गइल। सुसुकल, कहँरल, सब अन्हारे में कहीं बिला गइल। आँखिन से आँसु बहल त माटी सोख लिहलस। हाथे के कम्पट छितरा गइल।

पेड़ के नीचे हो रहल हलचल से ऊपर बइठल चिरई चुरमुन जाग चुकल रहे आ सहमल ओ बहेलिया के दरिंदगी से अपन शिकार करत देखत रहे। तनिये देर बाद ऊ उठ के ठाड़ भइल बाकिर जब ऊ देखलस की ई नइखे उठत त ओकरा के सहारा दे के उठवलस आ धमका के कहलस, "जे तनिको केहू के आगे ई सब मुँह से निकल त तोर गँटई दबा देब, जान लीहे।"

कहि के ओकरा के खींचत बगयिचा की बहरा ले आ के छोड़ दिहलस आ अपना अन्हारे में बिला गइल। धीरे–धीरे डगमगात ऊहो गाँव की ओर बढ़ गइल।

सूरज ब्रम्हांड (सिर) पर चढ़ल चल जात रहलें। अइसन लगत रहे कि अपने भीतर के अंगार आजुए धरती पर बरसा दीहें। बगइचा अब्बो कहँरत रहे। पेड़ पालो सुसकत रहे। गर्मी से बेकल चिरई कुल अब्बो राति के बाति ईयाद क के सहमल पतई की आड़ में बयिठल रहे।

आजुओ के दिन निकलत रहे, घुरिया के कहीं पता ना रहे। बसंती ओसे मिले खातिर बेचौन रहे।

"जा आजु कहीं घूमि आवा।" बड़की अम्मा भूजा फटकत कहली।

गोंसारी से कई मेल के भूजा भुजा के आइल रहे। बड़की अम्मा ओही के फटकत रहली।

"मन नइखे करत कहीं जाए के।"

"का बाति ह बबुनिया, काहें मन गिरल बा आजु?" बड़की अम्मा बसंती के उदास देखि के दुलार से पुछली।

"एगो बाति बताईं बड़की अम्मा? घुरिया काहें नइखे देखात? कइसन बा ऊ? का ओकर बियाह हो गइल बा आ कि अब ऊ ए टोला ना आवेले जाले?"

बियाह के नाँव सुनते भूजा फटकत हाथ रुकि गइल। हवा में उछलल भूजा कुछू सूपा में गिरल त कुछू नीचे गिर के छितरा गइल। उनके चेहरा पर उदासी पसर गइल।

"बियाह कहाँ उनकी भाग में लिखल बा! के करी उनके साथे बिआह? न कहीं ठौर न ठेकान। गाँव भर घूमेली। जहाँ जवन पा जाली, ऊहे खा के पेट भर ले–ली।" ऊ घुरिया की बारे में सब बतावे लगली। सुन के बसंती के जइसे कीरा सूंघि गइल।

छुट्टी खतम होखेवाला रहे। ओने फुलवा के बियाह तय हो गइल रहे। बसंती के वापस कलकत्ता जाए के रहे बाकिर ऊ अबले घुरिया से ना मिलल रहे। कई बेर किसन बाबा से कहलस बाकिर ओकरी घरे जाए खातिर ऊ मना क दिहलन। कहलन, "कवनो दिने ऊ खुदे डगरत आ जाई तब मिल लीहा। ओ टोला जाए के कवनो गरज नइखे।"

बसंती के मन घुरिया के ले के बड़ा हेरान रहे। बिहान कलकत्ता वापसी के सब तइयारी हो गइल रहे। ऊ सोचत रहे कि एसे निक त लइकई रहे, तब कवनों भेद भाव ना रहे। तब्बो त घुरिया ओसनके रहे आजु का हो गइल! काहें खातिर ओकरा से मिले खातिर रोक लगवले बाड़ें काका ! ओकर मन भारी भइल रहे।

साँझ हो गइल रहे। बसंती ओसारा में उदास बइठल रहे। तब्बे फुलवा आ गइल। ऊ जानत रहे कि बिहाने बसंती चल जाई एही से मिले खातिर आइल रहे। दूनू लोग बइठ के बतिआवत रहे कि एकदम से किसन बाबा ओकनी की लगे आ के धीरे से कहलें, "हऊ देखा लोगिन।"

दूनू एकदम से चिहा के देखलीसन। एगो लमहर काया, गंदा संदा कपड़ा पहिनले डगमगात चलि आवत रहे। ओकरा के देखि के बसंती के करेजा धक् धक् करे लागल। जइसे–जइसे ऊ लगे आवत जाति रहे, चेहरा फरियात जात रहे। दुआर पर आवत–आवत चीन्हि गइल बसंती । फुलवा की ओर देखत ओकरी मुँह से निकला– "घुरिया न !"

फुलवा हँ में मूड़ी ऊपर नीचे क दिहलस। बसंती मुँह बवले देखत रहे।

"ए घुरिया !" किसन बाबा आवाज दिहलन। ठक दे रुकि के ऊ बाबा की ओर देखे लागल।

"हेने आऊ।" बोलवलन ऊ।

धीरे–धीरे आ के घुरिया बिना कहले ओसारा की सीढ़ी पर बइठ गइल। ओकरा के ए हालि में देखि के बसंती के आँखि भींजि गइल। बुझाइल कि अब्बे रो दी। ओकरा के त लरिकाई के घुरिया इयाद रहे। साफ सूफ कपड़ा, लमहर चोटी पूरि के रिबन से दूनू काने के ऊपर फूल बनल रहत रहे। जवन सुघर घुरिया, अब कइसन देखात रहे ! ऊ आ के घुरिया लगे बइठि गइल।

"चीन्हलू के हा ?" किसन बाबा बसंती की ओर इशारा क के घुरिया से कहलें।

घुरिया बड़ी ध्यान से बसंती के देखे लागल। बसंती आपन आँसु ना रोकि पवलस। "बसन्तीईईईई ! बसंती हऊ न!" अबहिन ऊ आपन आँखि पोंछते रहे की घुरिया एकदम से चिहा के पुछलस।

बरिसन बादो घुरिया ओकरा के चीन्हि लिहले रहे। ऊ बसंती के दूनू हाथ पकड़ि के अपनी माथे लगा लिहलस आ बिलख बिलख के रोवे लागल। अब त बसंतियो के रोवाई मान के ना रहे। आपन हाथ छोड़ा के ऊ घुरिया के अँकवरिया लिहलस आ दूनू जनी भेंट के रोवे लागल लोग। फुलवो की आँखी से लोर बहे

लागल। रोवल सुनि के भीतर से बसंती के महतारी आ बड़की अम्मा बहरा निकल आइल लोग। ओकनी के एतरे रोवत देखि के ओहू लोग के आँसु बहि गइल। फुलवा दूनू लोग के चुप करवलस आ घुरिया के सहारा दे के ओसारे में ले आ के कुर्सी पर बइठा दिहलस।

तीनों बतिआवे लगलीसन। घुरिया कब्बो त नीके बतिआवे बाकिर कब्बो ओकर बतिया ई कुल बुझबे ना करें सन।

ऊ का जानें का का बोलत रहे। रहि–रहि के अपन मूड़ी खजुआवत रहे। ओकर ई दशा देखि के बसंती के करेजा फाटत रहे।

भोजन के समय हो गइल रहे। बसंती की कहला पर पत्तल पर तीनों के खाना परोसाइल। काहें कि ऊ दूनू थरिया में आ घुरिया अकेल पत्तल पर खाउ, ई बसंती के मंजूर ना रहे। खयिला के बाद फुलवा घरे चलि गइल बाकिर बसंती धुरिया की लगे बइठल रहि गइल। ऊ जवन पूछे घुरिया ठीक से बता ना पावे। ऊ अपनिए धुन में कुछ मा कुछ बोलत जाति रहे। ओकर बड़की अम्मा आ महतारी बेर बेर घुरिया से तनी लमाहे रहे के कहत रहे लोग बाकिर बसंती कहाँ ओसे लामे रहे वाला रहे ! ओकरा त बुझात रहे कि ऊ घुरिया के अपनी साथे कलकत्ता लिहले जाउ। आ ओहीजा ओकर दवा इलाज करावे बाकिर ई ओकरी बस के बाति ना रहे। बड़ा देर हो गइल रहे, किसन बाबा सबके भीतर जाए के कहलन। सब चलियो गइल बाकिर बसंती ओहीजा बइठल रहि गइल।

"चला तूहूँ भीतर जा। इनके रोज के काम ह। कहीं ढ़िमिला जइहें। इनकी खातिर रतिया भर बहरे बइठबू का?" किसन बाबा बसंती के डपटलन।

ना चाहत भी बसंती के भीतर जाए के पड़ल। घुरिया ओहिजा मूड़ी खजुआवत बइठल रहि गइल। भिन्सहरे जब सब लोग बहरा जाए खातिर उठल त बसंती भागल आइल बाकिर सीढ़ी पर केहू ना रहे। घुरिया कहीं डगर गइल रहे।

समय बीते लगल। बसंती के कलकत्ता अइले कई महिना बीति गइल रहे। एबेर ऊ फुलवा से ओकर पता ले आइल रहे। चिठ्ठियो भेज दिहले रहे बाकिर ओने से अब्बे कवनो जवाब ना आइल रहे। एने ओकरा खातिर दुलहा देखा गइल रहे। गाँवो में चिट्ठि भेजि के सभकर रजामंदी ले लिहइल गइल रहे।

फुलवा के जबाब आइल। कि ओकर बिआह हो गइल ओही गजमज में चिठ्ठी लिखे में देरी भइल रहे। ई बता के घुरिया के बारे में लिखल रहे कि "अब ऊ बेमार रहेले। भाई–भौजाई लोग के ओकर कवनों चिंता नइखे। ओकरा से जीउ छोड़ावे खातिर ऊ कुल कहीं लामे की बसे पर बइठा आइल रहलेंहसन कि कहीं मरि बिला जाई बाकिर घुरिया से नाँव गाँव पूछि के कवनों भला मानुस ओकरा के घरे ले पहुँचा गइल। अब फेरू से ऊ रातोदिन सगरो गाँव घूमत रहेले। का जाने कइसन कठकरेज बाड़ेंसन!" चिठ्ठी पढ़ि के बसंती की आँखि में आँसु आ गइल। दुयिए महीना बाद बसंती बिअहा गइल आ सब भूलि भालि के ऊ अपनी घर–गृहस्थी में लगि गइल।

राजा बाबू ओ गाँव के बड़का रहीस रहलन। अइसे त उमर पचास–पचपन से कम ना होई बाकिर अबहिन कड़ेर रहलन। ओनी दुआरे पर पकड़ी तरे कुर्सी पर बयिठल रहलन। अइसे त उनकी दुआरे हरदम मजमा लगत रहे बाकिर आजु ऊ अकेल बयिठल अखबार पढ़त रहलन।

घुरिया उनकी घारी लगे बइिठल अपनी मूड़ी से टो टो के ढील निकाल निकाल मुआवत रहे। दिनाभर ओकर ईहे कार रहे आ रतिया में ओही घारी में सुति जात रहे। कई दिन से ओकर डेरा ओहिजा जमल रहे। राजाबाबू की घर के नोकर चाकर ओकरी आगे कुच्छु खाए के ध देत रहलेंसन। आजु कई दिन से आवत जात राजा बाबू ओकरा के देखत रहलन त खबर भेजि के बलेसरा हजाम के बोलवलन आ घुरिया की मूड़ी पर उस्तरा फेरे के कहलन।

जइसे बलेसरा आपन छोट के बकसिया ले के घुरिया लगे गइल, घुरिया सहमि के पाछे घुसुके लागल।

"कुछऊ ना करब, डेरो मति। बस आपन मूड़ी नीचे क ले।" कहि के बलेसरा अपनी बकसिया से एगो छोट के कटोरी निकाल के कल से पानी भर ले आइल आ घुरिया के मूड़ी पर पानी लगा के मले लागल। सब बार लाटा भइल रहे। बलेसरा घिनात रहे बाकिर राजाबाबू के कहल ना टाल सकत रहे। कटोरी भर पानी से काम ना चले वाला रहे। जा के भीतर से लोटा मांग के पानी भर ले आइल आ ओकर बार ढंग से भें के आपन उस्तरा थाम लिहलस। तनिये देर में सब बार ओकरी आगे लद लद गिर गइल। मूड़ी पर ढंग से चिक्कन क के बलेसरा सब बार बटोर के घूरा पर फेकि आइल। ओकरी बाद कल पर जा के हाथ

आ उस्तरा साबुन से माज धो के राजा बाबू आगे ठाड़ हो गइल।

"हो गइल?" ऊ अखबार से नजर हटा के कहलन।

"हँ महाराज, देखि लीं।"

"का दीं? बतावा।" ऊ घुरिया की ओर देखि के बलेसरा से पुछलन।

"जवन मन होखे दे दीं महाराज बाकिर लाटा हो गइल रहल ह ओकर बरवा। ऊपर से मूड़ी अस्थिर ना राखत रहलसि ह। बड़ी मोसकिल से छिलनी हँ।"

"अच्छा ठीक बा। जा के भीतर से अनाज जोखवा ले। आ सुनु , कवनो के भेजी दे, कहि दीहें कि हम बोलवनी हँ।" बलेसरा भीतर की ओर बढ़ी गइल।

"हरे! एकरा के नहवा धोवा के साफ सुफ कपड़ा लत्ता पहिरा द सन। दुआरे पर मलेच्छ अइसन बइठल बिया।" सहायिका लोग के आवते कहलन राजा बाबू। अब राजा बाबू के कहल कइसे टारि सकत रहे ऊ लोग! कयिसो नाक मुँह बनावत ओकरा के कल पर लेजा के नहवावल लोग आ भीतर से केहू के उतरल लेआ के पहिना के ओहिजा घारी लगे बइठा दीहल लोग।

बार उतरला आ नहइला के बाद घुरिया के आराम मिलल त ऊ जा के जहँवा छाँह रहे ओहिजा सुति गइल। राजा बाबू ओकरा के सुत्तल देखि के उठ के भीतर चलि गइलन।

आजुओ अमौसा के राति रहे। चारू ओर अन्हार रहे। सबके दुआरे के दीया बढ़ि के केवाडि बंद हो गइल रहे। पकड़ी पर कब्बो कब्बो चिरई चुरमुन आपन पांखि फड़कावत रहलीसन। खेते की ओर से सियारन के रोवला के आवाजि रहि रहि के आवत रहे। हवा बतास रुकल रहे। नादें पर गाइ गोरू पोछि पटक रहे। तब्बे ओही अन्हिआरे में एगो फरछाहीं घारी लगे आ के रुकि गइल, एने ओने देखलस आ तनिये देर में घारी में ढुकि गइल। फेरु से राति सुसुकि उठल, धरती माई फेरू से आपन आँसु पी लिहली, अन्हार दम सधले सब कुछ देखत रहे। कुच्छु दबल घुटल कहँरले के आवाजि उघरल देवालिन के दराजन में समा गइल। गाँव गहिर नीन में सुत्तल रहे आ सियार कुल आसमान की ओर मुँह उठवले करेजा फाड़ रोवत रहलेंसन।

का जानी काहें घुरिया दिनेदिन सूखत जाति रहे बाकिर ओकर पेट फूलत रहे। केहू पथरी त केहू हवा–बेयार बतावत रहे। भर गाँव जेतने मुँह ओतने बाति होत रहे।

जब राजा बाबू देखलन कि ई त एहिजा डेरा डालि लिहले बा त ओकरी भाई के बोला के कहलन बाकिर भाई लोग बहिन की ओर से आँखि मून लिहले रहे। कवनो असर होत ना देखि के राजा बाबू गाँव की बहरा ओकरा खातिर ओगो मड़ई छवा दिहलन आ ओही में एगो गगरी लोटा रखवा दिहलन। अब इहे घुरिया के नया बसेरा रहे। ओकरा के दूनू बेर के खाना–पानी गाँव से केहू ना केहू दे जात रहे। अब राति में सियार आ पिल्ला के भोंकला रोवला के आवाजि ढेर सुनाइ देबे लागल रहे।

समय की साथे घुरिया जर्जर हो के हड्डी के ढांचा मात्र रहि गइल रहे। ओकर हँसल बोलल सब खतम रहे। ओकरी बढ़ल पेट के राज अब सगरो गाँव समझ बूझि गइल रहे। हर घर में ओकरे चर्चा रहे।

गाँव से चिट्ठी आइल देखिके बसंती खिल उठल। अंतर्देशी खोलि के पढ़े लगल। पढ़ते पढ़त ओकरी चेहरा के रंग बदल गइल। जल्दी से जा के अपनी सासु से सब बतवलस। बड़की अम्मा के हालत ठीक ना रहे। उनके देखे खातिर बोलावल गइल रहे।

दुलहा के छुट्टी ना मिलल त बसंती अपनी माई बाबूजी के साथे गाँवें आ गइल बाकिर ओकरी पहुँचले से पहिलहीं बड़की अम्मा सिधार गइली। उनके अंतिम दर्शनो ना भइल ये लोग के। बड़की अम्मा की काम ले घर रिश्तेदारन से भरल रहे। ओ बीचे ओकरा घुरिया मन त परल बाकिर केहू से पूछे के मौका ना मिलल। काम में ओकर दुलहो अ गइलन। उनहीं की साथे ओकरा लौटे के रहे।

ई लोग बगइचा की ओर काहें भागल जाता? ओसारा में ठाड़ बसंती गाँव के लोग के बगइचा की ओर जात देखि के अपनी महतारी से पुछलस।

"का जाने! हमरो नइखे बुझात कि काहें ई लोग भागल जाता!" ओकर दुलहो चौकी पर बइठल माजरा बूझे के प्रयास करत रहलन।

"का भइल बा हो?" बसंती से रहि ना गइल त एगो मेहरारू के रोकि के पुछलस।

"बुझाता कि घुरिया के कुच्छु हो गइल बा !" कहि के ऊ भागत चलि गइल। बसंती के काटा त खून ना! करेजा धक धक करे लागल।

"ए जी! चलीं, हमनियो के चलल जाव।" कहि के ऊ

लमहर डेग उठावत चल दिहलस। ऊ अपनी दुलहा के घुरिया की बारे में सब बतवले रहे, घुरिया के नाँव सुनि के ऊहो ओकरी पाछे चल दिहलन।

घुरिया की मड़इया लगे भीड़ लागल रहे। कवनो तरे बसंती आगे पहुँचि के जवन कुछ देखलस, ओकरी मुँहे चीख निकल गइल।

घुरिया बेपर्दा पड़ल रहे आ नार में लपटायिल, गन्दगी आ खून में बूड़ल एगो नान्ह के जीउ ओकरी दूनू गोडे के बीचे पड़ल ओ नरक से छूटे खातिर हाथ गोड़ चलावत रहे।

गाँव भर के लोग तमाशबीन खड़ा रहे। बसंती के दुलहो आ गइलन इ सब देखि के ऊनहूँ के देहिं सिहर उठल। बाकिर तुरते संभल के कुछू लोग से बात क के डॉक्टर बोलवे के कहलन। काहें कि गाँव में सरकारी प्राथमिक चिकित्सालय त रहे बाकिर ओमे बारहों महीना घासि जाम रहत रहे। डॉक्टर, कर्मचारी सब नदारद। खाली कागजे ले सब सीमित रहे।

आगे बढ़ि के घुरिया लगे जाए के केहू हिम्मत ना जुटा पावत रहे। तब्बे डॉक्टर साहेब आ गइलें। ऊहे जा के सबसे पहिले नान्ह के जीउ के नार से अलगे कइलें। अब गाँव के कुछ मेहरारू लोग के आपन फर्ज मन परल। भाग–भाग के जरूरत के सामान के साथ गरम पानी आइल। जीउ के साफ सूती कपड़े से पोंछि के नहवावल गइल। अब ओकरा के केके दीहल जाउ? लड़िकनी हाथे में टंगले ऊ मेहरारू एने ओने देखे लगली।

बसंती के अब्बो अपनी आँखिन पर भरोसा ना होत रहे। तब्बे ओ मेहरारू पर ओकर निगाह गइल, ऊ ओकर मंशा बूझि गइल। जल्दी से आगे बढ़ि के ओ नान्ह के जीउ के अपनी अँचरा में ले लिहलस।

घुरिया मरि गइल रहे। बगीचा में ओही जगहि ऊ फुँका गइल। ओकरी ऊपर मड़ई गिरा के आगि लगा दीहल गइल, साब गंदगी स्वाहा हो गइल। घुरिया के नामोनिशान मिट गइल! बसंती की आँखि से धारोधार आँसु बहत रहे बाकिर ए सब से अनजान ऊ नान्ह के जीउ ओकरी फाँड़े में हाथ गोड़ चलावत रहे।''

डोर बेल के आवाज सुनि के बसंती चिहा के आपन फाँड़ देखे लगली। ऊ अतीत से वर्तमान में अइली तबले इरा उनकी लगे आ गइली।

"का भइल ?"

"कुच्छु ना।" कहि के बसंती उठि के उनका के अँकवार में ले लिहली।

"ई का ! तू फेरू से फोटो देखि के रोवे लगलू ?" इरा ओहिजा एलबम देखि के सब बूझी गइली।

"ई फोटो देखि के का हो जला तोहके? आखिर के ह ई लोग?" इरा के बाति सुनि के ऊ बिलखि के रोवे लगली।

"क बेर पूछेनी, तू टाल देलू बाकिर आजु बतावे के पड़ी।" कहते कहत इरा उनका के सोफा पर बइठा के भागि के एक गिलास पानी ले अइली आ महतारी की मुँहे गिलास लगा दिहली। दू घूँट पानी पी के जब ऊ कुछ सामान्य भइली त इरा फेरु पुछली, "ई के ह मम्मी! हम जब पूछेनी तब हमके टाल देलू। आजु बतावे के पड़ी? जेकरा खातिर हम हमेशा तोहके रोवत देखीलें आ आजु त हद्द क दिहलू! अपनी स्वास्थ्य के तनिको ध्यान बा? बोला?" इरा महतारी पर खिसिअइली।

चुप रहले काम ना चली। बतावा कि के ह ई लोग?" ईरा जिदिया गइली।

"बतावा, आजु त बतावहीं के पड़ी।" तबले इरा के पापा भी इरा के समर्थन करत आ गइलन।

"बस एतना जान ल बाबू कि एमे से एगो तोहार महतारी हई।"

"ई त हमहूँ जानतानी कि ए तीनू लोग में एगो हमार मम्मी हई।" कहते कहत इरा महतारी के अंकवरिया के लतर अइसन लपटा गइली। बसंती अपनी बेटी के मुँह चूमि के पीठी सुघरावे लगली। उनके मन परत रहे कि घुरिया के बेटी के केहू लेबे के तैयार ना रहे। दू दिन ले ऊ अगोरलि बाकिर ओकरी घर आ गाँव के लोग अन्हारे के जामल कहि के छुअबो ना कइल लोग अउरी ना त कहीं मन्दिर, मस्जिद चाहें मठिया पर धरे के कहि दीहल लोग। तब जाके बसंती ओ नान्ह के जीउ अपनी साथे ले आइल रहे आ आजु ऊहे अन्हारे के जामल ओ दूनू परानी के जिनगी के अँजोर रहे।

●●

मीनाधर पाठक
कानपुर (उ0प्र0)
मोब. 9140044021

कवि! तू धरती–राग लिखऽ
(कुछ आग, कुछ राग 2014)

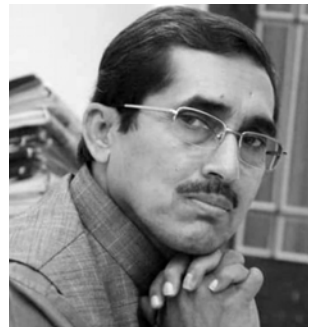

डा. सुनील कुमार पाठक

भोजपुरी –हिन्दी के सुपरिचित कवि–समालोचक डा.सुनील कुमार पाठक बिहार सूचना सेवा के अधिकारी बानीं।

अशोक द्विवेदी नाम ह भोजपुरी के ओह सुपरिचित रचनाकार के जे जवने विधा में कलम चलवले त खूब सोच समझ के,,पूरा तरे गुन–विचार के कुछ परोसलें। ऊ जेतने बढ़िया कवि बाड़न ओतने बढ़िया गद्य–लेखको।कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास समालोचना त उनकर प्रिय विधा बड़ले बाड़ी सं बाकिर अपना पत्रकारितो के दिसाईं ऊ कम नाम आ सोहरत नइखन कमइले।हिन्दी त्रैमासिकी 'ग्राम्या' के 12अंकन के सम्पादन के साथे –साथे भोजपुरी के मानक पत्रिका –'पाती' के 100 अंक भोजपुरी संसार के सौंप के एकर श्री –समृद्धि बढ़ावे खातिर एगो ऐतिहासिक प्रयास कइले बाड़ें।

घनानंद और उनकी कविता (1975),समीक्षा के नये प्रतिमान(1992),हिन्दी में अशोक जी के प्रमुख ग्रंथ बाड़े सं आ 'मीसा में बंद देश' (1977) उनकर हिन्दी कविता संग्रह बा।भोजपुरी में उनकरा लेखन के जवन ग्रंथ आधार बाड़े सँ, ओकनी के नाम बा–अढ़ाई आखर(कविता संग्रह–1978),फूटल किरिन हजार (गीत–गजल संग्रह,2004),कुछ आग कुछ राग(कविता संग्रह,2014),रामजी के सुगना(निबंध–संग्रह), गांव के भीतर गांव(कथा संग्रह,1998),आवऽ लवटि चलीं (कथा संग्रह,2000), बनचरी (भोजपुरी उपन्यास 2015), आउर भोजपुरी रचना आ आलोचना(समालोचना,2019)।

भोजपुरी साहित्य में साहित्य अकादमी संस्था से सम्मानित होखेवाला डा. अशोक द्विवेदी के तीन गो कविता संग्रह,दू गो कहानी संग्रह, एगो निबन्ध संग्रह, दू गो मोनोग्राफ, बनचरी (भोजपुरी उपन्यास 2015) आ एगो समीक्षा के किताब बा।ई किताब भोजपुरी साहित्य में एह रूप में आपन स्थान बना लेले बाड़ी सन, जवनन के उल्लेख बिना संबंधित विधा पर बतकही अधूरे रह जाई।अपना एह आलेख में ''अशोक जी के तीसरका भोजपुरी कविता संग्रह–'कुछ आग कुछ राग'' (2014) के जरिये उनकर कवितन पर कुछ बात करे के चाहब।'फूटल किरिन हजार' नाम से अशोक जी के जवन गीत–गजल संग्रह 2004में छपल रहे,ओह से उनका कविता के ऊंचाई के आभास भोजपुरी पाठक का मिल गइल रहे बाकिर जब ठीक दस बरिस बाद जब 'कुछ आग कुछ राग' अशोक जी के 79 गो कवितन के संग्रह आइल त पाठकन के भोजपुरी कविता के ओह ऊंचाई के झलक मिलल जवना के बल–बूते भोजपुरी के समकालीन कविता कवनो दोसरो भारतीय भाषा के कवितन से तनिको पीछे नजर नइखे आवत।एह संग्रह के 'अछरे अछर सबद बनि भाखा....' शीर्षक अपना भूमिका में अशोक जी लिखले बाड़न–'कविता हमरा खातिर कबो शौकिया ना रहल ।ऊ कठिन समय में हमरा बेचौनी आ पीर के हलुक जरूर कइलस।भीतर से उचरि के जीवन संघर्ष में, संबल दिहसल कविता ना हऽ। हम लिखत खा एह बात क बहुत खयाल रखनी कि जवन रचीं, सार्थक आ प्रासंगिक रचीं, जवन कहीं सहज, साँच आ सुभाविक कहीं, जेमे भोजपुरी भाषा के भाव–सुभाव बनल रहें।'

पहिले हिंदिओ कविता के बदले के प्रयास कइल गइल, रहे जवना में ना भोगल जथारथ रहे ,ना ओह से उबरे के कवनो सुगम जीवन–दृष्टि। शहरातियो मिजाज के जवन कविता परोसाइल,ऊ मन के भड़ास जादे रहे,आम जन के पीड़ा से त ऊ कोसो दूर रहे।स्वाभाविक रहे 'समकालीनता' के ई नशा धीर–धीरे उतरे लागल आ पाठक एके टाइप के रचनन के दुहराव झेलत हिन्दी कविता से आपन मुंह मोड़े लागल। अइसनका दौर में हिन्दी कविता में 'लोक' के वापसी ओकरा खातिर संजीवनी बन के सामने आइल।त्रिलोचन, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल,केदारनाथ सिंह,अरुणकमल,अष्टभुजा शुक्ल,स्वप्निल श्रीवास्तवआदि अनेक हिन्दी कवियन के जरिए हिन्दी कविता लोक जीवन के सुवास लिहले सामने आइल आ ओकरा में तब जाके एगो नया तरे के ताजगी आ तेवर कहन आउर रचाव–दूनू रूप में सामने आइल।हिन्दी कविता में एह तरे के जवन परिघटना देखे के मिलल,भोजपुरी कविता एह से बिल्कुल अलग रहल।कारन कि जवना 'लोक' के बल पर हिन्दी में कविता के वापसी देखे के मिलल,भोजपुरी कविता खातिर त ऊ अपना घरे के थाती रहे,अंचरा के खोइंछा रहे।

अशोक द्विवेदी के कविता पढ़त खड ई बात स्पष्ट हो जाई कि गांव–जवार के खेत–खरिहान,नदी–नाहर, फुलवारी–बगइचा ,मठिया–शिवाला, ताल–पोखर, राहट–नाद, चिरई–चुरुंग, गोबर–गोंइठा, खर–पात, खोंता–बियर,कुकुर–बिलार के साथे –साथे ओजवा के बेवस्था के अंग मुखिया–सरपंच,इस्कूल–पंचायत भवन–जवन कुछ बा ,ऊ सब उनका कविता में कवनो पच्चीकारी के कामे आवे वाला उपादान भर नइखे,ऊ ओह जीवन के अभिन्न अंग बा ,जहां से अशोक जी के कविता जीवन–रस तलाश के अपना भाव– विचार के व्यापक आ बहुआयामी बनावत बिया आउर अपना अनुभव के आकाश के विस्तार देत बिया।अशोक जी अपना गांव के लेके कवनो 'नॉस्टेल्जिया' (Nostalgia) के शिकार नइखन रहल।शहरन से गठजोड़ करत आ ध ीरे–धीरे 'विश्वगाँव' (Global Village) के करीब घुसुकत जा रहल गाँवन के दरकत, लहकत,धुनाइल आ भहराइल देख के उनका में एगो बेचैनियो साफ तरे लउकत बा–'आन्ही अस उड़त–उड़ावत समय में/बनल रहे खातिर/कतना आ कब ले /अन्हुआइल भागत रही गॉव? आज अदकल सहमल बा –/ताल–पोखरा सुनसान/दरकत भिहिलात अरार वाली नदी/ गुमसुम खरिहान/ बाग–बगइचा/ बॅसवारी एकदम भकसावन। दस–बीस गो पक्का मकान/ खोंसले खपड़ोई में एन्टीना, वैश्वीकरण क झंडा फहरावत बाड़न सऽ, आ सड़की पर ले चढ़ल/ मनबढ़ुवन क बेदी, नाद आ चरन/ उन्हनीं क मुंह बिरावत बाड़न सऽ!–एक जगे बइठ के गंवई–चौपाल में होखेवाली गवनई हेरा गइल बा/लोकराग लुका गइल बा/चइता–कजरी आ फाग के जगे/अब फिल्मी धुन–राग मनभावन लागे लागल बा ,फूहड़ गीतन के डीवीडी से मनसायन होखे लागल बा।अशोक जी लिखत बाड़ें–'नवहा त नवहा, ठावां–ठईं, बुढ़वो मुड़ी डोलावत बाड़न सऽ, फूटल ढोल पिटला से का फायदा/टूटल झाल के सिरहावो?/ भलमनसाहत ,प्रेम आ उल्लास के गीत/के गावो?

एह संग्रह के पहिलकी कविता 'गॉव के कहानी' चार खंडन में बँटल 250 पंक्तियन के एगो लमहर कविता बिया।एह कविता के ई विशेषता बा कि एकर कवनों पाँति फाजिल नइखे बुझात। खूब कसल आ मंजल एकर बुनावट बा।एक सांस में पूरा कविता अपना के पढ़वा लेत बिया।एह कविता में आज के पूरा गांव उतर आइल बा–अपना इतिहास–भूगोल, सामाजिकी, आर्थिक संरचना,सांस्कृतिक विभव– एह कविता में समाहित बा।गांव में हो रहल अपसंस्कृति के पइसार, सामाजिक ताना–बाना में आइल कमजोरी आ राजनीतिक चेतना के विस्तार के चलते ओकर सकारात्मक आ नकारात्मक –दूनू तरह के प्रभाव–ई सब एह कविता के कथ्य में शामिल बा।गांवन में आइल बदलाव के सार्थक मानला के बावजूदो कवि का एह बात के मलाल बा कि शिवाला ढहत बा/चौपाल चुअत बा/गीत गवनई के चउतरा धंसि गइल/मिठका पानी वाला लाला के इनार/कहिये भंसि गइल।'

कवि आस लगवले बइठल बा कि ''कब अइहें खुदाबख्श,नजीर आ घेंटा चमार /गावे गवनई,बजावे हरमुनिया/ढोलक आ झाल पर /साजे खातिर नया ताल/कब लवटिहें सं गांव के नवहा ,खेले रामलीला/ गांव सुधार वाला नाटक /सीतीं सिमसिमाइल/जाड़े कठुवाइल/रात–रात भर जोहते रहि जाला गांव।'

गाँवन के शहर से बढ़ रहल नजदीकी के कुछ फायदा त कुछ नोकसानो साफ लउकत बा।कवि गांव के संस्कृति के जगवले–जुगवले रहे के चाहत बा।सुख–सुविधा बढ़ो,रहन–सहन बढ़िया होखो,स्वास्थ्य आ शिक्षा के बेवस्था में बेहतरी आवे–कवि के ई सपना बा, बाकिर गांव के मनई में सच्चाई,साफगोई,निडरता आपसी मेल–जोल के जवन भाव शुरूये से रहल बा,

ऊ कहीं हेरा–बिसरि मत जाव–कवि एही से चिन्तित बा।ओकरा त अब ई बुझात बा कि 'शहर बनत–बनत गांव बहुत पाछा छूटि गइल/ढेर तेज चलले के चक्कर में/ओकर भुभुन फूट गइल।' गांव के भुभुन फूटला के पीड़ा कवि के भीतर ले कचोटत बा।

गांव से रोजी–रोजगार के तलाश में आदमी शहर त आ बसल बाकिर ' जवना खातिर घर छूटल /ऊ गरीबी,ऊ बेबसी/ऊ तहार पुरान होत साड़ी से झांकत/मसकल कुर्ती/ हमके भर नीन सूते ना देलस / आजु ले।' (चिट्ठी) कवि शहर में ठहर–ठेकाना हो गइला के बावजूदो गाँवन से कटे के नइखे चाहत–' मत होइऽ तनिको उदास तूँ / मन के थिर रखिहऽ/ माई बाबू के दीहे ढाढ़स आ विश्वास/ हम जल्दिये लौटब गाँव।' (चिट्ठी)

सरकारी योजनन के चलते बिजली– बत्ती गाँवन में पहुँच गइल बा,टी.बी–रेडियो से देश–दुनिया के हाल–चाल जुरते मिल जात बा।सामाजिक–राजनीतिक चेतनो खूब जागल बा, बाकिर तबो ना जाने काहे गाँव खामोश बा।अशोक जी लिखत बाड़ें–' एने कई दिन से गाँव खामोश बा/मनगुपते कुछ सोचत बा/ फिकिरमंद/आ कि भीतरी भीतर खदकत बा/पाकत फोड़ा लेखां/बाकिर चुप बा गाँव/ए घरी।' (गाँव खामोश बा)गाँव के एह चुप्पिये में ओकर चीख छिपल बा,ओकर छटपटाहट भरल बा ,ओकर अकुलाहट समाइल बा।ई चीख आ छटपटाहट गाँव के सुतले ना रहे दी,गाँव जागी।आ शायिद गाँव के जगलके से देशो के कल्याण जुड़ल बा।गाँव जागी तब देश अपने आप जाग जाई।अशोक जी के कविता के ग्रामीण चिन्तन के संभवतः इहे निचोड़ बा।

एह संग्रह के एगो कविता बिया–'राजा आ लोक कवि'। ई कविता लोक कवि के जन–प्रतिबद्धता आ सत्ता के खिलाफ ओकर प्रतिरोध रचे वाली क्षमता के साफ तरे उजागर करत बिया–'राजा/बनावेला राजकवि/राजा के नजर से दूर/कवनो गाँव–कस्बा भा उजाड़ल नगर में / रहेला लोगन के बीच / आपन निरगुन–सगुन गावत /सुख उसुकावत/दुख के सुहुरावत/धरती आ ओकरा फूटत हरियरी में/ खोजत आस के किरिन/जोलहा बन बीनेला कपड़ा/ सीयेला चमड़ा/मानुस के मनुसत्ता बचावत/लोक कवि चरावेला/गाय–बकरी/ जरूरत पर जोतेला खेत/सतावल –दबावल बंचित लोगन संग/तूरेला शब्द–ब्रह्म से /दुख के पहाड़।' –एह कविता में शब्दे आ सिरिजने में ब्रह्मत्व के संधान मनुष्यता के शक्ति के उजागर करत बा।

कवि अपना कविता में कवनो तरे के भटकाव भा दोहमच पसंद नइखे करत।ऊ आपन मंजिल जानत बा ,आ ओजवा पहुँचे के राहो ओकरा मालूम बा।कवि के ई मालूम बा कि कविता के उपजीव्य भारतीय गाँवन से मिली।एह से ऊ साफ तरे कहत बा–'संग सबका जीये–मरे लवटऽ!/अबकी लवटऽ त कुछ करे लवटऽ!/ दह– बिला जाव ना पुरुखन के घर/कम से कम एहू का डरे लवटऽ!/जिन्दगी में अभी बहुत कुछ बा /रंग ओकरा में तू भरे लवटऽ।' (तू घरे लवटे) –कवि के ई लवटानि भोजपुरी भा हिन्दी कविता के लोक के दिसाईं लोक–संस्कृति का ओर वापसिये के निशानी बा।लोक–जीवन से जुड़ाव रखिये के कवनो भारतीय भाषा के कविता जीवंत हो सकत बिया।

एह संग्रह के 'भगिगर लोग' , 'मन के गूर', 'गुनी आ ज्ञानी' ,'पहाड़', 'गनेश के चिट्ठी' आदि अइसन कविता बाड़ी सं जवनन में व्यंग्य के मारकतो कम नइखे।एह संग्रह के बाद के कवितन में कवि के कुछ गीत,नवगीत आ छंदबद्ध रचनो शामिल बाड़ी सं।एह कवितन के देखला पर ई बुझात बा कि अशोक द्विवेदी के कवि के मन अंततः गीत, गजल आ छंदबद्ध कवितने के ओर जादे रमल बा।कवि के कहनाम बा–'नया धुन में कुछ पुरनका ना रहल'गीत में लय–ताल–मतरा ना रहल ।' कवि एह संग्रह के बाद के लगभग आधा रचनन में ओही लय–ताल आ मतरा में उतर गइल बा ,जवना में ओकर मन बसल बा। एह संग्रह में कवि के भीतर के आग जहां प्रकट भइल बा ,ओकरा छन्दन के बन्धन से बाहर निकले के पड़ल बा आउर जहॉ ऊ मनुष्यता के राग अलापे खातिर तत्पर भइल बा ,छन्द आ लये से इयारी कर लेबे में ओकरा जादे आनन्द आइल बा। सांच पूछल जाव तऽ छन्दन से मुक्ति के मार्ग स्वीकरला के बावजूदो कवि अशोक द्विवेदी के कविता छंदबद्ध रूपे में जादे रहनगर आ मजिगर रूप में चमकत–दमकत सामने आइल बिया।एह रचनन में प्रेम बा,आस्था बा,विश्वास आ भरोसा बा,सामाजिक बोध बा ,जीवन के राग–रंग बा,वसंत–फागुन बा,मातृत्व गीत बा,चइत के उकसावन बा,सांस्कृतिक मूल्य– बोध के देशगीत बा,धरती– राग बा,अंखियन बीच हँसत लोर बा।

अशोक जी के कविता मूलतः गीतधर्मी बिया। धरती,चॉद,सूरुज पर गीत कहिया ले

लिखाई–ई पूछे वाला से कवि के सवाल बा–'ओइसहीं दिल बा अभी नादान/हम का लिखीं दूसर?/उहे धरती उहे सूरुज–चान/हम का लिखीं दूसर? कुछ गलल–पिघलल भितरिये /ई बुझाइल/नेह रसरी में बुला ध्रहनीं बन्हाइल/'प्रेम' से हमरो भइल पहिचान/हम का लिखीं दूसर।'(हम का लिखीं दूसर?)

ऐकान्तिक प्रेम के चित्रणो में अशोक जी निपुण बाड़न।उनकरा एह प्रेम– वर्णन के ई खूबी बा कि एकर धवलता आ पावनता से मानवीय प्रेम के ऊंचाई मिलल बा–'उनसे का बइठि के बतियाइब हम/रात के पहिला पहर अइहें जब /कुछ ना बोलब /महटियाइबि हम/आज नन्हको चएन से सूति गइल /नीन आइल उड़त निनर–बन के/रंग सात खिलल तितलियन के/लौट आइल चहक चिरइन के! '(वसंत–फागुन) एह गीत में गार्हस्थिक बिम्बन के जरिये नारी पुरुष के बीच प्रेम–सम्बन्धन के एगो अइसन रुचिर रूप परोसल गइल बा जवना में रूसल–मनावल आ प्यार–मनुहार एगो स्वाभाविक छटा प्रस्तुत कर रहल बा।भोजपुरी के कवि प्रकाश उदय के कवितनो में गृहस्थ जीवन के अइसने चित्र देखे के मिलेला।

अशोक जी के कविता में उनकर एगो काव्य– नायिका कहत बिया–'रोपनी से सोहनी ले कटिया–ओसवनी / नन्हका के बाबू के जोहनी–बोलवनी/अइते त छइतें पलनिया/मड़इया मोर झाँझर लागे ।' (मड़इया मोर झाँझर लागे)भोजपुरिया नारियन के ई श्रमशीलता सामाजिक बराबरी के इतिहास रचत बहुते प्रीतिकर आ आंखिन के ठंढई देबेवाला बिया।दूनू कविता में नायिका मानिनी कोटि के बाड़ी सं बाकिर महटियउवल में प्यार के अवसर ऊ चूक जा सं,अइसनो बात नइखे। भोजपुरी गीत–संगीत पर अश्लीलता आ फूहड़ता के जवन करिया धब्बा लागल बा ,भोजपुरी कवितन के अइसनके बानगी ओह कलंक से भोजपुरी के उबारी।

अशोक जी के गीतन के बिम्बात्मकता आ प्रतीक–योजना बेजोड़ बा।शब्दन के चयनो एजवा अइसनका बा कि कविता चमक–दमक उठल बिया। सुबह–सबेर के चित्रण में–'रतिया झरेले जलबुनिया'फजीरे बनि झालर,झरे/फेरू उतरेले भुइयॉ किरिनिया /सरेहिया में मोती चरे! चह–चह चहकत चिरइयन से /सगरो जवार जगे–/सुनि,अंगना से दुअरा ले तानल/मन के सितार बजे/छउॅकत बोले बछरुआ/मुंडेरवा पर कागा ररे!' (हॅसि–हॅसि अंजुरी भरे।) राती के झरल जलबुनिया फजीरे ले झालर बनि जाले–ई बड़ी सूक्ष्म कवि–कल्पना बा,जवन भोजपुरी कविता के कवनो सिद्धहस्त कवि के कलमे से संभव बा।

समाज में प्रेम आ भाईचारा के कमी आ नफरत के फइलाव देख कवि महसूस करत बा कि 'सरिहावत,सझुरावत सगरी/मनका छिटा गइल/आदिमी,आदिमी के समाज/टुकड़न में बँटा गइल।' (मत जीयल काल करीं)–अइसन दुराव आ दहशत भरल दौर में कवि निराश हो उठत बा एह बात से कि जेकरा पर ऊ भरोसा कइलस,जेकरा से ओकरा कुछ उमेद रहे,उहो नकारा साबित भइल–' केकरा खरखाही में महॅगी आसमान चढ़ल/सच्चा आ सोझिया के आउरू अपमान बढ़ल। हमहन क सुविधा–/ 'बुझाय न असुविधा'/काटबि जा रोइ –गाइ कवनहूॅ तरह से/हमहन के झूठे, उमेद रहल तोहसे! '(हमहन के झूठे उमेद रहल तोहसे...)– ई कविता आजो पूरा तरे प्रासंगिक बिया । बिगड़ल बेवस्था आ हलकानि देखि के कवि लिखत बा–'चैन लगे बेचैन/देस में/बरिसत रस नीरस लागे!!' (उलटन) चैन जब खुदे बेचैनी में होखे तब कवि मजबूर बा ई लिखे खातिर कि ष्रुचिकर लागे अरूचिकर काहे/'फूहर' साफ –सुघर लागे/उचटे नीन बरे ना अनकुस/मिसिरी– बोल जहर लागे/लागे हंसी रोवाई लेखा /मन अनमन बेबस लागे! '(उलटन)–अशोक द्विवेदी के ई कविता देखि के कबीर के 'उलटबासी' इयाद आवे लागत बाड़ी सं।'बरसे कम्मर भींगे पानी' वाला एह दौर में जबकि जगत्तर के झूठा सांच ढकचत नजर आवत बाड़े सं आ अन्हरा राह बतावे वाला बन गइल बाड़े सं,मन के बेचौनी–बेबसी बढ़ते जा रहल बा।फेर कवि के सामने दोसर का रास्ता बा–ऊ एही अनहरिया में से रोशनी के एगो लौ तलाशे में जुटल बा।ओकर सपना बा कि जीवन–रस कइसहूं बचल रहो,एही से ओकर कामना बा कि 'सहज साँच अनुभूति करावत/जन –मन के अनुराग लिखऽ/कवि तू धरती –राग लिखऽ! लिखऽ कि कइसे सोत बचे आ सांस चले/ थिरके राग तूरि हर बंधन/दुख सुख हास हुलास चले/हर नकार में भर सॅकार तू/सोझ सॉच बेलाग लिखऽ! कवि तू धरती राग लिखऽ! '(कवि तू धरती राग लिखऽ!)

भोजपुरी कवि के कलम से इहॉ आम भोजपुरिहा के स्वर फूटल बा,ओकर मन–मिजाज मुखर भइल बा। भोजपुरिहा के ई चरित्र होला कि ऊ सोझ, सॉच आ बेलाग होके बोलेला–लिखेला।ओकरा बानी

में अचिको अझुरहट ना होखे।ओकरा जवन भीतर होला उहे बाहर दिखबो करेला।भोजपुरिहा मन कबो उलटो समय में उजबुजाला ना।अपना संघर्ष में ऊ भरपूर भरोसा राखेला,कठिनो दौर में ऊ बेहतरी के संभावना तलाश लेला,हर चुनौती के एगो नया अवसर ऊ मान के चलेला।अशोक जी के कवितो हर तरे के नकार आ निषेध भरल समयो में अपना असरा के बीया अंखुआये देबे में अचिको अनमन नइखे दिखल। ऊ आस्था के दीप के बल–बूते भकसावन अन्हरियो के धत्ता बतावे के समरथ से भरल–पूरल बिया।कवनो कवि के इहे 'पोजिटिव एप्रोच ' ओकरा के बड़हन कवि बनावे में मददगार होला।

अशोक जी के गजल कहन आ अपना रचाव में नया तेवर लेले भोजपुरी कविता में उतरल बिया। एगो गजल में प्राकृतिक उपादानन के जरिये भावना आ विचारन के नया नया भंगिमा देखे लायेक बा–'केहू के आगम सुनाइ गइल फागुन में/जइसे सरसों फुलाइ गइल फागुन में पिहिकल कोइलरि मोजरियाइल अमवॉ से /जइसे लुत्ती लेसाइ गइल फागुन में।' (फागुन में) 'लुत्ती लेसाइ गइल' के अर्थाभिव्यंजना आ मुहावरेदानी से निकलल ध्वनि फागुन के अवाई के आउरो रुचिर–रंगीन बना देत बिया , जवना से ओकर गतिशीलतो प्रकट हो जात बाटे। एगो दोसरा गजल में शहरीकरन के चलते गांवन के हो रहल लोप के झलकावत कवि के पंक्ति बाड़ी सं–'जहरपिरकी घाम किउमड़ल घटा लिखिहऽ तनी/गांव के नइखे मिलत कुछुओ पता लिखिहऽतनी।' ना खुशी ना चैन मन के, शहर सबकुछ खा गइल/लोग उहवॉ याद करतो बा कि ना लिखिहऽ तनी। '(लिखिहऽ तनी) अशोक जी के गजल मौजूदा दौर के तेजाबी तजुर्बा बन हाजिर भइल बाड़ी सं। कवि त्रिलोचन लेखां ऊ कुछ सानेटो लिखले बाड़न जवना में जीवन आ जमाना के हकीकत घुलल–मिलल बा।

अशोक जी के कविता में देश के प्रति प्रेम आ अनुराग के स्वरो सजोर बा।देश के माटी के उबटन लगा के पलल–बढ़ल कवि 'मातृत्व गीत' में जहां जनम देबेवाली अपना माई के प्रति श्रद्धान्वित बा , ओजवे 'मोके देशवा के बाटे गुमान' जइसन कविता में भारतमाता के प्रति ओकर भक्ति –निवेदन देखे जोग बाटे। 'मातृत्व गीत' में कवि कहत बा कि 'बून–बून दुधवा बुझाय देला अगनी/अमरित छकते /ढॅपाय जाले पपनी/ममता जोखाय, ना नपाय कवनों नपना ! / भुखिया पियसिया/भुलाइ जाले निनियॉ/ लड़िके में मां के /समाइ जाले दुनियॉ/ हियरा के अंखिया/बखान करे कतना/किलकि नहाय ओमें गोदिया के ललना!'– ओहीजा भारतमाता आ राष्ट्रध्वज तिरंगा के प्रति ओकर समर्पण–भाव देखे लायेक बा–'मोके देसवा क बाटे गुमान तिरंग– रंग लहरल करे/जेकर कीरति बा जग में महान / तिरंगा लहरल करे!' (मोके देसवा क बाटे गुमान)।ई कविता एगो पुरहर राष्ट्रगीत के रूपत में सामने बिया जवना से राष्ट्रीयता के विमल उदात्त रूप झलकि रहल बा। 'सांस्कृतिक मूल्यबोध के देश–गीत' शीर्षक रचना में भारत के सांस्कृतिक वैभव आ विरासत पर कवि के गुमान देखे लायेक बा–'जहंवॉ हेरइले आके/ बड़–बड़ ज्ञानी ,उहे देसवा/झरे पथरो से पानी / उहे देसवा/हवे मोर देसवा!'

अशोक जी के कविता में दर्शनो एह ढंग से पिरोवल गइल बा कि एह से एकओर जहां दर्शन के ज्ञान तत्व सुगम आ बोधगम्य ढंग से प्रकट हो सकल बा तऽ दोसरा तरफ काव्य –सौन्दर्यो में कवनों अझुरहट भा बाधा नइखे पहुंचल।कविता एजवो पूरा तरे रमणीय अर्थ के प्रतीति सहज भाव से करावत बिया। देखे लायक बाड़ी सं ई पांति सब–'मानुस के अरथ इहे/जीव जोग साधल/बिन थकले चलल करे/कर्म के अराधल/चिन्ता ना जय के/ना खौफ पराजय के/अँखियन बीच लोर हँसे/ताल बिना लय के!' (आंखिन बीच लोर हॅसे)। 'लोर के हँसी ' के काव्यात्मक अभिधान के जरिये कवि पराजये में जय के संभावना तलाशे खातिर प्रयत्नशील बा।'लोर के हंसी ' – वेदना के आनंद में परिणति के प्रतीकित करे खातिर एगो बढ़िया काव्यात्मक प्रयोग बा। अशोक जी के एह काव्य–पंक्तियन के देख के माखनलाल चतुर्वेदी के एगो कविता स्मृति–पटल पर कौंधे लागत बिया–'कादम्बिनी प्रसव–पीड़ा की/हंसी तनिक उस ओर/क्षिति का छोर छू गयी सहसा/ वह बिजली की कोर/उगलती है जलती मुस्कान /रूदन का हंसना ही तो गान!' रूदन के हंसिये गान होला, वेदना के मुस्काने काव्य होला।जयशंकर प्रसाद जी के खूबसूरत पंक्ति हर सहृदय के होठन पर तैरत रहेला–'वियोगी होगा पहला कवि/आह से उपजा होगा गान/ उमड़कर आंखों से चुपचाप /बही होगी कविता अनजान।' पी.बी शेली के ते साफ तरे कहनाम रहे "Our Sweetest songs are those that tell of our saddest

thought-"उदासी आ वेदना के छने में जनमल गीत मधुरतम होले सं आ संघर्ष में पिसाइल–गराइले मनइये मनुष्यता के पताका लहरावेला। 'लोर के हंसी' के रूपक अइसने जगहा खिल उठेला आ पाठक–मन कवि के कलम चूम लेबे खातिर चहक उठेला।अशोक जी के ऊपर के पंक्तियन में गीता– दर्शन के 'स्थितप्रज्ञतो' के सहज भाव से अभिव्यक्ति मिलल बा।

कवि के पहिलका भोजपुरी कविता संग्रह 'फूटल किरिन हजार' एने हाले में हमरा मिल गैइल बा।ओह पर अलग से विस्तार से बात कवनो दोसरा आलेख के जरिए हम राखब।बाकिर इहो किताब ई बतावे खातिर काफी बिया कि अशोक जी राग–चेतना के कवि भइला के बावजूदो समाज,व्यवस्था,सत्ता आ जनता से जुड़ल मुद्दो पर बड़ी बेबाकी से आपन बात रखले बाड़ें।खास करके राजनीतिक पाखंड,किसान–मजदूरन के बदहाली,श्रम–संघर्ष आदि के यथार्थ से भरल चित्र अशोक जी के गीत–गजलन में एजवा भेंटा जाई।एह कविता संग्रह के बारे में डा.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी लिखले बानीं कि 'अशोक द्विवेदी जी के रचनन में पारिवारिक सम्बन्धन के राग–चित्र आ प्रकृति परिवेश के विविधतापूर्ण बहुस्तरीय तापमान महसूस कइल जा सकत बा।' लोकगीतन के रस में पगल एगो गीत में प्रकृति के साथ मनुष्य के रागात्मक लगाव के चित्र बड़ी मार्मिक ढंग से उरेहाइल बा–'चिरई बोलेले भिनुसहरा/ दुलरुई धिया अलसाय/माई के देहिया प/भिरिया के परबत/रोजे अरराय!' एगो छोट बहर के गजल में कवि के जीवन आ समाज के प्रति व्यंग्यधर्मिता देखे लायक बा–'आन्हर दरपन/मुख देखे जन।/ हाड़ ठेठावत/मुले हरचन।/रोवस सीता/साटत पेवन।/आजादी के /टूटल बरतन।/हींड़ल गड़ही/ भइल प्रशासन।/रात अन्हरिया /लगे भयावन। /एह सुराज के/भोगे रावन।' एह संग्रह के शीर्षक– गीत के पंक्तियन में गार्हस्थिक बिम्ब–प्रतीकन के छटा रुचिर त बड़ले बा ओह से करुण रस के उद्रेको सहज संभव हो सकल बा–'घामा में जेतना झँवराई/देहिया,लसी ललाई/ऊढुक लगते घाव लगी जब/मन परि जाई माई/अँचरा से ममता झुरुकी/जुड़वाई मलय–बयार! फूटल किरिन हजार!'खेती–बारी पर लिखल द्विवेदी जी के एगो सॉनेट में किसानी जीवन के तबाही आ तंगिश के वर्णन देखल जा सकत बा–'भइया एह गिरहत्ती में तनिको नइखे सुख/बड़ बवाल बा किसिम –किसिम के रोज झमेला/कोड़ला–खनला से हाँथे परि जाला ठेला–/रोपनी–सोहनी, सिंचनी के अलगे बाटे दुख।' एह संग्रह में कुछ दोहो संकलित बाड़े सं।एगो दोहा में जिनिगी के अलचारी के झलक निरखल–परखल जा सकत बा–'जिनिगी नइया रेत के /छिन सूखा छिन बाढ़।/तलफत मन मृगडाह में, चढ़ल न कबो अषाढ़।'

उत्कृष्ट कोटि के कवि क्रातिदर्शी कवि होला।वर्तमान के जीयत–भोगत समकालीन सच्चाई से त ऊ वाकिफ रहबे करेला,युगीन विसंगतियन से मुठभेड़ करत ऊ प्रतिरोध के संस्कृति के निठाह ढंग से ताकतवर बनावेला।साथही भविष्य के पदचाप सुनत मानवता के सुभग संदेशो देबे में ऊ पीछे ना रहेला। अशोक द्विवेदी के कविता संग्रह 'कुछ आग कुछ राग ' के आखिरी कविता 'बस हमहीं न होइब ' एगो अइसने कविता बिया, जवना में कवि अपना अनुपस्थितियो में एगो अइसन सुभग ,सुखद, मंगलकारी समय के सुगबुगाहट सुन रहल बा जवन कवनो सर्जक के आखिरी सपना होला,मंगलकामना होला–' कटल उजरत बाग धनिर्जल ताल– पोखर' नदी छीछिल/रंग बदली/समय बदली/आदिमी के/ भेख भाखा–बतकही के ढंग बदली। /रही जे /ऊ आग –पानी में निकालत राह /घामा जब जरी /जोही पसर भर छॉव /बस हमहीं न होइब! '(बस हमहीं न होइब!)–कवि अपना गैरमौजूदगियो में अपना शब्दन के उपस्थिति के एहसास जगावत एजवा दीख रहल बा।एगो श्रेष्ठ कवि अपना यशःकाया के जरिये जग मे अमर बन जाला ।ओकरा भौतिक अनुपस्थितियो में ओकर शब्द–साधना के जीवंतते ओकरा अस्तित्व के अक्षुण्ण बनवले राखेले।अशोक जी निश्चित रूप से भोजपुरी के शीर्षस्थ कवियन में आपन महत्वपूर्ण स्थान बना लिहले बाड़न।उनकरा कविता से भोजपुरी साहित्य के अग–जग जगमग आ गुलजार भइल बा।

'कविता के अरज-निहोरा : 'अरज निहोरा' के कविता

डा. सुनील कुमार पाठक

प्रकाश उदय भोजपुरी के एगो समझदार आ जिम्मेवार कवि के नाम ह। 'समझदार' एह अर्थ में कि ऊ कविता के कविता लेखा बरते के जानेले आ जिम्मेवार एह अर्थ में कि ऊ अपना कवि–कर्म के जिम्मेवारी से हर तरह वाकिफ बाड़े। प्रकाश उदय के भोजपुरी कविता एक ओर जहाँ अपना जातीय संस्कृति से जुड़ाव बनवले राखे में कामयाब रहल बिया ओहिजा दूसरकी ओर ऊ मौजूदा समय आ समाज के बदलाव आ गति के साथे डेग में डेग मिलावत चलहूँ के लूर आ सहूर से भरपूर बिया। हिन्दी कविता में पाठकीयता के संकट पर विचार करत डॉ. मैनेजर पाण्डेय जी लिखले बाड़े कि "हिन्दी में कविता लिखे–पढ़े आ ओकर चर्चा करे के काम मुट्ठी भर साहित्यिक समुदाय के लोग करेला। कविता के प्रमुख पाठक कविये लोग बा। कवि लोग के बाद कविता के पाठक ऊ लोग बा जे साहित्य के पुरोहित मानल जाला। एह लोग के आलोचको कहल जाला। "आज का समय और कविता का संकट –ःवर्तमान साहित्य' (2000) शिक्षण–संस्थानन में मजबूरन कविता पढ़े आ पढ़ावल जाये के चर्चा करत ऊ इहो लिखले बाड़ें कि "एह सबसे अलग कविता के एगो आऊरो पाठक–समुदाय बा जेकरा के साधारण पाठक कहल जाला। चिन्ता के बात बा कि इहे साधारण पाठक समुदाय कविता से क्रमशः दूर होत जा रहल बा।" डॉ. पाण्डेय आज के कविता के कमजोरी का ओर इसारा करत लिखले बाड़े कि– "कविता संवाद के बदले स्वगत कथन बनत जा रहल बिया। वास्तविकता इहे बा कि अधिकांश हिन्दी कविता के जन–जीवन पर कवनो खास प्रभाव नइखे आ ओकरा से व्यापक समाज के कवनो लगावो नइखे, काहे कि ओकर सुभाव अभिजन समुदाय के अभिरूचि के अनुकूल बा, व्यापक समाज के आकांक्षा के अनुरूप नइखे।"

विषय के विभिन्नता के बावजूद अन्तर्वस्तु में विविधता के अभाव के कारण हिन्दी कविता पर एकतरहीपन के जवन आरोप लागेला ओह से उबरे के क्रम में ऊ लोक संवेदना, लोक संस्कृति आ लोक जीवन से आपन रिश्ता–नाता प्रगाढ़ करे के कोसिस कइलस। हिन्दी के कवि–समालोचक अरविन्द त्रिपाठी "कविता का आज' शीर्षक अपना एगो आलेख में एही तथ्य के रेघरियावत साफ–साफ सँकरले बाड़े कि –"एने कविता में लोक जीवन के कविता के उभार आ ओकर उत्तरोत्तर विकास कविता के इलाका में सबसे बड़हन घटना बिया। लोक संस्कृति आज कविता के सबसे बड़का ट्रांसमीटर बा। शहरी जीवन के ऊपरी आधुनिकता आ उपभोक्तास वाद के खिलाफ लोक संस्कृति से उपजल सृजनशीलता हाल के कविता के केन्द्रीय थीम बन गइल बिया।" (आलोचना' –जनवरी–मार्च 2004)। डॉ. भवदेव पाण्डेय कविता में लोक के एही वापसी के झलकावत साफ–साफ लिखलें कि –"लोक संवेदना के अर्थ– परिक्षेत्रीय संवदना ना होला। जब कथ्य आ भाषा के धरातल पर परिक्षेत्रीयता के काव्य–विस्फोट के प्रभाव दूर–दूर तक पड़ेला– तब ऊ

लोक–संवेदना बनेला। आज उत्तर आधुनिक सभ्यता के स्टीमरोलर से दबके मरत जा रहल लोक संवेदना के कारण दोसरो भाषा के कवि छटपटात दिखायी पड़ रहल बाड़ें। आज के कवियन के अइसन सगरे प्रयास कविता में लोक–संवेदना के वापसी के क्रम में हो रहल बा।" प्रकाश उदय के भोजपुरी कविता पर विचार करे के क्रम में हम आज के हिन्दी कवितो पर एह से नजर दौड़ावे के कोसिस कइले बानीं चूँकि दूनू भाषा के कवितन में एगो खास अपनापा रहल बा। प्रकाश उदय के सोचो एह से अलहदा नइखे।

हिन्दी कविता लोक के राहे अपना वापसी के जवन कोसिस कइलस आ ओह में नागार्जुन, त्रिलोचन, केदार नाथ सिंह, अरुण कमल, स्वप्निल श्रीवास्तव, अष्टभुजा शुक्ल, श्रीप्रकाश शुक्ल, ज्ञानेन्द्रपति जइसन दर्जनन कवियन के योगदान रहल, ओइसनका आग्रह भोजपुरी कविता में नइखे दिखत। एकर कारण ई बा कि जवना लोक–संवेदना के हिन्दी कविता सायास ढंग से प्रयत्नपूर्वक अपनवलस, ऊ भोजपुरी कविता खातिर अपना खोंइछा में मिलल थाती रहे। भोजपुरी कवि का एह लोक संवेदना खातिर ना त बने–बन छिछियाये के पड़ल ना घाट–घाट के पानी पीये के पड़ल, ई लोक–समाज, लोक–संस्कृति, लोक–संवेदना आ लोक–लय ओकर अइसन काव्य–भूमि रहल जवना पर ठाढ़ होके ऊ अपना कविता के एगो खास ऊँचाई देबे में सफल रहल, फलस्वरूप पाठकीयता के संकट के त5 कम–से–कम ऊ अपना दुआरे नाहिये फटके दिहलस।

प्रकाश उदय के जब हम भोजपुरी के एगो "समझदार कवि" कहके संबोधित करत बानीं त5 हमार उद्देश्य इहे बतावल बा कि ई कवि आज भोजपुरी कविता के सामने खड़ा हर तरह के संकटन से परिचित बा, ओकरा सामने मौजूद हर तरह के चुनौतियन से मुठभेड़ करे के मादा रखत बा आ कविता के मूल चरित्र के बचवले राखे के अपना जबाबदेहियो के समझत बा। प्रकाश उदय के कविता भोजपुरी लोक–मन आ लोक–संवेदना में रचल–बसल रहला के साथे–साथे, ओह सगरी भाव–धारा आ विचार–प्रवाह के साथे अपना काव्य–विवेक के जोड़ले चलल बिया जवन कविता के 'आवेग त्वरित कालयात्री" आ "जनचरित्री" बनावेला।

भोजपुरी कविता में आपन एगो खास पहचान राखेवाला कवि प्रकाश उदय के दोसरका कविता–संग्रह –'अरज निहोरा" जब देश के प्रतिष्ठित प्रकाशन राजकमल प्रकाशन से सन 2020 में छपल, तब ना केवल भोजपुरी साहित्य–समाज बलुक सगरी भारतीय भाषा के कविता के पाठक आ रचयिता समाज के एगो सुखद आश्चर्य के अनुभव भइल। आश्चर्य एह से चूँकि भारतीय भाषा के सर्जक आ आस्वादक भोजपुरी के अइसनका ताकत आ तेवर से अबले वकिफ ना रहले हाँ। भोजपुरी में अवधी आ ब्रजी लेखाँ लिखित साहित्य के परम्परा ओतना समृद्ध आ सुदीर्घ नइखे रहल– ई बात स्वीकारे में हमरा कवनो परहेज नइखे। भोजपुरी में तेग अली तेग, हीरा डोम, भिखारी ठाकुर, रघुवीर नारायण, प्रिंसिपल मनोरंजन, महेन्दर मिसिर, महेन्द्र शास्त्री, रामजियावन बावला, रमता जी, अनिरूद्ध, अँजोर, गहमरी, सतीश, श्रीमंत, गोरख पाण्डेय, कैलाश गौतम, आदि अनेक सुकवियन के जरिये भोजपुरी कविता के जवन नया–नया आयाम मिलल, ओकरा के विस्तार देबे के दिसाईं प्रकाश उदय के कविता बराबर इयाद कइल जाई।

1988 के आस–पास प्रकाश उदय अपना पहिलका कविता संग्रह "बेटी मरे त मरे कुँआर' के जरिये भोजपुरी के साहित्यिक समाज के धेयान खींचे में कामयाब रहलें, ओकरा लगभग 32 बरिस बाद उनकर दोसरका कविता–संग्रह आइल हटे –'अरज–निहोरा"। एह संग्रह में कवि के पहिलका संग्रह के कुछ रचना बाड़ी सन त आगामी तीसरको संग्रह "जुगलबन्दी'' के कुछ रचनन के पइसार भइल बा द्य मतलब ई कि "अरज–निहोरा' में प्रकाश उदय के पिछिलकी कविता, आज के कविता आ अवनिहार कविता– तीनू के पदचाप सुनल जा सकत बा।

"अरज–निहोरा" के कवितन के समझे–बूझे खातिर मृत्यंजय के हिन्दी में लिखल 'हकीकत को लाये रवायत से बाहर" नामनी भूमिका मददगार बिया। मृत्यंजय प्रकाश उदय के कविता पर विचार करत कुछ बात सूत्रवत रखले बाड़े, जइसे –

1. एह कवितन के केन्द्र में प्रायः गाँव आ कभी–कभार कस्बा बा। ••• विस्थापन के विराट आ अनवरत परिघटना के साक्षी गाँव के हकीकी चित्र एह संग्रह के खासियत बा।

2. एह कवितन के जमीन सेक्यूलर बा।

3. प्रकाश उदय के कविता के नायिका सब परिवारी बाड़ी सन। ई कविता परिवार संस्था के अलग–अलग

पहलुअन के उभारे के कोसिस कइले बिया।

4. ई कविता दिलचस्प बराबरी रचेवाली कविता बिया– श्रम के बराबरी।

5. कवि सामान्य जीवन के प्रसंगन से बेहतरीन कविता बुन देबे के कला में निष्णात बाड़े।

6. एह कविता के धुन लोक से निकलल बा।

7. प्रकाश उदय के कविता के एगो आउर खासियत बा– अवाम के काव्यात्मक अभिव्यक्तियन के इस्तेमाल।

मृत्युजय जी सार रूप में प्रकाश उदय के "अरज–निहोरा' के कवितन पर आपन बात राखत कहले बाड़ें कि– "अगर केहू भोजपुरी के मौजूदा सांस्कृतिक मुख्यधारा के साथे आलोचनात्मक सम्बन्ध विकसित करत भोजपुरी जातीयता के पुनर्खोज करे के चाहत बा, जीवन–संघर्षन के रसन में सनल–पगल भोजपुरी के दोसरकी परम्परा से अपना के जोड़त बा, दया आ घृणा के ध्रुवन के बीच विकसित हो रहल एह इलाका के जीवन से कवनो साबका राखत बा– त ई संग्रह ओकरे खातिर बा।

"एह कथन में दूगो बात बहुते गंभीरता से विचारे लायक बा –'भोजपुरी जातीयता के पुनर्खोज' आ "भोजपुरी के दोसरकी परम्परा'। भोजपुरी जातीयता के पुनर्खोज के समझे के पहिले भोजपुरी जातीयता के समझे के पड़ी आ ई बूझे के पड़ी कि एकरा पुनर्खोज के जरूरत काहे आ कइसे पड़ल। साथही "भोजपुरी के दोसरकी परम्परा' के बूझे–गुने के क्रम में एकर मूल परम्परा आ ओह से एह दूसरकी परम्परा के अलगाव के तत्वनो के पकड़े के पड़ी। हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह अपना किताब "दूसरी परम्परा की खोज' में लिखले बाड़े कि –"परम्परे जइसन खोजो एगो गतिशील प्रक्रिया हटे।"

डॉ. नामवर सिंह अपना किताब में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के जरिये भारतीय संस्कृति आ साहित्य के ओह लोकोन्मुखी क्रांतिकारी परम्परा के खोजे के सर्जनात्मक प्रयास कइले बाड़े जवन कबीर के विद्रोह के साथही सूरदास के माधुर्य आ कालिदास के लालित्य से परिपूर्ण बा। प्रकाश उदय के कविता में "भोजपुरी जातीयता के पुनर्खोज' आ ''भोजपुरी के दोसरकी परम्परा' के जवन उल्लेख भूमिकाकार कइले बाड़ें ऊ डॉ. नामवर सिंह के समीक्षकीय दृष्टिकोण से बहुत हद तक प्रेरित–प्रभावित बुझात बा। मतलब कि मृत्युंजय प्रकाश उदय के कविता के संदर्भ में "भोजपुरी जातीयता के पुनर्खोज" आ "दोसरकी परम्परा" के जवन रूपक गढ़ले बाड़ें, ऊ नामवर के विचारन से बहुत हदतक मेल खात बा। ''भोजपुरी जातीयता" पर विचार करत डॉ. ग्रियर्सन के अभिमत रहे कि–"भोजपुरी एगो बलवान जाति के व्यावहारिक भाषा हिय5 जवन परिस्थितियन के अनुसार अपना के परिवर्तित करे खातिर सदैव तत्पर रहेले आ सम्पूर्ण भारत पर आपन प्रभावों स्थापित कइले बिया।" ऊ इहो कहले बाड़ें कि "भोजपुरिहा वास्तव में सतर्क आ क्रियाशील जाति के लोग हटे। एह लोग में रूढ़िवादिता के अभाव बा, ई लोग पूरा भारतवर्ष में फइलल बा आ एह समाज के हरेक आदिमी कवनो सुअवसर से आपन भाग्य–निर्माण खातिर तत्पर रहेला।" ('मारत का भाषा सर्वेक्षण" खंड–4, भाग–4 उ.प्र. हिन्दी संस्थान, पृ. 295–297) मतलब ई कि भोजपुरी के जातीय संस्कृति में एक ओर अगर "लाठी" के स्वाभिमान आ कबीर के क्रांति–भावना के बीज पड़ल मिलेला त5 दोसरका ओर एह में व्यावहारिकता, युगीन गतिशील चेतना, वैचारिक उदारता, लालित्य आ माध्पुर्यो के कमी नइखे द्यडॉ. नामवर सिंह अपना "दूसरी परम्परा" पर प्रकाश डालत साहित्य के जवना लोकोन्मुखी क्रांतिकारी परम्परा के बात कइलें आ एकरा में कबीर के विद्रोह, सूर के माधुर्य आ कालिदास के लालित्य के समाहार देखवलें, प्रकाश उदय के कवितो एही संदर्भ में "दोसरकी परम्परा' के कविता बिया आ भोजपुरी जातीयता के पुनर्खोज के एगो सृजनात्मक कोसिस बिया, एगो अइसन कोसिस– जवना में भोजपुरी समाज के जय–पराजय, उछाह–विछोह, सुख–दुख, आमद–लूट, उपलब्धि–चुनौती– सबके वाणी मिलल बा।

प्रकाश उदय के कविता के "दुसरकी परम्परा के कविता' भा "भोजपुरी जातीयता के पुनर्खोज के कविता" बतावे के विचार से सहमत होइयो के हम ई नइखीं समझ पावत कि भोजपुरी में "दोसरकी परम्परा' क कोटि अगर खड़ा करियो दिआव तऽ एकरा पहिलकी भा मूल परम्परा से एह दोसरकी परम्परा के अलगाव के बिन्दु कइसे निर्धारित कइल जाईं? एही तरे "भोजपुरी जातीयता के पुनर्खोज" के जरूरत आज काहे पड़ गइल जबकि एकर जातीय पहचान में आजो कवनो विचलन भा विलगाव के प्रवृत्ति नइखे दिख रहल। भोजपुरी जाति आ समाज शुरूए से अपना बाहुबल आ साहस के भरोसे हर जंग के जीते में कामयाब

रहल, अपना प्रतिभा आ परिश्रम के बदौलत हर तरे के संघर्ष में कबो लाचार ना दिखल, अपना मिहनत आ मजूरी के कमाइये से विस्थापन आ पलायनो के दंश झेलला के बावजूदो आपन सांस्कृतिक पहचान ना मिटे दिहलस। भोजपुरिहा अपना क्रांतिकारी तेवरे के बदौलत आजादी के लड़ाई में तऽ फिरंगियन के नाको चना चबवइबे कइलस, हर तरे के सामाजिक बदलावो आ सुधार के स्वीकारहूँ में तनिको झिझक कबो ना देखवलस। प्रकाश उदय के भोजपुरी कविता में श्रम के दिसाईं दिलचस्प बराबरी रचे के क्षमता अगर मृत्युंजय के नजर आइल त ई 'बिजली के कौंध" जइसन कवनों चीज ना रहे बलुक ई त भोजपुरी मन–माटी के ओह सुदीर्घ मूल परम्परे से अरजल कवि के ऊ थाती रहे जवन ओकरा आँख खोलते आ कंठ खुलते गुरू गोरखनाथ, कबीर, तेग अली तेग, हीरा डोम, भिखारी ठाकुर, महेन्द्र शास्त्री, मोती बी.ए., धरीक्षण मिश्र, दुर्गेश अकारी, रमाकांत द्विवेदी 'रमता', मोती बी.ए., गोरख पाण्डेय, सिपाही सिंह श्रीमंत', परमेश्वर दूबे शाहाबादी, बिजेन्द्र अनिल, रामजियावन बावला, रामजी सिंह "मुखिया", आनंद संधिदूत, जइसन अनेक अग्निधर्मा कवियन के जरिये हासिल भइल रहे। भोजपुरी के लोकगीतन में भा होरी गीतन–संस्कार गीतन आ बाद में फिल्मी गीतन में जवन श्रृंगारिकता दिखेला (आज जवना पर कबो–कबो अश्लीलता के आरोपो लाग रहल बा) ओकनियो में गृहस्थ आ पारिवारिक जीवन के सरसता आ मधुरता के देखे लायेक बा। भोजपुरी साहित्य में 'रीतिकाल' जइसन कवनो कालखंड नइखे रहल जवना में सामंती जीवन भा दरबारी संस्कृति के झलक देखे के मिलत होखे आ ओह से प्रभावित होके काव्य–रचना भइल होखे। एकरा आधुनिक काल में फ्रायड के "मनोविश्लेषणवाद' से प्रभावित रचनो ना मिलिहें सन जवनन में खुलम–खुल्ला सेक्स के चासनी देके रचना के पकावल गइल होखे। इहँवा आउर–त–आउर 'मार्क्सवाद' से प्रभावित होके हँसुओ–हथौड़ा भाँजत कवनो 'राजनीतिक एजेण्डा" से प्रेरित–प्रभावित रचना ना लिखइली सन जवन खाली राजनीतिक जुमला भा स्लोगन बनल दिखत होखे। एकर मतलब ई नइखे कि भोजपुरी कविता में राजनीतिक चेतना भा जागृति देखे के ना मिलेला। राजनीतिक चेतना आ जागृति तऽ एकरा में अइसन रहल बा कि एकरा हुरपेटउअल आ सिंघलगउअल से बहुतन के होश ठेकाने लाग गइल आ दिमाग धरती पर आ गइल। प्रकाश उदय के 'अरज–निहोरा' के कवितन में गाँव, घर, समाज– सबके जवन चित्र मिलत बा ओह में उत्पीड़न, सोसन, बेबसी, लाचारी, बिखराव के तऽ बहुआयामी रूप बड़ले बा बाकिर उदासी, मायूसी के एह घटाटोपे से छनके आवेवाली जीवन के खुशी आ रंग के जवन रोशनी एह कविता में उतरल बिया, उहे भोजपुरी कविता के आपन खास मौजूँ अन्दाज आ मिजाज हटे।

भोजपुरी कवितन में सामाजिक प्रतिबद्ध ता के स्वर शुरूए से सजोर आ प्रखर रहल बा। सामाजिक विसंगति, विद्रूपता, आडम्बर आ छल–दुराव के छार–छार करके सच्चाई के दामन थमले रहेवाला कबीर के वंशज भोजपुरी कवि प्रपंच आ छद्म के अपना लेखनी के लुकाठी से जारत–धनकावत अगर सीना तान चलल बाड़े तऽ साथे–साथे नया भीत उठावे आ अपना सपनन के सिंगार करेके उनकर मंसूबो कम नइखे रहल। प्रकाश उदय के कवितो में सामाजिक बराबरी खातिर तिलमिलाहट आ छटपटाहट के साथे–साथे एगो अइसन लोक के ललित कल्पना आ रागात्मक कामना मौजूद रहल बिया जवन आदिमी में जिजीविषा जगावे के काम करेले।

कवनो रचना के आलोचना अगर 'पुर्नसृजन" होले त ओकर मकसद इहो होला कि ओह पर बतकही ओह रचनन के भीतरे रहिके कइल जाव । हर रचनन पर जब वेदे, पुराण आ उपनिषदे के छाया निहारल जाई भा 'Deconstruction', 'Postmodernism', 'Feminism', Marxism', 'Psychoanalytic critisism', 'Postcolonialism', 'Cultural studies', 'Cultural materialism', 'New historicism', 'Ecocriticism','Liberal humarism', 'Structuralism', 'Post – आदि के चश्मे चढ़ाके जब रचनन के गुणवत्ता आ बारीकी परखल जाईं तब जरूरी नइखे कि ओह रचनन के आपन ताप आ तासीर के सही तरे अनुभव कइल जा सके । रचनन के भीतर से गुजर के, ओकनीं के भीतर आवाजाही बनाके, ओकनी के रूचि आ रचाव भा बयान आ बुनावट के जवना सफाई आ बारीकी से सुनल–समझल जा सकत बा ऊ कवनो 'वाद' के प्रमाद में पड़ि के संभव नइखे। केहू से केहू के तुलना करि दिहल, केहू में केहू के निरखि लिहल, केहू के केहू नियन बता दिहल– आज भोजपुरी में "तुलनात्मक आलोचना' (Comperative study) मान

लिहल जा रहल बा बाकिर ^Comperative criticism' Georg Brandes (1842.1927) के कहनाम बा कि ष्Comperative criticism focuses on the study of literature from different cultures, nationsAnd genres,And explores relationships between literatureAnd other forms of cultural exprssions." मतलब कि "तुलनात्मक आलोचना विभिन्नत संस्कृतियन, राष्ट्रन आ शैलियन के साहित्य के अध्ययन पर केन्द्रित होले आउर साहित्य आ सांस्कृतिक अभिव्यक्तियन के अन्य रूपन के बीच विविध सम्बन्धन के पड़ताल करेले।" भोजपुरी आलोचना तुलनात्मक आलोचना के ऊँचाई तक पहुँचो, एह से पहिले ज्यादा जरूरी ई बा कि ऊ रचनन में अन्तर्निहित संवेदना आ सोच के बारीकी से पड़ताल करे में कामयाब हो जाव।

प्रकाश उदय के कविता के जलाशय में उतर गइल जेतना आसान बा ओतने कठिन बा ओमें पँवडल। साँस फूल जाई, हाथ–पैर मारते रह जाये के पड़ी बाकिर लयकारी, शब्दन के पच्चीकारी आ तोड़–मरोड़ के सिवा कुछ ना भेंटाई। भेंटाई कब? जब एह कवितन में पइठके एक–एक शब्दन में कवि के संवेदना के तंतुअन आ सोच के विस्तार के परखल जाई। प्रकाश उदय के कविता बिना कवनो ताम–झाम के फुसुर–फुसुर बोलत–बतियावत अपना पाठक आ श्रोता के जेहन में उत्तर जायेवाली कविता बिया। ई 'लाउडली' आपन कवनो बात नइखे राखत कवनो तरे के "ओवरटोनिंग" से बचत आपन राह खुदे बनावत ई आपन एगो खास पहचान गढ़त– सही मुकाम हासिल कर लेबेवाली कविता बिया।

"अरज निहोरा' के पहिलका खंड में तीस गो कविता बाड़ी सन। दुसरका खंड "तनिक–तनिक कुछ कहल–सुनल' में सताइस गो रचना संकलित बा। कवि के पहिलका संग्रह "बेटी मरे त मरे कुँआर' के सातगो रचना एक कविता–संग्रह के तीसरका खंड के रूप में बा। संग्रह के चौथा खंड में कवि के आवेवाली कृति 'जुगलबंदी' के छौ गो रचना समाहित बाड़ी सन। मतलब कि "अरज निहोरा'– कवि के काल्हआ, आज आ आवेवाला काल्ह– तीनू के काव्य–समृद्धि के झलकावे वाला संग्रह बा –एह दृष्टि से एकर महत्त्व आउरो बढ़ जात बा। एह संग्रह क अधिकांश कवितन में 'लयात्मकता बा। लोकधुन में रचाइल एह गीत स्टाइल के कवितन में भोजपुरी समाज आ संस्कृति के जीवन–रस भरपूर बा। इहँवा छन्दधमुक्त आ गद्यगंधी रचननो में तुक आ लय के अइसन मिलान बा कि कविता नाद–सौन्दर्य से खिल उठल बिया। अपना एह आलेख में हम प्रकाश उदय के एह संग्रह के कुछ अइसन कवितन पर सोचे–विचारे के कोसिस कर रहल बानीं जवन उनकर प्रतिनिधि रचना रहल बाड़ी सन आ कविता जहाँ अपना संवेदना आ मार्मिकता के बदौलत बेहद अनूठापन के साथ साकार होखे में सफल रहल बिया।

पहिलका खंड के तीसरकी कविता बिया– "बाबा के दुलारी धिया'। ई कविता भोजपुरिया समाज में नारी के मान–मर्यादा, स्थान–महत्त्व आ दशा–दुर्दशा के झलकावे वाली रचना बिया। नारी–विमर्श के सैद्धांतिकी तय करेवाली ई रचना ओकर व्यावहारिक पक्षो के साफ तौर पर सामने रख देबे में सफल बिया। बाबा के दुलारी धिया, भले बाबा के अँगना में खुशी से नाचत होखस बाकिर छप्पर पर तऽ धुँआइल सपनने के नाच हो रहल बा। बार–बार जिदिया के भारी पड़ जायेवाली धिया जब माई के मुँहे कविता के आखिर में ई सुन लेत बिया कि– "धिया पाई–पाई राखे द बचा के भिरिया। जाने कतना में मुदई मिलसु सजना।" अपना धिया के सगरी हँसी–खुशी, गान–बजान, चुनरी–मुनरी के सौख–सिंगार पूरो कर देबेवाली माई जब ओकरा से "फुआ जाले ससुरारी काहे जाईं हम ना' के सवाल सुनत बिया तऽ ई कहे से अपना के नइखे रोक पावत कि "जाने केतना में मुदई मिलसु सजना। जिनिगी भर के कमाई आ अरजल लुटवला पर मिलल सजना के "मुदई" बतावे में माई के हियरा में केतना पीर जनमल होई, अनघा उल्लिलला के बाद दुआरे पहुँचल बबुआ के परीछतो बेरा मन में केतना ले हुलास रहल होई– ई कविता एह सगरी वेदना के घनीमूत करके सामने रख देत बिया। अइसनके भाव–भूमि पर खड़ा एगो दोसर कविता बिया– "लिखि के कहे के ना अदतिया।" ससुरा गइला के बाद पहिल बेर भइया के पाती लिखत बहिनिया के कहनाम बा– "जनमे से रहली जे बुचिया–बबुनिया," आवते ससुरवा बहुरिया ए भइया।" पाती भेजत लेन–देन खातिर उघटाये के अन्देसा से भरल बबुनी एह कविता में नाहियो कुछ कहत दू–तीन गो बात मेहीनी से कहिये देत बिया। पहिल तऽ ई कि "गोरकी ननदिया से लिहलीं कलमिया साँवरि तोहरी बहिनिया ए भइया।' गोर ननद के सामने

साँवर भउजाई के दबिये के रहे के पड़ी। दोसर ई कि जब ऊ अपना माई के ई लिखत बिया कि– "उनुका के लिखिह्ऽ त टाँकि दीहऽ चिठिया में चारियो अछर अंगरेजिया ए भइया।" माने कि अंगरेजिया टँकवा के ऊ अपनो परिवार के पढ़ाई–लिखाई के दिसाईं बराबरी झलकावे के चाहत बिया। शिक्षा के सामाजिक बराबरी में महत्त्व बतावेवाली ई कविता केतना गते से आपन एगो गंभीर बात समुझा देत बिया– ई देखे लायक बा। एह सब हलकानी में रहला के बावजूदो लइकी सब अपना नैहर के खुशहाल देखे खातिर केतना आतुर आ बेचौने रहेली सनई एह कविता में देखल जा सकत बा– "मिलितऽ त मुँहामुँही कहि समुझइतीं अब तऽ उतारि ल भउजिया ए भइया।" प्रकाश उदय के कविता में "नारी–विमर्श"' के मतलब नारी के मान–मर्यादा, स्वतंत्रता–आजादी से जरूर जुड़ल बा बाकिर पारिवारिक मर्यादा के तार–तार करके हासिल आजादी के ऊ पक्षधर नइखन। भोजपुरी समाजो में "परिवार" नामक संस्था के महत्त्व के अलग–अलग तरे से उभारे–देखावे के कोसिस कइल गइल बा।

परिवार में एक ओर पति–पत्नी के बीच के मनुहार बा, साथही हँसी–खुशी–मजाक, एक–दोसरा के समुझे के संवेदना आ बराबरी के अनुभूतियो बिया– "एगो तू बाड़ऽ–', "तनी जगइहऽ पिया', "घरहूँ में घरी–छन छूमछाम से" जइसन कविता में तऽ दोसरका ओर पारिवारिक घुटन, संत्रास, तकलीफ, लाचारी, सास–ससुर, ननद–जेठानी–देवरानी, माई–बाबूजी, चाचा–चाची जइसन लोगो बा जे कवनो–न–कवनो रूप में नारी के बराबरी आ आजादी में मददगार ना होके मर्यादा के नाम पर नारी के पैरन खातिर बेड़िन लेले तइयार खाड़ बाटे। परिवार के एह संगठन के बचावे में पारस्परिक प्रेमे मददगार हो सकत बा– इहे कवि के भरोसा बा। बाकिर एगो सच्चाई इहो बा कि परिवार के परिधिये ले प्रकाश उदय के कविता सिमट के नइखे रह गइल, ऊ समाज, देश आ समयो का ओर ताके–निहारे में कवनो कोर–कसर नइखे छोड़ले।

कवि के पहिलका संग्रह "बेटी मरे त मरे कुँआर" में दहेज के समस्या के विकरालता देखावत ई बतावल गइल बा कि कइसे ई समस्या भोजपुरिये ना बलुक पूरा भारतीय समाज के ताना–बाना के अझुरा के नेस्त–नाबूद कर देबे पर तूल गइल बिया। एह संग्रह के कुछ महत्त्वपूर्ण कविता, जइसे– "बड़ा–बड़ा फेर बा', "नीसन लोटा', "का रवा के रउआ के पाइब जी!', "बबुआ बरहगुना के माई', "अबकी जवन जनमी ननन्ह कवा', "डाकू डहेण्डल सिंघ' आ "कुछ अउरू' अइसन कविता बाड़ी सन जवनन में तिलक–दहेज के समस्या के कई तरे से सर्चलाइट मारके परत–दर–परत पड़ताल करे के प्रयास कइल गइल बा। एह सगरी कवितन में छोट–छोट कथा के वितानो मिलत बा आ आपसी बतकही के भाव–भंगिमो के अनूठापन बा। अपना संवादधर्मिता के बल पर ई कविता पाठक आ श्रोता से सीधा बोल–बतियाके आपन बात साझा करे में कामयाब बाड़ी सन। एह संग्रह के कइगो कवितन में लघुकथा जइसन कथा–रस आ मारकता देखे के मिलत बा तऽ कइगो कवितन में नाटकीयता आ कथोपकथन शैली के जरिये काव्यात्मक भाव–भूमि तइयार कइल गइल बा। भोजपुरी क्षेत्र में किस्सागोई एगो खास जरिया रहल बा आपन बात राखे–पहुँचावे खातिर, प्रकाश उदय एकर भरपूर सहारा लेले बाड़े।

भोजपुरी क्षेत्र के लोकगीतन में देवी–देवतो लोग से जुड़ल जवन लोकगीत भा संस्कार गीत बाड़ें सन, ओह में देवी–देवतो लोग आम मनइये लेखाँ बेवहार करत दीखत बाड़े। प्रकाश उदय के कविता सेक्यूलर मन–मिजाज के कविता बिया त ओकरा पीछे भोजपुरिहा माटी आ मनइये के 'सेक्यूलरिज्म" बा जवन देवी–देवतो लोग के आदमिये लेखाँ बेवहार करत पसन्द करेला। आज के भोजपुरी गीत में अगर कवनो गवइयो भोले बाबा के "गनेश के पापा"' कहत बा तऽ ओकरो पीछे इहे मानसिकता बा जेमे भोले बाबा शिवाला का चहारदीवारी से बाहर निकल के गउरा से भाँग के गोला तइयार करवावत बाड़े। एह संग्रह में एगो कविता बिया– 'देव–दुख। एमें काशी विश्वनाथ के जवना दुख के बखान मिलत बा, उ ठेठ भोजपुरिहा मध्यमवर्गीय किसान के दुख से अलगा कवनो तरे से नइखे। बाल–बच्चेदार पत्नी गउरा से ताना–तनउवल, रगड़ा–मनुहार ओइसही बा जइसे कवनो किसान–परिवार में होला। काशी विश्वनाथ कलश टाँग के बूँद–बूँद पानी माथा पर लगातार टपकावे वाला से परेशान होके– 'शिव–शिव हो दोहाई मुँह मारी सेवकाई" –कहे खातिर मजबूर बाड़े। एह तबाही से उबारे खातिर ऊ गउरा के गोहार लगावत बाड़ें– "गउरा धउरऽ हो दोहाई"

भोला बाबा के बेचैनी देखिके आ मंदिर के

हल्ला–गुल्ली सुन के ज्ञानवापी मस्जिद से अल्ला पूछे लागत बाड़ें 'भइल का ए भोला, महकइलऽ जा मुहल्ला, एगो माइक बाटे माथे एगो तोहनी के साथे भाँग बूटी गाँजा फेरू का घटल बाटे?" भोला बाबा जलढ़री से परेशान बाड़ें आ अल्ला मियाँ माथे लाउडस्पीकर के चिललाहट से। एक जाना के सोमारी के जड़इया हिला देले बा त दोसरकू के जुम्मा के दिने बोखार चढ़े लागल बा। नहान से नकिआइल आ अजान से अजँजाइल दूनू जाना आपन–आपन दुख आपसे में बाँट–बाँट घटावे के चाहत बाड़ें। एगो विचारोत्तेजक परिहासपूर्ण रूपक रचत ई कविता ओह भाव–भूमि पर जाके छोड़त बिया, जहाँ धर्म आ राजनीति के गँठजोड़ के जरिये सत्ता के वर्चस्व रचेवाली व्यवस्था के खिलाफ एगो सशक्त प्रतिरोध के स्वर मुखर होके सामने आइल बा। प्रतिरोध रचे के ई क्षमता जवन प्रकाश उदय के कविता में नजर आवत बा ई भोजपुरी मन, माटी, समाज आ संस्कृति के रग–रग में भरल बा।

भोजपुरी समाज में मरद–मेहरारू के बीच मनुहार, रगड़ा–झगड़ा आ फेरू एही सब संघर्षन के बीच जीवन के सवाद आ रस लेबे के लूर–ढंग, तौर–तरीका देखे लायक होला। प्रकाश उदय भोजपुरिहा मध्यवर्गीय जीवन के एह सुघरई आ हरूख–पातर के बड़ा नजदीक से देखले आ जियले–भोगले बाड़े। दाम्पत्य जीवन के प्रेम में रार–तकरार आउर हास–परिहास के बीच संघर्ष आ श्रम के बदौलत सफल जीवन के आख्यान कइसे रचल जाला– ई झलकावे खातिर संग्रह के तीन गो कविता– 'एगो तू बाड़ऽ', 'घरहूँ में घरी–छन छूमछाम से" आ 'तनी जगइहऽ पिया'' बेजोड़ बाड़ी सन। अपना पिया के बैरी पर बिगड़ के ओकरा के रहरी में 40 सियार खानीं फेकरावे खातिर तइयार एगो जनाना के ई हिरिखना लागले रह गइल बा कि ओकर पिया "फलनवा" खानीं तनी ओकरो के धधा के हेरस–निहारस। ऊ जानत बिया कि एह तरे हेरला–निहरला से आउर कुछऊ होखो चाहे मत होखो, जिनिगी में एगो नया सवाद जरूर भर जाला, चढ़ि जाला। एही से ऊ कहत बिया कि "मनलीं कि कहला पर का–का ना कइलऽ मानऽ कि अपने न कबहूँ धध इलऽ, हमरा त रोजे, खखन एक होखे, कि के बेर हमके– 'हमार' हेरेले.. –– एगो तू बाड़।" "एगो तू बाड़ऽ' के झिड़की प्यार भरल एगो अइसन ललकार बिया जवना पर ऊ लटूदू लेखाँ नाचि के आखिर में लोट जइहें। दोसरकी कविता– "घरहूँ में घरी–छन छूमछाम' से पति के निहोरा बा कि बाहर से घूमघाम के आवते ओकर जनाना आपन टिकुली सिन्होरा में साटके सटकि मत जाव, घरो में छन भर छूमछाम से रहि के अँजोर कइले रहो। हर तरे के दुख–सुख काटत, भूल–चूक भुलात, जेठ के झवानी में बतासा आ पानी अस एक–दोसरा खातिर अमरित बनल नइया के खेवैयो अस 'हइया–हइया" करत हलुक–भारी हर तरे के हूक के हुलकोर के रख देबेवाला जीवट तबे जीवन में भरल रही, जब घरी–छन छूमछाम से घर में आनंद से बिता लेबे के संवेदना आ सहूर बाचल रही। 'मनोविश्लेषणवाद" के कवनो सैद्धान्तिकी से परे भोजपुरी के ई कविता आम भोजयपुरिहा में मौजूद जीवन–रस के निचोड़ के रख देबेवाली रचना बिया। तीसरकी रचना– "तनी जगइह पिया" में मजूरन पत्नी के निवेदन अपना हरवाहा पति से बा– "रोपनी के रँउदल देहिया साँझही निनाला, तनी जगइहऽ पिया, जनि छोड़ि के सुतलके सुती जइहऽ पिया।" एगो प्रेम कविता में श्रम, प्रेम आ करूणा के कोमल तंतुअन से रचल जीवन के संघर्ष आ कठिनाइन के एतना प्रामाणि क आ सहज–स्वाभाविक वर्णन, श्रम आ साझेदारी के बुनियाद पर टिकल बराबरी के अइसन आख्यान कवनो भाषा के साहित्य में कमे देखे के मिलेला। एह संवाद–गीत में धान रोप के लवटल संगिनी अपना हरवाहा पति से निनइला पर जगा देबे के कहत बिया त पतियो अपना हारल–थाकल अपना धनिया से निहोरा करत बा कि– "हर के हकासल देहिया साँझही निनाला, तनी जगइह धनी, जनि छोड़िके सुतलके सुती जइहऽ धनी।" "आहो–आहो' भोजपुरी क्षेत्र में प्रेम में पगल एगो अइसन सम्बोधन हटे जवना के जरिये केहू के सामनहूँ प्रेमी–प्रेमिका निधड़के बतिया लेला आ नितान्त एकान्तो में एह सम्बोधन से बोले आ सुनेवाला दूनू में एगो खास अन्तरंगता बन जाला। एह गीत में पिया 'घर से बधार ले'– आ धनिया "चूल्हा से चउकी' तक आपन कार्य–क्षेत्र बतावत अपना–अपना हरारत आ थकान के इजहार करत बाड़े। एह गीत में देवर–ननद, भइया–भउजी सभे आवत बा– मतलब कि पिया आ धनिया दूनू प्रेम के अंतरंग पलो में संयुक्त परिवार के जबाबदेहियन के खूब समझत बाड़े।

एह संयुक्त परिवार में प्यार के दू छन निकालल केतना कठिन होला ई दूनू जने खूब बूझत बाड़े। पति

के कहनाम बा– "दिनवा त दुनिया भर के, रतिए हउए आपन, जनि गँवइहऽ धनी। धइ के बँहिया प माथ, बतियइहऽ धनी।" एतना सुनके संगिनी आउरो रागातुर हो जात बाड़ी– "कइसन दो त लागे जनि संतइहऽ पिया।" "जनि संतइहऽ पिया" यानी राग–रंग से मुक्त "संत" मत बनि जइहा पिया। एजवा 'संतइहा)" शब्द के प्रयोग से अर्थ ग्रहण करे में थोरिके बाधा हो रहल बा। भोजपुरी में साधु'' से सधुआइल ता खूब चलेला बाकिर 'संत' से संतइहा, के क्रियात्मक प्रयोग प्रकाश उदये जइसन कवि कर सकेला जे शब्द के साथे खेले में पूरा तरे माहिर होखे। बाकिर तबो हम कहब कि एह गीत में "जनि संतइहऽ पिया'' के जगह 'जनि सधुअइहऽ पिया' के प्रयोग अगर भइल रहित तऽ कविता में प्रसादकता आ व्यंजकता आ जाइत आ नायिका के वचन–चातुरी आ प्रेमातुरतो के प्रकट होखे के सहज–स्वाभाविक अवसर मिलल रहित।

प्रकाश उदय के कविता में भोजपुरी क्षेत्र में आजुओ रोटी–रोजगारी खातिर गाँवन से हो रहल पलायन के समस्या के बहुते गहिराई से उकेरल गइल बा। बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आ सूरत आदि जाये खातिर ठसमठस भरल रेलगाड़ी के जनरल बॉगी के जरिये जवन पलायन आजुओ जारी बा ओकरा के देख के खेत–बधार से जुड़ल सवाल स्वाभाविके बा– "गइलीं खेतवा के आरीध ऊहो बोलल मनवा मारी– का रे तेहूँ चलि जइबे, बाड़े भल भइया।" गाँव के लोग के हालत आज ई बा कि 'दाहा' आ "दशहरा" ले जादा ऊ लोग डकमुंशी के राह ताकेला। प्रकाश उदय के ई कविता कूछ पहिले के बिया, ना त आज त डकमुशियो ना मोबाइल के 'मेसेजे' से माई–बाबू के खाता में बबुआ के कमाई के हिस्सा पहुँच जात बा। बैंक खाता भा मनीऑर्डर से आवे वाला बेटा के कमाई के आसरा माई–बाबू के तबे ले रहत बा जबले ओकर मेहरी गाँव में जिनिगी काट रहल बिया। सास–ससुर के जाँगर थकला पर लडइका पढ़ावे–लिखावे के नाम पर जब ऊ फटाका मारके, शहर में सिरकी तान के रहे खातिर अपना दुलहा के साथे निकल जात बिया तब माई–बाबू का खाली सरकारी पेंशने के अपना बैंक–खाता में अवाई के बल–भरोसा रह जात बा।

इहे हाल उच्च मध्यवर्गीय हरेक बाप–माइयो के बा। कोचिंग कराके बेटा से पैकेजदार कमाई के आसरा पालेवाला गारजियन पूंजीवादी व्यवस्था के समुन्दर में बचवन के घुस जाये के तऽ फरमान दे देत बाड़ें बाकिर एह जाल में अझुरइला के बाद उनकरो निरासे हाथ लागत बा– "बेटवो गँववलीं, लँगोटवो गँववलीं," तोरो के गँववलीं रे धो–ति–या, धोतिया के तहे–तहे मो–ति–या।" (घुस जो पूत समन्दर में)। जवन कवि जीवन के सामान्य प्रसंगन आ अगल–बगल बिखरल पड़ल रोजमर्रा के 42 जीवन में इस्तेमाल होखेवाला साधारण सामानो में कविता खोज लेत होखे, ओकरा प्रतिभा के असाधारणता में विश्वास करहीं के पड़ी। प्रकाश उदय परवल, बैंगन, फूलगोभी, हैंडिल, पैडिल, पंचर के दुकान, रेल के डेली पसींजरी– सबके अपना कविता के विषय बनाके प्रस्तुत कइले बाड़े। प्रकाश उदय के कविता संघर्षो में जीवन–रस दूँढ़ लेबे में माहिर बिया। जीवन में कठिनाई आ संघर्ष चाहे जेतना ले होखे बाकिर एह रगड़–झगड़ो में जे रोशनी पा लेव, मस्ती खातिर दू–चार छन निकाल लेव– उहे जीवन के लड़ाई जीते के तागद राखेला। प्रकाश उदय के एगो कविता बिया –'का हो का हाल–चाल ?" जवना में जीवन के एही मस्ती, बेपरवाही आ फक्कयड़पन के उरेहाई देखे लायक बा– "का हो का हाल–चाल?, चकाचक, ठीक–ठाक ठीकेठाक।"

"अरज निहोरा' के दूसरका खण्ड के कविता के 'तनिक–तनिक कुछ कहल–सुनल, कुछ कहा सुनी" के कविता बतावत कवि आपन सताइस गो कविता पेश कइले बाड़ें। एह कवितन में संवादधर्मिता बा ई कहला ले बेहतर होई ई कहल कि ई '"संवादी कविता' बाड़ी सन, कथोपकथन शैली के कविता बाड़ी सन। कथोपकथन में नाटकीयता ले आवे खातिर भाषा में जइसन चुटीलापन, चटकपन, वागविदग्धता, बाँकपन आ संक्षिप्तता के गुण जरूरी बतावल गइल बा, ऊ सगरी एह खण्ड के अधिकतर कवितन में देखे के मिलत बा। बाकिर हमरा इहो कहे में कवनो गुरेज नइखे कि कुछ कविता त सरोजिनी प्रीतम के 'क्षणिकाएँ" जइसन बाड़ीसन, जवन कविता कम "चुटकुला' के करीब जादे बाड़ी सन। संग्रह के एके गो पन्नार (02) पर के दूगो कविता के उदाहरण हाजिर बा– "आकास में कइगो जोन्ही बा? तीन गो ई कइसे हो?, हमरा एतने ले गिनितिये आवेला ए फलनवा बो!" (2) "हेने आउ, ना आइब होने जो ना जाइब जाए दे, जनि जो जाइब काहे ना! आछा त जवन मन में आई तवन त करबे?, ना भगबे..... काल्हे से कहे तें लगबे कि ना

कि बेकहल तें हउए!" –अइसन कवितन के भरमार बा एह खण्ड में। 'राम रे राम', 'पुआ गटकीं', 'इयारी', 'राय', "फरियावन', "ऑफर', अरे रे अरे', "लोग', आदि कवितन में शब्दन के कारीगरी आ उक्ति–वैचिन्न्य के जरिये कथ्य में नवीनता पिरोवे के कोसिस भइल बा। एही खंड में "प्रति, माई विन्ध्याचली', "जतरा" आदि कुछ कविता अइसन बाड़ी सन जवनन के जरिये कविता के कविता जस बरते के कोसिस कइल गइल बा– (3) "हमरा एगो आँख से राउर हतना त राउर दूगो आँख से हमार कतना बिगड़ जाई जतरा, ईहो बताईं ना पण्डित जी। पलटी ना पतरा....।" (2) "माई हऊ माई के लछन नाहीं तहरा, त तहरा से हमरा ना पटरी ना पटरा। बड़हन नाक बाटे बड़े–बड़े आँख बाटे सँघेलू ना देखेलू ना उठेला बएखरा।"

"पहिलकी कविता में एक आँखि वाला के देखला पर जतरा बिगड़ जाए के अंदेशा भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित बा। बाकिर ई बात पंडिते समाज के फइलावल होखे भा ओकरे में प्रचलित होखे अइसन बात नइखे। दूसरकी कविता में बिन्ध्याचली माई में माई के लछन नइखे, सूँघे–देखे के क्षमता नइखे– ई बात भोजपुरिहा मनई शायिदे कबो सोचत होई? ई कवि के आपन सोच बा, जवन ओकरा के 'सेक्यूलर' मन–मिजाज वाला भले जेतना ले साबित करे में सहायक होत होखे बाकिर भोजपुरिहा मन–मिजाज से एकर कवनो वास्ता नइखे दिखत। भोजपुरिहा समाज देवियो–देवतो के अदिमी लेखाँ आचरण करत देख ओकरा से आपन नजदीकी भले महसूस करेला बाकिर ऊ देवी माई के ई कबो नइखे कह सकत कि "तहरा में माई के लच्छन नइखे' भक्ति–भावना में पगल ऊ ई भले कहेला कि "तू अगर दयामयी, करूणामयी, भव–सागर से उबारे वाली कहालू, तऽ हमरो के उबारऽ', बाकिर एह तरे के विचार कि "तहरा में माई के लछने नइखे' कवनो भोजपुरिहा मनई के दिल–दिमाग में नइखे जाग सकत। वैचारिक आग्रह आ अनुदारता अगर दुरूह कल्पना के जरिये सामने आवत बा तऽ ऊ कविता के कथ्य के सार्वजनीन आ लोकप्रिय बनावे में प्रायः बाधके साबित होला– हमार समझ कुछ अइसने बा।

कविता के चउथका आ आखिरी खण्ड बा– 'जुगलबन्दी।' एहमें कवि के आगामी संग्रह के आधा दर्जन कविता सामिल बाड़ी सन। कविता में जुगलबन्दी बा– हिन्दी आ भोजपुरी के आउर हिन्दी के कुछ समानधर्मा कवियन के साथे भोजपुरी कवि प्रकाश उदय के। रमाकांत द्विवेदी 'रमता', ज्ञानेन्द्रपति, अरुण कमल, केदारनाथ सिंह, माखन लाल चतुर्वेदी आ सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला' के कुछ प्रमुख रचनन के जरिये कवि एजवा अपना रचनाशीलता के जुगलबंदी करत कुछ सार्थक बात करेक कोसिस कइले बा। रमता जी के भोजपुरी कविता "काहे फरके बानीं रठरो आईं जी' के अपना हिन्दी रचना के जरिये जुगलबन्दी करत प्रकाश उदय कहत बाड़ें– "हमने अब नहीं लगाई हैं आवाजें पर खुले नहीं रावरे कभी दरवाजे, कोई तो कारन है, आएँ समझाएँ।" हिन्दी खड़ी बोली में 'रावरे" के मिक्सिंग से भाषायी सौहार्द बनावे के कोसिस आउर आँखिन के ठंढ़ी देबे वाली प्रयोगशीलता जरूर सामने आवत बिया बाकिर "आपके" के जगह 'रावरे" कर दिहला से "पदमैत्री केतना ले कायम रह पावत बा इहो विचारल कवनो बेजाँय ना होखी। हिन्दी आ भोजपुरी भा आउरो कवनो लोकभाषा के चासनी अगर जबरदस्ती तइयार होखी त ऊ कमियो सवदगर ना होखी ई बात धेयान राखल जरूरी बा। ज्ञानेन्द्रपति के कविता–पंक्ति– सदैव दुनिया को निहारते एक उजली उत्सुकता से" पर आधारित –ऊ दूगो दाँत तनी बड़" बहुत बेदतरीन भोजपुरी कविता के नमूना बा। अरुण कमल के हिन्दी कविता "अपनी केवल धार' के साथ प्रकाश उदय के भोजपुरी जुगलबंदी ई साबित करे खातिर पर्याप्त बा कि बात–विचार भोजपुरिहो में राखे के अकूत क्षमता बा– "आपन का बा ए जिनिगी में। सब त लिहल उधार, सगरी लोहा ओ लोगन के आपन खलिसा धार।" हिन्दी पंक्तियन ले कम जानदार ई भोजपुरी भावानुवाद नइखे। एही तरे केदारनाथ सिंह के कविता वे क्यों। भाग जाते हैं जिनके घर हैं" आ माखनलाल चतुर्वेदी के कविता "पुष्प की अभिलाषा' के साथ प्रकाश उदय के भोजपुरी जुगलबंदी सराहे लायक बा। एह खंड के सबसे बेजोड़ जुगलबन्दी बिया निराला के रचना 'बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु" के साथ कवि के। निराला के पंक्तियन के सामने प्रकाश उदय के भोजपुरी पंक्ति सब तनिको कमजोर पड़त नइखी सन दिखत– "एही घाटे हँसि के नहात रही धँसि क अँखिया अँटकि रहि जात रहे फँसि क, सिहकि–सिहकि जाए पँड्या भइया।" "कँपते थे दोनों पाँव बंधु" के अनुवाद 'सिहकि–सिहकि जाए पड्या भइया' में भाव–तरलता तनिका बढ़िये गइल बा, कमल नइखे। हिन्दी के साथे भोजपुरी के ई जुगलबन्दी आज

बहुते जरूरी बा काहे कि एह से दूनू भाषा क ताकत मिली, दूनू के बीच बढ़ रहल दूरी के पाटे में मदद मिली। आज दूनू तरफ जवन तनातनी दिख रहल बा, 'तू त हमरे हऊ ए बाछी' कहके आजी के बेटी बतावे के जवन नाजाइज कोसिस हो रहल बा भा केहू का जे ई बुझाये लागल बा कि केहू के सामन्त आ सोसक बतवले से हमार बढ़न्ती होखे लागी– त ई दूनू तरे के विचार बीमार मानसिकते के परिचायक बा। अइसनका दौर में प्रकाश उदय के एह रचनात्मक प्रयास के भरपूर सराहना मिले के चाहीं ताकि ई रार आउरो ना बढ़े। एही में दूनू के भलाई बा।

"अरज–निहोरा" के कवितन के पढ़ला के बाद ई बात साफ हो जात बा कि प्रकाश उदय के कवि अपना जड़ से जुड़ले रहे में आपन भलाई देखत बा। प्रकाश उदय के कविता अपना पूरा "कान्टेन्ट्स' आ "ट्रीटमेन्ट'' में अपना जड़ से जुड़ाव खातिर सजग कविता बिया। एह क्रम में ऊ परम्परा आ रिक्थ के खोदाई खूब कइले बिया। लोक संस्कृति, लोक मर्यादा आ लोक संवेदना के साथे अपनापा बनवले प्रकाश उदय के कविता धर्म, जाति, संप्रदाय, नारी, बाल, दलित, पर्यावरण, संस्कृति, राजनीति आदि हर क्षेत्र के समस्या आ सवालन से मुठभेड़ करत धारदार ढंग से आपन बात रखले बिया। बाकिर प्रकाश उदय के कविता के पढ़त समय अइसनको कबो–कबो लागत बा कि ई कवि भोजपुरी के लोकगीतन आ संस्कार गीतन के परम्परा का ओर फेरू से भोजपुरी कविता के लवटा ले जाये के तऽ कहीं नइखे चाहत? भोजपुरी एगो लोकभाषा जरूर बिया बाकिर ओकर डेग तऽ 'शिष्ट साहित्य" के दिसाई आज काफी आगे बढ़ गइल बा आ कविता–कहानी के नया–नया फॉर्म से ऊ अपना के जोड़े में कामयाब हो गइल बिया, अइसनका में पीछे मुड़ल केतना ले जरूरी आ जाइज होई– एह पर रूक के गंभीरता से थोरिके सोच लेबे के पड़ी। पचास के दसके से भोजपुरी कविता हिन्दी कविता के साथे–साथे जुड़ल चलल बिया– कल्पना भाव, विचार, सिरिजना–सब दिसाईं। अइसनका में ई "लवटानि" केतना ले सुभग होई, ई सोचे–विचारे के जरूरत बा। कविता में लोक के वापसी से कविता जियतार होई बाकिर लोकशैली में कविता के वापसी एगो दोसरा तरे के मामला बन जात बा। स्व. रामेश्वर सिंह "काश्यप" प्रकाश उदय के "भोजपुरी के भवानी प्रसाद मिश्र" बतावत, बतरस के कविता के एगो मजबूत पक्ष मान के उनकर तरफदारी कइले रहनीं। उहाँ के बात में बल रहे।

कविता– हिन्दी आ भोजपुरी–दूनू में बतकही आ कथारस के जोगाड़ जुटाके कबो आपन खूब चमक–दमक देखवले रहे बाकिर आज बतकही से काफी आगे कविता निकल गइल बिया। विधा सबके फेटवन आज खूब तइयार कइल जा रहल बा बाकिर ई 'सतमेजरा' छठे में ठेकुए–पूड़ी साथे मजेदार लागेला। जगो–जुप में "मिक्स्ड" के भरोसे खाली नइखे नेवतल जा सकत।

कविता में लोक जीवन आ समाज के वापसी एगो अलगा चीज बा आ कविता के फॉर्म में लोकशैली के वापसी एगो दोसरा तरे के कोसिस बा। हमरा नइखे मालमू कि प्रकाश उदय जी से प्रभावित होके उनका कविता–शैली के भोजपुरी में दोसर कवनो कवि अपनावल कि ना जबकि ऊ अस्सिये के दशक से एह तरे के कविता भोजपुरी में लिखत आ रहल बाड़ें। 'टाइप्ड" हो गइला पर ई खतरा तऽ बनिये जाला। मौलिकता दुहरावे ना छन–छन नवीनतो खोजेले– कथनो बा दृक्षणे क्षणे यनन्नवतामुपैति तदेव रूप रमणीयतायाः।' ('शिशुपाल वध" माघ–4,47) भा– "ज्यों–ज्यों निहारिये नियरे ह्वै नैंननि, त्यों–त्यों खरे निकरे–सी निकाई।" (मतिराम) प्रकाश उदय भोजपुरी के बेशक एगो खास कवि बाड़ें, उनकरा के छोड़िके भोजपुरी कविता पर कवनो बतकही होइये नइखे सकत बाकिर साथही हम इहो जोड़े के चाहेब कि भोजपुरी में दोसर प्रकाश उदय हमरा ललटेन नचवलो पर नइखन लउकत। मतलब कि प्रकाश उदय के कविता उनकरे से शुरू होके अभी उनकरे लगे घुरियात दिख रहल बिया। हिन्दी में कुछ अइसने मुक्तिबोध के साथे हो चुकल बा आ केदार जी एह से उबरि के आगे बढ़त दिख रहल बाड़े। कविता एही तरे के बहाव आ रचाव से लम्बा उमिर पावे में सफल होले। ●●

आवास संख्या– जी0–3, ऑफिसर्स फ्लैट, स्टेट बैंक के समीप, न्यू पुनाईचक, पटना––800023 (बिहार),
मो0–– 943283596 / 7264890549,
ई–मेल skpathakpro@gmail-com

भाषा के बारे में कुछ बात
(संदर्भ हिन्दी आ भोजपुरी)

डा0 प्रेमशीला शुक्ल

ऋग्वेद के एगो मंत्र ह–

सक्युमिव तिवउना पुनन्तोयत्र धीरा मनसा वाचमक्रम।
अत्रा सरवायः सख्यानि जानते भद्रेषां लक्ष्मीर्निहताधि वाचि।।

(ऋग्वेद, 10–71–2)

मतलब, गंभीर चिन्तन करे वाला ऋषि लोग एकाग्र मन से पवित्र वाणी के सृष्टि कइल लोग। जइसे महीन छलनी से छना के महीन सतुआ नीचे गिरत जाला, ओइसे सूक्ष्म बुद्धि से 'सार भाग' छनाके शुद्ध कइल 'वाणी' के रचना होला। एही 'वाणी' में समानध र्मा सांस्कृतिक साझेदार लोग समान धर्म के साझेदारी कइल आ बन्धुता के पहचान कइल। ए वाणी में कल्याणमयी लक्ष्मी के मंगल भरल सौष्ठव बराबर बनल रहेला। ए मंत्र में भाषा आ साहित्य–दूनू के प्रयोजन का बारे में बात कइल गइल बा। फिलहाल भाषा के लिहल जाय।

दूसर कई जीव–जन्तु अइसन आदमियो के सुख–दुःख के बतावे खातिर प्रकृति से कंठ आ स्वर मिलल बा। आदमी के विषेषता ई बा कि आदमी का अपना कंठ में प्रकृति से जवन कुछ ध्वनि मिलल, ओके बुद्धि–विवेक के बल पर एह तरह से संयोजित कइलस कि ऊ सब ध्वनि विशेष रूप लेके शब्दसंकेत में बदल गइल। आदमी ए शब्द संकेतन से (विशेष ध्वनि मात्र से) स्थूल वस्तु, सूक्ष्म भाव, अनुभूति सर्जनात्मक प्रतिभा बौद्धिक उपलब्धि–सब के रूप–आकार दे सकत रहे। ई वाणी रहे, भाषा रहे– आदमी के बहुत बड़हन उपलब्धि। हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार चिन्तक निर्मल वर्मा एके आदमी की आत्मा के जरूरत कहले बाड़ें। भाषा का बारे में उनुकर कहल बा कि आदमी अपनी आँख से अपना के ना देख सकेला, दूसरा के देख सकेला। दूसरा के देख के अपना मन में भाव आवेला कि हमहूं ओही दूसरा का अइसन होखब। एक–दूसरा के देखले का क्रम में शब्द के जनम भइल होई, एसे भाषा में 'हम' भी बा आ 'दूसर' भी। व्यवहार का स्तर पर देखल जाए त समझल जा सकेला कि 'हम' जवन कहतानी ओके 'दूसर' समझऽता। 'दूसरा' का साथ भइले (रहले) के इच्छा समाज के निर्माण कइले होई। जइसे भाषा में सब शामिल बा ओइसे समाज में सब शामिल बा। विकास की पहिली अवस्था में भाषा समाज का रोज के बात–बेवहार खातिर काम में आइल। विकास की अगिली कई अवस्था में धीरे–धीरे भाषा एतना समरथवान बनत गइल कि आदमी आ आदमी से इतर कवनहूं विषय में एकरा माध्यम से सोचल जा सके आ बतावल जा सके। भाषा में स्वर, अर्थ, रूप, भाव आ बोध के समन्वित रूप के अइसन विकास हो गइल कि अभिव्यक्ति आ चिन्तन के विस्तार व्यष्टि से समष्टि तक हो सके।

भाषा आ समाज में अटूट सम्बन्ध ह। भाषा समाज में, समाज द्वारा आ समाज खातिर बनेले। एकर कुछ अंश सिद्ध होला, कुछ साध्य। मतलब कुछ अंश अइसन होला

जवन पहिले से मानल बा, जवन पहिले के (पूर्ववर्ती) समाज के देय ह। एही का आधार पर भाषा में संप्रेषणीयता आवेले। समाज के सब लोग जवना संकेत के प्रयोग कर के आपन मंतव्य एक–दूसरा का सामने रख रहल बा, ओकरा पीछे कवनो एगो गोपन समझौता बा तबे अर्थ में स्थिरता बा, ना त कहाइत कुछ, बुझाइत कुछ।

भाषा के जवन अंश साध्य ह, जवन बन रहल बा, बने के बा, ओके आजके (समकालीन) समाज बनावेला। ई अंश पहिले वाला अंश से अलग भा कटल ना होला। जवन बन भइल बा ओकरी बनावट की भीतर से ही नया कुछ बनेला। भाषा एही तरह से मंजे से, सधेले। ई ना कहल जा सकेला कि समाज के कवन आदमी चाहे वर्ग, चाहे समूह भाषा के निर्माण करेला, हँ, ई कहल जा सकेला कि जवन वर्ग, चाहे समूह समाज का मुख्य धारा के अगुवाई करेला भाषा पर सबसे ज्यादा असर ओही के होला। व्यवहार में आके भाषा ओ वर्ग आ समूह से निकल के पूरा समाज पर असर डालत जाले। जब जीवन के बदलल पैटर्न बनेला, मानदंड बनेला जवन संस्कृति के महत्वपूर्ण अंग ह। एही अर्थ में भाषा समाज आ संस्कृति के प्रतीक ह। भाषा अइसन लचीला आ रचनात्मक माध्यम ह, जवन वर्तमान आ आगे आवे वाली संभावना–दूनू से जुड़ल होला। ऊपर दिहल गइल ऋग्वेद का श्लोक से पता चलता कि ओ समय समाज के अगुवा गंभीर चिन्तन करे वाला ऋषि लोग रहे। ई लोग बहुत विचारर कर के अपने चिन्तन के सार वाणी–भाषा के रूप समानधर्मा सांस्कृतिक साझेदार (समाज के लोग) से साझा कइल। ए वाणी–भाषा से सबका बीच बन्धुता, जवन समाज के धुरी ह, बनल, वैभव उतरल, मंगल आ कल्याण के कामना जागल। ई भाषा आदमी के एक–दूसरा से जोड़त रहे, एक सूत में बान्हत रहे।

आज के समाज पर नजर डालल जाए त कहल जा सकेला कि समाज पर बाजार हावी बा, इहे अगुवा बा। एकरी भाषा के नारा बा– 'ये दिल मांगे मोर'। मतलब चाहीं, अउरी चाहीं, अउरी चाहीं। का चाहीं? पानी ना, कोल्ड ड्रिंक चाहीं। जीवन के रक्षा खातिर जरूरी चीज ना, विलासिता चाहीं, भोग चाहीं एकरा खातिर कुछ कइल जा सकेला–सही–गलत, साँच–झूठ। ई अकेल वाक्य समाज के केतना उत्पात मचावता, समाज के कवन रूप बनावता–सोचल जा सकेला, सब सामने बा। अइसन समाज में संतोष के धन ना मानल जा सकेला। ना लिखल जा सकेला– "गोधन, गजधन, वाजि धन और रतन धान खान। जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान।।"

बात के साफ करे खातिर दूसर उदाहरण लिहल जाए। 'माजा' पिअले का विज्ञापन में नाना–नातिन में बातचीत होला। नाना बातचीत में बतावेलें कि उनुकर पत्नी (लड़की के नानी) उनुके (नाना) भगवले रहली। आगे नातिन पूछेले– "का ओकर माँ भी ओकरे पापा के भगवली?" नाना के जवाब होला– "भगाना तो हमारा फेमिली ट्रेडिशन है।" सोचे वाली बात बा कि नाना नातिन के कवन रास्ता देखावऽताड़े।

बाजार के बनावल अइसन भाषा से आज के वातावरण भरल बा। फल बा– समाज में फइलत मुनाफाखोरी, घूसखोरी, भ्रष्टाचार आ संस्कार के लोप। भारतीय समाज में भागल–भगावल अबहिन तक बहुत खराब, गाली अइसन मानल जात रहल, आज घर के बुजुर्ग ओके घर के परंपरा बतावता। ई बाजार के भाषा के असर ह, ओ भाषा के जवन आपन उत्पाद बेचे खातिर बनावल गइल बा। समाज के बीच सहज रूप से बनल भाषा अइसन कभी भी ना बनित काहें कि समाज अपना परंपरा से, संस्कृति से जुड़ल होला। भाषा समाज आ संस्कृति के प्रतीक होले। इहाँ ई समझल जरूरी बा कि भाषा आ समाज में बहुत गहिर सम्बन्ध होला। समाज भाषा बनावेला त भषवो समाज बनावेला। भाषा एतना लचीला आ रचनात्मक माध्यम ह कि एसे वर्तमान का साथे–साथे आगे के संभावना भी जुड़ल होला। खाली पइसा बनावे खातिर, अपना फायदा खातिर गढ़ल ई भाषा जब समाज में घुली–मिली तब ओसे नया समाज बनी, संस्कृति बनी। एकर शुरूआत हो गइल बा, लक्षण सामने आ रहल बा। एगो संवेदनहीन, अपने में अझुराइल भोगवादी संस्कृति सिर उठा रहल बा। एके रखे वाला गंभीर चिन्तन करे वाला ऋषि लोगन के पवित्र वाणी (भाषा) नइखे, एकाग्र मन आ सूक्ष्मबुद्धि से छानल, शुद्ध कइल वाणी नइखे बलुक वासना का कीचड़–कादो में सनाइल 'अउर–अउर' चिघरत नशेड़ियन के अपवित्र वाणी बा। ये वाणी में कल्याणमयी लक्ष्मी के मंगल भरल सनेस नइखे, सबके नाश करेवाली राक्षसी के जादू–टोना बा। नतीजा ई बा कि आज का समाज में वेदकालीन समाजवाली बन्धुता नइखे, गलाकाट प्रतियोगिता बा।

उन्नीसवीं सदी के शुरूआत में आइल औद्योगिक क्रांति का साथे अमेरिका आ यूरोप में मषीन के उपयोग बढ़ल। धीरे–धीरे मशीन के उपयोग पूरा दुनिया में बढ़त गइल आ इक्कीसवीं सदी आवत–आवत मषीन के बोलबाला हो गइल। आज हालत ई बा कि आदमी पीछे हो गइल बा, मषीन अगुवा गइल बा। ए बात से भारतीय

समाज भी अछूता नइखे। एकरा अलावा पच्छिमी दुनिया के समाज के रूपरेखा आ समाज में व्याप्त तथाकथित स्वतंत्रता भारतीय समाज खातिर कोढ़ में रवाज के काम करता। संयुक्त परिवार वाला भारत के समाज एकल परिवार वाला बनत जातां स्वतंत्रता आ वैयक्तिकता में मातल आदमी अकेले रहला के परिवार मान लेता, जेसे अकेल एकाकी परिवार के संकल्पना सिर उठा रहल बा अब कहाँ दादी–दादा के दुलार भरल डाँट–फटकार? अब त लागता पति–पत्नी के नोंक–झोंक ले दुर्लभ हो जाई। छोट होत परिवार में कइसे बोले के बा? का बोले के बा? अइसन में, भाषा के फैलाव कम होत जाता। मशीन पर निर्भरता बढला का वजह से आदमी के आदमी से संपर्क आ सीधा संवाद लगातार कम होत जाता। आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स आ अइला का बाद ई बात दिनोंदिन बढ़त जाता। रोजमर्रा का व्यवहार में एकर अनेक उदाहरण देखल जा सकेला। उदाहरण लिहल जाए–छोट लइकी आटो पालना में रो रहल बा। महतारी एलेग्ज़ा। (अमेजन के एलेग्ज़ा) के आर्डर देताड़ी– 'लोरी सुनाओ'। एलेग्ज़ा लोरी सुनावऽताड़ी। लइकी सुनत–सुनत सूत जाताड़ी। बेटी के पालना झुलावत के, गोदी लेत के, बेटी के निरखत के लोरी का अलावा जवन संवाद माई के होइत, इहाँ ना भइल, बस लोरी सुनावल गइल। आदमी (बेटी) से आदमी (भाई) ना कुछ कहलस ना आदमी (माई) से आदमी कुछ सुनलस। मशीन से कहाइल, मशीन से सुनाइल। जब माई–धिया के संवाद अइसन त दूसरा के कइसन? मेडिकल सर्वे के रिर्पोट बतावता कि लइकन के देर से बोलला के केस बढ़ रहल बा, काहेंकि लइकन से बोलल बतियाक्ल नइखे जात।

आर्टीफिसियल इंटेलिजेन्स के अइला का बाद भाषा का संदर्भ में कई नया–नया टर्म प्रयोग में आ रहल बा जइसे कोडिंग–डी कोडिंग, प्रोग्रामिंग, पाइथन आदि। कोडिंग–डी कोडिंग अब एतना महत्वपूर्ण हो गइल बा कि पाठ्यक्रम में शामिल कइल गइल बा। आर्टीफिसियल इंटेलिजेन्स के जानकार लोग अपनी पसंदीदा प्रोग्रामिंग लैंग्वेज खातिर पाइथन के बेहतर मानता। ये बदलत माहौल में आदमी के वर्तमान भाषा कवन रूप ली, केतना बदली, केतना बची कि ना बची–कहल ना जा सकेला। भाषा के काट–छांट त शुरू हो गइल बा। गूगल असिस्टेंट से बात करत, एस.एम.एस. करत ह्वाट्सएप पर चैट करत, ईमेलिंग करत, ऑन लाइन ट्रांजेक्सन करत कवना आदमी भाषा का काट–छांट आ बदलाव के महसूस कर सकेला। कहल जाला– 'भाषा बहता नीर'। भाषा प्रयोग में रहला से विकसित होले। प्रयोग में ना रहला से थिर होके धीरे–धीरे विलुप्त हो जाले। ई भाषा के प्रकृति ह। भाषा विलुप्त ना होखे, विकसित होत रहे, एकरा खातिर जरूरी ह कि भाषा व्यवहार में बनल रहे, ओकर प्रयोग होत रहे। संसार में लगभग सात हजार भाषा बोलल जाले। अंदाज लगावल जाता कि सन् 2050 तक 90ः भाषा विलुप्त हो जाई। भाषा विज्ञान का हिसाब से कारण मानल जाई– प्रयोग में ना रहल। भाषा के प्रयोग में ना रहला के कवनो भाषा वैज्ञानिक कारण नइखे। एकर अनेक आर्थिक, सामाजिक आ राजनैतिक कारण बा, जवना में मुख्य रूप से बाजार, मषीन, राजनैतिक सत्ता, सांस्कृतिक उपनिवेषवाद, भूमंडलीकरण आदि के नाम लिहल जा सकेला। ए सब पर जवन भाषा खरा उतरी, अगुवाई, ऊ भाषा प्रयोग में रही। ओ भाषा में बदलाव आ सकेला बाकी ऊ विकास का ओर बढ़ी लोप की ओर ना।

उदाहरण रूप में हिन्दी भाषा के लिहल जा सकेला। देस–विदेस में फइलल हिन्दीभाषी लोगन के बड़हन बाजार बा। एसे अपनी भाषा का रूप में बाजार हिन्दी के माध्यम का रूप में खूब प्रयोग में लेता आ अपनी जरूरत का हिसाब से हिन्दी में बदलाव ले आवता। हिन्दी भाषी लोग देस का अलग–अलग प्रदेसन में अपने साथे हिन्दी के लेके गइल बा, एसे हिन्दी के प्रसार त भइले बा, ओ प्रदेस की भाषा का असर से नया तरह के हिन्दी के रूप उभरल रहल बा। 'बम्बइया हिन्दी' 'कलकतिया हिन्दी' जइसन शब्द से ए रूप के संकेत मिलेला। अंग्रेजी के असर से बनल हिन्दी के रूप में 'हिंगलिश' के प्रचलन बटले बा। हिन्दी आज दुनिया में सबसे ज्यादा बोले जाए वाली तीसरी सबसे बड़ भाषा ह। हिन्दी के धमक संयुक्त राष्ट्रसंघ तक बा। आज का इंटरनेट का जमाना में हिन्दी नया–नया रूप लेत आगे बढ़ रहल बा।

हिन्दी भाषा का साथ कुछ समस्या भी बा। समूचा कुलीन वर्ग, जवन पहिले हिन्दी बोलत रहे, अब अंग्रेजी बोलऽता। ई समस्या हर भारतीय भाषा का साथे बा। दूसर बात कि हिन्दी में अंग्रेजी के एतना घुसपैठ हो गइल बा कि हिन्दी के आपन स्वरूप छिन्न–भिन्न होत जाता। अंग्रेजी के संज्ञा शब्द पहिले हिन्दी में अइले फिर विषेषण अब त अव्यय आ क्रिया तक अंग्रेजी के शब्दन के पहुँच हो गइल बा। बाकी बच गइल बा– शब्दन के जोड़े वाला कारक। कवनो भाषा खातिर ई अच्छा ना मानल जा सकेला। एकर सबसे खराब असर

शिक्षा पर पड़ऽता। जइसे जब गणित पढ़ावत के लइकन से कहल जाता–थर्टीफोर में से ट्वेंटी फाइव सब्सट्रैक्ट करो तब लइका अंक समझ जाता सब्सट्रैक्ट समझ जाता, बाकी 'में से' ओकरा खातिर अबूझ हो जाता। दूसर बात पढ़त के लइका अंग्रेजी मिश्रित भाषा में मास्टर से पढ़ऽता, किताब पढ़त के शब्द बदल गइल, हिन्दी में आ गइल। लइकन खातिर भाषा के ई घाला मेल सहज ना होला। लिखत के लइका दुबिधा में रहेला कि सुनल शब्द लिखल जाए कि पढ़ल शब्द। ये सब ऊहापोह के असर लइका की अभिव्यक्ति क्षमता पर पड़ेला। ई खराब, बाकी साँच बात बा कि अब अधिकांश लइका अपना मन से आपन बात नइखें कह पावत। भाषा का रहते लइके गूंग हो जाय त अइसन भाषा के सार्थकता का?

भोजपुरी का संदर्भ में कुलीनता दूसरा तरह से काम कइले बा। भूमंडलीकरण का अइला का साथे 'अपना मूल की ओर चल' (रिटर्न टू योर रूट्स) के नारा बड़ा जोर–सोर से चलल। जे लोगन के पूर्वज आपन गाँव–गिराँव छोड़ के देस–विदेस में बस गइल रहे, ऊ अपना मूल के खोजत उहाँ पहुँचल। ई लोग छोट लोग ना रहल। ये लोग का पहुँचला से ऊ जगह आ उहाँ के भाषा 'लाइम लाइट' में आ गइल। ई घटना भारत में सबसे ज्यादा भोजपुरी क्षेत्र में घटल। फलतः भोजपुरी छोड़ देबे वाला कुलीन लोगन का मन में भोजपुरी खातिर नया सिरा से गौरव भाव जागल आ भोजपुरी के प्रयोग ए समाज में होखे लागल। अब भोजपुरी गँवई भाषा ना, सभा–सोसाइटी के भाषा बन गइल। एही समय एक घटना अउर घटल। राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोक (फोक) शब्द सबका ध्यान का केन्द्र में आ गइल। लोक (फोक) खातिर सबका मन में एतना प्रेम जागल कि गेहूँ के बालि आ हाथे के बीनल डलिया कुलीन ड्राइंगरूम के सोभा बढ़ावे लागल। एकर असर भोजपुरी भाषा पर भी पड़ल। समझे वाली बात बा जवन कुलीनता एक वर्ग से हिन्दी भाषा से कटलस, ऊहे ओह वर्ग के भोजपुरी से जोड़लस। समझे वाली बात इहो बा कि एह प्रक्रिया में भोजपुरी का सामने नया समस्या आ गइल। कुलीन वर्ग भोजपुरी के अपनवलस त बाकी मन से ना खाली मुँह से। भोजपुरी ओकरे खातिर मंच के भाषा बनल, समाज आ परिवार में व्यवहार के भाषा ना। अइसन स्थिति में भाषा के वास्तविक लाभ ना मिल सकेला। भोजपुरी पर हिन्दी के प्रभाव के भी अनदेखा ना कइल जा सकेला। षिक्षा के प्रचार–प्रसार आ शहरीकरण का वजह से ई प्रभाव प्रमुखता से देखल जा सकेला। हिन्दी आ भोजपुरी के सम्बन्ध बहुआयामी सम्बन्ध ह।

आज कल भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में भोजपुरी के सामिल कइला के लेके प्रतिद्वन्दिता वाला सम्बन्ध के बहुत चर्चा बा। कुछ लोग मानऽता कि आठवीं अनुसूची में भोजपुरी का मान्यता मिलला से हिन्दी के प्रतिद्वन्दी भोजपुरी बन जाई आ एसे हिन्दी के नुकसान होई। निष्पक्ष होके सोचल जाए त ई बात निराधार आ बेतुका बा। केहू के कवनो उचित अधिकार दिहला से दूसरा के नुकसान कइसे होई? हिन्दी से भोजपुरी के सम्बन्ध हमेसा से बहनापा के रहल बा। हिन्दी के समृद्धि में भोजपुरी के महत्वपूर्ण योगदान बा। हिन्दी के नुकसान भोजपुरी कबो सोच ना सकेले। देस–विदेस में फइलल भोजपुरी बोले वालन के संख्या, लोकप्रियता आ भाषिक, सांस्कृतिक अउरी साहित्यिक सम्पदा का कारण आज अगर तेजी से विकसित होखे वाली भाषा का रूप में दुनिया में चौतीसवों स्थान पर पहुँच गइल बा त ई भोजपुरी के दोष बा? हँ, अपना गौरव आ महत्व का हिसाब से हिन्दी के पद आ सम्मान जरूर मिलेके चाहीं। देखल जाए त हिन्दी अब महज भाषा नइखे। हिन्दी खातिर 'भाषा समूह', 'वृहद भाषा' जइसन शब्द प्रयोग में आवे के चाहीं, जवना में खड़ी, बोली हिन्दी, भोजपुरी, मैथिली, अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी आदि समर्थ भाषा शामिल रहें। चन्दवरदाई, विद्यापति, तुलसी, सूर, जायसी, मीरा, भूषण, भारतेन्दु–केहू के हिन्दी साहित्य से निकालल जा सकेला? भविष्य केकर बा– के जाने। खड़ी बोली हिन्दी के कालजयी रचनाकार प्रसाद जी के अनुसार–

यह नीड़ मनोहर कृतियों का,
यह विष्व कर्म रंग स्थल है।
है परंपरा लग रही यहाँ,
ठहरा जिसमें जितना बल है। ●●

प्रदक्षिणा, उमानगर दक्षिणी, सी.सी. रोड,
देवरिया–274001, उ0प्र0, मो0–9450925784

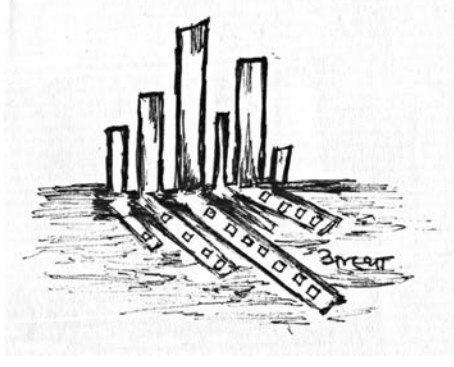

दू गो गीत

निहोरा

सजी अझुरा के तार सझुराइ दऽ
तनी निबुकाइ दऽ ना !
माई, परस से हिया जुड़वाइ दऽ
तनी दुलराइ दऽ ना !

होला कइसन विवेक?
सुर-ताल बा अनेक
हमरा बेकली के कल तूँ धराइ दऽ
तार झनकाइ दऽ ना !

बढ़ियाइल अगेयान
बानी अबले नदान
लय-धुन-राग-रस सरिहाइ दऽ
रागिनी जगाइ दऽ ना !

ऊभ-चूभ भइली रात
नइखे कुछऊ लखात
एक चुटुकी अँजोर छितराइ दऽ
डहर देखाइ दऽ ना !

बोले चाले के न लूर
नइखे कुछू के सहूर
एहू तोतरा के बोले तूँ सिखाइ दऽ
तनिकी पोल्हाइ दऽ ना !
माई, परस से हिया जुड़वाइ दऽ
तनी दुलराइ दऽ ना !!

हमार मन

तोहरे से अझुराइल
हमार मन
तोहरे नेह बन्हाइल।

भग्न-मनोरथ, बेकल होके
भागे आपन सुध-बुध खो के
रोकले नाहिं रोकाइल
हमार मन/तोहरे से अझुराइल।

एह गाँछी से ओह गाँछी ले
डाढ़ी-पुलुई से कंछी ले
टूसा जाइ टँगाइल
हमार मन/तोहरे से अझुराइल।

ए अमान के मान-मनउवल
कठिन रहे एकरा के रोकल
केतना ना छरियाइल
हमार मन/तोहरे से अझुराइल।

रन-बन धावत, सुख उधियावत
नाच नचावत दुखड़ा गावत
डूबल आ उतिराइल
हमार मन/तोहरे से अझुराइल।

भाग-भटकि तहरे तक आवे
जहाँ जाव, तहरे के पावे
अगम-निगम थहराइल
हमार मन/तोहरे से अझुराइल।

तोहसे सुन्दर आ शिव के बा
जे बा से, बस तहरे ले बा
तोहके पाइ जुड़ाइल
हमार मन/तोहरे नेह बन्हाइल।

– अशोक द्विवेदी

रजि0 नं0 – आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979) ISSN-2456-9372 पाती संयुक्तांक 101 दिसम्बर 2022

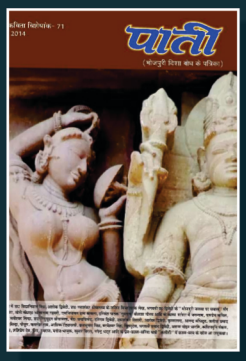
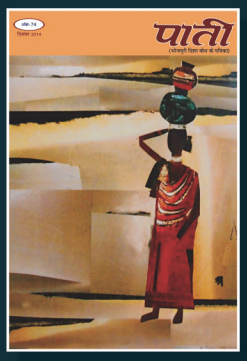

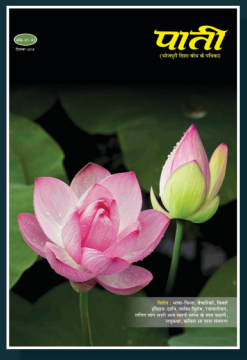

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक, सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ 1118, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-19 से प्रकाशित।